

श्रीः ।

दानसंग्रहः ।

०:३:०

पाण्डित-महीधरेण सर्वधर्मशास्त्रग्रन्थेभ्यस्संगृ-
हीतः विषयानुक्रमणिकया सहितः ।

सच

खेमराज श्रीकृष्णदास इत्यनेन

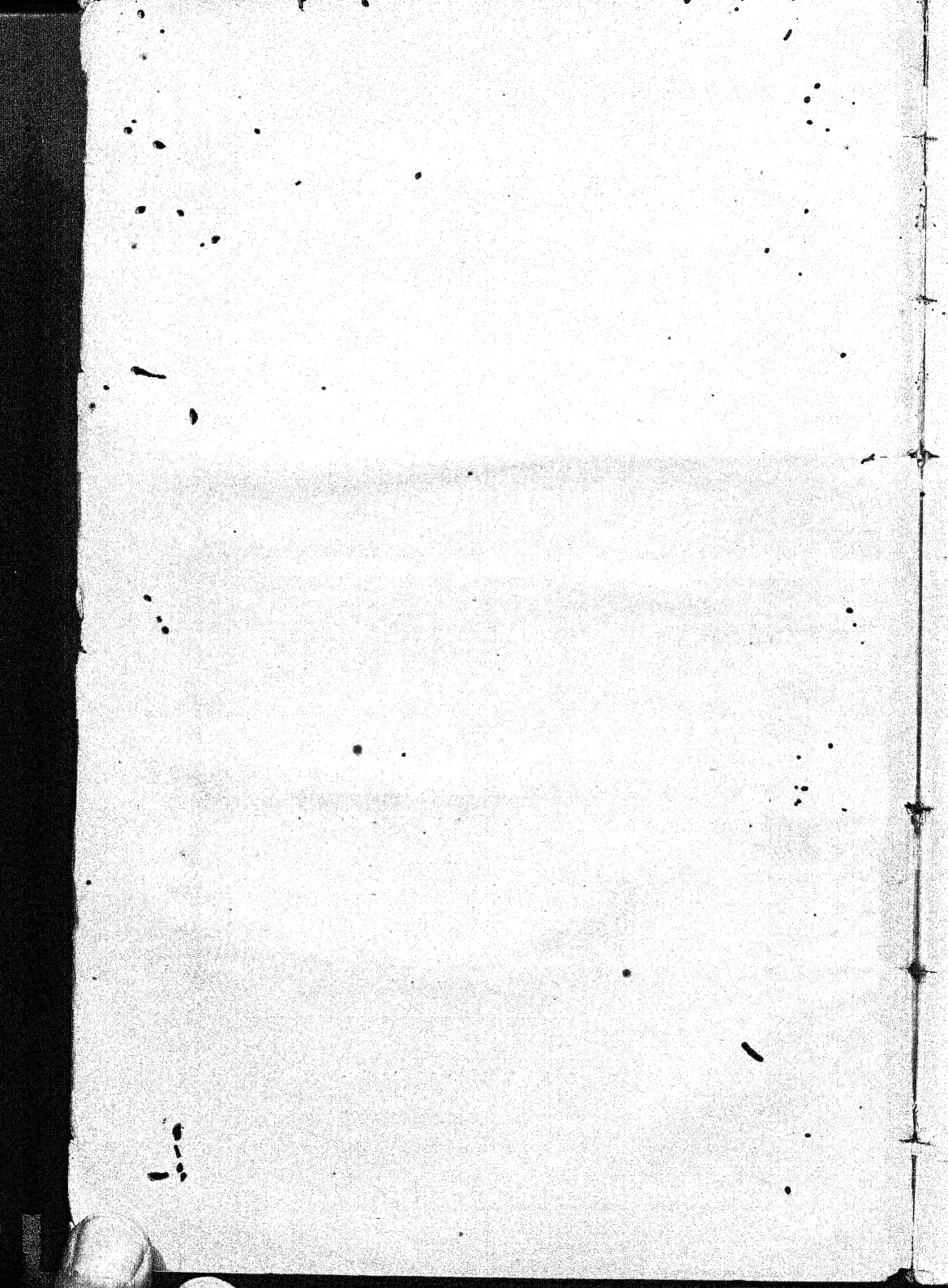
मुम्बय्यां

स्वकीये “श्रीवेङ्कटेश्वर” मुद्रणालये

मुद्रयित्वा प्रकाशितः ।

संवत् १९५४, शके १८१९.

अत्र सर्वस्वत्वं यन्त्राध्यक्षस्य वशगम् ।



श्रीः ।

अथ दानसंग्रहविषयानुक्रमणिका ।



विषयाः	पृष्ठ.
१ दानसंज्ञाध्यायः ।	
मंगलाचरणादिः-१	
दानसंज्ञा	१
दानपात्रम्	१
द्रव्यविभागः	२
अग्राह्यदानम्	१
दानकालः	१
पुण्यदेशः	३
तीर्थप्रतिग्रहनिषेधः ...	१
तीर्थक्षेत्रप्रमाणम्	१
तीर्थप्रतिग्रहनिषेधस्य	
परिहारः	१
दानकृत्यम्	१
प्रतिग्रहीतृकृत्यम्	१
प्रतिग्रहीतृदोषः	४
तन्माहात्म्यम्	१
द्रव्यमानम्	१
धान्यमानम्	१
दक्षिणाप्रमाणम्	१
दक्षिणाविभागः	५
द्रव्यदेवताः ...	१
प्रतिगृह्यस्यदानेगृह्यस्थानम्	१
२ दानमाहात्म्याध्यायः ।	
दानफलानि	७
३ पुण्यकालाध्यायः ।	
पुण्यतिथ्यादिः	१०

विषयाः	पृष्ठ.
युगादिप्रभृतयः	१२
व्यतीपात वैधृतियोगौ	१३
उपरागकालः	१३
प्रकीर्णकालः.....	१४
४ दातृप्रतिगृहीतृ धर्मा-	
ध्यायः ।	
दातृप्रतिग्रहीत्रोर्नियमाः	११
पात्रपरीक्षा	१६
५ संक्रांतिमासदाना	
ध्यायः ।	
संक्रांति दानम्	१६
मेषसंक्रांति दानम्	११
मेष संक्रमदाने कृत्यम्	११
सक्तुदानमंत्रः	१८
मासव्रतनियमाः	११
वृषसंक्रमे दानम्	११
जलधेनु दानम्	११
ज्येष्ठमासे दानानि	१९
मिथुनसंक्रमेभद्रदानादि	११
वस्त्रदानम्	११
शय्यादानम्....	११
आषाढमासेकृत्यम्	११
कर्कसंक्रमेधृतधेनुदानम्	२०
श्रावणमासेकृत्यम्	२१
फलदानानि	११

विषयाः	पृष्ठ.
सिंहसंक्रमे सुवर्णच्छत्रा	
दिदानम्	२१
उपानहर्षणचामरदानमंत्राः	"
भाद्रपदमासे कृत्यम्	२२
कन्यासंक्रमे वस्त्रक्षीरधेनु	
दानम्	"
अश्विनमासे कृत्यम्	"
वृत्तदानम्	"
तिलदानमश्वदानाङ्गम्	"
अश्वदानविधिः	२३
वृषदानम्	"
दधिदानम्	"
ताम्रदानम्	२४
तुलासंक्रमे कृसरदानम्	"
बीजादिदानम्	"
मधुधेनु दानम्	"
धान्यदानम्	"
धान्यदान मंत्राः	"
कार्तिकमासे दानानि	२५
दीपदानम्	"
आकाशे दीपस्थापनम्	"
गोपरिचर्याविधिः	"
वृश्चिकसंक्रमे च वस्त्रगृहदाने	"
गृहदान फलम्	२८
धनुःसंक्रमे रथदानम्	"
गन्त्रीदानम्	"
शिबिका दानम्	२९
पौषमासे कृत्यम्	"
अग्निदानविधि	"
मकरसंक्रमे रत्नदानम्	"
नवरात्रदानम्	३०
मौक्तिकदानम्	"
प्रवालदानम्	"

विषयाः	पृष्ठ.
कर्णभूषणदानम्	३०
मांगल्यमणिदानम्	"
सुवर्णदानम्	"
तिलधेनुदानविधिः	"
तत्पार्थनाविशेषः	३२
कृसरान्नदानम्	"
शुद्धदानम्	"
षोडशफलदानम्	"
सौभाग्यवतीनां दानविशेषः	३३
वर्द्धितफलदानम्	"
सौभाग्यशूर्पदानम्	"
सपायसकांस्थपात्रदानम्	"
माघमासे कृत्यम्	"
कुंभसंक्रमे गोभ्योऽम्बु दण्डा-	
नम्	"
अपमृत्यु हरं कालचक्रदा-	
नम्	३४
फाल्गुनमासे कृत्यम्	"
व्रीहिदानम्	"
स्वरूपतो गोदानम्	"
सवस्त्र कृष्णाजिन दानम्	३५
मीनसंक्रमे धर्मशाला दानम्	३७
पुष्पदानम्	"
अजादानम्	"
चैत्रमासे कृत्यम्	३८
हरिद्रा दानम्	"
कुंकुम दानम्	"
सिंदूर दानम्	"
कस्तूरी दानम्	"
कर्पूर दानम्	"
नानासुगंधि द्रव्यदानम्	"
गलतिका दानम्	"
मलमासे दानानि	३९

विषयाः पृष्ठ.

६ प्रतिपदादानाध्यायः ।

प्रपादानम्	४१
दुर्गाप्रीतिकरदानानि	"
मणिकदानम्	"
कार्तिकशुक्लप्रतिपदि	"
दशाचलसंज्ञा	४१
धान्यशैलदानम्	"
लवणाचलदानम्	४६
गुडाचलदानम्	४७
सुवर्णाचलदानम्	"
तिलाचलदानम्	४८
कार्पासाचलदानम्	"
घृताचलदानम्	"
रत्नाचलदानम्	४९
रौप्याचलदानम्	"
शर्कराचलदानम्	"
मार्गशीर्षकृष्णप्रतिपदादौ	"
शयनदानम्	५०
कंशिपुदानम्	"
चैत्रकृष्णप्रतिपदादौ श्वेत	
वस्त्रदानम्	"
श्रावणकृष्णप्रतिपदादौ	
स्थालीदानम्	५१

७ द्वितीयादानाध्यायः ।

भ्रातृ द्वितीया दानम्	५१
नानाद्रव्य तुलादानम्	५२
व्रणघ्नलक्ष्मीमूर्तिदानम्	"

८ तृतीयादानाध्यायः

सौभाग्याष्टक दानम्	५३
अक्षयतृतीया दानम्	"
तांबूल दानम्	"
पादुका दानम्	"

विषयाः पृष्ठ.

उपानदानम्	५३
छत्र दानम्	५४
व्यजन दानम्	"
लवणधेनु दानम्	"
शिखर दानम्	"
सौभाग्यवतीनां दान विशेषाः	५६

९ चतुर्थीदानाध्यायः ।

शंख दानम्	५७
फल दानम्	"
कंदमूलफलदानम्	"
शाकपत्रतांबूलदानानि	"
मोदकदानम्	"
अंगारकमूर्तिदानम्	५८
स्वर्णवारणदानम्	"
गणेशमूर्तिदानम्	५९

१० पंचमीदानाध्यायः ।

मृदंगादिवाद्यदानम्	६०
दारिद्र्यहरकुबेरमूर्तिदानम्	"
सुवर्णनागदानम्	६१
वेणुपान्नदानम्	"
नानासुगन्धिद्रव्यदानम्	"
रतिकाममूर्तिदानम्	६२
आयुष्यवृषदानम्	"
हिरण्यवृषभदानम्	६३
शिवायवृषदानम्	"
कुष्ठहररौप्यवृषदानम्	"
शिवायरौप्यवृषदानम्	६४

११ षष्ठीदानाध्यायः ।

कपिलादानम्	६४
महाकपिलादानम्	६५
सूर्य्यमूर्तिदानम्	"

विषयाः	पृष्ठ.
--------	--------

शर्करान्नदानम्	६६
---------------------	----

१२ सप्तमीदानाध्यायः ।

स्वर्णकमलदानम्	६७
---------------------	----

अंनवृद्धिहरनारायण

मूर्तिदानम्	११
------------------	----

पुत्रशोकहरस्वर्णवृषदानम्	६८
--------------------------	----

सूर्यमूर्तिदानम्	११
-----------------------	----

ताटकदानम्	११
----------------	----

कूष्माण्डदानम्	११
---------------------	----

१३ अष्टमीदानाध्यायः ।

पंचसुगंधफलदानम्	६९
----------------------	----

जगदंबिकामूर्तिदानम्	११
--------------------------	----

रात्र्यधत्वहरगोपालमूर्तिदानम्	७०
-------------------------------	----

सर्वपापहरत्रिशूलदानम्	११
----------------------------	----

चक्षुरोगहरगण्डमूर्तिदानम्	७१
---------------------------	----

१४ नवमीदानाध्यायः ।

रामचन्द्रमूर्तिदानम्	७१
---------------------------	----

दुर्गामूर्तिदानम्	७२
------------------------	----

आयुधदानम्	७३
----------------	----

कटारकदानम्	११
-----------------	----

छुरिकादानम्	११
------------------	----

कवचदानम्	११
---------------	----

चर्मदानम्	११
----------------	----

धनुदानम्	११
---------------	----

शक्तिदानम्	११
-----------------	----

कुंतदानम्	११
----------------	----

अग्निपत्रदानम्	७४
---------------------	----

पाशदानम्	११
---------------	----

परशुदानम्	११
----------------	----

स्वजादानम्	११
-----------------	----

पुताकादानम्	११
------------------	----

विषयाः	पृष्ठ.
--------	--------

१५ दशमीदानाध्यायः ।

दशहरादानम्	७४
-----------------	----

सक्तुदानम्	७५
-----------------	----

घृतदानम्	११
---------------	----

मधुदानम्	११
---------------	----

तंडुलदाम्	११
----------------	----

तिलदानम्	११
---------------	----

शर्करादानम्	११
------------------	----

लवणदानम्	११
---------------	----

चणकदानम्	११
---------------	----

अपूपदानम्	११
----------------	----

सुद्रवदानम्	११
------------------	----

घटदानम्	११
--------------	----

उपानहानम्	११
----------------	----

व्यंजनदानम्	११
------------------	----

छत्रदानम्	११
----------------	----

स्वर्णप्रतिमादानम्	७६
-------------------------	----

वस्त्रदानम्	११
------------------	----

स्वर्णदानम्	११
------------------	----

सर्वान्नदानम्	११
--------------------	----

जलजीवदानम्	११
-----------------	----

तिलाचलदानम्	११
------------------	----

शिखरदानम्	११
----------------	----

सरस्वतीमूर्तिदानम्	११
-------------------------	----

मुखवाद्यदानम् ...	७७
-------------------	----

सिंहासनदानम् ...	११
------------------	----

छत्रदानम्	११
----------------	----

कनकदंडदानम् ...	११
-----------------	----

यष्टिकादानम्	११
-------------------	----

डुंडुभिदानम् ...	११
------------------	----

व्यंजनदानम् ...	११
-----------------	----

चामरदानम् ...	७८
---------------	----

विषयाः	पृष्ठ.	विषयाः	पृष्ठा.
शंखदानम्	७८	निष्पावदानम्	८७
घंटादानम्	"	प्रियंगुदानम्	"
काम्यघंटादानम् ...	"	श्यामाकदानम्	"
भेर्यादिदानम्	"	कोद्रवदानम् ...	"
तिलपूर्णकरकदानम्	"	लंकदानम्	"
गुडधेनुदानम्	७९	यावनालदानम्	८८
कापसिधेनुदानम्	८०	मसूरिकादानम्	"
१६ एकादशीदानाध्यायः ।		पायसान्नदानम् ...	"
वामनमूर्तिदानम्	८१	कमंडलुदानम् ...	"
शुक्त्यादिदानम्	"	ओदनदानम् ...	"
घृतधेनुदानम्	"	दध्यन्नदानम् ...	"
सुवर्णाचलदानम्	"	कृसरान्नदानम् ...	"
शालग्रामदानम्	"	नानाभक्ष्यदानम् ...	"
शिवनाभिदानम्	८२	सर्वान्नदानम् ...	"
मत्स्यमूर्तिदानम्	"	सक्तुदानम् ...	"
वराहमूर्तिदानम्	"	शर्करादानम्	"
पुत्राप्तिकरकूर्मदानम्	८३	गुडदानम्	"
तिलदानम्	८४	इक्षुदंडदानम्	"
तिलपान्नदानम्	"	मधुदानम्	८९
नृसिंहमूर्तिदानम्	"	घृतदानम्	"
१७ द्वादशीदानाध्यायः ।		तैलदानम्	"
लक्ष्मीनारायणमूर्तिदानम्	८५	नवनीतदानम्	"
शर्कराधेनुदानम्	८६	क्षीरदानम्	"
अन्नदानम्	"	दधिदानम्	"
तंडुलदानम्	"	तक्रदानम्	"
व्रीहिदानम्	८७	पुष्पदानम्	"
यवदानम्	"	फलदानम्	"
गोधूमदानम्	"	तांबूलदानम्	"
माषदानम्	"	१८ त्रयोदशीदानाध्यायः ।	
सुद्गदानम्	"	रतिकाममूर्तिदानम्	९०
चणकान्नदानम्	"	अजादानम्	"
कुलुथदानम्	"	घृताचलदानम्	"

विषयः	पृष्ठ.	विषयः	पृष्ठ.
यमदीपदानम्.....	९०	गर्भस्त्रावहरयज्ञोपवीतदानम्	९८
गोवर्द्धनदानम्	११	भागवतदानम्	११
घृतदानम्	९१	कोजाग्रेदीपदानम्	११
कुबेरमूर्तिदानम्	११	नानाफलदानम्	११
ददुरोगहरोमामहेश्वर मूर्ति दानम्	११	दीपदानम्	९९
शर्कराचलदानम्	११	तिलदानम्	११
सुवर्णधेनुदानम्	११	नीलवृषभदानम्	११
१९ चतुर्दशीदानाध्यायः ।		गजाश्वादिदानम्	१००
रौप्याचलदानम् ...	९२	दशाचलदानानि	११
नृसिंहमूर्तिदानम्	११	तिलपात्रदानम्	११
हेमधेनुदानम्... ..	११	माध्यातैलादिदानम्.....	११
अन्नतदानम्	९३	घृतकंबलदानम्	११
प्रदोषेदीपदानम्	११	गोमिश्रुनदानम्	१०१
भोजनदानम्	११	विष्णुमूर्तिदानम्	११
उल्काग्रहणम्	११	शय्यादानम्.....	११
वैकुण्ठदीपदानम्	९४	हरिहरमूर्तिदानम्	११
रुद्राक्षदानम्.....	११	२१ अमादानाध्यायः ।	
लवणधेनुदानम्	११	हिरण्यदानम्.....	१०२
शिवलिंगदानम्	९५	रजतदानम्	११
मणिमयलिंगदानम्.....	११	लवणदानम्	११
काश्मीरलिंगदानम्.....	११	अमादीपदानम्... ..	११
२० पौर्णमासीदानाध्यायः ।		नवनीतधेनुदानम्	११
भांडदानम्	९६	अर्द्धोदयेदानविशेषः... ..	१०३
तिलकुम्भदानम्	११	पात्रदानानि	११
दधिधेनुदानम्	११	तिलपर्वतदानम्	१०४
कृष्णाजिनदानम्	९७	२२ वारादिषु पंचांगेषु दाना- ध्यायः ।	
छत्रोपानद्रथजनदानानि	११	ग्रहाणामणिदानम्	१०६
गोदानम्	११	नवग्रहद्रव्यदानसमन्वकम्.....	१०७
पुराणदानम्.....	११	वारदोषापनोदनायदाना न्तराणि	१०८
रक्षाबंधनदानम्	११	नक्षत्रदानानि... ..	११
यज्ञोपवीतदानम्	११		
शिरोरोगघ्नयज्ञोपवीतदानम्	९८		

विषयाः	पृष्ठ.
योगदानानि	११०
व्यतीपातवैधृतिदानम्	१११
अन्यप्रकारेणयोगदानानि	"
करणदानानि ...	११२
पक्षदानानि	"
ऋतुदानानि	"
संवत्सरदानानि	११३
यौगिकदानानि	"

२३ षोडश महादानाध्यायः।

षोडश महादानसंज्ञा	११४
तुलापुरुषदानम् ...	"
कुंडमंडपादि ...	११५
तुलावेदिप्रमाणम् ...	"
वेद्यांचक्रालेखनम्	११७
घृतादितुलाफलम् ...	११९
नानारोगहरतुलादानम्	१२०
तुलाद्रव्याधिदेवताः	१२१
तुलाकालविशेषाः ...	"
तुलादानविधिः ...	"
एतत्प्रयोगः.....	१२३
हिरण्यगर्भदानम्	१२६
ब्रह्मांडदानम्	१२९
कल्पपादपदानम्	१३१
गोसहस्रदानम्	"
गोशतदानम् ...	१३३
हिरण्यकामधेनुदानम्	"
हिरण्याश्वदानम्	१३४
हिरण्याश्वरथदानम्	"
हिरण्यहस्तिरथदानम्	१३५
पंचलांगलदानानि ...	१३६
स्वर्णधरादानम्	१३७
जंबूद्वीपदानम्	१३८
पांडुरोगहरपृथ्वीदानम्	"

विषयाः	पृष्ठ.
विश्वचक्रदानम्	१३९
कल्पलतादानम्	१४०
सप्तसागरदानम्	१४१
रत्नधेनुदानम्	१४२
महाभूतघटदानम्	१४३

२४ गोदानाध्यायः वा

अतिदानाध्यायः ।

स्वरूपतो गोदानम्	१४४
दानप्रयोग	"
श्वेतादिवर्णगोदानम्	१४६
समानवर्णगोवत्सदानम्	"
कृष्णधेनुदानम्	"
हेमशृंगीदानम्	"
प्रमेहघ्नस्वर्णधेनुदानम् ...	१४७
अशौघ्नस्वर्णधेनुदानम्	"
बंध्यात्वहरस्वर्णधेनुदानम्	१४८
नानागोदानमाहात्म्यम्	"
उभयतोमुखीगोदानम्	१४९
तत्प्रतिग्रहेप्रायश्चित्तम्	१५२
देवतोद्देशेनगोदानम्	१५३
देवताभ्योगोदानम्	"
ग्रहणरोगहरगोदानम्	"
असृग्दररोगहरगोदानम्	१५४

२५ दशदानाध्यायः ।

भूमिदानम्	१५४
तिलदानम्	१६५
हिरण्यदानम्	"
आज्यदानम्	"
वस्त्रदानम्	"
धान्यदानम्	१५६
गुडदानम्	"
रजतदानम्	"

विषयाः	पृष्ठ.	विषयाः	पृष्ठ.
लवणदानम्	१५७	तिलपद्मदानम्	१७२
पंचधेनुदानम्	"	तिलपद्मदानम्	१७३
ऋणापनोदधेनुदानम्	१५७	क्षयरोगहरतिलपद्मदानम्	१७४
प्रायश्चित्तधेनुदानम्	"	रक्तशूलघ्नतिलपद्मदानम्	"
वैतरणीधेनुदानम्	"	कंदूदुहरंतिलपद्मदानम्	"
उत्क्रांतिधेनुदानम्	"	मूक्तवहरतिलपद्मदानम्	१७५
महिषीदानम्	१५९	त्रिपञ्चाख्याश्वपंचकदानम्	१७६
मेघीदानम्	१६०	तिलारंजकदानम्	"
अजादानम्	१६१	तिलपीठदानम्	१७७
वृषदानम्	"	तिलादर्शदानम्	"
मंदाग्निहरमेषदानम्	"	तिलकुंभदानम्	"
२६ अतिदानाध्यायः ।		अहंकारदानम्	१७८
भूमिदानम्	१६३	एकादशरुद्रेभ्यःस्तिलदानम्	"
तत्प्रयोगः	"	तिलगर्भदानम्	१७९
शिवायभूमिदानम्	१६४	हस्तिदानम्	"
विष्णवेभूमिदानम्	"	मुखरोगहरनजदानम्	१८०
सूर्यायभूमिदानम्	"	व्रणरोगहरगजदानम्	१८१
अन्यन्महीदानम्	"	देवताभ्योगजदानम्	"
गृहदानम्	१६५	दासीदानम्	"
विद्यादानम्	१६६	देवताभ्योदासीदानम्	१८२
वेददानप्रशंसा	१६७	स्थदानम्	"
विद्यादानविधिः	"	वास्तुशांतिः	१८३
२७ दशमहादानाध्यायः ।		गृहदानप्रयोगः	१८४
नित्यसुवर्णदानम्	१६९	मठदानम्	१८६
पापरोगहरशतमानस्वर्णदा नम्	"	धर्मशालादानम्	"
भद्रनिधिदानम्	"	कन्यादानम्	१८७
अश्वदानविशेषः	१७१	कन्यादानप्रयोगः	"
तिलदानम्	"	स्थानच्युतस्थापनम्	१८९
मानृक्णापनोदकंकांस्यपात्रतिल दानम्	"	२८ दशावतारदानाध्यायः ।	
सर्वपापघ्नतिलराशिदानम्	१७२	विष्णोर्देशावतारदानम्	१९१
तिलपद्मदानम्	"	मत्स्यस्वरूपदानम्	"
		वराहस्वरूपदानम्	"
		नृसिंहस्वरूपदानम्	"
		वामनस्वरूपदानम्	"

विषयाः	पृष्ठ.	विषयाः	पृष्ठ.
परशुरामस्वरूपदानम्	१	अलंकारदानम्	२०६
रामस्वरूपदानम्	११	वस्त्रदानम्	११
बलरामस्वरूपदानम्	११	एकादशरुद्रवस्त्रदानम्	२०७
बौद्धस्वरूपदानम्	११	शोकहरवस्त्रदानम्	११
कल्किस्वरूपदानम्	११	उष्णीषदानम्	११
दशमहाविद्यादानम्	१९२	ऊर्णावस्त्रदानम्	११
महाविद्यामूर्तिस्वरूपाणि	११	आसनदानम्	११
२९ यौगिकपर्वदानाध्यायः ।		आपाकदानम्	२०८
भौमचतुर्थ्यारुद्रमूर्तिदानम् १९३		ताम्रपात्रदानम्	११
सर्वरोगहराश्विनीकुमारमूर्ति		ताम्रदानम्	२०९
दानम्	१९४	कांस्यपात्रदानम्	११
रोगहरत्रिमूर्तिदानम्	१९४	कांस्यदानम्	११
अपमृत्युहरत्रिपुरुषदानम्	१९५	लोहपात्रदानम्	११
रुद्राष्टकदानम्	१९६	सुवर्णपात्रदानम्	११
महापातकहरदक्षिणामूर्ति		सपायसस्थालीदानम्	११
दानम्	१९७	अथाभयदानम्	२१०
अतिसारहराग्निमूर्तिदानम् ११		पांथपरिचर्या	२११
आत्मप्रकृतिदानम्	१९८	अभ्यंगदानम्	२१३
अल्पमृत्युहरकल्पदानम्	११	पादाभ्यंगदानम्	११
दिग्दानम्	११	गोपरिचर्या	११
लोकपालाष्टकदानम्	१९९	पक्वान्नदानम्	२१५
चक्षुरोगहरद्वादशादित्यदानम् २००		आमान्नदानम्	२१६
आयुष्यकरदानम्	२०१	उदकदानम्	११
चंद्रसूर्यदानम्	११	३१ क्रूरदानाध्यायः ।	
३० अनंतफलदानाध्यायः ।		ग्रहणदानम्	२१७
आरोम्यदानम्	२०२	ग्रहणपीडायां शांतिः	११
रोगहरदानानि	२०३	भूकपेदानम्	२१८
अथ रोगदानानि	२०४	भद्रादानम्	२१९
नवरत्नदानानि	११	कालपुरुषदानम्	२२२
भगंदररोगहरनवरत्नदानम् २०५		३२ सर्वसंपत्करदानाध्यायः ।	
व्रणघ्नरत्नदानम्	११	सर्वसंपत्करदानम्	२२३
गलमंघ्ररत्नदानम्	११	जलाशयनिर्माणम्	२२४
		वृक्षरोपणतत्कालश्च	२२५

विषयाः	पृष्ठ.	विषयाः	पृष्ठ.
वृक्षदानम्	२२६	शीलप्रददानम्	२३५
कदलीदानम्	"	राजत्वप्रददानम्	"
न्यग्रोधदानम्	२२७	३४ नियमाध्यायः ।	
अश्वत्थदानम्	"	लक्षवर्तिकादानम्	२३५
विद्राघिरोगघ्नान्नदानम्	"	गोपन्नदानम्	२३७
आरामविधिः	२२८	चातुर्मास्यनियमाः	"
वृक्षप्रतिष्ठा	२३०	वृत्ताक्तयागेविशेषः	२४०
कुरुपुत्रदानविधिः	२३१	अश्वत्थसेवनम्	२४१
३३ संक्रांतिदानाध्यायः ।		अश्वत्थाभिमंत्रणम्	"
सक्रांतिषु सौभाग्यदानम्	२३२	सहस्रभोजनविधिः	"
धनदानम्	"	सर्वस्वदानप्रयोगः	२४५
आज्ञादानम्	१३३	३५ प्रतिग्रहधर्माध्यायः ।	
पापदानम्	"	व्यासोक्तधर्माः	२४७
तांबूलदानम्	"	प्रतिग्रहप्रायश्चित्तानि	२४८
विशोकदानम्	"	षोडशमहादानप्रायश्चित्तानि	२५१
तेजोदानम्	२३४	राजप्रतिग्रहप्रायश्चित्तम्	२५२
आयुषेदानम्	"	रहस्यप्रायश्चित्तानि	२५३
कीर्त्यर्थदानम्	"	प्रतिपदोक्तप्रायश्चित्तानि	२५५
मनोरथप्रापकदानम्	२३५	स्मृत्यर्थसारोक्तप्रायश्चित्तानि	"

इति दानसंग्रहविषयानुक्रमणिकासमाप्ता ।

पुस्तकमिलनेका ठिकाना—

खेमराज श्रीकृष्णदास,

“श्रीवैकटेश्वर” छापाखाना, खेतवाड़ी—(मुंबई)

प्यति ॥ अथ पुण्यदेशः ॥ दृष्टद्वंतीसरस्वत्योर्देवनद्योर्यदंतरम् ॥
तदेवनिर्मितदेशं ब्रह्मावर्त्तप्रचक्षते ॥ पुण्यदेशेषु सर्वेषु गृहे देवा लया
दिषु ॥ यत्र साधनसंपत्तिस्तत्र दानं महाफलम् ॥ सर्वोत्तमं गृहे दानं वि
धिना यत्प्रदीयते ॥ तीर्थे देवा लये यज्ञे दानमात्रविधिः स्मृतः ॥ वाराण
सी कुरुक्षेत्रं प्रयागं पुष्करं तथा ॥ गोकर्णं नैमिषारण्यं सेतुं श्रीपर्वतं
तथा ॥ महाकालं तथा गंगामेतान् पुण्यतमान् विदुः ॥ लिंगं वा प्रतिमा
वापि दृश्यते यत्र कुत्रचित् ॥ तत्सर्वं पुण्यतां याति दानेषु च महाफलम् ॥
॥ अथ तीर्थे प्रतिग्रहनिषेधः ॥ न तीर्थे प्रतिगृह्णीयात् प्राणैः कंठ
गतैरपि ॥ तीर्थे तीरे क्षेत्रे च ॥ अथ तीरक्षेत्रप्रमाणम् ॥ गंगा गोदा
वरी कृष्णा तीरमाहुर्महर्षयः ॥ उत्तरेन वगव्यूतिर्दक्षिणे योजनत्रयम्
तीराद् व्यूतिमात्रं तु पारितः क्षेत्रमुच्यते ॥ प्रवाहमवधिं कृत्वा या
वद्धस्तचतुष्टयम् ॥ तत्र न प्रतिगृह्णीयात् प्राणैः कंठगतैरपि ॥ प्रवाहो
गर्भः ॥ अत्यन्तापदि तीरेऽपि न दोषः ॥ अथ चेत्प्रतिगृह्णीयाद्वा लक्षणो
वृत्तिकर्षितः ॥ दशांशमर्जितं दद्यादेवं धर्मो न हीयते ॥ अथ दान
कृत्यम् ॥ सुस्नातः सम्यग्वाचांतः कृतसंध्यादिकक्रियः ॥ कामक्रोधवि
हीनश्च पाखंडस्पर्शवर्जितः ॥ दद्यादिति शेषः ॥ तथा ॥ कुशोपरि
निविष्टेन तथा यज्ञोपवीतिना ॥ देयं प्रतिगृहीतव्यमन्यथा विफलं भवेत् ॥
अंतर्जानुकरं कृत्वा सकुशं सतिलोदकम् ॥ फलान्यपि च संधाय प्रदद्या
च्छ्रद्धयान्वितः ॥ नामग्रन्थे समुच्चार्य प्राङ्मुखो देवकीर्तनात् ॥
उदङ्मुखाय विप्राय दत्त्वा तं स्वस्ति कीर्तयेत् ॥ अथ प्रतिगृहीतं
कृत्यम् ॥ ॐ कारमुच्चरन् प्राज्ञो द्रविणं सकुशोदकम् ॥ गृह्णीयाद्
क्षिणे हस्ते तदंते स्वस्ति कीर्तयेत् ॥ प्रतिग्रहीता सावित्रं सर्वत्रैवानु

कीर्तयेत् ॥ सावित्रदेवस्यत्वेतिशाखाभेदेन ॥ कइदंकस्माअदा-
 दित्यादि च ॥ तच्चेत्थम् ॥ ओंकारंब्राह्मणे कुर्व्यान्निरोकारं महीपतौ ॥
 उपांशुचतथावैश्ये मनसाशुद्रजे तथा ॥ तत्र दोषो यथा ॥ प्रतिग्रह-
 स्य धर्मचनजानातिद्विजोविधिम् ॥ द्रव्यस्तैन्यसमायुक्तो नस्कं प्रति-
 पद्यते ॥ अथ माहात्म्यम् ॥ विधिधर्मचविज्ञाय ब्राह्मणस्तु प्रतिग्रहे ॥
 दात्रा सहतरत्येव महादुर्गाण्यसौध्रुवम् ॥ अथ द्रव्यमानम् ॥ जाल्मू-
 र्यमरीचिस्थं त्रसरेणुस्ततस्स्मृतम् ॥ तेष्ट्रैलिक्षातुतास्तिस्रो राजसर्प-
 षडुच्यते ॥ गौरस्तु ते त्रयः षट्ते यवो मध्यश्च ते त्रयः ॥ कृष्णलः
 पंचते माषास्ते सुवर्णास्तु षोडश ॥ पलं सुवर्णाश्च त्वारः पंच वापरिकी-
 र्त्तितम् ॥ द्वे कृष्णलेख्यमाषो धरणं षोडशैव ते ॥ शतमानंतु दश-
 भिर्धरणैः पलमेव तत् ॥ निष्कः सुवर्णाश्च त्वारः ॥ इति हेमाद्रिः ॥
 अथ धान्यमानम् ॥ पलद्वयंतु प्रसृतिः कुडवो द्विगुणं मतम् ॥
 चतुर्भिः कुडवैः प्रस्थः प्रस्थाश्च त्वार आढकः ॥ आढकैस्तैश्चतुर्भिश्च
 द्रोणस्तु कथितो बुधैः ॥ द्रोणैः षोडशभिः खारी विंशत्या कुंभ उच्यते ॥
 कुंभैस्तैर्दशभिर्वा हो धान्यमानं प्रकीर्तितम् ॥ अथ दाने दक्षिणा-
 प्रमाणम् ॥ सुवर्णं परमं दानं सुवर्णं दक्षिणां परा ॥ सर्वेषामेव दानानां
 सुवर्णं दक्षिणेऽप्यते ॥ अदक्षिणंतु यद्दानं तत्सर्वं निष्फलं भवेत् ॥ पुरुषाहा-
 रोपयिकं तं दुलादिकमपि दक्षिणेति हेमाद्रिः ॥ तथा ॥ देयद्रव्यतृतीयां-
 शं दक्षिणां परिकल्पयेत् ॥ अनुक्तदक्षिणे दाने दशांशं वापि शक्तः
 ज्ञेयं निष्कशतं दानं दानेषु विधिरुत्तमः ॥ मध्यमस्तु तदर्थे न तदर्थे नाधम-
 स्स्मृतः ॥ मेष्ठ्यां च कालपुरुषे तथा न्येषु महत्सु च ॥ एवं वृक्षे रथे जे च धे-
 नवोः कृष्णाजिनस्य च ॥ अशक्तस्यापि कृमोयं पंचसौवर्णिको विधिः ॥

अथ दक्षिणाविभागः ॥ अष्टषष्टिपलोन्मानमाचार्यायैव दक्षिणा ॥ हो
तृणांचैव सर्वेषां तदर्द्धं संप्रचक्षते ॥ तदर्द्धं प्राजापकानां च द्वारपालास्तर्द्धतः
अष्टषष्टिरित्युपलक्षणम् ॥ अथ द्रव्यदेवताः ॥ अभयं सर्वदेवतं भूमेर्वै
विष्णुदेवता ॥ कन्यादासस्तथा दासी प्राजापत्याः प्रकीर्त्तिताः ॥ प्राजा
पत्योगजः प्रोक्तस्तुरगस्सूर्यदेवतम् ॥ तथा चैकशफं सर्वकथितं यम
देवतम् ॥ महिषश्च तथा यास्य उष्ट्रो वै नैर्ऋतस्मृतः ॥ रौद्रीधेनुर्विनिर्दिष्टा
छागमाग्नेयमादिशेत् ॥ भेषंतु वारुणं विद्याद्वाराहं वैष्णवं तथा ॥
आरण्याः पशवः सर्वे कथिता वायुदेवताः ॥ जलाशयानि सर्वाणि समु
द्राश्च कर्मण्डलुः ॥ कुंभश्च करकं चैव वारुणानि भवंति हि ॥ समुद्रजा
निरतनानि वारुणानि प्रचक्षते ॥ आग्नेयं कनकं प्रोक्तं सर्वलोहानि चा
प्यथ ॥ प्राजापत्यानि सस्यानि पक्वान्नानि च यानि वै ॥ विज्ञेयास्सर्वगं
धाश्च गांधर्वा वै विचक्षणैः ॥ विद्या ब्राह्मी विनिर्दिष्टा विद्योपकरणानि च ॥
सारस्वतानि ज्ञेयानि पुस्तकादीनि पांडितैः ॥ सर्वेषां शिल्पभांडानां चिश्चै
कर्माहिदेवता ॥ द्रुमाणामथ पुष्पाणां शाकैर्हारितकैस्तथा ॥ फलानाम
थ सर्वेषां तथा ज्ञेयो वनस्पतिः ॥ मत्स्यमांसं विनिर्दिष्टं प्राजापत्यंतथैव चा
छत्रं कृष्णाजिनं शय्यांस्थमासनमेव च ॥ उपानहौ तथा पात्रं यच्चान्यत्प्रा
णवर्जितम् ॥ सर्वं चांगिरसत्वेन प्रतिगृह्णीत मानवः ॥ शूरोपयोगिय
त्सर्वशस्त्रचर्मध्वजादिकम् ॥ नृपोपकरणं सर्वविज्ञेयं सर्वदेवतम् ॥ गृहं
तु शक्रदेवत्यं यद्यत्तदनुवस्तुषु ॥ विज्ञेयं विष्णुदेवत्यं सर्वदा विधिवेदिभिः
अथ प्रतिग्रहस्थानानि ॥ प्रतिगृह्णीत गांपुच्छे कर्णे वा हस्तिनां करे ॥
मूर्च्छिं दासीमजं चैव पृष्ठेऽश्वतरगर्दभौ ॥ अश्वं कर्णे कटायां वा दानमुद्दि
श्य धारयेत् ॥ शय्यासुतं गृहं क्षेत्रं संपृथ्यादाय कांचनम् ॥ उष्ट्रं

चककुंदिस्पृष्टामृगांश्चमाहिषादिकान् ॥ गोधामश्वविधानेनपक्षेसं
 स्पृश्यपक्षिणः ॥ छत्रंदंडैतरुन्मूलेफलंसंगृह्यगौरवात् ॥ प्रगृह्यो
 पानहौपत्रंवासयेत्प्रतिमुच्यवै ॥ पुत्रमुत्संगमारोप्पप्रतिगृह्णीतदत्तकम्
 रथंरथमुखेस्पृष्ट्वाप्रतिगृह्णीतकूबरे ॥ कूबरोयुगाधारकाष्ठम् ॥
 तथा चहेमाद्रौ॥भूमेः प्रतिग्रहंकुर्वाद्भूमिकृत्वाप्रदक्षिणम् ॥ करेगृ
 हीत्वाकन्यांतुदासदास्यौद्विजोत्तमैः ॥ आरुह्यचगजस्योक्तःकर्णे
 चाश्वस्यकीर्त्तितः॥तथाचैकशफानांतुसर्वेषांचविशेषतः ॥ प्रति
 गृह्णीतशृंगेजांपुच्छेकृष्णाजिनंतथा ॥ एकशफाःशृंगिणस्तेषांशृंगे
 एव ॥ कर्णेचपशवःसर्वेग्रहाःपुच्छेविचक्षणेः॥गृह्णीयान्महिषंशृंगे
 खंडं वैपृष्ठदेशतः॥प्रतिग्रहमथोष्ट्रस्ययानानांचाधिरोहरणात् ॥ बीजा
 नांमुष्टिमादायरत्नान्याद्रायसर्वशः ॥ वस्त्रंदशांतादादद्यात्परिधाया
 पिवापुनः ॥ आरुह्योपानहौमंचमारुह्यैवचपादुके ॥ धर्मध्वजौ
 तुसंस्पृश्यगृह्णीयाद्दानवेदिभिः ॥ अवतीर्य्यचसर्वाणिजलस्थाना-
 न्यानिच ॥ आयुधानिसमादायतथामुच्यविभूषणम् ॥ आमुच्य
 बद्धेत्यर्थः ॥ गांपुच्छेरथंइषायांवृक्षंमूलेशय्यासनक्षेत्राणिसंस्पृश्य
 पुत्रंदत्तकमुत्संगमारोप्य ॥ युग्यकांचनवस्त्राणांनंगुक्तेप्रतिग्रहः ॥
 प्रगृह्योपानहौमंचवासयेत्प्रतिमुच्यवै ॥ मृगाणांछागवत् ॥ गो
 धामश्वविधानेनपुच्छेसंस्पृश्यपक्षिणः ॥ छत्रंदंडे दासस्त्वादाय ॥
 ब्रव्याणांमथसर्वेषांदिवसंश्रयणाक्षरः ॥ वाचयेजलमादायकरेणा
 थप्रतिग्रहम् ॥ दातृमंत्रप्रयोगांतेह्यमुकस्मैसुरायवै ॥ इदमोंप्रति
 गृह्णामितदंतेस्वस्तिकीर्त्तयेत् ॥ प्रतिगृहेद्विजाश्रेष्ठास्तथैवांतर्भव

तिते ॥ प्रतिग्रहस्ययोधर्म्यनजानातिद्विजोविधिम् ॥ द्रव्यस्तैन्य
समायुक्तोनरकंप्रतिपद्यते ॥

इतिमहीधरकृतेदानसंग्रहेदानसंज्ञामानादिकथनं नाम

प्रथमः कोशः ॥ १ ॥

अथदानफलानि ॥ तत्रादौसामवेदोपनिषद्वाक्यम् ॥

दानेनसर्वान्कामानवाप्नोतिचिरजीवित्वं ब्रह्मचारीरूपवानहिं
स्रउपपद्यते स्वर्गपणाशनात् दिविचरः पयोभक्ष्यस्थानवीरासना
द्वित्तवान् पितृमातृगुरुशुश्रूषाध्यानवान्स्वर्गीयःकांचनदानेनेति ॥
तथा ऋग्वेदे ॥ उच्चादिविदक्षिणावंतोअस्थुर्येअश्वदाः सहतेसू
र्येण ॥ हिरण्यदाअमृतत्वंभजंते वासोदाः सोमप्रतिरंतआयुरिति ॥
तथा चहरितः ॥ आपोददंतृषमभिजयत्यात्मावंचनिष्क्रीणाति ।
अन्नदानादसूनिष्क्रीणाति । अन्नवानन्नादोऽन्नपतिश्चभवति ॥
वस्त्रदानाद्वचोनिष्क्रीणातिसुरूपोऽनघोवस्त्रभाग्भवति ॥ हिरण्य
प्रदानात्तेजोनिष्क्रीणाति ॥ सुवाग्विपाप्मागोभाक्चभवति ॥
अनंदुत्प्रदानात्प्राणान्निष्क्रीणात्यरोगोबलवान् ॥ धुर्यभाक्च
भवति । रथप्रदानाच्छरीरंनिष्क्रीणाति ॥ भृत्यविविधविमानभाग्भ
वति ॥ शय्याप्रदानात्सुखंनिष्क्रीणाति ॥ पानशयनासनविविध
सुखश्रीभाग्भगति ॥ अपरिमितप्रदानादपरिमिततोषंपुष्णाति ॥ अप
रिमितान्कामानवाप्नोति ॥ विष्णुः ॥ तैजसानांपात्राणांप्रदानेनपा
त्रीभवतिकामानाम् । मधुघृततैलदानेनारोग्यम् औषधप्रदानेनच ।
लवणप्रदानेनलावण्यम् ॥ धान्यप्रदानेनतुष्टिः ॥ रजतस्यदानेनच
तथा ॥ इंधनप्रदानेनदीप्ताग्निर्भवति संग्रामेसज्जयमाप्नोति ॥ आसनदा

नेनस्थानम् ॥ शय्यादानेनभार्याम् ॥ उपानत्प्रदानेनाश्वयुतं
 रथम् ॥ क्षेत्रप्रदानेनस्वर्गम् ॥ तालवृंतचामरप्रदानेनादुःखित्वम् ।
 पुण्यप्रदानेनज्यायान्भवति ॥ अनुलेपनप्रदानेनकीर्त्तिमान्भवति ॥
 तथा चस्मृतिः॥वारिदस्तृप्तिमाप्नोतिसुखमक्षय्यमन्नदः॥तिलप्रदः
 प्रजामिष्टां दीपदश्वशुरुत्तमम् ॥ भूमिदःसर्वमाप्नोतिदीर्घमायुर्हिरण्यदः ।
 गृहदोऽयाणिवेश्मानिरूप्यदोरूपमुत्तमम् ॥ वासोदश्वंद्रसालोक्यमश्वि
 सालोक्यमश्वदः ॥ अनहुद्दःश्रियंपुष्टांगोदोब्रह्मस्यविष्टपम् ॥ यानश
 य्याप्रदोभार्यामैश्वर्यमभयप्रदः ॥ धान्यदःशाश्वतंसौख्यंब्रह्मदोब्रह्मसा
 र्ष्टिताम् ॥ ब्रह्मसार्षितांब्रह्मसमानगतित्वंतथा । भूदीपाश्चान्नवस्त्रांभस्ति
 लसर्पिःप्रतिश्रयान् ॥ नैवेशिकःस्वर्णधुर्य्यान्दत्त्वास्वर्गमहीयते ॥ गृहधा
 न्याभयोपानच्छत्रमात्यानुलेपनम् ॥ मानं ब्रुर्सींस्त्रियंशय्यांदत्त्वात्यंतं
 सुखीभवेत् ॥ प्रतिश्रयःप्रवासिनामाश्रयः ॥ नैवेशिकंविवाहप्रयोजकं
 द्रव्यम् ॥ तथा ॥ श्रांतसंवाहनंरोगिपरिचर्यासुरार्चनम् ॥ पादशौचंदि
 जोच्छिष्टमार्जनंगोप्रदासमम् ॥ तथा ॥ दत्त्वांप्रतिश्रयंलोकेतथादत्त्वैव
 चाभयम् ॥ तथादत्त्वाक्षितिंविप्रेब्रह्मलोकेमहीयते ॥ छत्रदोगृहमाप्नोति
 गृहदोनगरंतथा ॥ तथोपानत्प्रदानेनरथमाप्नोत्यनुत्तमं ॥ इंधनानांप्रदाने
 नदीप्ताग्निर्भुविजायते ॥ गवांश्चासप्रदानेनसर्वपापैःप्रमुच्यते ॥ रुक्मदःस
 र्वमाप्नोतिरूप्यदोरूपमुत्तमम् ॥ वासोदश्वंद्रसालोक्यंसूर्य्यसालोक्यम
 श्वदः ॥ राजोपकरणंदत्त्वारत्नानिविविधानिच ॥ गेयोपस्करकंचैवशि
 ल्प्युपस्करकंतथा ॥ शस्त्राणिविविधानीहद्रव्यंसौख्यकरंतथा ॥ नगरं
 चतथादत्त्वाराजाभवतिभूतले ॥ तथा ॥ गवांकडूयनादभिवंदनाच्चभि
 क्षादिभिरतिथिपूजनाद्गोदानसमंफलम् ॥ यस्तुसंभृत्यसंभारंविवाहेषु

मखेषुच॥दद्यात्पुण्यकृतांलोकानस्यवक्तुंनशक्यते ॥ फलमूलपान
शाकमानंदानान्मुदायुक्तोभवति।मृत्तिकांगोमयंदर्भान्उपवीतमुत्तरा
पोशनंमुखवासंदंतधावनयोदद्यात्सविप्रकुलेसुभगोवाग्मीसुखीचभ
वति ॥ दुर्भिक्षेन्नसुभिक्षेहिरण्यमरण्येपानीयंदत्वाब्रह्मलोकेमही
यते ॥ श्रंतायान्नदःरोगिप्रतिक्रियःस्वर्गविमानेनाधिरोहति ॥ चंद
नशंखमौक्तिकदानात्पितृस्तारयति ॥ दासीदासालंकारदानात्स्वर्गप्रा
प्नोति ॥ रसदानात्कामानवाप्नोति ॥ तथा ॥ धर्मशास्त्रप्रदातारःस
त्रदानरताश्चये ॥ तीर्थतडागंकूपादिनौकासेतुप्रदाश्चये ॥ स्कंधेनता
रयेद्यस्तुतृषार्त्तानांजलप्रदः ॥ पक्वान्ददातिकेदारान्सफलांश्चैवपाद
पान् ॥ षष्टिकोटिसहस्राणिचार्बुदानांचवैत्रयम् ॥ क्रीडंतितेस्वर्गपुरे
ज्ञानविद्याप्रदाश्चये ॥ तथापयस्विनीगौमहिषीकृष्णाजिनमेषीदशधे
नुवृषभमणितुलादानात्कदाचिदपिभैरवःपंथानभवति ॥ रथदानात्रि
दिवंतालवृंतचामरातपत्रपादुकापादपीठदंडदानेनशोभनागतिः ॥
यज्ञोपवीतमालासंध्योपकरणदानेनब्रह्मवर्चस्यम् ॥ समुद्रजानांशंखा
दिभद्राणांद्रव्याणांचदानेनयशस्वीभवतिसमृद्धश्च ॥ शिविकादानाद
ग्निष्टोमफलं ॥ नृवाह्यदानादश्वमेधफलम् ॥ दासीदानादसुलोकं ॥ गर्दभो
ष्ट्रदानेकुबेरलोकम् ॥ तुरंगमदानेनस्वर्गम् ॥ श्वेतस्यदशगुणम् ॥ चतुस्तु
रंगमसहितरथदानेराजसूयफलम् ॥ करिंदानात्करिणीदानाच्चस्वर्गा
त्प्रच्युतोराराजाभवति।चतुःकुंजररथदानेनपृथ्वीदानफलम्।कपिलादा
नेनसर्वयज्ञफलम्॥अजादानेनाग्निलोकम् ॥ महिषदानेनयमलोकनि
वासः॥आरण्यपशुदानेनवायुलोकम् ॥ लोकेऽष्टतमंसर्वमात्मनश्चापि
यत्प्रियम् ॥ दातव्यंतत्पितृभ्योवैतेभ्यएवांक्षयार्थिना ॥ कूपा

रामतडागानिक्षेत्रयोषागृहाणिच ॥ दत्त्वा तु मोदते स्वर्गे नित्यमाचंद्रता
 रकम् ॥ कौशेयक्षौममार्गचदुकूलमहतंतथा ॥ पक्वान्नानिकरंभंच
 मिष्टान्नघृतशर्कराः ॥ कृसरामधुपर्कचपयःपायसमेवच ॥ स्निग्धमु
 ष्णंचयोदधाज्ज्योतिष्टोमफलंलभेत् ॥ अपाकरणाद्वारिष्यस्यदारिष्य
 हरणाद्भीतस्यत्राणाद्वृद्धस्यमोचनाद्रोगशमनात्स्वर्गंभवति ॥ यस्तु
 सर्वाणिदानानिब्राह्मणेभ्यःप्रयच्छति ॥ सप्राप्यननिवर्त्ततदेवंशांतम
 नामयम् ॥ किंस्वित्स्वकैःपूजनैर्ब्राह्मणानांलोकं गत्वा ब्राह्मणंसत्यसं
 ज्ञम् ॥ दैवैर्विप्रैःपूज्यमानःसुखीस्यात्तस्माद्देयंप्रार्थितंब्राह्मणेभ्यः ॥
 इतिसामान्यतयोक्तानि दानफलानि पूर्वसूरिमतानि ॥

इतिमहीधरकृतेदानसंग्रहेसामान्यतोदानमाहात्म्यकथ
 नेनामद्वितीयःकोशः ॥ २ ॥

अथदानकालेप्रसंगेन पुण्यतिथ्यादयउच्यंते ॥

तिथीनांप्रवरायस्माद्ब्रह्मणासमुदाहृता ॥ प्रत्यपादिपदेपूर्वप्रतिपत्ते
 नचोच्यते ॥ स्नानंदानंशतगुणंकार्तिकेयातिथिर्भवेत् ॥ आश्वि
 नेमासिसंप्राप्तेद्वितीयोभयपक्षजा । दानंप्रदत्तंयत्तस्यामनंतफलमुच्य
 ते ॥ वैशाखमासेयापुण्यातृतीयाशुक्लपक्षजा ॥ अनंतफलदादातुः
 स्नानदानादिकर्मसु ॥ शिवाशांतासुखाचैवचतुर्थीत्रिविधास्मृता ॥
 मासिभाद्रपदेशुक्लाशिवलोकैषुपूजिता ॥ तस्यांस्नानंतथादानमुप
 वासोजपस्तथा ॥ भवेत्सहस्रगुणितंप्रसादादंतिनस्तदा ॥ माघमा
 सितथाशुक्लायाचतुर्थीसुपुण्यदा ॥ साशांताशांतिदानित्यंशांतिकु
 र्यात्सदैवहि ॥ स्नानदानादिकंसर्वमस्यामक्षय्यमुच्यते ॥ मार्गशीर्षस्य
 शुक्लायाश्रावणेयाचपंचमी ॥ स्नानदानेबहुबलानांगलोकंप्रदायि

नी ॥ भाद्रपद्यां च यद्दानं तदक्षयकरं भवेत् ॥ शुक्लपक्षे च सप्तम्यां
सूर्यवारो भवेद्यदि ॥ सप्तमी विजयानामतत्र दत्तं महाफलम् ॥ शुक्ल
पक्षे च सप्तम्यां नक्षत्रं पंचतारकम् ॥ यदा च स्यात्तदा ज्ञेया जयानामेति
सप्तमी ॥ स्नानदानादिकं तस्यां भवेच्छतगुणं सदा ॥ रोहिण्याश्लेषा
हस्ताः पंचतारकाः ॥ यामार्गशीर्षमासस्य शुक्लपक्षे तु सप्तमी ॥ न
दां साकथिता पूर्वैः सर्वानंदकरी स्मृता ॥ स्नानदानादिकं सर्वमस्याम
क्षय्यमुच्यते ॥ रेवतीयत्र सप्तम्यामादित्यदिवसे भवेत् ॥ तद्दानं शत
साहस्रमिति प्राह दिवाकरः ॥ पौषे मासि यदा शुक्ले पक्षेष्टम्यां बुधो भवे
त् ॥ तदा तु सामहापुण्यामहारुद्रेति पुण्यदा ॥ अष्टकासु च य
द्दत्तं तदनंतमुदाहृतम् ॥ हेमंतशिशिरयोश्चतुर्णामपरपक्षाणामष्टमीष्वष्ट
का ॥ द्वादशपौर्णमासी द्वादशमावास्यासु चेति । आश्विनस्य च मासस्य
नवमीशुक्लपक्षजा ॥ जायते कोटिगुणितं दानं तस्यां सदा भुवि ॥ ज्येष्ठ
स्य शुक्लदशमी संवत्सरमुखी स्मृता ॥ तस्यां स्नानं प्रकुर्वीत दानं चैव
विशेषतः ॥ एकादश्यां सिते पक्षे पुण्यक्षयत्र सत्तमम् ॥ तिथिर्भवति
साम्रोक्ता विष्णुना पापनाशिनी ॥ दानं यद्दीयते तस्यामक्षय्यं कथितं
फलम् । मासि भाद्रपदेशुक्ला द्वादशी श्रवणान्विता ॥ महती द्वादशी ज्ञेया
दाने लक्षगुणा स्मृता ॥ भाग्यर्क्षसंयुता चैत्रे द्वादशी स्यान्महाफला ॥
हस्तयुक्ता तु वैशाखे ज्येष्ठे तु स्वातिसंयुता ॥ ज्येष्ठायां तु तथा षाढे मूलोषे
ता च वैष्णवे ॥ वैष्णवे श्रावणे मासीति ॥ तथा भाद्रपदे मासि श्रवणे न तु
संयुता ॥ आश्विने द्वादशी पुण्या भवत्याजर्क्षसंयुता ॥ कार्तिके रेवतीयु
क्ता सौम्ये कृत्तिकया तथा ॥ फाल्गुने पुण्यसहिता द्वादशी पावनी परा ॥
नक्षत्रयुक्ता स्वेता सुस्नानं दानमुपोषितम् ॥ सकृत्कृतं मनुष्याणाम

क्षय्यफलदायकम् ॥ यस्तु चैत्रत्रयोदश्यां स्नानं दानं समाचरेत् ॥ फलं
 शतगुणं तस्य कर्मणो लभते नरः ॥ कृष्णपक्षे त्रयोदश्यां माघास्विदुःकरे
 विः ॥ यदा तदा गजच्छाया श्राद्धे पुण्यैरवाप्यते ॥ चैत्रे चतुर्दशी शुक्ला श्रा
 वणे प्रोष्ठपादयोः ॥ माघस्य या कृष्णपक्षे दाने बहु फला हि सा ॥ वैशा
 खी कार्तिकी माघी पौर्णिमा तु महा फला ॥ पौर्णमासीषु सर्वासु मास
 र्क्षसहिता सुच ॥ स्नानानामिह दानानां फलं दशगुणं स्मृतम् ॥ यस्यां
 पूर्णे दुना योगं याति जीवो महाबलः ॥ पौर्णमासी तु सा ज्ञेया महापूर्वा
 द्विजोत्तमैः ॥ स्नानं दानं तथा जाप्यमक्षय्यं तत्तदा स्मृतम् ॥ आश्वे
 यंतु यदा ऋक्षं कार्तिक्यां भवति क्वचित् ॥ महती सा तिथिर्ज्ञेया स्नानं
 दानेषु चोत्तमा ॥ ब्रह्मर्क्षे सामहा पुण्या देवानामपि दुर्लभा ॥ अमा
 वै सोमवारेण रविवारेण सप्तमी ॥ चतुर्थी भौमवारेण विषुवत्सदृशं
 फलम् ॥ तथा बुधाष्टमी ज्ञेया सूर्यग्रहसमं फलम् ॥ तथा ॥ अमा
 सोमे तथा भौमे सूर्ये सूर्या बुधाष्टमी ॥ अंगारके चतुर्थी च तथैव च चतु
 र्दशी ॥ सूर्यग्रहसहस्राणां पुण्यं दाने समं स्मृतम् ॥ अमावास्याय
 दामैत्रविशाखा ऋक्षयोगिनी ॥ श्राद्धे पितृगणस्तृप्तिं तदामोत्यष्टवा
 र्षिकीम् ॥ तथार्द्रादि त्रये पुण्या चामातृत्तिप्रयच्छति ॥ वासवाजैक
 पादर्क्षे पितृणां तृप्तिमिच्छता ॥ वारुणे वायुदैवत्ये देवानामपि दुर्लभा ॥
 माघासिते पंचदशी कदाचिदुपैतियोगं यदि वारुणेन ॥ ऋक्षेण कालः
 सपरः प्रदानेन ह्यल्पपुण्यैर्ननु जालभंते ॥ अथ युगादि प्रभृतयः ॥
 नवम्यां शुक्लपक्षस्य कार्तिके निरगात्कृतम् ॥ त्रेतासिततृतीयायां
 वैशाखे समपद्यत ॥ दर्शे तु माघमासस्य प्रवृत्तं द्वापरं युगं ॥ कलिः कृष्णत्र
 योदश्यां न भस्ये मासि निर्गतः ॥ युगादयः स्मृता ह्येते दत्तस्याक्षयकार

काः ॥ सूर्यस्यसिंहसंक्रांत्यामंतःकृतयुगस्यतु ॥ तथावृश्चिकसंक्रां
 त्यामन्तःकृतयुगस्यच ॥ ज्ञेयस्तुवृषसंक्रांत्याद्वापरांतस्तुसंख्यया ॥
 तथाचकुंभसंक्रांत्यामंतःकलियुगस्यच ॥ दानानितुयुगांतेषुयुगांतफ
 लसाक्षिणः ॥ अश्वयुक्शुक्लनवमीद्वादशीकार्तिकस्यतु ॥ चैत्रस्यतुतृ
 तीयायातथाभाद्रपदस्यतु ॥ फाल्गुनस्यत्वमावास्यापौषस्यैकादशी
 तथा ॥ श्रावणस्याष्टमीकृष्णातथाषाढस्यपौर्णिमा ॥ आषाढमासे
 दशमीमाघमासस्यसप्तमी ॥ कार्तिकीफाल्गुनीचैत्रीज्येष्ठेपंचदशी
 तथा ॥ मन्वंतरादयश्चैतादत्तस्याक्षयकारकाः ॥ दर्शेशतगुणंदा
 नंतच्छतघ्नंदिनक्षये ॥ शतघ्नंसूर्यसंक्रांतौशतघ्नंविषुवेततः ॥ युगा
 दौतच्छतगुणमयनेतच्छताहतम् ॥ सोमग्रहेतच्छतघ्नंतच्छतघ्नरवि
 ग्रहे ॥ असंख्येयंव्यतीपातेदानंवेदविदोविदुः ॥ अथव्यतीपातवैधृति
 योगौ ॥ पंचाननस्थौगुरुभूमिपुत्रौमेषेरविःस्याद्यदिशुक्लपक्षे ॥
 पाशाभिधानाकरभेणयुक्तातिथिर्व्यतीपातइतीहयोगः ॥ अस्मिन्हि
 गोभूमिहिरण्यवस्त्रदानेनसर्वपरिहायपापम् ॥ शूरत्वमिद्वत्त्वमना
 मयत्वं ॥ मन्वाधिपत्यंलभतेमनुष्यः ॥ तथा ॥ क्रांतिसाम्यसमयः
 समीरितःसूर्यपर्वसदृशोमुनीश्वरैः ॥ तत्रदत्तहुतजप्तपूजनंकोटिको
 टिगुणमाहभागवः ॥ अथअर्थः ॥ सूर्याचंद्रमसोः क्रांतिसाम्ये
 पुण्यकालद्वयंसंभवति ॥ एकःव्यतीपाताख्यः ॥ अपरोवैधृत्याख्यः ॥
 तत्रसंक्रांतिसाम्यलक्षणस्यव्यतीपातस्य गंडोत्तरार्द्धादारभ्यक्रम
 शः सार्द्धेषुपंचसुयोगेषुसंभवोस्ति ॥ वैधृतोचव्यतीपातेदत्तमक्ष
 यंकृद्रवेत् ॥ इतितुसूक्ष्मव्यतीपातवैधृत्यौ । स्थूलौतुसप्तविंशति
 योगेषुप्रसिद्धौ ॥ अथोपरागकालः ॥ चंद्रस्ययदिवाभानोराहु

णासहसंगमः ॥ उपरागइतिख्यातस्तत्रानंतफलंस्मृतम् ॥ इंदोर्लक्षगुणंपुण्यंतदशघ्नंरवेर्ग्रहे ॥ रविवारेरवेग्रासःसोमेसोमग्रहस्तथा ॥ चूडामणिरितिख्यातस्तत्रानंतफलंस्मृतम् ॥ अथ प्रकीर्णकालाः अमावास्याव्यतीपातोग्रहणंचंद्रसूर्ययोः ॥ मन्वादयोयुगादिश्वसंक्रांतिवैधतिस्तथा ॥ दिनक्षयंदिनुछिद्रमवमंचतथापरम् ॥ द्वेऽप्यनेविषुवद्युग्मंषडशीतिमखंतथा ॥ चतस्रोविष्णुपद्यश्चपुत्रजन्मादिचापरम् ॥ आदित्यादिग्रहाणांचनक्षत्रैःसहसंगमे ॥ विज्ञेयःपुण्यकालोयंज्योतिर्विद्धिर्विचार्य्यच ॥ तत्रदानादिकंकुर्यादात्मनःपुण्यवृद्धये ॥

इतिमहीधरकृतेदानसंग्रहेपुण्यकालकथनं नाम तृतीयः

कोशः ॥ ३ ॥

अथदानप्रतिगृहीत्रोर्द्धर्मानिरूप्यन्ते ॥ ॥ दैवंवाकर्म पित्र्यवानाशुचिःकर्तुमर्हति ॥ स्नानमेवद्विजातीनांपरंशुद्धिकरंस्मृतम् ॥ अतःस्नातोर्हतामेतिदानेचैवप्रतिग्रहे ॥ कृतमस्नायिनाकर्मराक्षसत्वायकल्पते ॥ प्रजापतिःकर्मगुप्तेऽपवित्रंमसृजत्पुरा ॥ रक्षोग्रमेतत्परमंमुनिभिःकल्पितंसदा ॥ तस्मात्तत्करयोर्द्धर्माददत्ताप्रतिगृह्णता ॥ स्नानहोमजपादीनिकुर्वतांचविशेषतः ॥ दानंप्रतिग्रहोहोमोभोजनंबलिरेवच ॥ साङ्गुष्ठेनसदाकार्प्यमसुरेभ्योन्यथा भवेत् ॥ सांगुष्ठेनअंगसंगतांगुष्ठेनेत्यर्थः ॥ एतान्यनेककार्प्याणिदानादीनिविशेषतः ॥ अंतर्जानुविधेयानि तद्वदाचमनंतथा । नाधिकारीमुक्तकचोमुक्तचूडस्तथैवच ॥ दानेप्रतिग्रहेयज्ञेब्रह्ममज्ञादिकर्मसु ॥ देवाः समेत्यवस्त्रांहि तच्चपुंसामकल्पयन् ॥ ततश्चवास

साहीनमसंपूर्णप्रचक्षते ॥ सोत्तरीयस्ततःकुर्च्यात्सर्वकर्माणिभा
 विनः ॥ अधौतंकाकधौतंचपरिदध्यान्नवाससी ॥ ददानःप्रतिगृहं
 श्वदध्यादहतमेवच ॥ सुस्नातःसम्यगाचांतः कृतसंध्यादिक्रियः
 कामक्रोधविहीनश्च पाषंडस्पर्शवर्जितः ॥ जितेंद्रियःसत्यवादीपात्रं
 दाताचशस्यते ॥ प्रमीतेगोत्रपुरुषेसूतकेवासमागते ॥ दशरात्रमनर्हः
 स्यात्कर्तुंदानप्रतिग्रहौ ॥ पिंडोदकादिमृतकेदातुंप्रेताययुज्यते ॥
 आच्छिन्नायांतथानाड्यांदानार्होजातसूतके ॥ शुचिर्वाप्यशुचिर्वापि
 दद्यादभयदक्षिणाम् । शुचिनाऽशुचिनावापिग्राह्यं ह्यभयमुत्तमम् ॥
 कुशोपरिनिविष्टेन तथायज्ञोपवीतिना ॥ देयंप्रतिगृहीतव्यमन्यथाविफ
 लंहितम् ॥ प्रणवोजगतांवीजंवेदानामादिरेवच ॥ एषएवपरं
 ब्रह्मपवित्रमयमुत्तमः ॥ तस्मात्प्रणवमुच्चार्यकार्यौदानप्रतिग्रहौ ॥
 योर्चितंप्रतिगृह्णातियोर्चयित्वाप्रयच्छति ॥ तावुभौगच्छतः
 स्वर्गोविपरीतेविपर्ययः ॥ दद्यादानंयथाशक्त्यासदाभ्यर्चनपूर्व
 कम् ॥ ब्राह्मणश्चापिगृह्णीयाद्भक्त्यादत्तंप्रतिग्रहम् ॥ प्रश्नपूर्वतुयोदद्या
 द्गृह्णीयाच्चप्रतिग्रहम् ॥ सपूर्वनरकंयातिब्राह्मणस्तदनंतरम् ॥ प्रश्नपूर्व
 कमिति ॥ एतमध्यायमेतमनुवाकंवायद्विषमस्खलितंपठसि
 तदातेएतावद्दामीत्युक्त्वा तथाकृतेयद्वीयतेतत्प्रश्नपूर्वकम् ॥ अपमा
 नेनयोदद्यागृह्णीयायः प्रतिग्रहम् ॥ तावुभौनरकेमग्नौवसेतांशरदांश
 तम् ॥ कार्प्यलोभेनयोदद्याद्गृह्णीयायःप्रतिग्रहम् ॥ दाताग्नेनरकंयाति
 ब्राह्मणस्तदनंतरम् ॥ प्रतिग्रहोयोविधिनागृहीतः प्रतिग्रहोयोवि
 धिनाप्रदत्तः ॥ द्वयोःप्रयोगश्चरमंतुकार्प्यःश्रेयस्तथामोतिनसंशयोत्र
 अथोभयधर्माः ॥ दानेविधिमविज्ञायनहितदातुमर्हति ॥ प्रति

ग्रहानभिज्ञश्च गृह्णन्निरयमश्नुते ॥ अथ पात्रपरीक्षा ॥ शीलसंवसनाज्ज्ञे
यं शौचं व्यवहारतः ॥ प्रज्ञासंकथनाज्ज्ञेयात्रिभिः पात्रपरीक्ष्यते ॥ संक
थनं शुद्धभावेन विद्या कथा ॥ अपि सद्रूपमात्रं हि न देयं विचिकित्सता ॥
मनसा ह्यननुज्ञातः प्रतिगृह्णीत नैव हि ॥ ददानः प्रतिगृह्णन् श्रयतो लोभभा
यादिना ॥ नामोति श्रेयसायोगं निरयं चैव गच्छति ॥ देशकालविधानाद्यै
र्हीनं दानं भयावहम् ॥ दातुः प्रतिगृहीतुश्च गृहीतमसंतः सदा ॥ नामगोत्रे स
मुच्चार्य प्राङ्मुखो देयकीर्तनात् ॥ उदङ्मुखाय विप्राय दत्वांते स्वास्ति
वाचयेत् ॥ केचित्तु ॥ दद्यात्पूर्वमुखो दानं गृह्णीयादुत्तरामुखः ॥ आयुर्वि
वर्द्धते दातुः क्षीयते गृहीतरीति पठन्ति ॥ तच्च वैवाहिकविप्राविरुद्धम् ॥
नान्यत्र उक्तं च प्राक्प्रत्यगास्या बुद्धाहेदातृग्राहकयोः स्थितिः ॥ दद्यात्पू
र्वमुखो द्रव्यमेष एव विधिः सदेति ॥

इति महीधरकृते दानसंग्रहे दातृप्रतिगृहीतृधर्मकथनं नाम
चतुर्थः कोशः ॥ ४ ॥

अथ पर्वदानानि ॥ तदा त्रैसंक्रांतिसहितमासदानविधिः ॥
संक्रातौ यानि दानानि हव्यकव्यानि दातृभिः ॥ तानि नित्यं ददात्यर्कः
पुनर्जन्मनि जन्मनि ॥ तत्रादौ मेषसंक्रमे ॥ मेषसंक्रमणे भानोर्मेषदा
नं मह्यफलम् ॥ तथा ॥ मेषदानेन विविधपापं विलयमृच्छतीति ॥ अयने
विषुवे चैवोपरागेऽस्वप्नदोषके ॥ चित्तवित्तानुसारेण कार्थ्यतीर्थे गृहेऽपि वा
इति ॥ आदौ शंकरं ब्रह्माणं विष्णुं गौरीं गायत्रीं च यथाशक्तिसुवर्णप्रतिमा
सुसंपूज्य शच्यासहेंद्रं ग्रहान् लोकपालान् सौवर्णान् कृत्वा संपू
ज्य तत्पश्चिमतः स्वगृह्येणाग्निप्रतिष्ठाप्य स्थापितदेवतामंत्रैस्तिलाज्यै
रष्टोत्तरशतविंशदाहुतीरष्टाष्टसंख्याकाहुतीर्वाहुत्वा ततो मेषमेषीं वा

श्रीः ।

अथ

दानसंग्रहप्रारम्भः ।

यमाधारादूर्ध्वसकलमपि भित्त्वाकुलपथंहसांतं भौजंगीदंश
शतदलांतःस्थितगुरुम् ॥ समालिंग्यापांगैरमृतरसवृष्टिन्नित
नुबेतमीडेपंचाशल्लिपिभिरतितेजोमयतनुम् ॥ १ ॥ सदान
धर्मनिरतानामनुतुष्ट्यैमहीधरःसूरिः ॥ तंत्रं पुरोधसांसत्कर्म
प्यानांसुखायटीहय्याम् ॥ २ ॥

आलोक्यदानखंडान् दानपरत्वं हि सर्वशास्त्रेषु ॥ तस्माच्च दानसं-
ग्रहं पर्वपरत्वं चिनोमि सद्ग्रन्थम् ॥ तत्रादौ दानसंज्ञा ॥ परस्वत्वो-
त्पत्त्यंतोद्रव्यत्यागो दानम् ॥ तथा ॥ अर्थानामुदिते पात्रे श्रद्धया प्र-
तिपादनम् ॥ दानमित्यभिनिष्ठं सेवापंथ्यायिकं न चेत् ॥ तत्तु त्रि-
विधमुक्तं गीतासु ॥ दातव्यमित्यद्दानं दीयते नुपकारिणे ॥ देशे काले
च पात्रे च तद्दानं सात्त्विकं स्मृतम् ॥ १ ॥ यत्तु प्रत्युपकारार्थं फलमुद्दि-
श्य वा पुनः ॥ दीयते च परिक्रिष्टं तद्राजसमुदाहृतम् ॥ २ ॥ अदेश-
काले यद्दानमपात्रेभ्यश्च दीयते ॥ असत्कृतमवज्ञातं तत्तामसमुदाहृत-
म् ॥ ३ ॥ गारुडे ॥ अर्हते यत्सुवर्णादिदानं तत्कायिकं स्मृतम् ॥
आर्त्तानामभयं दानमित्येतद्वाचिकं स्मृतम् ॥ विद्यामादाय यज्जप्ये-
त्तद्दानं मानसं द्विजाः ॥ अथ दानपात्रम् ॥ स्वाध्यायी तपसा युक्तः
प्रतिग्रहविवाजितः ॥ शूद्रान्नपानकं नायात् तत्पात्रं श्रेष्ठमुच्यते ॥ प्रथमं

१ टीहरीतिग्रामनाम ।

दानमाचार्येदत्वाश्रेष्ठमनुक्रमात् ॥ ततोऽन्येषांचविप्राणांदद्यात्पा
 त्रानुसारतः ॥ सन्निधावस्थितान् विप्रान् दौहित्रं विट्पतिन्तथा ॥
 भागिनेयं विशेषेण तथा बंधून् गृहागतान् ॥ नातिक्रमेन्नरस्त्वेतान्सु
 मुखानि पिभावंतः ॥ अतिक्रम्य महारौद्रं रौरवं नरकं व्रजेत् ॥ समम
 ब्राह्मणे दानं द्विगुणं ब्राह्मणब्रुवे ॥ सहस्रगुणमाचार्ये त्वनंतं वेदपारगे ॥
 एतेषां लक्षणानि ॥ ब्रह्मबीजसमुत्पन्नो मंत्रसंस्कारवर्जितः ॥
 जातिमात्रोपजीवी च भवेद्ब्राह्मणः स तु ॥ गर्भाधानादिभिर्युक्तस्त
 थोपनयनेन च ॥ न कर्मविन्नचाधीतः स भवेद्ब्राह्मणब्रुवः ॥ नाना
 विधानिकर्माणिकर्त्ता कारयिता च यः ॥ सर्वधर्मविधिज्ञश्च स वै आचा
 र्य उच्यते ॥ वेदवेदांगशास्त्राणां पारगः समदर्शनः ॥ दंभलोभादिर
 हितः स ज्ञेयो वेदपारगः ॥ अथ द्रव्यविभागः ॥ स्वस्य त्रिभागं
 वित्तस्य जीवनाय प्रकल्पयेत् ॥ भागद्वयं तु धर्मार्थमनित्यं जीवितं
 यतः ॥ अथाग्राह्यदानानि ॥ अजिनं मृतशय्यां च मेर्षीं चोभयतो
 मुखीम् ॥ कुरुक्षेत्रे च गृह्णानो न भूयः पुरुषो भवेत् ॥ मनुः ॥ हिरण्यं
 भूमिमश्वंगामज्जं वा स स्तिलान् घृतम् ॥ अविद्वान् प्रतिगृह्णानो भस्मी भ
 वतिकाष्ठवत् ॥ अविद्वान् विद्यातपोभ्यां हीनः ॥ अथ दान
 कालः ॥ दर्शशतगुणं दानं तद्दशघ्नं दिनक्षये ॥ शतघ्नं तच्च संक्रांतौ
 शतघ्नं विषुवे ततः ॥ युगादौ तच्छतगुणमयने तच्छताहतम् ॥ सोमग्रहे
 तच्छतघ्नं तच्छतघ्नं रवे ग्रहे ॥ तच्छतघ्नं व्यतीपाते दानं वेदविदो विदुः ॥
 वैशाखी कार्तिकी माघी पौर्णिमा तु महाफला ॥ पौर्णमासीषु सर्वासु
 मासर्क्षसहिता सुच ॥ दत्तानामिह दानानां फलं शतगुणं भवेत् ॥ ग्रह
 णोद्वाहसंक्रांतियान्नातिप्रसवेषु च ॥ दानं नैमित्तिके ज्ञेयं रात्रावपि न दु

द्विजंचवस्त्रालंकारादिभिर्यथाविभवंसंपूज्य अयेत्यादिसर्वपापक्षय
दुःस्वप्नसूचितारिष्टविनाशपुत्रपौत्रधनकीर्तियशः कामअमुंमेषंसुव
र्णतिलकाद्यलंकृतंकौशेयपरिधानंसप्तधान्यसमायुक्तं पुष्पोपहारंस
म्मुखस्थापितलवणं ब्रह्मविष्णुशिवादिप्रतिमायुतंमुक्तोपस्करममुं
गोत्रायशर्मणेषुपूजितायतुभ्यमहंसंप्रददे नममेतिदत्त्वा सुवर्णदक्षिणां
दद्यात् ॥ मंत्रस्तु । वाङ्मनःकायजनितंयत्किंचिन्ममदुष्कृतम् तत्स
र्वविलयंयातुत्वद्दानेनोपसंचितम् ॥ प्रतिमास्थापनंतिलकुंभे।मेषंप्रत्य
क्षं ॥ वासुवर्णनिर्मितं । विप्रोदेवस्येत्वेतिशृंगेप्रगृह्ययथाशाखंकामस्तु
तिपठेत् । प्रतिगृहीतृविप्रस्यसंभाषणंमुखावलोकनंचवर्जयेत् ॥ शतसु
वर्णेनवित्तानुसारतोवातंकुर्ग्यात् ॥ तद्दिने ॥ ददातियोहिमेषादौसकूनं
बुधटान्वितान् ॥ पितृनुद्दिश्यविप्रेभ्यःसर्वपापैःप्रमुच्यते ॥ अथकृत्यं
शीतलेनसुगंधेनवारिणापूरितंघटम् ॥ शुक्लचंदनलिप्तांगंपुष्पदामोपशो
भितम् । दध्योदनभृतंकुर्ग्याच्छरावंतस्यचोपरि । उपानच्छत्रसंयुक्तंध
र्माख्यंकल्पयेद्घटं । पुष्पाक्षतान्गृहीत्वावैचेममंत्रमुदीरयेत् । नमोस्तु
विष्णुंरुमायनमःसागरसंभव ॥ अपांपूर्णोद्धरास्मान्स्त्वंदुःखसंसारसा
गरात् ॥ प्रार्थना । उदकुंभोमयादत्तोग्रीष्मकालेदिनेदिने । शीतोदकप्रदा
नेनप्रीयतामधुसूदनः । इति । प्रत्यहंधर्मघटकोवस्त्रसंवेष्टितो नवः । ब्राह्मण
स्यगृहेदेयः शीतामलजलः शुचिः ॥ वसंतग्रीष्मयोर्मध्येपानीयंयः प्रय
च्छति ॥ प्लेषलेसुवर्णस्यफलमाप्नोतिमानवः ॥ मार्गशीर्षात्स्मार
भ्य चोदकुंभंतुष्यःक्षिपेत् ॥ दिनेदिनेसहस्रस्यगवांदानफलंलभेत् ॥
तत्सांगतासिध्यैमासिमास्युद्यापनंकार्यम् ॥ मंडकावेष्टिकाभिश्च
पकान्नैःसार्वकामिकैः । उद्दिश्यशंकरंविष्णुंब्रह्माणमथवापितृन् ॥

ततः सतिलं प्रोक्ष्यानेन मंत्रेण दद्यात् ॥ एष धर्मघटो दत्तो ब्रह्मविष्णु
शिवात्मकः ॥ अस्य प्रदानात् सकलाममसंतु मनोरथाः ॥

तत्र सक्तुदानमंत्रः ॥

सक्तुवोधर्मदानित्यं ब्रह्मणः प्रीतिकारकाः । त्वद्दानान्मम दुष्कर्मक्षयो
स्तु सुखमस्तु मे । अथ मासव्रतनियमः ॥ वैशाखे पुष्पलवणं वर्जयित्वा
च गोप्रदः भूत्वा विष्णुपदे कल्पं स्थित्वा राजा भवेदिह १ एकभक्तव्रतं वा
इति कान्तिव्रतं । प्रत्यहं स्नात्वा नृसिंहं पूजयित्वा प्रत्यहं कनकदानमन्ते गो
दानमिति ज्ञानातिव्रतम् ॥ तथा । अपूपानां प्रदानेन वैशाखे स्वर्गमश्नुते
गन्धमाल्येतथा द्रेये मधुसूदनतुष्टय इति ॥ अथ वृषसंक्रमणे ॥ वृषसंक्र
मणे दानं गवां प्रोक्तं तथैव च ॥ अथ जलधेनुदानम् ॥ जलकुंभं सुवर्ण
रत्नान्वितम् ॥ सुवर्णशृंगं चतुरौघ्यखुरान्वितमिति स्मृतम् ॥ रत्नगर्भं
मशेषैस्तु ग्राम्यैर्धान्यैः समन्वितम् ॥ सितवस्त्रयुगच्छत्रां दूर्वापल्लवशो
भिताम् । कुष्ठमांसीमुरोशीरवालकामलकैर्युतां ॥ प्रियंगुपत्रसहितां सि
तवस्त्रोपशोभिताम् ॥ सच्छत्रांसदुपानत्कां दर्भविष्टरसंयुताम् ॥ च
तुर्भिः संभृतां भूयस्ति लपात्रैश्चतुर्दिशम् ॥ स्थगितं तद्धिपात्रेण घृतक्षी
रवतामुखे ॥ तिलपात्राणि ताम्रमयानि । दधिपात्रं कांस्यमयम् । उपो
षितो वासुदेवं जलेशयं संपूज्य संकल्पयेत् ॥ अथेत्यादि मम सक
लपापक्षयपूर्वकम् इह जन्मानि नानाविधसुखैश्वर्यभोगोत्तरपारे परम
धाम्नावाप्तये इमां जलधेनुं स्वर्णप्रतिमादिपूवोक्तोपस्करयुतां गोत्रा
यशर्मणे तुभ्यं संप्रददेन मम ॥ प्रार्थना ॥ जलशायि अगन्नाथ सर्वभूताभयं
कर ॥ जलधेनुप्रदानेन प्रसिद्धत्वं सदा मम ॥ जलधेनुं विप्रं च वस्त्रादिभिः
संपूज्य ॥ जलधेनुं गृहधेनुं च दद्यात्ततो या लक्ष्मीरित्यादि च पठेत् ॥

अथ ज्येष्ठमासे ॥ छत्रदानात्तथाज्येष्ठे सर्वान्कामान्समश्नुते ॥ त्रिविक्रमस्य प्रीत्यर्थं तालवृत्तं तु दापयेत् ॥ जलशायिनं संपूज्य एकभक्तव्रतस्सदा ॥ जलदानं वस्त्रदानं गोरसैर्ब्रह्मभोजनम् ॥ उदकुंभां बुधेनुश्च तालवृत्तं च चंदनम् ॥ त्रिविक्रमस्य प्रीत्यर्थं दातव्यं ज्येष्ठमासि च ॥

इति ज्येष्ठकृत्यम् ॥

अथ मिथुन संक्रांतौ ॥ अन्नपानशय्यादानं वस्त्रान्नपानदानानि मिथुने विहितानि चेति अन्नदाने अन्नसंपूज्य अयेत्यादि मम श्रीप्रसादसिद्धिद्वारानेकजन्मस्वन्नवृद्ध्यै इदमन्नं प्रजापतिदेवतं सुवर्णदक्षिणासहितं ॥ प्रार्थना ॥ अन्ने मे वयतो लक्ष्मीरन्नमे वजनार्दनः ॥ अन्नं ब्रह्माखिलत्राणमस्तु मे सर्वजन्मनि ॥ वस्त्रं सूक्ष्मवस्त्रद्वयं बहुमूल्यमंष्टहस्तमितं दद्यात् ॥ अयेत्यादि ॥ समस्तपापक्षयकामः इमे बार्हस्पत्ये वाससी गोत्राय शर्मणे तुभ्यं ॥ दानमंत्रः ॥ शीतवातोष्णसंत्राणं लज्जायारक्षणं वरम् ॥ देहालंकरणं वस्त्रमतः शांतिं प्रयच्छ मे ॥ शय्या ॥ अष्टदले तिलप्रस्थं निक्षिप्य तस्मिन् शय्यामास्तीर्य तस्याः समंतादीशानादिकोणचतुष्टये शिरोभागे च पंचकुंभान् क्रमात् घृतकुंकुमगोधूमजलैः पूरयित्वा शीर्षे घृतैः पूरयित्वा संस्थाप्य अयेत्यादि ॥ मम समस्तपापक्षयपूर्वकाप्सरोगणसेवायुतविमानकरणकेंद्रपुरगमनतत्तरषष्टिसहस्रवर्षाधिकरणकं क्रीडनस्त्रीसंघसमावृतं सर्वलोकमहितं वतदुत्तरषष्टियोजनमंडलराज्यभोगतदनंतरशिवसायुज्यावाप्तिकामः शय्यादानमहं करिष्ये ॥ द्विजं सपत्नीकं कृत्वा वस्त्रालंकारादिभिः संपूज्य शय्यायां लक्ष्मीनारायणप्रतिमां स्वर्णमयीं संपूज्य तां प्रदक्षिणीकृत्य प्रमाण्यैर्देव्यैश्चित्तुर्दिक्षु प्रणम्य तिथ्याद्युल्लिख्य मम सर्वप

पक्षयेत्यादिशिवसायुज्यकामोगोत्रायशर्मणोऽसुपूजिताय इमांशय्या
 मीशानादिकोणचतुष्टयस्थापनक्रमेण घृतकुंकुमगोधूमजलघृतकुंभ
 समेतांहंसतूलीप्रच्छन्नांशुभ्रगंडोपधानिकां प्रच्छादनपटीस्तृतां
 सप्तधान्ययुतां तांबूलायतनादर्शैलालवंगकर्पूरयुतां सुगंधिपरिमलभो
 ग्यवस्तुचंदनागरुदीपिकोपानच्छत्रचामरासनयुतां भोजनभाजनज
 लपात्रयुतां पंचवर्णवितानां केशप्रसाधिन्यंजनशलाकापुष्पमालादि
 युतां लक्ष्मीनारायणप्रतिमासहितां युक्तोपस्करामंगिरोदैवतां ० तुभ्य
 महंसंप्रदेनममेति शय्योपवेशितविप्रहस्ते साक्षतकुशोदकं क्षिपेत् ॥
 मंत्रः । यथानकृष्णशयनं शून्यं सागरजातया ॥ तथा शय्या
 ममाप्यस्त्वशून्या जन्मजन्मनि ॥ ततस्सुवर्णदक्षिणां दद्या
 द्यूयसीं दक्षिणां ब्राह्मणभोजनं च पुनः दद्यात् ॥ अथाषाढमासे ॥ वि
 श्वरूपधरं हरिं पूजयेत् ॥ एकभक्तेन भक्तेन वा प्रत्यहं सुवर्णदानेन स्ना
 नेन च रूपावाप्तिव्रतम् ॥ मासपूर्त्तौ शयनं गांहिरण्यं च दद्यात् ॥
 तथा ॥ उपानद्युगलं छत्रं लवणं मलकानि च ॥ आषाढे वामनप्रीत्यै
 दातव्यानि तु भक्तितः ॥ इत्याषाढकृत्यम् ॥ अथ कर्कसंक्रांतौ घृतधे
 नुदानम् । घृतधेनुप्रदानं च कर्कटे परिशिष्यते ॥ गव्यस्य सर्पिषा कुंभं
 पुष्पमालादिभूषितम् । कांस्यापि धानसंयुक्तं सितवस्त्रयुगेन च । हिरण्य
 सहितं तद्वन्मणिविद्रुममौक्तिकैः । अत्र पलसहस्रपरिमाणं कुंभः द्वादश
 पलाधिकपंचशतपलाधिको वा । इक्षुयष्टिमयान्पादान्खुरान्खुरौ
 प्यमयांस्तथा ॥ सौवर्णे चाक्षिणीकुर्ग्याच्छृंगे चामरुकाष्ठजे ॥ सप्त
 धान्यमयं पाशुर्पत्राणैर्नवकंबले । पत्राण्यधौतकौशेयम् । कर्पूरैः
 घ्राणम् । फलमयांस्तनान् । शर्करायाजिह्वाम् । गुडक्षीरम

यमुखम् । क्षौमं पुच्छम् । रोमाणि सितसर्षपैः । ताम्रैः पृष्ठम् । एतादृशीं
 कृत्वासंपूज्य ब्राह्मणं वा सोलंकारादिभिः संपूज्य दद्यात् । विधित्तु जल
 धेनुवत् । अघेत्यादि ० मम सकल पापक्षयपूर्वकम् इह जन्मनि नाना वि
 धिसुखैश्च श्वर्यभोगोत्तरं परत्र विष्णुसायुज्यावाप्तिकामः इमां घृतधेनुं पू
 र्वोक्तलक्षणयुतां गोत्राय शर्मणे तुभ्यमहं संप्रददेन मम ० मंत्रः । घृतं गावः
 प्रसूयंते घृतं भूम्यां प्रतिष्ठितम् ॥ घृतमग्निश्च देवाश्च घृतमेतं संप्रदीयताम् ॥
 दक्षिणा सुवर्णशय्या वा । दानफलम् । घृतक्षीरवहानयो यत्र पायसकर्द
 माः ॥ तेषु लोकेषु सर्वेषु सुपुण्येषु प्रजायते ॥ सकामानां भियं व्युष्टिर्निष्का
 मानां सलोकता ॥ अथ श्रावणमासे ॥ गौरीमहेश्वरं च संपूज्य घृतक्षीर
 कुंभान् घृतपक्कफलानि च दिने दिने दातव्यानि । तथा । श्रावणे वस्त्रदातु
 स्तु स्यात्कीर्त्तिस्सुमहत्फलम् ॥ श्रीधरप्रीतये तस्माद्धृतं क्षीरं प्रदापयेत् ॥
 फलदानमंत्रः ॥ मनोहराणि रम्याणि नित्यं स्वादुकराणि च ॥ फलानां
 संप्रदानेन संततिस्त्वमलमम ॥ तथा ॥ फलानि मधुराणीह मुनिदे
 वप्रियाणि च । तस्मात्तेषां प्रदानेन सफलमे मनोरथाः ॥ इति श्रावणे ॥
 अथ सिंहसंक्रमे सुवर्णसहितच्छत्रादिदानं । स सुवर्णच्छत्रदानं सिंहेषु
 विहितं सदा । स सुवर्णच्छत्राय नम इति संपूज्य अघेत्यादि मम सर्वपापक्ष
 योत्तरं जन्मजन्मनि वर्षातिपक्लेशनिराकरणार्थं ममुच्छत्रमंगिरो देवतंगो
 त्राय शर्मणे तुभ्यमहं संप्रददे ॥ दानमंत्रः । इहामुत्रातपत्राणं कुरु मे केश
 वप्रभो ॥ छत्रं त्वत्प्रीतये दत्तं ममास्तु च सदा सुखम् ॥ उपलक्षणादुपा
 नञ्चामरदर्पणदानमंत्राः ॥ उपानहौ प्रदद्येहं कंटकादिनिवार
 णे ॥ सर्वमार्गेषु सुखदे अतः शांतिं प्रयच्छ मे ॥ चामरे । शशांककर
 संकाशं हिमडिंडीरपांडुरम् ॥ प्रोत्सारयाशुदुरितं चामरामरवल्लभ ॥
 दर्पणम् ॥ दर्शनेन त्वमादर्शनं नृणां मंगलदायकः । सर्वसौभाग्यसत्की

तिनिर्मलज्ञानमस्तु मे ॥ अथ भाद्रपदमासे ॥ मासिभाद्रपदेदद्या
 त्पायसंमधुसर्पिषा । हृषीकेशप्रीणनार्थं लवणं च गुण्डं दध्वा । कमलैः पा
 र्थिवपूजनमन्ते गोदानमिति मांसं कृत्वा धनवान् भवेदिति ॥ अथ क
 न्यासं क्रांतौ वस्त्रदानं क्षीरधेनुदानं च । कन्याप्रवेशे वस्त्राणां सुर
 भीणांतथैव च ॥ वस्त्रदानविधानं मिथुनसंक्रमे लिखितम् ॥ अथ
 क्षीरधेनुदानम् ॥ गोमयोपलिप्तभूमौ गोचर्ममात्रे स्थले कुशानास्ती
 र्येतदुपरि कृष्णाजिनमास्तीर्य गोमयेन कुण्डलिकां कृत्वा क्षीरकुंभं तत्र
 स्थाप्य चतुर्थांशेन वत्सं विधाय शृंगाणि चंदनागरुकाणिकृत्वा प्रशस्त
 पत्रश्रवणां तिलपात्रोपरि न्यस्तां गुण्डमयमुखां शर्करमयजिह्वां फलदतां
 मुक्ताफलक्षणां मिश्रपादां दर्भरोमांसितकंबलकंबलाम् ॥ एतादृशीम
 भ्यर्च्य ब्राह्मणं च वस्त्रालंकारमदिभिरभ्यर्च्य अघेत्यादि गोत्राय शर्मणे इ
 मां क्षीरधेनुं पूर्वोक्तोपस्करयुतां समस्तपापक्षयकामस्तुभ्यमहंसंप्रददे ॥
 देवस्य त्वेत्युच्चार्य यालक्ष्मीरित्यादि प्रार्थना ॥ अथाश्विनमासे
 अश्विन्योः प्रीतये प्रत्यहं घृतदानम् ॥ घृतं संपूज्य अघेत्यादि मम
 जन्मजन्मनिसुरसावाप्त्यै इदं घृतमश्विनीदैवतम् ॥ मंत्रः । कामधेनोः
 समुद्भूतं देवानामुत्तमं हविः ॥ आयुर्विवर्द्धनं दातुराज्यं कुर्यात्स दामम ॥
 ॥ तथा च ॥ तिलांस्तुरंगं वृषभं दधिताम्ररसादिकम् ॥ प्रीत्यर्थं पञ्च
 नाभस्य दद्यादाश्वयुजे नरैरित्युक्तत्वात् । अथाश्वदानविधावादां तै
 लदानम् ॥ कृष्णाजिने तिलान् कृत्वा सुवर्णमधुसर्पिषा ॥ द्रोणैकं वा स
 सा छत्रं त्रिधा तद्वत्सदक्षिणम् ॥ ब्राह्मणाय च तदद्यात्सर्वतरतिदुष्कृत
 म् ॥ अघेत्यादि ॥ अमुकगोत्रायामुक्तशर्मणे ब्राह्मणाय कृष्णाजिन
 स्थं सुवर्णमधुसर्पिर्युतं वस्त्राच्छत्रं तिलद्रोणं सोमदैवतं सर्वपापक्षयकाम
 स्तुभ्यमहंसंप्रददे ॥ तत्प्रतिष्ठासिध्यर्थं सुवर्णं देयम् ॥ मंत्रः । यानिकानि

चपापानिब्रह्महत्यासमानिच ॥ तानिसर्वाणिनश्यंतुतिलानांचप्रदा-
नतः ॥ अथाश्वदानविधिः ॥ सर्वोषकरणोपेतंयुवानंदोषवर्जितम् ॥
योश्वंददातिविप्रायस्वर्गलोकेमहीयते ॥ आदौब्राह्मणंवृत्वावस्त्रा-
लंकरणादिभिःततोऽश्वंसंपूज्यअद्येत्यादि० ममसमस्तपापक्षयपूर्वका-
श्वरोमसमसंख्याकाब्दांतिसूर्य्यलोकनिवासकामइममश्वंसर्वोपस्करस-
हितंसुवर्णदक्षिणायुतं यमदैवतं गोत्रायशर्मणेतुभ्यमहंसंप्रददेनम-
मेतिअश्वकर्णधृत्वादद्यात् ॥ दानमंत्रः ॥ उच्चैःशवास्त्वमश्वानां
राज्ञांविजयकारकः ॥ सूर्य्यवाहनमस्तुभ्यमतःशांतिंप्रयच्छमइति ।
अश्वमेधमुखंयस्तुकलौकतुर्नशक्नुते । अश्वदानंतुतेनेहकर्तव्यंविधि-
पूर्वकम् ॥ अश्वकर्णेतिलोदकदानमंत्रः । मार्त्तंडायसुवेगायका-
श्यपायत्रिमूर्त्तये ॥ जगद्दीपायसूर्यायत्रिवेदायनमोस्तुते ॥ प्रार्थना ॥
महार्णवसमुत्पन्नउच्चैश्वरिहाधुनामयात्वंविप्रमुख्यायदत्तोहयसुखी
भव ॥ विप्रप्रार्थना—इमंविप्रनमस्तुभ्यमश्वंतेप्रतिपादितम् ॥ प्रति-
गृह्णास्वविषेद्रमयादत्तंसुशोभनम् ॥ विप्रस्तुकामस्तुतिपठेत् ॥
दाताचांश्वपुरोगच्छेत् पदानांसप्तसप्ततिम् । भास्करंमनसाध्यात्वा
चालोक्यस्वगृहं व्रजेत् ॥ न्यूनातिरिक्तपरिहारार्थंभूयसीदक्षिणांदद्या-
त् ॥ अथवृषभदानम् ॥ अथत्रेविषुवेचैवयुगादौग्रहणेषुच ॥
अमायांचप्रदातव्यंवृषदानंजगुर्बुधाः ॥ अनद्धाहंसंपूज्य अद्ये-
त्यादिममसर्वपापक्षयपूर्वकाल्पमृत्युनिवारणद्वाराशिवसायुज्यप्राप्त-
येअमुंवृषभंसुवर्णतिलकंताम्रमृष्टमुक्तालांगूलंप्रवालभूषितंरुद्रदैवतं
गोत्रायशर्मणेतुभ्यमहंसंप्रददे ॥ मंत्रः ॥ धर्मस्त्वंवृषरूपेणजगदानंदका-
रकः । अष्टमूर्त्तैरधिष्ठानमतश्शांतिंप्रयच्छमे ॥ अथदधिदानमं

त्रः ॥ क्षीरेणाम्लंसमुद्भूतं देवर्षिपितृतृप्तिदम् ॥ दधिस्यान्मेमृतं नि
 त्यमतः शांतिं प्रयच्छ मे ॥ ताम्रदानमंत्रः ॥ वैश्वानरसमुद्भूतं ताम्रं
 सूर्यप्रियं करम् ॥ तव दानप्रभावेण मम संतु मज्जोरथाः ॥ इत्यांश्चि
 नमासः ॥ अथ तुलासंक्रमे ॥ तुलाप्रवेशे धान्यानां बीजानां दान
 मुत्तमम् ॥ सर्वधान्यबीजादिदानं मधुधेनुदानं च ॥ अन्नदान
 मंत्रः ॥ अन्नमेव यतो लक्ष्मीरन्नमेव जनार्दन । अन्नं ब्रह्माखिलत्राणम
 स्तु मे जन्मजन्मनि ॥ बीजदानम् ॥ बीजेभ्यो जायते सर्वं स्थावरजंगमं
 च यत् ॥ तस्माद्बीजप्रदानेन संततिर्वर्द्धतां मम । अथ मधुधेनुदानम्
 अनुलिप्ते महीपृष्ठे कृष्णाजिनकुशोत्तरे ॥ तत्र धान्यद्रोण्यां मधुपूरितं
 रत्नगर्भं संस्थाप्य स्वर्णशृंगारौप्यपादां मुक्तादामविभूषितामित्या
 दि जलधेनुवद्ज्ञातव्यम् ॥ तच्चतुर्थांशेन वत्सकं कृत्वा ब्राह्मणं
 वृत्वा मधुधेनुधेनुपूजनविधिना संपूज्य अद्येत्यादि गोत्राय श
 र्भेणे सा लंकृताय सौवर्णमुखी मगरुचंदनशृंगीताम्रपृष्ठां सूत्रपुच्छां इक्षु
 पादांसितकंबलकंबलांगुडमुखीम् शर्कराजिह्वां मौक्तिकनेत्रां
 फलदंतां दर्भरोमां प्रशस्तपत्रश्रवणां नवनीतस्तनीं सप्तधान्योपेतां चतु
 र्दिक्षु घृतादिपात्रचतुष्टयसहितां वस्त्रयुग्माच्छन्नां वंदाभरणभूषितां कां
 स्य दोहांतुभ्यमहं संप्रददे ॐ तत्सन्नम ॥ मधुवातेति पठेत्
 सुवर्णदक्षिणां दत्वा यालक्ष्मीस्त्यादिप्रार्थना ॥ अनेन दानेन
 प्रंचमहापापात्प्रमुच्यते ॥ अथ धान्यदानम् ॥ सार्द्धं स्वारीद्वयं ब्रीह
 योद्विधाः तच्च सार्द्धं शतद्वयं मणपरिमितं मणषट्कं चेति गोत्राय
 शर्मणे इदममुकसंख्यं प्रजापतिर्देवत्यं समस्तपायक्षयपूर्वकैहिकामुष्मि
 कशिवफलावाप्तिकामस्तुभ्यमहं संप्रददे नममेति ॥ धान्यदानमंत्रः

सर्वदेवमयंधान्यंसर्वोत्पत्तिकर्महृत् ॥ प्राणिनांजीवनोपायमतःशां
तिं प्रयच्छमे ॥ इति धान्यदानम् ॥ अथ कार्तिकमासे रजतंकनकंदी
पान्मणिमुक्ताफलादिकम् ॥ प्रीत्यर्थं दामगर्भस्य प्रदद्यात्कार्तिकेनरः
दीपदानं गोपरिचर्या च ॥ दीपदानं तथा ॥ देवागरे द्विजागरे
दीपं दत्वा चतुष्पथे ॥ मेधावीज्ञानसंपन्नश्चक्षुष्मांश्च भवेनरः ॥
मंत्रः ॥ दीपो ज्ञानप्रदो नित्यं देवतानां प्रियः सदा ॥ दानेनास्य भवेत्सौख्यं
शांतिर्मेवांछितं फलम् ॥ सज्ज्योतिस्तैलपात्रं च दीपं बाहुसमुन्नतम् ॥
सुखं स्यादस्य दानेन शांतिरस्तु सदा मम ॥ नमः पितृभ्यः प्रेतभ्यो नमो
धर्माय विष्णवे ॥ नमो यमाय रुद्राय कांतारपतये नमः ॥ फलम् । अनेन
दीपेन मनोरथानां संप्राप्तिरस्तीति न संशयोऽत्र ॥ एतानि चोक्त्वा
कतिचिद्विधानि दद्यान्मनोवांछितभोगसिद्ध्यै ॥ अत्रैवाकाशदीप
दानम् ॥ दीपं संपूज्य अयेहेत्यादि ० मम श्रीराधारमणं प्रीतिपूर्वका
मूल्यरत्ननिर्मितविमानाधिरोहणोत्तरगोलोके मणिमयप्रदीपदीपि
तमंदिरावासश्रीकृष्णदास्यप्राप्तये कार्तिके आकाशदीपदानमहंक
रिष्ये ॥ प्रा० ॥ दामोदराय नमस्तुच्छायां दोलयांसह ॥ प्रदीपं च
प्रयच्छामि नमो नंताय वेधसे ॥ स्नानदानक्रियापूर्वं विष्णुमंदिर
मस्तके । अनेन मेस्तु सुप्रियो श्रीराधासहितो हरिः ॥ अथ गोपरिचर्या वि
धिः ॥ गवां कंडूयनं चैव सर्वकल्मषनाशनम् ॥ गवां ग्रासप्रदानेन स्वर्गलो
के महीयते ॥ ग्रासदानमंत्रः ॥ सुरभित्वं जगन्मातर्नित्यं विष्णुपदे स्थि
ता ॥ सर्वदेवमयं ग्रासं मया दत्तमिमं ग्रस । प्रार्थना ॥ सर्वदेवमये देवि
सर्वदेवैरलंकृतं ॥ मातर्ममाभिलषितं सफलं कुरु नंदिनीति । इत्यूर्जमा
सः ॥ अथ वृश्चिकसंक्रमेव ह्यदातं गृहदानं च ॥ कीटप्रवेशे वस्त्राणां वि

श्मानां दानमेव च ॥ तत्रादौ महात्म्यम् ॥ वस्त्रं यथार्थिने दद्याच्छुभं वा पि
 यदृच्छया । स भवेद्धनवान् श्रीमान् बृहस्पतिपुरे वसेत् ॥ तथा च ॥ वा
 सो हि सर्वदेवत्यं सर्वप्रायोज्यमुच्यते ॥ वस्त्रदानात्सुवेषः स्याद्रूपद्रवि
 णसंयुतः ॥ युक्तो लावण्यसौभाग्यैर्विरोगी च भवेन्नरः ॥ दत्त्वा कार्पासि
 कं वस्त्रं स्वर्गलोके महीयते ॥ दत्त्वोर्णजं च तत्रापि फलं दशगुणं भवेत् ॥
 कृत्यं वासः संपूज्य ब्राह्मणं च संपूज्य अद्येत्यादि ० गोत्राय शर्मणे ॥
 इदं वस्त्रं सूक्ष्मदेहालंकरणं बृहस्पतिदेवतंतुभ्यमहंसं प्रददेन मम । मंत्रस्तु ॥
 आदौ श्वेतवस्त्रस्य । सितं सूक्ष्मं सुखस्पर्शमीशानादेः प्रियंसदा । देहालं
 करणं यस्मादतः शान्तिप्रयच्छमे । पीतस्य । पीतं वासः सुमांगल्यं देवानां
 प्रीतिवर्द्धनम् ॥ दानेनानेन मे पापं हरत्वा शुजनार्दनः ॥ रक्तस्य ॥ रक्तवस्त्रं
 सदारम्यमादित्यस्य प्रियंसदा ॥ श्रीकरं रूपदं नित्यमतः शान्तिप्रयच्छ
 मे । नीलस्य । मनोहरं नीलवस्त्रं बलरामप्रियंसदा ॥ आयुर्विवर्द्धनं श्रीद
 मतः शान्तिप्रयच्छमे । चित्रवस्त्रस्य । षण्मुखस्य प्रियं रम्यं चित्रवस्त्रं मनो
 रमम् ॥ तस्मादस्य प्रदानेन शान्तिरस्तु सदा मम ॥ कृष्णवस्त्रस्य ॥ कृष्णं
 वासः प्रियं मृत्योः सर्वारिष्टविनाशनम् ॥ भयपीडामृतिहरमतः शान्तिप्र
 यच्छमे ॥ पट्टकूलस्य । पट्टकूलं सदारम्यं पवित्रं कामदं नृणां ॥ विष्णवा
 दीनां प्रीतिकरमतः शान्तिप्रयच्छमे ॥ ऊर्णावस्त्रदानं । ऊर्णावस्त्रं चारु
 चित्रं देवानां प्रीतिवर्द्धनम् ॥ सुखस्पर्शकरं यस्मादतः शान्तिप्रयच्छमे
 ' कंबलस्य ' शान्तिवर्षाहरः पुण्यो दृष्टिबलविवर्द्धनः । कंबलस्य
 प्रदानेन शान्तिरस्तु सदा मम ॥ चित्रकंबलस्य । ऊर्णापट्टश्चाविकादिसर्व
 देवप्रियः शुचिः । चित्रकंबलदानेन मम संतु भनोरथाः ॥ अथ गृहदानं
 गृहमध्ये दक्षिणभागे चंदनेनाष्टदलपद्मं विलिख्य तदुपरि प्रस्थमात्रं

तिलान्निक्षिप्य । तदुपरिशय्यांसोपस्करांस्थापयित्वा । शय्या
परि सौवर्णीलक्ष्मीनारायणप्रतिमांभग्न्युत्तारणपूर्वकं ॥ पंचामृते
नाभिषिच्यसंपूज्यप्रतिगृहीतारं चसंपूज्य ॥ सपत्नीकंवृत्वातंकरेगृही
त्वामंगलतूर्यघोषेणगृहंप्रवेशयेत् । मंत्रास्तु ॥ एहोहिनारायणदिव्य
रूपसर्वामरैर्वदितपादपद्म ॥ शुभाशुभानंदशुचामधीशलक्ष्मीयुतः त्वंच
गृहंगृहाण ॥ नमःकौस्तुभनाभायहिण्यकवचायच ॥ क्षीरोदार्णवमु
त्तायजगद्धात्रेनमोस्तुते ॥ नमोहिरण्यगर्भायविश्वगर्भायवैनमः ॥
चराचरस्यजगतोगृहभूतायवैनमः ॥ भूर्लोकप्रमुखालोकास्तवदे
हेव्यवस्थिताः ॥ नंदंतियावत्कल्पांतंतथास्मिन्भवनेगृही ॥ त्वत्प्र
सादेनदेवेशपुत्रपौत्रावृतोगृहे ॥ पंचयज्ञक्रियायुक्तोवसेदाचं
द्रतारकमिति ॥ ततस्तंपूर्वस्थापितशय्यायामुदङ्मुख मुपवेश्यसपत्नी
कंयथाविभवंवस्त्रालंकारादिभिःसंपूज्यस्वयमासनेप्राङ्मुखोदभासि
नेष्वासीनोदर्भान्धार्यमाणःप्राणनायम्यदेशकालौसंकीर्त्यममसम
स्तपापक्षयपूर्वककल्पकोटिशतावधिब्रह्मलोकमहीयमानकामःशि
लाकांष्ठपक्वेष्टिकादिनिर्मितयथोपपत्तिसंपादितं ताम्रादिभाजनसर्व
धान्यलवणघृततैलगुडशर्करागोमहिषीबलीवर्ददासदासीमंचकतूली
वितानादर्शतांबूलायतनैलालवंगादिवर्षपर्घ्यात्सर्वोपकरणान्वितंस
दीपिकाप्रद्योतितंविश्वकर्मदेवैतंशक्रदैवतवंदगृहंगोत्रायशर्मणेभमुक्
शाखाध्यायिने लक्ष्मीनारायणप्रतिमासहितंतुभ्यमहंसंप्रददेनमम ॥
मंत्रौ । इदंगृहंगृहाणत्वंसर्वोपस्करसंयुतं । तवविप्रप्रसादेनममसं
तुमनोरथाः ॥ गृहममविभूत्यर्थंगृहाणत्वंद्विजोत्तम ॥ प्रीयतां
मेजगद्योनिर्वास्तुरुपीजनार्दनः । ततः प्रतिगृहीता गृहमध्यस्तंभंगृह

द्वारदेहलीं वा संस्पृश्य देवस्य त्वेति प्रतिगृह्य स्वस्तिवाक्यं पठेत्
 वतः सुवर्णमारभ्य यथाशक्ति दिक्षणां दद्यात् ॥ ततः पादुकोपानह
 छत्रचामरादि दत्वा संपन्नं गृहोपस्करादीत्युक्त्वा सर्वसुसंपन्नं पूर्णमेवा
 स्तु इति प्रतिवचनं दद्यात् भूयसीं दिक्षिणां ब्राह्मणेभ्यो विभजेत् प्रमा
 दादिति ० यस्य स्मृत्येतिकर्मेश्वरार्पणं कुर्व्यात् । गृहदानफलं यथेवं स
 र्वसंपन्नं पक्षेष्टमिति वेदयत् । कल्पकोटिशतं यावद्ब्रह्मलोके महीयते । शै
 लजं दारुजं वापि यो दद्याद्विधिपूर्वकम् ॥ वसेत्क्षीरार्णवे रम्येनारायणस
 मीपतः । मृण्मयं वापि यो दद्याद्ब्रह्मसोपस्करान्वितम् । पुरेषु लोकपालानां
 प्रतिमन्वंतरे वसेदिति । अस्मिन्मासे सुवर्णसहितं वस्त्रदानं प्रत्यह
 मुक्तं ॥ विधिस्तु पूर्वोक्त एव ॥ स्वरोष्ठाश्वतराज्ञागान् शूकराश्वम
 जादिकं ॥ दातव्यं केशवप्रीत्यै मासि मार्गशिरेतरैः ॥ इति मार्गशीर्षमा
 सः । अथ धनुस्संक्रांतौ । धनुःप्रवेशे वस्त्राणां यानानां च महाफलम् । वस्त्र
 दानविधानम् वृश्चिकसंक्रांतिवज्ज्ञेयम् । अथ रथदानं ॥ रथं चतुर्बली
 वदैरुद्धधान्यावृतं तथा ॥ प्रित्तानुसारात् सर्वैश्वर्योपकरणैर्युतं । सदक्षिणं
 च विप्राय दत्वा शिवपुरं व्रजेत् । धान्यावृतं । अष्टादशधान्यावृतं । दक्षिणा
 तु त्रिशतमाषमिति सुवर्णमुत्तमा द्वैशते मध्यमा शतमेकमधमा दानवा
 क्यं अघेत्यादि गोत्राय शर्मणे सालं कृताय चतुर्बलीवदैर्वाघोटकैर्युतं सो
 पस्करं धान्याष्टादशशोभितं विश्वं कर्मदेवतमक्षय्यस्वर्गादि सुखावाप्ति
 कामस्तुभ्यमहं संप्रददे नमः । मंत्रस्तु । रथाय रथनाथाय नमस्तो विश्वक
 र्मणे । विश्वरूपाय देवाय अरुणाय नमोनमः । ततो दक्षिणादानं । तस्यैव भे
 दे गत्रीदानं । गत्रीरथविशेषः सा चतुर्भिर्गजैरश्वैर्वृषैर्वोपेता द्वाभ्यां वोपेता
 भवति । गत्रीं तुरंगसंयुक्तां ये ददाति द्विजातये । सर्वकामसमृद्धात्मा स रा

जाजायतेभुवि । दानवाक्यंपूर्ववत् । मंत्रस्तुगंत्रीमिमां प्रयच्छामि विश्व
कर्माधिदैवताम् । दानेनानेन भगवान् प्रीयतां मे परः पुमान् ॥ ॥
अथ शिविकादानम् ॥ ॥ पुण्यदिने शिविकोपरि सुवर्णनिर्मितं ह
रिसंपूज्य अद्येत्यादि० गोत्राय शर्मणे सुपूजिताय इमां शिविकां स
र्वोपस्करसहितां अंगिरोदैवतां इष्टलोकावाप्तये तुभ्यमहंसंप्रददे नम
मेति । ततः सुवर्णदक्षिणां दद्यात् । तत्रैव देवलोके विपुलभोगानंतरमते
विष्णुसायुज्यावाप्तिकामो विप्रस्य वर्षाशनं शिविकावाहकानां च वर्ष
पर्याप्तं द्रव्यं दद्यात् । प्रार्थना । शिविका ते मया दत्ता यथा शक्त्या विभू
षिता । द्विजत्वं प्रतिगृह्णीष्व वाञ्छितं तेन मे भवेत् । अस्मिन्मासे ॥
प्रासादनगरादीनि गृहवप्राणियानि च । नारायणस्य प्रीत्यर्थं पौषे देयानि
यत्नतः ॥ शीतवारणमग्निदानं हेमंतशिशिरयोरुक्तम् ॥ अग्नि
दानविधिः ॥ अग्निहेमंतशिशिरतौ तीर्थे सुरालये ब्राह्मणगृहे वा का
र्यं । उक्तं च ॥ मठे देवालयादौ च अग्निप्रज्वालयेत्तु यः । षष्टिवर्षसहस्रा
णि स्वर्गलोके महीयत इति तथा प्रज्वालयेद्वह्निं सेवनार्थं द्विजन्मनां
दातव्यो दीपकोखंडो देवेषु हि श्यमाधवम् । अथ मकरसंक्रांतौ ॥ मृग
प्रवेशे दारुणां दानमग्रे स्तथैव चेति वचनात् । तीर्थे जलाशये देवा लये मा
गादौ च शीतनिवारणं काष्ठदानम् । अग्निदानविधिस्तु पूर्वोक्तो बो
ध्यः । तथा च । कनकं कुलिशं नीलं मकरांगं च मौक्तिकम् ।
एतानि रत्नजातानि दद्याद्देवस्य तुष्टये । कुलिशं हीरकं । स्नानां चाप्यभा
वे तु कर्षकपर्षार्द्धमेव वा । सुवर्णं योजयित्वा तु तस्मिन्नेवोत्तरायणे वस्त्र
कंबलदानं च भोजनं चानिवारितम् ॥ वस्त्रकंबलादिदानं वृश्चिक
संक्रांतिविधावुक्तम् ॥ तिलधेनुः प्रदातव्या माघे मकरे रवौ । कृत्ति
रात्रं ब्राह्मणेभ्यो दद्यात्स्वर्गार्थिभिर्नरैः । मासस्यान्ते रथं दद्यात्सूर्यप्रीति

करंशुभम् । अथमकरसंक्रांतिदानविधावादौहीरकादिनवरत्नदानम् ।
 माणिक्यं पद्मरागं च वैदूर्यं पद्ममेव च । मारकतंचंगोमेदं पुष्परागंच मौ-
 क्तिकम् । हरितंचनवैतानिरत्नान्युक्तानि सूरभिः । रत्नदानाद्धरिर्ल-
 क्ष्मीः स्वपदंच प्रयच्छति ॥ अद्येत्यादि० लक्ष्मीनारायणपदावातिकाम-
 इत्यादि । मंत्रस्तु । यस्माद्रत्नेषु सर्वेषु सर्वदेवाव्यवस्थिताः तस्माद्र-
 त्नप्रदानेन वाञ्छितं फलमश्नुते । मौक्तिकदानमंत्रः । मौक्तिकं भूषणं वि-
 ष्णोः श्रियोगौर्ध्याः शिवस्य च । दानेनास्य सुखं चास्तु ऐहिकमुष्णि-
 कं मम ॥ प्रवालदानमंत्रः ॥ प्रवालं पुष्टिदं श्रीदं क्रांतिदं शुभदं तथा ॥
 दानेनास्य महत्सौख्यं शांतिरस्तु सदा मम ॥ कर्णभूषणदानमंत्रः ॥
 भूषणं कर्णयोः स्त्रीणां स्वर्णरत्नादिसंयुतम् ॥ त्राटकस्य प्रदानेन सौ-
 भाग्यं वर्द्धतां मम ॥ मांगल्यमणिदानमंत्रः ॥ मांगल्यमणयो-
 लक्ष्म्या गौर्ध्याः प्रीतिकराः सदा ॥ तस्मादेषां प्रदानेन शांति-
 रस्तु सदा मम ॥ अथ सुवर्ण दानम् ॥ दत्त्वा सुवर्णस्य शतं विप्रेभ्यः
 श्रद्धयान्वितः ॥ ब्रह्मलोकमनुप्राप्य ब्रह्मणा सह मोदते ॥ गव्येन भू-
 मिशकृताजलेन आलिप्य मध्ये सिततंडुलैश्च ॥ सरोरुहं केसरभूषणा-
 ढ्यं सकर्णिकं चाष्टदलं विलिख्य ॥ तस्मिन् हिरण्यं शतमानमात्रं निधा-
 यतस्योपरितं विचिंत्य ॥ ब्रह्माणमिति शेषः । विप्रंवृत्त्वा ॥ अद्येत्या-
 दि० ॥ मम समस्तपापक्षयपूर्वकं मेरुदानसमफलावाप्तये देयद्रव्यतृती-
 यांशदक्षिणा सहितम् ॥ इदं सुवर्णमग्निदैवतम् ॥ अमुकगोत्रायामु-
 कशर्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यमहं संप्रददे । नमः ॥ मंत्रः ॥ हिरण्यगर्भः समवर्त-
 ताग्रे भूतस्य जातेति० ॥ हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमवीजं विभावसोः ॥
 अनेन पुण्यफलदमतः शांतिं प्रयच्छमे ॥ अथ तिलधेनु दानम् ॥

अनुलिप्तेमहीपृष्ठेवस्त्राजिनकुशोत्तरे ॥ धेनुंतिलमयीकृत्वासर्वरत्नै
रलंकृताम् ॥ धेनुद्रोणेनकुर्वीतअढिकेनतुवत्सकम् ॥ स्वर्णशृंगीरौ
प्यस्वुरांगंधघ्राणवतीतथा ॥ कुर्याच्चशर्कराजिह्वांगुडास्यामाविकं
बलाम् ॥ इक्षुपादांताम्रपृष्ठीशुचिमुक्ताफलेश्चक्षणां ॥ प्रशस्तपात्र
श्रवणांफलदंतमयीशुभाम् ॥ स्रग्दामपुच्छांकुर्वीतनवनीतस्तनान्वि
ताम् ॥ सितवस्त्रयुगच्छन्नाघंटाभरणभूषिताम् ॥ ईदृक्संस्थानसं
पन्नांकृत्वाश्रद्धासमन्वितः ॥ कांस्योपदोहनांदद्यात्केशवप्रीयतामि
ति ॥ तथाच ॥ उत्तमातिलधेनुःस्यात्सदाभारचतुष्टया ॥ वत्संभा
रेणकुर्वीतअर्द्धभारेणवांभवेत् ॥ चतुर्थांशेनवाकुर्घ्याद्विहवित्तानुसा
रतः ॥ तुलांपलशतंप्राहुर्भारःस्याद्विंशतिस्तुलेतिभारप्रमाणम् ॥
एवंरचित्वाधूपदीपादिभिराभ्यर्च्यवस्त्रमुक्तादीनि भारतोमानाधिक्ये
फलाधिक्यम् ॥ अथ कृत्यम् ॥ आदौयजमानःकृतनित्य
क्रियः ॥ गणेशादीन्संपूज्यधेनोःप्रतिकर्तृकृत्वा ॥ विप्रंवस्त्राभरणा
दिभिः ॥ संपूज्यप्रदक्षिणीकृत्य अथेत्यादि० ॥ सर्वपापक्षयकाम
इमांतिलधेनुंगोत्रायशर्मणेब्राह्मणायसुपूजितायतुभ्यमहंसंप्रददेनममे
ति ॥ प्रार्थनानमंत्रस्तु ॥ यालक्ष्मीःसर्वभूतानांयाचदेवेष्ववस्थिता ॥
धेनुरूपेणसादेवीवांच्छितंमेप्रयच्छतु ॥ देहस्थायाचरुद्राणांशंकरस्य
प्रियासदा ॥ धेनुरूपेणसादेवीवांच्छितंमेप्रयच्छतु ॥ देहस्थायाच
रुद्राणांशंकरस्यप्रियासदा ॥ धेनुरूपेणसादेवीममपापंव्यपोहतु ॥
विष्णोर्वक्षसियालक्ष्मीः स्वाहायाचविभावसोः ॥ चंद्रार्कशक्रश
क्तिर्याधेनुरूपास्तुसाभियः ॥ चतुर्मुखस्ययालक्ष्मीर्यालक्ष्मीर्धनद
स्यच ॥ यालक्ष्मीर्लोकिपालानांसाधेनुर्वरदास्तुमे ॥ स्वधात्वंपितृ

मुख्यानां स्वाहायज्ञभुजां तथा ॥ सर्वपापहराधेनुस्तस्माच्छांतिप्रय
च्छमे ॥ इत्युक्तादयात् ॥ एष एव विधिः सर्वधेनूनां प्रत्यक्षधेनूव्यति
रिक्तानां बोद्धव्यः ॥ तिलधेनुप्रार्थनाविशेषः ॥ तिलाश्वपितृदैव
त्यानिर्मिताश्चेहगोसवे ॥ ब्रह्मणा तन्मयी धेनुर्दत्ताप्रीणा तु केशवः ॥
प्रतिमा तिलधेन्वादीनां विक्रयाद्युक्तं हेमाद्रौ ब्रह्मवैवर्ते ॥ दानकाले तु
देवत्वे प्रतिमानां प्रकीर्तितम् ॥ धेनूनामपि धेनुत्वं श्रुत्युक्तं दानयोगतः ॥
दातुर्वै दानकाले तु धेनवः परिकीर्त्तिताः ॥ विप्रस्य व्ययकाले तु द्रव्यं
तदिति निश्चयः ॥ दानसंबन्धिविप्रेण द्रव्यमागच्छता गृहम् ॥ तत्सर्वं
विदुषा तेन विक्रेयं स्वेच्छया विभो ॥ कुटुम्भारणं कार्यं धर्मकार्यं च
सर्वशः ॥ अन्यथानरकं यातीत्येवमाह प्रितामहः ॥

इति तिलधेनुदानम् ॥

अथ कृसरान्न दानम् ॥ कृसरं तु तंडुलमुद्रसहितम् ॥ संपू
ज्यविप्रं चाभ्यर्च्य अथ ० सर्वपापक्षयपूर्वकं स्वन्नाद्याप्तिकाम इदं कृस
रान्नम् ॥ घृतलवणहरिद्राद्युपस्करयुतम् ॥ तिलगुडनिर्मितलडुक
सहितम् ॥ गोत्राय तुभ्यमहं संप्रददे ॥ मंत्रस्तु । कृसरं सर्वशीतघ्नं श
निप्रातिकरं सदा ॥ तस्मादस्य प्रदानेन मम संतु मनोरथाः ॥ अथ गु
डदानम् ॥ गुडं पलषष्टिमितम् ॥ अथेत्यादि ० मम समस्तपापक्षयपू
र्वकं गृहे लक्ष्म्याः स्थैर्यसिद्धिकामो गोत्राय शर्मणे सूपूजिताये मंगुडं रस
धर्ष्य सोमदैवतं सदक्षिणं तुभ्यमहं संप्रददे नममेति ॥ मंत्रस्तु । गुडश्चक्षुरसोद्भू
तो मंत्राणां प्रवरो यथा । दानेनानेनैतस्य परालक्ष्मीः स्थिरा गृहे ॥ अथ
षोडशफलदानम् ॥ मकरसंक्रमे सौभाग्यवतीनां विशेषः । दानं षोडश
फलयाकमेकैकस्य फलस्य च । एवं षोडशविप्रेभ्यो दत्त्वेप्सितमवाप्नुयात्

अथेत्यादि० ममसमस्तपापक्षयपूर्वकसकलसौभाग्यपुत्रपौत्रादीप्ति
ताऽनंतफलावाप्तयेदीयमानफलसमसंख्यवर्षसहस्रावच्छिन्नदिव्यां
गनाभिःसहभोगोत्तरानेकसुखावाप्तिकामश्वनानानामगोत्रेभ्यःषोड
शसंख्याकैभ्यइमानिषोडशसंख्याकान्यमुकफलान्यैकैकस्मैसगोधू
मतांबूलफलदक्षिणायुतानिवनस्पतिदैवतानिदातुमहमुत्सृजे नममेति
॥ स्त्रीणांतु ॥ सौभाग्योत्तरपतिलोकप्राप्तिकामेतिसंकल्पः । दानवाक्यं
तुफलैःषोडशसंयुक्तैःस्वर्णधान्यादिसंयुतम् ॥ द्विजवर्घ्यगृहाणत्वंमम
संतुमनोरथाः ॥ तत्रैववर्द्धितफलदानम् ॥ सतिलंगुडसंयुक्तरसप्रीति
करंरुचिणां ॥ वर्धितसंगृहाणेदमतःशांतिप्रयच्छमे ॥ सौभाग्यवतीनांशूर्प
स्थार्द्रतंदुलदानमंत्रः ॥ तंदुलाःशालिजाःशुक्लाःसार्द्राःसूर्येव्यवस्थि
ताः । संप्रदानेनवैतेषांशांतिरस्तुसदामम ॥ तथैवपायसपूरितकांस्यपा
त्रदानमंत्रः ॥ सौभाग्यभाजनंकांस्यपायसान्नेनपूरितं । दानेनानेनसौ
भाग्यंशांतिरस्तुसदामम ॥ अस्मिन्मासेरथदानमुक्तम् । तद्विधिस्तुध
नुसंक्रांतावुक्तमेव माघमासेव्रतसत्यसतिवातिलकनकयज्ञोपवी
तप्रभूतचंदनदानंप्रत्यहंकार्घ्यं माघेमासितिलाःशस्तास्तिलधेनुस्तथै
वच ॥ तथेधनादयश्चान्येमाधवप्रीणनायतु ॥

इतिमाघमासः ॥

अथ कुंभसंक्रांतौ ॥ कुंभप्रवेशेदानंतुगवामंबुतृणस्यच । कालच
क्रंतथादद्यादपमृत्युनिवृत्तये ॥ गवामंबुतृणदानंतु ॥ प्रातर्नित्य
कृत्यंविधाय गोमंडलसंपूज्य अथेत्यादि० ममसमस्तपापक्षयपूर्वक
गोलोकावाप्तिकामं अथारभ्यमासंयावत् गवांपूजनपूर्वकंतृणज
लदानंकरिष्ये मंत्रस्तु रस्यानिशाद्वलानीह तोययुक्तानिगोपते

प्रीतयेतवदास्यामिगोभ्यःपापहरोभवेति ॥ अपमृत्युहरंकाल
 चक्रदानम् ॥ शतपलरौप्यस्यचंद्रविंबसमंकालचक्रंसमततोमुक्ता
 दामानेकरश्मियुतंकृत्वा संपूज्यब्राह्मणंचसंपूज्य अद्येत्यादि०
 ममापमृत्युनिवारणार्थरौप्यकृतंचंद्राकारमनेकमुक्तामालात्मकरश्मि
 युक्तंकालचक्रंतुभ्यमहंसंप्रदेदनमम दानवाक्यंतु इदमेराजतंचक्रमिं
 दुरश्मिसमाकुलम् ॥ अपमृत्युविनाशायदत्तमायुर्विवृद्धयेततःसुव
 र्णदक्षिणांदत्वाग्निंप्रतिष्ठाप्य ॥ ॐकालचक्रायस्वाहा ॥ इति
 मंत्रेणाष्टोत्तरशतवारंवृताक्ततिलैर्हुत्वा ॥ पायसादिनाद्वादशब्रा
 ह्मणान्भोजयित्वा ॥ स्वयमक्षारलवणंसुकुडुंजीत ॥ अस्मिन्मासे
 फाल्गुनेब्रीहयोगावोवस्त्रंरुष्णाजिनान्वितम् ॥ गोविंदप्रीणनार्थाय
 दातव्यंविधिपूर्वकम् ॥ ब्रीहिदानमंत्रः ॥ ब्रीहीतिधान्यकंसवलकल
 तंडुलकमिति ॥ ब्रह्मणानिर्मिताःपूर्वब्रीहयोयज्ञसाधनाः ॥
 अनेनब्रीहिदानेनममसंतुमनोरथाः ॥ अथ स्वरूपतोगोदानम् ॥
 गौरेकस्यैवदातव्याश्रोत्रियायकुटुंबिने । साहितारयतेपूर्वान्सप्तसप्ते
 तिसप्तच ॥ सुशीलालक्षणवर्तीयुवर्तीवत्संसयुताम् ॥ बहुदुग्धवर्ती
 स्निग्धाधेनुंदद्याद्विचक्षणे ॥ तत्र कर्तारुतनित्यक्रियः ॥ पुण्यका
 ले ॥ अद्येत्यादि० ॥ यथाशक्तियथाज्ञानंगोदानमहंकरिष्येइतिसं
 कल्प्य ॥ सवत्साधेनुंद्विजंचयथाविभवंसंपूज्य ॥ गोशृंगमूलादिस्त
 नांतस्थानादिषुदेवताःपूजयेत् ॥ तद्यथा ॥ शृंगमूलेब्रह्मविष्णुभ्यां
 नमः ॥ ब्रह्मविष्णुपूजयामि ॥ शृंगाग्रेसर्वतीर्थेभ्योनमः ॥
 सर्वतीर्थानिपूजयामि ॥ एवंसर्वत्र । शिरोमध्येशिवाय० ललाटे
 देव्यै० नासिकायांषण्मुखाय० नासापुटेकंबलाश्वतरनागा

भ्यां० कर्णयोरश्विभ्यां० चक्षुषोः शशिभास्कराभ्यां० दंते
 पुवायवे० जिह्वायांवरुणाय० हुंकारेसरस्वत्यै० गंडयोःपक्ष
 मासाभ्यां० ओष्ठयोः संध्यायाभ्यां० ग्रीवायामिंद्राय० कुक्षिदे
 शेरक्षोभ्यो० उरसिसाध्येभ्यो० पादेषुधर्माय० जंघासुअधर्माय०
 खुरमध्येगंवर्धेभ्यो० खुराग्रेपन्नगेभ्यो० अप्सरोभ्यो० पृष्ठेएकादशरु
 द्रेभ्यो० सर्वसंधिषुवसुभ्यो० श्रोणितटपितृभ्यो० लांगूलेसोमाय०
 गुह्येआदित्यरश्मिभ्यो० गोमूत्रेगंगायै० गोमयेयमुनायै० क्षीरेसरस्व
 त्यै० दध्निनर्मदायै० घृतेअग्नये० रोमस्वष्टाविंशतिदेवकोटिभ्यो०
 उदरेपृथिव्यै० पयोधरेषुचतुः समुद्रेभ्यो० एतादेवता अंगेषुसंपूज्य
 अद्येत्यादि० गोत्रायशर्मणेसुपूजितायपृथ्वीदानसमफलकामः सर्वपा
 पक्षयकामोविष्णुप्रीतिकामोवाइमांप्रत्यक्षधेनुंसुवर्णशृंगैरौप्यसुरां
 ताम्रपृष्ठांघंटाग्रैवेयांमुक्तालांगूलांकांस्योपदोहांसितवस्त्रद्वयोपेतांसर्वा
 भरणभूषितांसोपस्कारारुद्रदैवत्यांतुभ्यमहंसंप्रददे नममेतितिलपात्रेषु
 ताक्तंगोपुच्छं कृत्वाविप्रहस्तेसतिलकुशोदकंदद्यात् ॥ मंत्रस्तु ॥ यज्ञसा
 धनभूतायाविश्वस्याधौघनाशिनी ॥ विश्वरूपधरोदेवःप्रीयतांमनया
 गवा ॥ ततोदातादानप्रतिष्ठासिद्ध्यर्थं सुवर्णदक्षिणांदद्यात् ॥ नमो
 गोभ्यःश्रीमतीभ्यःसौरभेयीभ्यएवच ॥ नमोब्रह्मसुताभ्यश्चपवित्राभ्यो
 नमोनमः ॥ पूजितासिवशिष्ठेनविश्वामित्रेणधीमता ॥ सुरभेहरमे
 पापंयन्मयादुष्कृतंकृतम् ॥ गावोममाग्रतःसंतुगावोमेसंतुपृष्ठतः ॥
 गावोमेहृदयेसंतुगवांमध्येवसाम्यंहम् ॥ इतिपठित्वाधेनुंविप्रहस्ते
 दत्वा ॥ तौप्रदक्षिणीकृत्यकिंचिदनुव्रजेदितिगोदानम् ॥ अथ
 ब्रह्मसहितकृष्णाजिनदानम् ॥ कृष्णाजिनंचमहिषीमेषीचदश

धेनवः ॥ ब्रह्मलोकप्रदायि स्यात्तुलापुरुषएवच ॥ तथाच वैशाखी
 पौर्णमासीचग्रहणेशशिसूर्ययोः ॥ पौर्णमासीतुयामाघेआषाढी
 कार्तिकीतथा ॥ उत्तरायणंद्वादशीवातस्यांदत्तंमहाफलमिति
 ॥ अथ प्रयोगः ॥ गोमयोपलिप्तदेशेआविकंकंबलंतदुपरि
 सशृंगंसखुरम् ॥ प्राग्ग्रीवंकृष्णाजिनमास्तीर्ष्यसुवर्णखुरंरौप्यदंतं
 मौक्तिकपुच्छंसुवर्णनाभंकृत्वातदुपर्यरत्निप्रमाणांस्तिलान्संस्थाप्य
 वाससाच्छाद्यसंगंधरत्नानिचत्वारिकांस्यपात्राणिघृतदुग्धदधिमधुयु
 तानिचत्वारोमृदश्चप्रागादिदिक्षुदानदेशाद्वह्निंशंपकशाखास्वव्रणंकुंभं
 चसंस्थाप्य ॥ देशकालौसंकीर्त्य ॥ ममसमस्तजन्मोपात्तपापनाश
 कमात्मपितृपुत्रापमृत्युपरिहारभाय्याधनदेशाद्यवियोगकामः ॥
 सकलेष्टफलावाप्तिब्रह्मलोकावाप्तिकामश्चकृष्णाजिनदानमहंकरिष्ये
 ॥ इतिसंकल्प्य ॥ जीर्णपीतवाससास्वांगानिसंतृज्य यानिकानि
 चपापानिमयालोभात्कृतानिच ॥ लोहपात्रप्रदानेनप्रणश्यंतुममा
 शुवै ॥ इतिमंत्रेणसतिललोहपात्रंकृष्णाजिनस्यवामपार्श्वेनिवेशयेत्
 ॥ यानिकानिचपापानिकर्णोत्थानिकृतानिच ॥ कांस्यपात्रप्रदा
 नेनतानिनश्यंतुमेसदा ॥ इतिमंत्रेणमधुमयंकांस्यपात्रंकृष्णाजिन
 स्यदक्षिणपादेनिवेश्य ॥ परापवादपैशून्यादभक्ष्यस्यचभक्षणात् ॥
 यदुत्थितंतुमेपापंताम्रपात्रात्प्रणश्यतु ॥ इतिमंत्रेणसतिलंताम्रपात्रं
 वामहस्तेनिवेश्य । मयाजन्मसहस्रेषुकृतंपापंप्रबुद्धिना ॥ सुवर्णपात्र
 दानात्तन्नाशयाशुजनार्दन ॥ इतिमंत्रेणसाक्षतहैमपात्रंमध्येनिवेश्य ॥
 कन्यानृतंगवांचैवपरदारप्रमर्शनम् ॥ रौप्यपात्रप्रदानेनक्षिप्रनाशं
 प्रयातुमे ॥ इतिमंत्रेणमधुमयरौप्यपात्रम् दक्षिणहस्तेनिवेश्य ॥

तथा ॥ हेममुक्ताविद्रुमदाडिममातुलिंगानिनिधाय ॥ प्रशस्तपात्रे
कर्णयोः संस्थाप्य द्विजंवृत्वायथाविभवं वस्त्रालंकारादिभिः संपूज्य
पुनर्देशकालौ संकीर्त्य मम समस्तजन्मोपात्तादिब्रह्मलोकावाप्त्यंतमु
क्तागोत्राय शर्मणे सुपूजिताय तृप्ताय इदं कृष्णाजिनं यथाशक्तिसोपस्क
रं वृषभध्वजप्रीतये तुभ्यमहं संप्रददेनममेति ॥ एतदक्षिणापरि
माणसुवर्णनिष्कशतं तदद्धं वा ॥ ततो न्यूनत्वेनाधिकफलम् ॥
अस्पृश्यः स द्विजो ज्ञेयश्चितिसूपसमो हिसः ॥ दाने च श्राद्धकृत्ये च दूरतः प
रिवर्जयेत् ॥ स्वगृहान्प्रेष्य तं विप्रं मंगलं स्नानमाचरेत् ॥ तद्वस्त्रं कुंभ
सहितं नान्वाक्षिपेत् च तुष्पथे इति ॥ ततो भूयसीं दक्षिणां दत्वा शिषोगृही
यात् ॥ दानेनानेन सकलारिष्टपापनाशो भूमिदानफलं चेति ॥ हो
मादिविशेषस्तु ग्रंथांतरादवगम्य ॥ इति कृष्णाजिनदानम् ॥ इति फा
ल्गुनमासः ॥ अथ मीनसंक्रमे ॥ मीनप्रवेशे स्थानानि माल्यानि च
ददातियः ॥ अजाः पंचपयस्विन्योदरिद्राय कुटुंबिने ॥ न जायते पुनरसौ
जीवलोके कदाचन ॥ अत्र स्थानशब्देन धर्मशाला मंडपवेदिकादयो ज्ञा
यन्ते ॥ तथा चात्र प्रथमं धर्मशालाया यथा ॥ कुर्यात्प्रतिश्रयगृहं पथि
कानां हितावहम् ॥ निजगेहैकदेशं वा साधूनां योनिवेदयेत् ॥ प्रति
श्रयो धर्मशाला ॥ तथा ॥ अक्षय्यं पुण्यमुद्दिष्टं तस्य स्वर्गापवर्गदम् ॥ सर्व
कामसमृद्धौ सौदेववद्विविमोदते ॥ ग्रंथांतरे ॥ प्रतिश्रये सुविस्तीर्णे
कारिते स जलंधने ॥ दीनानाथजलार्थाय वद किं न कृतं भवेदिति ॥
॥ पुष्पदानमंत्रः ॥ मनोहराणि पुष्पाणि सदा देवप्रियाणि च ॥ अ
तस्तेषां प्रदानेन मम संतु सुराः प्रियाः इति ॥ अथ अजादानम् ॥ अ
यने विषुवै च वयुगादौ ग्रहणेषु च ॥ दर्शद्वये अजादानं तथा मीनगते रवाः

विति॥ अजापंचकं एकैकं वा विप्रंचवस्त्रालंकारादिभिः संपूज्य अद्येत्या
 दि० गोत्राय शर्मणे इमामजां इदमजापंचकं वा धान्योपरि स्थितां वस्त्र
 माल्योपशोभितां वज्रनेत्रां हेमशृंगीं ताप्रपृष्ठीरौप्यपादाम् स दोह
 हनपात्रां त्वाष्ट्रदेवतां तु यमहंसं प्रददेनममेति ॥ कुक्षौ तिलोदकं दत्वा
 दद्यात् ॥ मंत्रस्तु ॥ मंत्रवासे अजेश्लक्षणे यज्ञसंपत्करेशुभे ॥ सदा
 त्वंदहमेपापं जन्मांतरशतैः कृतम् ॥ तथा च ॥ त्वं पूर्वब्रह्मणा सृष्टापवित्रा
 कामदापरा । त्वत्प्रसूतौ स्थिता यज्ञास्तस्माच्छांतिं प्रयच्छ मे ॥ देव
 स्येत्वेति शृंगे प्रतिग्रहः ॥ ततः सुवर्णदक्षिणां दद्यात् ॥ अस्मिन्मासे ॥
 वासंती कामपूजायाम् । पूजाया असंभवेवानित्यं हरिद्रासिंदूरकस्तूरी
 कर्पूरसुगंधिद्रव्यदानं कार्प्यम् ॥ तत्रादौ हरिद्रादानमंत्रः ॥ हरिद्रासर्व
 मांगल्यानित्यं सौभाग्यवर्द्धिनी ॥ दानेनास्याः पापनाशं मम जन्मनि
 जन्मनि । कुंकुमस्य । कुंकुमं शोभनं रम्यं सर्वदामंगलप्रदम् ॥ दानेनास्य
 महत्सौख्यं सौभाग्यं स्यात्सदामम । सिंदूरस्य । सिंदूरं शोभ
 नं रम्यं गणेशस्य प्रियं करम् ॥ दानेनास्य परालक्ष्मीः स्थिरामेचास्तु सं
 ततिः ॥ कस्तूरिकायाः ॥ कस्तूरी भाग्यदा भव्या देवमर्त्यजनप्रिया । दानेनास्याः
 सुखं भोगः शांतिरस्तु सदामम ॥ कर्पूरस्य ॥ कर्पूरं शीतलं चारु
 देवर्षिगुरुसेवितम् ॥ तस्मादस्य प्रदानेन लक्ष्मीस्तिष्ठतु मद्गृहे ॥ ना
 नासुगंधिद्रव्यस्य ॥ गंधो मनोहरो दिव्यः शांतिदः सुखदस्तथा ॥ त
 स्मादस्य प्रदानेन सुगंधः स्यात्सदामम ॥ अथ वासंतिके देवोपरि गलंति
 कादानम् ॥ वसंतसमयं ज्ञात्वा गत्वा देवालयं शुभम् ॥ शिवस्य
 विष्णोरर्कस्य इष्टदेवस्य वा पुनः स्रवंतं कारयेत्कुंभं सच्छिद्रं देवमस्तके दि
 वारात्रौ स्रवेदं जलमासचतुष्टयम् ॥ स्रवत्तद्विदुः संख्याकान् स्वर्गलोके

महीयते ॥ अथप्रयोगः ॥ शुभदिनेस्थिरलग्नादौकृतनित्यक्रियः ॥
 ॥ आचम्यप्राणानायम्य ॥ अघेत्यादि० देवशिरसिस्रवज्जलविं
 दुसमसंख्याकाब्द शिवपुरादिनिवासकामोमासचतुष्टयं दिवारात्रौ
 च देवेगलंतिकादानं करिष्ये ॥ इतिसंकल्प्यप्रासादं सम्यक्प्रक्षाल्य
 देवं पंचामृताद्युपचारैरभ्यर्च्य देवेगलंतिकां बध्नीयात् ॥ मंत्रस्तु ॥
 ॐ नमः शंकरः शंभुर्भवो धाता शिवो हरः ॥ प्रीयतां मे महारुद्रो जलसेक
 प्रदानतः ॥ एवं मासचतुष्टयं देवेगलंतिकादानं कृत्वा ॥ अंत्येवंपंचा
 मृतादिपूजां कृत्वा यथाशक्ति ब्राह्मणान् भोजयित्वा तेभ्यो दक्षिणां च द
 द्यादिति ॥ त्रयाणामपि जीवानां मुदकं जीवनं स्मृतम् ॥ पवि
 त्रममृतं यस्मात्तद्देयं पुण्यमिच्छता ॥ तथाच ॥ चैत्रे चित्राणि वस्त्रा
 णिशयनान्यासनानि च । विष्णोः प्रीत्यर्थं मेतानि देयानि ब्राह्मणेष्वथ ।
 दासी दासो ह्यलंकारश्चान्नं पद्मसंयुतम् ॥ पुरुषोत्तमस्य तुष्टयर्थं प्रदेयं सा
 र्वकालिकम् ॥ यद्यदिष्टतमं किंचिद्यच्चाप्यस्ति शुभंगृहे । तद्धि देयं च प्री
 त्यर्थं देवदेवस्य च कृणुः ॥ अथमलमासे दानानि ॥ साज्यपात्रान्
 सहगुडान् च यस्त्रिंशदपूपकान् । कांस्यपात्रे विनिक्षिप्य सुवर्णेन समन्वि
 तान् । उपानच्छत्रसंयुक्तान् विप्राय विनिवेदयेत् ॥ हेमाद्रौ विशेषः
 अधिमासे तु संप्राप्ते गुडसर्पिर्युतानि च । चंद्रवद्वर्तुलान्यंगव्रीहिपिष्टकृता
 नि च ॥ साज्यानि दधिमिश्राणि अधिमासे नृपोत्तम ॥ अत्र त्रिंशदपूपानि
 दातव्यानि दिने दिने ॥ व्यतीपातदिने यद्वा द्वादश्यामथ वानृप । पौर्णमा
 स्याममायां च नवम्यां वानृपोत्तम । अष्टम्यामथ पंचम्यां कुर्वाद्रतमनु
 त्तमं । अधिमासे तु संप्राप्ते त्रयस्त्रिंशत्तु देवताः । उद्दिश्यापूपदानेन पृथ्वीदान
 फलं लभेत् ॥ देवतानामानितु भविष्ये ॥ विष्णुं १ जिष्णुं २ महाविष्णुं ३

हरिं ४ कृष्ण ५ मधोक्षजम् ६ ॥ केशवं ७ माधवं ८ रामं ९ मच्युतं
 १० पुरुषोत्तमम् ॥ ११ गोविंदं १२ वामनं १३ श्रीशं १४ श्रीकण्ठं
 १५ विश्वसाक्षिणम् ॥ १६ नारायणं १७ मधुरिपु १८ मनिरुद्धं १९
 त्रिविक्रमम् ॥ २० वासुदेवं २१ जगद्योनि २२ मनंतं २३ शेषशा
 यिनम् ॥ २४ संकर्षणं च २५ प्रद्युम्नं २६ दैत्यारिं २७ विश्वतोमुखं
 २८ जनार्दनं २९ धरावासं ३० दामोदरं ३१ मघार्दनम् ३२ ॥
 श्रीपतिं च ३३ त्रयस्त्रिंशदुद्दिश्य प्रतिनामभिः । त्रयस्त्रिंशदपूपानिकां स्य
 पात्रे निधाय च । सधृतं सहिरण्यं च ब्राह्मणाय निवेदयेत् ॥ अयेत्यादि ०
 मम समस्तपापक्षयपूर्वक सर्वसंपत्तिस्त्वये विष्णवादिश्रीपत्यंताः त्रयस्त्रिं
 शदेवता उद्दिश्य श्रीपुरुषोत्तमभास्करप्रीतिकामश्च गोत्राय शर्मणे सुपू
 जिताय इदं वायनकं त्रयस्त्रिंशदपूपोपेतं कां स्य पात्रसुवर्णधृततांबूलदक्षि
 णादिसोपस्करं श्रीविष्णुरूपाय ब्राह्मणाय तुभ्यमहं संप्रदद्रे नममेति दद्या
 त् ॥ दानमंत्रस्तु । विष्णुरूपाय सहस्रांशुः सर्वपापप्रणाशनः अपूपान्नप्रदाने
 नममपापं व्यपोहतु ॥ नारायणजगद्बीजभास्करप्रन्निरूपक ॥ दानेनाने
 पुत्रांश्च संपदं चापि वर्द्धय ॥ यस्य हस्ते गदा च क्रेगुरुडो यस्य वाहनः ॥ शं
 खः करतले यस्य समे विष्णुः प्रसीदतु ॥ कलाकाष्ठादिरूपेण निमेषघटि
 कादिना ॥ यो वंचयति भूतानि तस्मै कालात्मने नमः ॥ कुरुक्षेत्रमयं देशः
 सूर्यपर्वद्विजो हरिः पृथ्वीसममिदं दानं गृहाण पुरुषोत्तम ॥ मलानां च
 विशुद्धचर्थपापप्रशमनाय च । पुत्रपौत्रविवृद्धचर्थप्रदं तत्तव भास्कर ॥
 मंत्रैरेतैश्च यो दद्यात् त्रयस्त्रिंशदपूपकान् ॥ प्राप्नोति विपुलां लक्ष्मीं पुत्रपौ
 त्रादिसंपदमिति ॥ एतन्मलमासव्रतंतु दानरूपं सर्वेषां नित्यम् ॥
 मलमासं यदा प्राप्य संध्योपासनतर्पणम् श्राद्धादिनियमं जाप्यं निष्फलं

तद्व्रतं विना ॥ इति मलमासे दानम् ॥ क्षयमासेऽपि मलमासोक्तदानान्ये
व कुर्व्यात् ॥ व्रतविधानंतु व्रतखंडे दृष्टव्यम् ॥

इति महीधरकृते दानसंग्रहे संक्रांतिसहितमासदानविधि
नामपंचमः कोशः ॥ ५ ॥

अथ तिथिपरत्वेन पर्वदानविधानम् ॥ तत्रादौ प्रतिपदानविधौ
चैत्रशुक्लप्रतिपदिनवरात्रारंभस्तत्र प्रपादानम् अतीते फाल्गुने मासि प्राप्ते
चैत्रमहोत्सवे । पुण्ये हि विप्रकथिते प्रपादानं समाभेत् । अनिवार्यं ततो दे-
यं जलं मासचतुष्टयं पुरमध्ये चतुष्पथे जलरहितमागस्त्य वृक्षमूले प्रपामं
ढपंकारयित्वा तन्मध्ये सुगंधकान् जलकुंभान् संस्थाप्य प्रपापालकं ब-
हुपुत्रं संस्थाप्य प्रार्थयेत् ॥ प्रपेयं सर्वसामान्याभूतेभ्यः प्रतिपादिता अ-
स्याः प्रदानात् सकलाममसंतु मनोरथाः ॥ इति ॥ प्रत्यहं कारयेत्तस्यां भो-
जयेच्छक्तितो द्विजान् ॥ अनेन विधिना यस्तु ग्रीष्मे तापप्रणाशनम् ॥ पा-
नीयमुत्तमंदयात्तस्य पुण्यफलं शृणु ॥ कपिलाशतदानस्य सम्यग्दत्तस्य
यत्फलम् । तत्फलं समवाप्नोति सर्वदेवैः सुपूजितः । इति । प्रपादा तु मशक्तेन
विशेषाद्धर्ममीप्सुना ॥ प्रत्यहं धर्मघटको वस्त्रसंवेष्टिताननः ॥ ब्राह्मणस्य
गृहे देयः शीतामलजलश्लुचिः ॥ तत्र मंत्रः । एष धर्मघटो दत्तो ब्रह्मा विष्णु-
शिवात्मकः । अस्य प्रदानात् सकलाममसंतु मनोरथाः ॥ इति ॥ अनेन वि-
धिना यस्तु धर्मकुंभं प्रयच्छति ॥ प्रपादानफलं सोऽपि प्राप्नोतीह न संशयः ॥
अस्य विधानं मेषसंक्रमविधाने द्रष्टव्यं ॥ अथाद्यामारभ्य नवमीपि पर्वतं दु-
र्गाप्रीतिकराणि दानानि ॥ अथ मणिकदानम् ॥ मणिकं मृन्मयं पा-
कपात्रविशेषम् ॥ ग्रीष्मप्रवेशे मणिकं ददाति द्विजसन्नि ॥ यो
बुधपरितमोऽपि स तडागकृतं फलम् । प्रपादा तु मशक्तेन विशेषधर्ममी-

प्सता ॥ मणिकंसजलंगंधपुष्पाद्यैरुपशोभितम् ॥ दद्यादिति शेषः
 पूजामंत्रस्तु ॥ आपोनारादिति प्रोक्ता आदित्यवरुणोयमः ॥ मणि
 कं पृथिवी सर्वदातुः शान्तिं प्रयच्छ मे ॥ दानवाक्यंतु ॥ ॐ आपः पवित्रं
 लोकानामप्सु सुतो जनाद्नः ॥ मणिकाप्सु प्रदानेन प्रीयतां जलशायिकः
 देवीपुराणे ॥ नारिकेलफलादीनि नवकं नवकं प्रिये । ताम्रमृन्मयपात्रा
 णि सपयांसितैव च ॥ वंशपात्राणि वस्त्राणि भक्ष्यभोज्यान्वितानि च
 यदि वा तिलपात्राणि मृत्पात्राण्यथवा पुनः ॥ अथवा चान्यपात्राणि
 पञ्चामृतभृतानि च ॥ सौभाग्यपात्राण्यथवा कुंकुमादिभृतानि च ॥
 दुर्गादेवी प्रीयतामित्युक्त्वा दानमाचरेत् ॥ दुर्गादेवी प्रसन्ना स्यादिति
 संप्रार्थयेत्ततः ॥ इत्येवमाश्विनशुक्लप्रतिपदि च ॥ अथ कार्तिकशु
 क्लप्रतिपदि धान्यशैलदानम् ॥ तत्रादौ दशाचलसंज्ञा । प्रथमो धान्य
 शैलः स्याद्वितीयो लवणाचलः ॥ गुडाचलस्तृतीयः स्याच्चतुर्थो
 हेमपर्वतः ॥ तिलशैलः पंचमः स्यात्पष्ठः कार्पासपर्वतः ॥ सप्तमो घृत
 शैलः स्यादष्टमो रत्नपर्वतः ॥ नवमो राजतः शैलो दशमः शर्कराचल
 इति ॥ अयने विषुवे चैव व्यतीपाते दिनक्षये ॥ शुक्लपक्षे तृतीयाया
 मुपरागेशि क्षये ॥ विवाहोत्सवयज्ञेषु द्वादश्यामथवा पुनः ॥
 शुक्लायां पंचदश्यां वा पुण्यर्क्षे पुण्यवासरे ॥ अन्येषु पुण्यकालेषु दात
 व्यानि विधानतः ॥ तीर्थे वा यतने वा पि गोष्ठे वा थगवांगणे ॥ तत्रादौ
 धान्यशैलविधिः ॥ तत्र चतुरस्रं द्वादशहस्तं मण्डपमुदङ्मुखं प्राङ्मुखं
 वा प्राच्यामुदीच्यां वा एकमेव द्वारं न चत्वारि । तोरणं मध्येकमेव ॥
 मण्डलं गोमयेनोपलिप्य कुशान्नास्तीर्घ्यतन्मध्ये पर्वतं कुर्यात् ॥ वि
 ङ्कुंभैः पर्वतैर्युक्तम् ॥ धान्यद्रोणसहस्रेण भवेद्गिरिरिहोत्तमः ॥ मध्य

मःपंचशतकःकनिष्ठःस्यात्रिभिःशतैः॥ मेरुव्रीहिमयोमहान्मध्ये ॥
तदुपरिमंदारपारिजातककल्पवृक्षादयोहेममयाश्रयः ॥ मध्येकल्प
तरुर्मंदारपारिजातौदक्षिणोत्तरयोः पूर्वपश्चिमयोर्हरिचंदनसंतानौ
मुक्ताफलवज्रगोमेदकपुष्परागगारुत्मतनीलरत्नवैडूर्य्य सरोजरागर
त्नानिद्वंद्वशः ॥ पूर्वादिदिगवस्थितरजतशृंगेषुचतुर्षुनिवेश्यानि
मंदारः ॥ श्रीखंडखंडैरभितःप्रवाललतान्वितःशुक्तिशिलातलःस्या
त् ॥ शर्कराचलेतुहरिचंदनसंतानौआवश्यकौ ॥ तत्रपूर्वादिदि
क्षुब्रह्मविष्णुरुद्रसूर्य्यप्रतिमाः ॥ पक्षिसंघान्मुनिसंघांश्चैहमान्प्रागा
दिदिक्चतुष्टयेक्रमेणपूर्वोक्तमुक्ताफलहीरकैर्गोमेदपुष्परागैर्मरकत
नीलवैडूर्य्यपद्मरागैः ॥ समसंख्याकैर्भूषितंरौप्यशृंगचतुष्कतद्वहिर्दि
गष्टैकरौप्यमिंद्रादिलोकपालप्रतिमाष्टकम् ॥ समंताच्छ्रीखंडैर्लता
नांस्थानेप्रवालशिलानांशक्तीः॥ प्रागादिषुमेघानांश्वेतपीतकर्बुररक्त
वस्त्राणिवशानामिक्षून्जलस्यघृतगंधपुष्पनानाफलानिचपरितः ॥
संस्थाप्यपंचवर्णवितानकंचोपरिवर्ध्नीयात् ॥ ततोयवैर्मरोःषोड
शांशेनप्राच्यामंदारंतदुपरिनररूपंगणत्रयंकदंबकंचसौवर्णकदंबमूले
हैमःकामदेवःअरुणोदसरः ॥ स्थानेदुग्धपूर्णरौप्यपात्ररौप्यंचैत्र
थारूयंवनम् ॥ गंधपुष्पफलवस्त्राणिचस्थापयेत् ॥ याम्येमेरुषोड
शांशेनगोधूममयगंधमादनंतदुपरिसौवर्णजंबुवृक्षम् ॥ तन्मूलेसौ
वर्णमुदङ्मुखंघनदंमानससरः स्थानेसघृतंरौप्यपात्रंरौप्यगंधर्वाख्य
वनम् नानाफलवस्त्रमाल्यानिचस्थापयेत् ॥ पश्चिमेमेरुषोडशां
शेनतिलमयंविपुलाख्यंपर्वतंतदुपरिसौवर्णपिप्पलम् ॥ तन्मूलेप्रा
ङ्मुखीसौवर्णहंसप्रतिमांसितोदसरः स्थानेदधिपूर्णरौप्यपात्रम् रौ

प्यवैभ्राजंवनंवस्त्रफलमाल्यानिचस्थापयेत् ॥ उत्तरेमेरुषोडशांश
 मितमाषैः ॥ सुपार्श्वपर्वतंतदुपरिसौवर्णवटंतन्मूलेदक्षिणाभिमुखीं
 सुवर्णधेनुंभद्रसरःस्थानेमधुपूर्णरौप्यपात्रंसावित्रंवनंवस्त्रफलमाल्यानि
 चस्थापयेत् ॥ एवंलवणादिनवपर्वतेष्वपिमेरुद्रव्यचतुर्थांशेनलवणा
 दिद्रव्येणप्रागादिषुविष्कुंभपर्वताःज्ञेयाःतत्राचार्य्यस्त्वेकःऋत्विजश्च
 त्वारः प्राच्यामेकमेवकुंडमितितत्रैवजुहुयुः ॥ अथयजमानःकृत
 नित्यक्रियः पुण्यकालेअद्येत्यादि०अप्सरोगंधर्वयुतविमानकरणक
 स्वर्गलोकगमनसाग्रमन्वंतरकालदेवलोक निवासोत्तरभूलोकराजरा
 जत्वकाम ईश्वरप्रीतिकामोवाश्वधान्यपर्वतदानंकरिष्ये ॥ इतिसं
 कल्पः ॥ तदंगत्वेनगणेशपूजननांदीश्राद्धानिचकृत्वा आचार्य्यमृ
 त्विजश्चवृत्वामधुपर्कादिनासंपूज्य मंडपपूजनाद्याचार्य्यनियोगांतंकु
 र्यात् ॥ ततआचार्य्योनवग्रहस्थापनादिकुंडसमीपस्थितकलशस्था
 पनांतंकुर्यात् ॥ अथाचार्य्यः॥प्राक्कुंडेनवग्रहादिद्वात्रिंशद्देवताभ्य
 स्तत्तन्मंत्रैर्धृताक्तितिलैःपृथक्यवधृताभ्यांकुशैश्चेतित्रिभिः साधनैःप्र
 त्येकमष्टवारंहुत्वा दशलोकपालेभ्योष्टवसुभ्यएकादशरुद्रेभ्योद्वाद
 शादित्येभ्यश्चप्रत्येकमष्टाष्टसंख्ययासमिच्चर्वाज्याहुतिभिर्जुहुयुः ॥
 ततःपुरुषसूक्तेनब्रह्मविष्णुरुद्रेभ्यः समित्तिलैर्वासूर्य्यकामदेवधन
 दहंसकामधेनुभ्यस्तिलैर्धृतेनवाअष्टोत्तरशतंजुहुयुः ॥ ततश्चतुः
 पंचाशद्देवताभ्यस्तिलैर्धृतेनच ॥ ततोयजमानोमेरुमवरुह्यपूजयेत् ॥
 तत्रमंत्रः ॥ त्वंसर्वदेवगणधामनिधिर्विरुद्धमस्मद्गृहेष्वमरपर्वतनाश
 याशु ॥ क्षेमंविधत्स्वकुरुशांतिमनुत्तमानः संपूजिताःपरमपाहि
 सनातनत्वम् ॥ त्वमेवभगवानीशोब्रह्माविष्णुर्दिवाकरः ॥ मूर्त्ता

मूर्तपरंबीजमतःशांतिकुरुप्रभो ॥ यस्मात्त्वंलोकपालानांविश्वमूर्तेश्व
मंदिरम् ॥ रुद्रादित्यवसूनांचततःशांतिप्रयच्छमे ॥ यस्मादशून्य
ममरैर्नारीभिश्चशिरस्तव ॥ तस्मान्मामुद्धराशेषदुःखसंसारसा
गरात् ॥ मंत्रस्तु ॥ यस्माच्चैत्ररथेनत्वंभद्राश्वप्रमुखेनच ॥ शो
भसेमंदरक्षिप्रमलंपुष्टिकरोभव ॥ गंधमादनस्य ॥ यस्माच्चूडामणि
जंबूद्वीपेत्वंगंधमादन ॥ गंधर्ववनशोभावानतःकीर्तिदृढास्तुमे ॥
विपुलस्य ॥ यस्मात्त्वंकेतुमालेनवैभाजेनवनेनच ॥ हिरण्मयाश्व
त्थशिरास्तथपुष्टिदृढास्तुमे ॥ सुपार्श्वस्य ॥ उत्तरैःकुरुभिर्यस्मा
त्सवित्रेणवनेनच ॥ सुपार्श्वशोभसेनित्यमतःश्रीरक्षयास्तुमे ॥
ततःसर्वैर्जागरणेकतेप्रातःस्नात्वाकृतनित्यक्रियः कुंडसमीपस्थकल
शजलेनसपरिवारंयजमानमभिषिंचेयुः ॥ ततोयजमानोगृहीतकुसु
मोमेरुंप्रदक्षिणीकृत्योपतिष्ठेत् ॥ अन्नं ब्रह्मरसःप्रोक्तमन्त्रेप्राणाःप्रति
ष्ठिताः ॥ अन्नाद्भवन्तिभूतानिजगदन्नेनवर्द्धते ॥ अन्नमेवयतो लक्ष्मी
रन्नमेवजनार्दनः ॥ धान्यपर्वतरूपेणपाहितस्मान्नमोनमः ॥ इत्युप
स्थायपुष्पांजलिंप्रक्षिप्य नमस्कृत्यप्राङ्मुखोपविश्योदङ्मुखेभ्यो
गुर्वादिभ्यःक्रमेणगिरीन्दयात् ॥ अथेत्यादि० ॥ गोत्रायश
र्मणिसालंकृतायगुरवेअप्सरोगंधर्वयुतविमानकरणकस्वर्गलोकगमना
नंतरंसाग्रमन्वंतरशतावधिसमयदेवलोकनिवासोत्तरभूलोकराजरा
जत्वकामइमंधान्यमयंमेरुपर्वतम् सौवर्णमंदरादिवृक्षपंचकसौवर्ण
ब्रह्मविष्णुरुद्रार्कादिप्रतिमायुक्तंमुक्ताहीरकादिभूषितम् रौप्यमयशं
गचतुष्कोपशोभितंरूप्यमयेंद्रादिदशलोकपालप्रतिमायुतम् रौ
प्यमयनितंबान्वितम् इक्षुवंशमितकंदरदिक्चतुष्टयस्थापितरौप्य

पात्रस्थितं धृतोदकप्रस्रवणम् दिक्चतुष्टयस्थापितकर्पूररक्तवस्त्रांबु
 दधरं नानाफलवितानाद्युपकरणसाहितं तुभ्यमहंसंप्रददेनममेतिदद्यात् ।
 चतुर्विंशतिधेनुपक्षे गावोष्टौगुरवे चतस्रश्चतुर्ऋत्विग्भ्यः दशपक्षेतु ॥
 गुरवेषट्ऋत्विग्भ्यः एकैका एकधेनुपक्षे गुरवे एकामेव कपिलां ऋत्विं
 ग्भ्यः सुवर्णदक्षिणां दद्यादिति मदनरत्नादयः ॥ एवं पूर्वस्थितं
 दराख्यं विष्कुंभं संप्रतिमं सोपस्करम् गोत्राय शर्मणे ऋत्विजे
 तुभ्यमहंसंप्रददे नममेतिदद्यात् ॥ एवमेव दक्षिणस्थं गोधूममयं गं
 धमादनम् तथा पश्चिमस्थं तिलमयं विपुलाख्यं पर्वतम् तता उत्तरस्थं
 माषमयं सुपार्श्वख्यं ऋत्विग्भ्यो दद्यात् ॥ लवणाचलादिदानप्रयोगे
 बुधान्यपदस्थाने लवणादिपदं क्षेप्यम् ॥ तत्तत्फलानि तु तत्र तत्र वक्ष्या
 मः ॥ ततो ग्रहवेद्यां जमानो देवताः संपूज्या वाहितदेवताश्च संपूज्य नम
 स्कुर्व्यात् ॥ गुरुस्तासां देवतानां विसर्जनं कुर्व्यात् ॥ ततो यजमानो
 मंडपग्रहपीठं प्रतिमोपस्करादिसर्वगुरवे प्रतिपाद्य भूयसीं दक्षिणां दत्वा
 प्रमादा ० यस्य स्मृत्या ० पठित्वा विष्णुं स्मृत्वा कर्मेश्वरार्पणं कृत्वा ब्राह्म
 णान् भोजयित्वा शिषोगृह्णीयात् ॥ स्वयं सुहृद्युक्तो भुंजीतेति ॥
 इति धान्यमेरुपर्वतदानप्रयोगः ॥ दशाचलदानानि यस्मिन्कस्मिन्पर्व
 भवंति ॥ प्रसंगात्समस्ताचलदानविधानमत्रैव ॥ अथ लवणा
 चलदानम् ॥ उत्तमः षोडशद्रोणः कर्तव्यो लवणाचलः ॥ मध्यमः
 स्यात्तदूर्ध्वं चतुर्भिरधमः स्मृतः ॥ वित्तहीनो यथाशक्त्या द्रोणादूर्ध्वं
 तु कारयेत् ॥ चतुर्थांशेन विष्कुंभपर्वतान् कारयेत् पृथक् ॥ अयं
 न्यायः ॥ सर्वविष्कुंभपर्वतेषु ज्ञेयः ॥ विधानं तु धान्यशैलवत् ॥
 हेमतत्तुल्लोकपालान्कामदेवादीन् धान्याचलवत् तथैव संपूज्य
 प्रार्थयेत् ॥ मंत्रास्तु ॥ सौभाग्यरससंभूतो यतो यं लवणो रसः ॥ तदात्मक

त्वेनचमांपाहिपापान्नमोनमः ॥ यस्मादन्नरसाःसर्वनोत्कृष्टालवणं
विना ॥ प्रियंचशिवयोर्नित्यंतस्माच्छांतिप्रयच्छमे ॥ विद्युद्देहस
मुद्भूतंयस्मादारोग्यवर्द्धनम् ॥ तस्मात्पर्वतरूपेणपाहिसंसारसागरा
त् ॥ अद्येत्यादि० ॥ कल्पपर्यंतमुमालोकप्राप्त्यनंतरंपरमगतिप्राप्ति
काम ईश्वरप्राप्तिकामोवा लवणाचलदानंकरिष्येति संकल्पः ॥
अयमेवविशेषोन्यत्सर्वधान्याचलवत् ॥ अथ गुडाचल दानम्
अथातःसंप्रवक्ष्यामिगुडपर्वतमुत्तमम् ॥ यस्यप्रदानतःस्वर्गप्राप्नोति
सुरपूजितम् ॥ उत्तमोदशभिर्भारैर्मध्यमःपंचभिर्मतः ॥ त्रिभिर्भारैःक
निष्ठःस्यात्तदर्द्धेनाल्पवित्तवान् ॥ तुलास्त्रियांपलशतंभारःस्याद्विशति
स्तुला ॥ इत्यमरः ॥ विधिस्तुधान्याचलवत् ॥ प्रार्थनामंत्रास्तु ॥
यथादेवेषुविश्वात्माप्रवरश्चजनार्दनः ॥ सामवेदस्तुवेदानांमहादेवस्तु
योगिनाम् ॥ प्रणवःसर्वमंत्राणांनारीणांपार्वतीयथा ॥ तथारसा
नांप्रवरःसदैवेशुरसोमतः ॥ ततस्तस्मात्परांलक्ष्मींददस्वगुडसर्वदा ॥
यस्मात्सौभाग्यदायिन्याभ्रातात्वंगुडपर्वत ॥ निवासश्चापिपार्वत्यास्त
स्मान्मांपाहिसर्वदा ॥ दानवाक्यम् ॥ अद्येत्यादि० सकलपापक्षयो
त्तरगंधर्वपूज्यमानत्वपूर्वककल्पशतावधिगौरीलोकप्राप्त्यनंतरसपत्ना
पराजितायुरारोग्यपूर्वकंसप्तद्वीपाधिपतित्वकाम ईश्वरप्रीतिकामोवे
तिसंकल्प्यदानेचविशेषोऽन्यत्सर्वधान्यशैलवत् ॥ अथसुवर्णाच
लदानम् ॥ पलसहस्रेणोत्तमपक्षः तदर्द्धेनमध्यमः तच्चतुर्थांशेना
धमः अल्पवित्तः पलादूर्द्ध्वयथाशक्तिकुर्यात् ॥ विधानंधान्यपर्व
तवत् ॥ प्रार्थनाविशेषः ॥ नमस्तेब्रह्मगर्भायब्रह्मबीजायवैनमः ॥
यस्मादनंतफलदस्तस्मात्पाहिशिलोच्चय ॥ यस्मादग्रेरपत्यत्वं

यस्मात्तेजोजगत्पतेः ॥ हेमपर्वतरूपेण तस्मात्पाहिसदाममेति ॥
 दानवाक्यम् ॥ अद्येत्यादि० सकलपापक्षयकल्पोत्तरशत
 कल्पावधिआनन्दकारकब्रह्मलोकभोगानंतरपरमपदप्राप्तिकामेति ॥
 अथतिलाचलदानम् ॥ उत्तमोदशभिर्द्रोणैः पंचभिर्मध्यमोमतः
 त्रिभिः कनिष्ठ इति ॥ वृक्षविष्कुंभादिसर्वधान्यपर्वतवत् ॥ मंत्रास्तु
 यस्मान्मधुवनेविष्णोर्देहस्वेदसमुद्भवाः ॥ तिलाः कुशाश्वमाषाश्वत
 स्माच्छन्नो भवति वह् ॥ हव्यकव्येषु यस्माच्चित्तिलैरेवाभिरक्षणम् ॥ भ
 वादुद्धरशैलेन्द्रतिलाचलनमोस्तुते ॥ दानवाक्यम् ॥ अद्येत्यादि० सक
 लपापक्षयदीर्घायुष्यपुत्रपौत्रसमन्वितभोगानंतरपितृदेवगंधर्वलोकपू
 ज्यमानत्वपूर्वकद्युलोकगमनानंतरमक्षय्यवैष्णवपद प्राप्तिकामेति ॥
 अन्यत्सर्वधान्यशैलवत् ॥ अथकार्पासाचलदानम् ॥ कार्पा
 सपर्वतोविंशतिभारैरुत्तमः ॥ दशभिर्मध्यमः ॥ पंचभिः कनिष्ठः ॥ अल्प
 वित्तोभारैकेन वा कुर्यात् ॥ विधिस्तुधान्यपर्वतवत् ॥ अद्येत्यादि०
 सकलपापक्षयोत्तराकल्परुद्रलोकनिवासानंतरभूलोकराज्यकामः ।
 इति मंत्रस्तु ॥ त्वमेवावरणं यस्माल्लोकानामिह सर्वदा ॥ कार्पासांचलत
 स्माच्चमघौघध्वंसनो भवेति ॥ अथ घृताचलदानम् ॥ विंशतिघृत
 कुंभैरुत्तमः अर्धेन मध्यमः पादेन निकृष्टः अल्पवित्तस्तु द्वाभ्यां वापि कु
 र्यात् कुंभः पलसहस्रात्मकः घृतकुंभः पात्र एव ॥ शालितंडुलपूर्णपात्रा
 णिकुंभानामुपरिनिवेशयेत् ॥ अहत शुक्लवस्त्रैरावेष्टयेत् ॥ इक्षु
 दण्डफलान्वितः ॥ अन्यत्सर्वधान्यपर्वतवत् बोध्यम् ॥ सूय्योद
 यात्पाक्घटिकाचतुष्टयमध्ये दद्यात् ॥ अद्येत्यादि० सकलपाप
 क्षयपूर्वकंहंससारसयुक्तकिंकिणीजालमालार्कवर्णाविमानकरणकशं

करलोकगमनपूर्वकसिद्धचारण विद्याधराचित्तत्वविशिष्टपितृस
हिताभूतसंपुवपर्यन्तकामेतिसंकल्प्य ॥ मंत्रौतु ॥ संयोगाद्घृतमुत्प
न्नं यस्मादमृततेजसः ॥ तस्माद्घृताच्चविश्वात्माप्रीयतांममशंकरः ॥
यच्चेतेजोमयं ब्रह्मघृतेनित्यं प्रतिष्ठितम् ॥ घृतपर्वतरूपेण तस्मान्नः पा
हिभूधरेति ॥ अथ रत्नाचलदानम् ॥ मुक्ताफलसहस्रेण पर्वतः स्या
दिहोत्तमः ॥ मध्यमः पञ्चशतिकस्त्रिंशताचाधमः स्मृतः ॥ चतुर्थांशे
नविष्कुंभादयः वज्रगोमेदैः पूर्वमंदरः इन्द्रनीलैः पद्मरागयुतैर्दक्षिणे गं
धमादनः वैडूर्यविद्रुमैः पश्चाद्विपुलाचलः ससौवर्णैः पद्मरागैः सुपा
श्वउत्तरे इति ॥ दानवाक्यंतु ॥ अघेत्यादि० अनेकजन्मकृतब्रह्म
हत्यादिपापक्षयोत्तरामरेश्वरपूजितत्वपूर्वकं साग्रकल्पशतावधिविष्णु
लोकनिवासानंतरम् आयुरारोग्यरूपगुणोपेतसप्तद्वीपाधिपत्यका
मइतिसंकल्प्य ॥ मंत्रौतु ॥ यथा देवगणाः सर्वरत्नेष्वेव व्यवस्थिताः ॥
त्वं च रत्नमयो नित्यमतः पाहिसदाचल ॥ यस्माद्रत्नप्रसादेन वृष्टिप्रकु
रुते हरिः ॥ रत्नाचलप्रसादेन तस्मान्नः पाहि पर्वत ॥ इति ॥ अन्यत्स
र्वधान्यं पर्वतवत् ॥ अथ रौप्याचलदानम् ॥ दशसहस्रपलै
रुत्तमः पक्षः पञ्चभिर्मध्यमस्तदर्धेन निकृष्टः अत्यशक्तौ विंशति
पलादूर्ध्वं कुर्यात् ॥ विष्कुंभादयस्तु तुरीयांशेनेति अन्यत्सर्वं
धान्यं पर्वतवत् ॥ दानवाक्यंतु अघेत्यादि० सकलपापक्षयपूर्व
कदशसहस्रगोदानसमफलावाप्तिपूर्वकं गंधर्वाप्सरोगणपूज्यमानत्ववि
शिष्टवैभवेन यावदाभूतसंपुवसोमलोकनिवासकाम इति ॥ मंत्रस्तु
पितृणां वल्लभं यस्माद्धर्मेन्द्रोः शंकरस्तु ॥ रजतपातु तस्मान्नः
शोकसंसारसागरात् ॥ इति ॥ अथ शर्कराचलदानम् ॥

अष्टभारशर्कराभिरुत्तमः पक्षः तदर्द्धेन मध्यमस्तच्चतुर्थांशे ब्राधमः
 अल्पवित्तो भारैकेणापि कुर्व्यात् ॥ चतुर्थांशेन विष्कुंभादयः मंदा
 रपारिजातकल्पवृक्षादयो हैमाः पूर्ववत् ॥ पूर्वपश्चिमे हरिचंदनसंता
 नौ प्रत्यङ्मुखः कामदेवो मंदरेधनद उदङ्मुखो गंधमादने ॥ प्राङ्मुखः
 वेदमूर्तिर्विपुलाचले हैमी सुपार्श्वे दक्षिणामुखी सुरभी ॥ अन्य
 त्सर्वधान्यपर्वतवत् ॥ अद्येत्यादि० सकलपापक्षयानंतरं
 कल्पशतावधिविष्णुलोकनिवासानंतरं सप्तद्वीपाधिपत्योत्तरं जन्मायु
 तं यावदविच्छिन्नायुरारोग्यकामेति ॥ मंत्रस्तु ॥ आरोग्यामृतसा
 रोयः परमः शर्कराचलः ॥ तन्ममानंदकारी त्वं भवशैलेंद्रसर्वदा ॥
 अमृतं पिबतां ये तु निपेतुं विसीकराः ॥ देवानां तत्समुत्थो यं पाहिनः
 शर्कराचलः ॥ मनोभवं धनुर्मध्यादुद्भूता शर्करायतः ॥ तन्मयोसि
 महाशैलपाहिसंसारसागरात् ॥ इति ॥ सर्वेषु पर्वतदानेषु ब्राह्मणभोज
 नं शक्त्या कार्यमेव । तदा पूर्वद्युःकतोपवासः परेद्युर्दानानंतरं मक्षारलवणं
 भुंजीत ॥ एवं प्रसन्नचित्तो दानं दद्यात् ॥ अथ मार्गशीर्षकृष्णप्रति
 पदारभ्य फाल्गुनं यावदष्टासु प्रतिपत्सु शयनदानं यथा ॥ अद्ये
 त्यादि० गोत्राय शर्मणे इदं शयनं सुखस्पर्शं श्रीविष्णुप्रीतिकामस्तु भ्यमं
 हं संप्रदेनममिति ॥ मंत्रस्तु ॥ शयनं सुखदं कांतं केशवस्य प्रियंसदा ॥ दाने
 नानेन सौभाग्यं सर्वदास्तु गृहे मम ॥ तेष्वेव कशिपुदानम् ॥ अद्येत्यादि०
 गोत्राय शर्मणे यावज्जीवं शीतवातोष्णनिवारणकामः कशिपुं तु भ्यमहं
 संप्रदेनमम ॥ मंत्रस्तु ॥ मृदुह्य वीजकार्पासपूरितं सुखदं नृणाम् ।
 तस्मादस्य प्रदानेन सुखं स्यात्सर्वदामम ॥ अथ चैत्रकृष्णप्रतिपदा
 रभ्या षाढ्यावदष्टासु प्रतिपत्सु श्वेतवस्त्रदानम् ॥ वस्त्रं यथार्थिने द

याच्छुभंवापियदृच्छया ॥ सभवेद्धनवान् श्रीमान् बृहस्पतिपुत्रेवसेत् ॥
 दत्त्वाकार्पासिकं वस्त्रं स्वर्गलोके महीयते ॥ दत्त्वोर्णजं च तत्रापि फलं दशगु
 णं भवेत् । अथेत्यादि ० गोत्राय शर्मणे इदं श्वेत वस्त्रं सूक्ष्मं शिवप्रियं देहालं
 करणं बृहस्पतिदेवतं तुभ्यमहं संप्रददेनममेति ॥ मंत्रस्तु ॥ सितं सूक्ष्मं सुख
 स्पर्शमीशानादेः प्रियंसदा ॥ देहालंकरणं यस्मादतः शांतिं प्रयच्छमे ॥
 अथ श्रावणकृष्णप्रतिपदारभ्योर्जयावदष्टासु प्रतिपत्सु घृतदु
 ग्धपायससंयावापूपमिष्टान्नान्यतमद्रव्यपूरितस्थालीदानम् ॥
 कृत्वा ताभ्रमयीं स्थालीं पलानां पंचभिः शतैः ॥ अशक्तस्तु तदर्धेन तदर्धा
 र्धेन वा पुनः ॥ अत्यशक्तौ मृन्मयीं पायसादिपूर्णां घृतशर्कराशाकजल
 पात्रयुतां च सवस्त्रां मंडलं संस्थाप्यालंकृत्य । अथेत्यादि ० यावर्जीवंस
 कुटुंबस्य यथेष्टमन्नमक्षयभोज्यादिलाभकाम इमां स्थालीं यथासंभवद्र
 व्यपूर्णां घृतशर्कराशाकजलपात्रवस्त्रावृतां मंडलं स्थामलंकृतां गोत्राय
 शर्मणे तुभ्यमहं संप्रददे नमम ॥ मंत्रस्तु ॥ इमांसद्रव्यपूर्णायः स्थालीं घृत
 जलादिभिः ॥ दद्यात्संपत्तिपात्रः स्यादतः पाहि महेश्वरेति ॥ सुवर्णदक्षि
 णां दद्यात् ॥ इति प्रतिपदादानानि ॥

इति महीधरकृते दानसंग्रहप्रतिपदादानकथनं नाम षष्ठः कोशः ॥ ६ ॥

अथ द्वितीयादानविधानम् ॥ कार्तिकशुक्लद्वितीयायां भगि
 न्यैवस्नालं करणादियथाविभवं देयम् ॥ तथा च भगिनीकराद्भोक्तव्य
 म् ॥ उक्तंच ॥ सर्वासु भगिनीहस्ताद्भोक्तव्यं बलवर्द्धनमिति ॥ सर्वासु
 सर्वद्वितीयासु कार्तिके मुख्य एव ॥ यतः ॥ कार्तिकेशुक्लपक्षे तु द्विती
 यायां विधानतः ॥ यमोयमुनया पूर्वभोजितः स्वगृहे स्वयम् ॥ अतोयम
 द्वितीयासौ प्रोक्ता लोकेषु पुण्यदा । अस्यां निजगृहे कापि न भोक्तव्यमतो

बुधैः। यत्नेन भगिनीहस्ताद्भोक्तव्यं पुष्टिर्वर्द्धनं ॥ दानानि च प्रदेयानि भगि
 नीभ्यो विशेषतः ॥ स्वर्णालंकारवस्त्राणि पूजासत्कारभोजनैः ॥ सर्वाभ
 गिन्यः संपूज्या अभावे प्रतिपन्नाः ॥ प्रतिपन्ना भगिनीत्वेन व्यवहृता इ
 त्यर्थः ॥ दानमंत्रः ॥ स्वसेतव्यमुनारूपा आगतास्वस्त्येमम ॥ गृहाण
 द्रव्यं मदत्तं शांतिपुष्टिप्रदा भव ॥ इति नत्वा विसृजेदिति ॥ अथ माघचैत्र
 वैशाखाषाढभाद्रपदशुक्लद्वितीयाः ॥ हरगौरीसंज्ञकाः ॥ एतामुना
 नाद्रव्यैस्तुलादानमुक्तम् ॥ यथा ॥ हरगौरीद्वितीया सुगौरी प्रीत्यै प्र
 दापयेत् ॥ तुलां सुपूजितां द्रव्यैर्गौरीसालोक्य कांक्षिभिरिति ॥
 द्रव्यविशेषेण तुलाफलानि ॥ प्रथमा तु घृतस्योक्ता तेजोवृद्धिकरी
 शुभा ॥ माक्षिकेण तु सौभाग्यं तैलेन बहुलाः प्रजाः ॥ वस्त्रेण दिव्य
 वस्त्राणि प्राप्नोति तुलया ध्रुवम् ॥ लवणेन तुला वण्यमरोगित्वगुडेन च ॥
 असपत्नः शर्करया सुरूपं चंदनेन तु ॥ अवियोगो भवेद्भर्त्रा तुलया कुंकु
 मस्य च ॥ न संतापो हृदि भवेत्क्षीरस्य तुलया तथा ॥ सर्वकामप्रदाः सर्वाः
 सर्वपापक्षयंकराः ॥ यः करोति तुलाः सर्वाः सगौर्यालयमामयादिति ॥
 तुलादानविधानं तु सामान्यतुलाविधाने द्रष्टव्यम् ॥ अथ व्रणनाशकं
 लक्ष्मीमूर्तिदानम् ॥ लक्ष्मीदानं प्रवक्ष्यामि महदैश्वर्यवर्द्धनम् ॥
 लूतादिव्रणनाशाय विशेषेण शिवोदितम् ॥ तत्र तु ॥ शतसुवर्णेन क
 ल्पपादपोक्तं स्वरूपां लक्ष्मीमूर्तिं प्रकल्प्य कुंडमंडपादितुला पुरुषदानो
 क्तवत्कृत्वा श्रीसूक्तेन तां संपूज्य यथाकाममुल्लिख्य दद्यात् ॥ मंत्र
 स्तु ॥ लक्ष्मीमूर्तिप्रदानेन लूता विस्फोटकादयः ॥ नाशमायांतु मे सर्वे
 पूर्वकर्मसमुद्भवाः ॥ इति द्वितीया दानानि ॥
 इति महाधरकृते दानसंग्रहे द्वितीया दानकथनं नाम सप्तमः कोशः ॥ ७ ॥

तत्रचैत्रशुक्लतृतीयायांसौभाग्यवतीनांसौभाग्याष्टकदानम् ॥
मंडलेघृतनिष्पावकुसुंभक्षीरकानिच ॥ स्तवराजेक्षुलवणंकुस्तुंबु
रुमथाष्टमम् ॥ दत्तंसौभाग्यकृद्यस्मात्सौभाग्याष्टकमित्यतः ॥ कु
स्तुंबुरुधान्याकम् ॥ अद्येत्यादि० गोत्रायशर्मणेतुभ्यमिदंसौभाग्या
ष्टकंजन्मजन्मांतरेअविच्छिन्नसौभाग्यप्राप्तयेऽहंदेदनमेति ॥ मंत्र
स्तु ॥ यथात्वंसुभगागौरिसर्वदाशंकरप्रिया ॥ तथांमद्वेदिदाने
नानेनसौभाग्यदाभव ॥ अथ वैशाखशुक्लपक्षेअक्षय्यतृतीयायां
उदकुंभान्नसकरकान्नसान्नान्सर्वरसैःसह ॥ यवगोधूमचणकान्न सक्तू
न्नद्धयोदनंतथा ॥ छत्रोपानहकादींश्चगोभूस्वर्णान् प्रदापयेत् ॥
ग्रेष्मिकंसर्वमेवात्रसस्यंदानेप्रशस्यते। अद्येत्यादि० एतान्नजलकुंभान्न
रसान्नफलसहितान्नवरुणदैवतान् श्रीपरमात्मनोक्षय्यतृमिपूर्वकंसु
खसौभाग्यायुरारोग्यसौभाग्यसंतत्यभिवृद्ध्युत्तरविष्णुसायुज्यकाम
इत्यादि ॥ मंत्रस्तु ॥ एषधर्मघटोदत्तोब्रह्माविष्णुशिवात्मकः ॥
अस्यप्रदानात्संकलाममसंतुमनोरथाः ॥ गंधोदकतिलैर्मिश्रंसान्नंकुंभं
फलान्वितम् ॥ विष्णवेसंप्रदास्यामिअक्षय्यमुपतिष्ठतु ॥ पितर्युदिस्य
दानेतु ॥ एषधर्मघटोदत्तोब्रह्माविष्णुशिवात्मकः ॥ अस्यप्रदानात्तृप्यं
तु पितरश्चपितामहाः ॥ गंधोदकतिलैर्मिश्रंसान्नंकुंभंफलान्वितम् ॥
पितृभ्यःसंप्रदास्यामिअक्षय्यमुपतिष्ठतु ॥ अक्षय्यतृतीयायांतांबू
लदानमंत्रः ॥ सोपस्करंचतांबूलंसर्वदामंगलप्रियम् ॥ प्रियंचैवतुदेवा
नांसौगंध्यंवदनेस्तुमे ॥ पादुकादानमंत्रः ॥ कंटकोच्छिष्टपाषाणवृ
श्चिकादिनिवारणे ॥ पादुकेसंप्रदत्तेमेद्विजप्रीत्याप्रगृह्यताम् ॥ उपा
नदानमंत्रः ॥ उपानहौप्रदत्तेमेकंटकादिनिवारणे ॥ सर्वमार्गेषुसुख

देअतःशांतिप्रयच्छमे ॥ छत्रस्य ॥ इहामुत्रातपत्राणंकुरुमेकेशव
 प्रभो ॥ छत्रंत्वत्प्रीतयेदत्तंममास्तुचसदासुखम् ॥ व्यजनस्य ॥
 व्यजनंवायुदैवत्यंग्रीष्मकालेसुखप्रदम् ॥ अस्यप्रदानात्सकला
 ममसंतुमनोरथाः ॥ अन्यद्विशेषस्तुदशहरादानविधौद्रष्टव्यः ॥
 अस्यामेवलवणधेनुदानंयथा ॥ गोमयोपलिमेकुशोपरि आचि
 कंचर्मविन्यस्यतत्राढकेनलवणेनवस्त्राच्छादितांधेनुंप्रकल्प्य तां तुस्व
 र्णशृंगैरौप्यसुरांफलस्तनीमिक्षुपादांशर्करांजिह्वांगंधघ्राणवतीं स
 मुद्रोदरजशुक्तिकर्णां चंदनलिप्तां मुक्ताफलनेत्रां सक्तुपिंडकपोलांयव
 मुखांपट्टसूत्रकंबलांतथाछत्रिकाभूषितग्रीवां ताम्रपृष्ठां गुडपिंडापान
 कां कंबललांगूलां रसक्षीरां मधुयोनिं सर्वगेषुफलोपेतां विधाय चतु
 र्थांशेनवत्संकृत्वा माल्यवस्त्रभूषणायैस्तांसंपूज्य ब्राह्मणंवरयित्वा
 अथेत्यादि० ममसकलपापक्षयपूर्वकंयावदाभूतसंपुर्वानियतंस्वर्गवा
 सोत्तरसप्तद्वीपाधिपत्यत्वकाम इमालवणधेनुंपूर्वोक्तोपस्करयुतां गो
 त्रायशर्मणेतुभ्यंसंप्रददेनममेति ॥ मंत्रस्तु ॥ लवणेवैरसाःसर्वेलवणेसर्वदे
 वताः।लवणंतुहरेत्पापमतःशांतिप्रयच्छमे।सुवर्णदक्षिणांदत्वा प्रदक्षि
 णीकृत्यब्राह्मणान्भोजयेत्।अस्यमाहात्म्यम्।सर्वदानानिदत्तानिसर्व
 तुंकफलानिच ॥ सर्वैरसाःसर्वमंत्राःसर्वमेतच्चराचरं।सौभाग्यंचपरंवृद्धि
 शरीरारोग्यसंपदः ॥ नृणांभवतिदत्वातुरसधेनुर्नसंशयः॥स्वर्गेचनिय
 तंवासोयावदाभूतसंपुवः ॥ इतिरसधेनुदानम् ॥ अत्रैवकामना
 भेदेनाक्षय्यफलावाप्त्यैच ॥ तोलयेत्सितयात्मानंलवणेनगुडेनच
 कुंकुमेनाथवाशक्त्याकर्पूरागरुचंदनैरिति ॥ तथाचसर्वासुतृती
 यासु॥तथा॥ अयनविषुवन्मन्वादियुगाद्यादिषुपूर्वेषुच शिखरदान

मुक्तम् ॥ अक्षय्यादिषु सर्वासु तथा पुण्यदिनेषु च ॥ शिखराणामपीच्छं
तिदानं केचिच्चसूरयः ॥ अथ नानाशिखरदानविधिः ॥ गुडेशु व
स्त्रलवणधान्यकाज्जाजिशर्करा ॥ खर्जूरतंडुलाद्राक्षाक्षौद्रं मलयजेन च
कलैर्मनोहरैश्चैव शिखराणि प्रदापयेत् ॥ माघे मार्गशीर्षे वैशाखे रोहिणी
युतायां तृतीयायां प्रोष्ठपदशुक्लतृतीयायां च दद्यात् ॥ शिखरप्रमाणं तु
आत्मसमप्रमाणं प्रादेशाभ्यधिकं शरीरार्धप्रमाणं वा ॥ अथ दानप्रयो
गः ॥ उक्तकाले यजमानः कृतनित्यक्रियः पूर्वाह्णे अथेत्यादि ० दुःखदौ
र्भाग्याभावपूर्वकं कल्पकोटिशतत्रयावच्छिन्नगौरीभवननिवासानंत
रं पृथ्वीपतित्वकामः श्वोगुडशिखरदानं करिष्ये ॥ इतिसंकल्प्य ॥
गणेशपूजादिनां दीक्षाद्धातं कृत्वा आचार्यवरणादियथाविभवं वस्त्रा
लंकारादिभिर्मधुपर्कपूजां तं कृत्वा गोमयेनोपलिप्तायां शुविद्वक्षुपत्रा
ण्यास्तीर्ण्य मूले द्विहस्तविस्तारं उपरिहस्तविस्तारं उपरिहस्तमात्र
विस्तारं इक्षुदलमयंकुशलं कृत्वा तदभ्यंतरे रक्तवस्त्रेणावेष्ट्य गुडादिदे
यद्रव्येण पूर्व उपरिद्वक्षुपत्रकटकमास्तीर्ण्य तत्र क्षौमादिवस्त्रोपरिशर
दिंदुवर्णाभां चंद्रमौलिं पद्मासनाक्षसूत्रकमंडलुवरदाभयकरं हैमीगौरीं
सशिखरांसूत्रेणावेष्ट्य कुंकुमादिना पूजयेत् ॥ अथांगपूजा ॥ ॐ भवा
न्यैनमः पादौ पूजयामि ॐ कामिन्यै ० जानुनीपू ० ॐ कामदेव्यैनम
ऊरूपू ० ॐ जगत्स्थित्यै ० नाभिम् ॐ आनंदायै ० हृदयं ० ॐ नंदा
यै ० स्तनौ ० ॐ शस्त्रधारिण्यै ० बाहूपू ० ॐ शितिकंठायै ० कंठपू ०
ॐ सुमुखायै ० मुखपू ० ॐ त्रिलोचनायै ० नेत्राणि ० चंद्रशेखरायै ०
भालंपू ० ॐ ललितायै ० शिरःपू ० ॐ सर्वात्मिकायै ० सर्वांगपू ० इत्यं
गपूजा ॥ ततो जलिना पुष्पाण्यादाय प्रदक्षिणीकृत्य पठेत् ॥ यस्मान्नि

वासः पार्वत्याः शिखरत्वं सुरैर्वृतं ॥ तस्मान्मां पाहि भगवन् गौरीतिष्ठ
 तिसर्वदेति ॥ पुष्पांजलिं समर्प्य नमस्कृत्य गतिवाधानिर्घोषैर्जागरं कुर्व्या
 त् ॥ ततः प्रभाते स्नानादिकृतनित्यक्रियः शिखरपश्चिमभागे प्राङ्मु
 खोपविश्य अद्येत्यादि ० संकल्पोक्तफलं संकीर्त्य गोत्राय शर्मणे इदं गु
 ढशिखरं गौरीप्रतिमासहितं सोपस्करं तुभ्यमहं संप्रददे नममेति दद्यात्
 तंतः सुवर्णदक्षिणां दद्यात् ॥ भूयसीं च दत्वा ब्राह्मणान्संभोज्य तद्दिने
 क्षीरं घृतं वा वाग्यतो मुक्तकेशस्तूष्णीं प्राशयेत् ॥ इक्षुवस्त्रादिशिखरपद
 स्थाने संकल्पादौ तत्तत्पदं तत्र तत्र वक्तव्यमिति विशेषः अन्यत्सर्वपूर्व
 वत् ॥ इति गुडादिशिखरदानविधिः ॥ अथ चैत्रादिमासेषु तृतीया
 दिने सौभाग्यवतीनां दानविशेषाः ॥ चैत्रे मासितृतीयायां विशालाक्षि
 मुदेदधि ॥ ससुवर्णकुंकुमं च दत्वा शिवपुरं व्रजेत् ॥ वैशाखे श्रीमुखीप्रीत्यै
 दत्वा कनकशर्कराम् ॥ सर्वान् कामानवाप्नोति मृता शिवपुरं व्रजेत् ॥ ज्ये
 ष्ठे नारायणप्रीत्यै तांबूलं ससुवर्णकम् ॥ दत्वा सुवासिनीः पूज्य पूर्वो
 क्तफलभागभवेत् ॥ आषाढे माधवीप्रीत्यै हेमयुक्तगुडं तिलान् ॥
 दत्वा सर्वसुखं भुक्त्वा देव्याश्चानुचरी भवेत् ॥ श्रावणे कमलाप्रीत्यै
 दत्वा हेमतिलान् गुडम् ॥ भोगान् भुक्त्वा महीपृष्ठे गोलोकमधिगच्छ
 ति ॥ भाद्रे सुभद्राभद्रायै दत्वा हेमफलैः सह ॥ सर्वलोकेश्वरीभुत्वा
 प्राप्नोति सत्यलोकताम् ॥ आश्विने पार्वतीप्रीत्यै चंदनं कांचनं तथा ॥
 दत्वा यज्ञफलं प्राप्य गौरीलोके महीयते ॥ कार्तिके धनदाप्रीत्यै दत्वा सा
 ज्यं सुवर्णकम् ॥ इह लोके सुखं भुक्त्वा अंतर्गौरीपुरं व्रजेत् ॥ मार्गशीर्षे
 उमाप्रीत्यै लवणं ससुवर्णकम् ॥ दत्वा चेहसुखं भुक्त्वा अंतर्लक्ष्मीप्री
 या भवेत् ॥ पौषे सान्नसुवर्णं च इंद्राणीप्रीतये मुदा ॥ दत्वा सौभाग्यमाप्नोति ॥

तिचांतेस्वर्गेमहीयते ॥ माघेगौरीप्रीतयेतुददातिसतिलंगुडम् ॥ सु
वर्णचवथाशक्त्यागौरीसहचरीभवेत् ॥ फाल्गुनेराधिकाप्रीत्यैपीत
वस्त्रसुवर्णकम् ॥ दत्त्वासौभाग्यमतुलंप्राप्नोतिवरपुत्रताम् ॥ इतितृ
तीयादानानि ॥

इतिमहीधरकृतेदानसंग्रहेतृतीयादानकथनं

नामाष्टमः कोशः ॥ ८ ॥

॥ अथचतुर्थीदानानि ॥ चैत्रशुक्लचतुर्थ्यांशंखदानम् ॥ अथे
त्यादि० गोत्रायशर्मणेइमंशंखंसर्वमंगलप्राप्तये विष्णुदैवतंतुभ्यमहं
संप्रददेनमम ॥ मंत्रस्तु ॥ शंखः शुभकरोनित्यंसर्वमंगलदायकः ॥
तस्मादस्यप्रदानेनशांतिरस्तुसदामम ॥ वैशाखशुक्लचतुर्थ्यांफ
लदानम् ॥ अथेत्यादि० गोत्रायशर्मणेइमानिफलानिवनस्पतिदैव
तानिश्रीगौरीप्रीतिकामस्तुभ्यमहंसंप्रददेनमम ॥ ज्येष्ठशुक्लचतुर्थ्या
कंदमूलदानम् । अथेत्यादि० गोत्रायशर्मणेइमानिमूलानिकंदानि
चवनस्पतिदैवतानिगौरीप्रीतये गोत्रायशर्मणेतुभ्यमहंसंप्रददेनमम
॥ मंत्रस्तु ॥ ब्रह्मणानिर्मिताःपूर्वव्रतीनांपुष्टिहेतवे ॥ तस्मादेषांप्रदा
नेनपुष्टिरस्तुसदामम ॥ आषाढशुक्लचतुर्थ्यांशाकपत्रतांबूलदा
नम् ॥ अथेत्यादि० गोत्रायशर्मणेतुभ्यमेतानिशाकविशेषाणिव
नस्पतिदैवतानिब्रह्मणः प्रीतये० ॥ मंत्रस्तु ॥ नानाविधानिपत्राणित
पोवृद्धिकराणिच । स्वाद्यानिब्रह्माप्रीणातुमांसैःशाकदानतः ॥
सर्वासुचतुर्थीपुगणेशप्रीतयेमोदकदानमुक्तम् ॥ विशेषतो
भाद्रमाषशुक्लपक्षेगणेशचतुर्थीबहुलायांचदद्यात् ॥ मो
दकदानमंत्रस्तु ॥ श्रीविप्रायनमस्तुभ्यंसाक्षाद्देवस्वरूपिणे ॥ गणेशप्री

तयेतुभ्यंमोदकान्वैददाम्यहम् ॥ मोदकान्सफलान्मुद्रान्दक्षिणाभिः
 समन्विताम् ॥ आवयोस्तारणार्थायगृहाणेमान्नमोनमः ॥ गणेशः
 प्रतिगृह्णातुगणेशोवैददातिच ॥ गणेशस्तारकोभाभ्यांगणेशायनमोन
 मः ॥ भौमवारयुतायांचतुर्थ्यामंगारकमूर्तिदानम् ॥ दशसौवर्णि
 कंमुख्यंदशार्द्धार्द्धमथापिवा ॥ मूर्ति मांगारिकीदत्वास्वर्गलोकेमहीय
 ते ॥ सुवर्णपात्रेरौप्येवाभक्त्याताम्रमयेपिवा ॥ विंशत्पलानिपात्राणि
 विंशत्यर्द्धमयानिवा ॥ शक्त्यावित्तस्यभक्त्यातुपात्रेताम्रमयेपिवा ॥ प्रति
 ष्ठाप्यकुजंपात्रेरक्तवस्त्रेणवेष्टितम् ॥ पुष्पमंडपिकांकृत्वादिव्यैर्धूपैश्चधूपि
 तां ॥ तत्रस्थंपूजयेद्देवैवेदमंत्रैः सुसंस्कृतैः ॥ भक्ष्यभोज्यैरनेकैश्चफलैरत्नैश्च
 संयुतैः वस्त्रैः प्रावरणैर्यानिःशय्योपानद्वरासनैः ॥ छत्रैः पुष्पैर्गंधवरैः शक्त्या
 वित्तानुसारतः ॥ ब्राह्मणायचतंदद्यादक्षिणासहितंशुभम् ॥ अथेत्या
 दि० गोत्रायशर्मणेद्रुमामंगारकमूर्तिपूर्वोक्तोपस्करसहितांगणेशप्रीत
 ये० ॥ मंत्रः ॥ सौवर्णिलक्षणैर्युक्तामूर्तिमांगारिकींशुभाम् ॥ गणे
 शप्रीतयेदत्तां गृह्णविप्रनमोस्तुते ॥ सुवर्णदक्षिणांदद्यात् ॥ सर्वा
 सुचतुर्थीषुगणेशप्रीतयेस्वर्णवारणदानम् ॥ शतकर्षसुवर्णेनत
 दर्द्धार्द्धेनवापुनः ॥ कृत्वेभंराजतेपात्रेरक्तवस्त्रेणवेष्टयेत् ॥ एवंवारणदा
 नेनसर्वविघ्नंविनश्यति ॥ अथेत्यादि० इमंसौवर्णवारणंगणमंतिदेवतं
 गणपतिप्रसादसिद्धिद्वारासर्वविघ्नोपशान्त्युत्तरगणेशसायुज्यकामोगो
 त्रायशर्मणेतुभ्यमहंसंप्रददे नमः ॥ मंत्रस्तु ॥ सुवर्णेभंमयादत्तंस
 र्वालंकारसंयुतम् ॥ निर्विघ्नंममसर्वत्रजायतांगणनायकेति ॥ विशेष
 विधिस्तुगजदानविधौद्रष्टव्यः ॥ अथान्यत्सुगमोपायम् ॥ चतु
 र्थ्यावारणंहैमपलादूर्द्ध्वमुशोभनम् ॥ कारयित्वाकुशयुतंतिलद्रोणे

परिस्थितम् ॥ वस्त्रपुष्पैः पूजयित्वा नैवेद्यं विनिवेदयेत् ॥ ततस्तु
ब्राह्मणे दद्याद्गणेशः प्रीयतामिति ॥ काय्यारिभेषु सर्वेषु तस्य विघ्नं न जा-
यते ॥ राज्यकामंस्तथाराज्यं श्रीकामः श्रियमाप्नुयात् ॥ वारणाः सप्तज-
न्मनि भवन्ति मदविह्वलाः ॥ इदं चैत्रश्रावणे कार्तिके वा काय्यारिभेकाय्य-
म् ॥ अथ गणेशमूर्तिदानं सर्वासु चतुर्थीषु अयनादिपर्वेषु वा ॥
रौप्यपलशतकं निर्मितसिंहासने दशवापंचकर्षसुवर्णनिर्मितमूषकोपरि
मणिमयीं स्वर्णादिद्रव्यमयीं वा यथाविभवं गणेशमूर्तिसंस्थाप्य संपूज्य
ब्राह्मणं च वस्त्राभरणैः संपूज्य अद्येत्यादि ० ममानेकजन्मोपार्जितपा-
पक्षयपूर्वकं सशैलवनकाननसप्तसागरपृथ्वीदानसमफलवाप्तये इमां ग-
णेशमूर्तिसालंकृतां सोपस्करांगोत्राय शर्मणे तुभ्यमहं संप्रददे नमः ॥
प्रार्थना ॥ यमामनंति ईशाया विश्वनाथमुमासुतम् ॥ विघ्ने शरक्षप्रचुरं
तुभ्यं दास्याम्यभीष्टदम् ॥ दानवाक्यं तु ॥ गणनाथो विघ्नहरो गौरी
सूनुरभीष्टदः ॥ अस्य दानेन मेशांतिर्भूयात्संसारसागरे ॥ गुल्मरोगी तु
पूर्वोक्तविधिना गणेशं दद्यात्तत्र मंत्रः ॥ विनायकगणेशानसर्वदेवेन स्मृतं ।
पार्वतीनंदनमगुल्ममाशुं विनाशय । तथा च ॥ विनायकगणेशानलंबो
दरगणाधिप ॥ विघ्नान्तलुद्धक्रतुं ढशमयव्याधिमुदरम् ॥ गुल्मप्ली-
हानमष्टीलं व्याधिजातं यदौदरम् ॥ तव दानेन महतायुक्तेनाखुरते न हि ॥
नाशया शुमरेशानपुत्रभक्तस्य मे प्रभो ॥ एवं कुर्व्याद्गणपतेर्दानं व्याधि-
विमोचनम् ॥ इत्युदररोगघ्नं गणेशमूर्तिदानम् ॥

इति महीधरकृते दानसंग्रहे चतुर्थीदानविधिर्नाम

नवमः कोशः ॥ ९ ॥

अथ पंचमीदानानि ॥ तत्र चैत्रशुक्लपंचम्यां फाल्गुने वा गायत्री

पयोगितंत्रीमृदंगादिवादित्रदानम् ॥ वादित्रेभ्योनमइतिसंपूज्य ब्रा
 ह्मणंचसंपूज्यअद्येत्वादि० गोत्रायशर्मणेतुभ्यमेतानिगेयोपयोग्या
 निवादित्राणिगंधर्वदैवतानिममसौभाग्याभिवृद्धिपूर्वकंश्रीतांडवेश्वर
 शिवप्रीतयेऽहंसंप्रददेनममेति ॥ मंत्रस्तु ॥ नानाविधानियंत्राणिशि
 वप्रीतिकराणिच ॥ रूपलावण्यसौभाग्यवर्द्धनानिगृहाणमे ॥ दाने
 नानेनसर्वात्माशिवःप्रीतोस्तुसर्वदेति ॥ अथयस्मिन्कस्मिन्पंच
 म्यांवामन्वादिविषुवायनादिपर्वसुदारिद्र्यहरंकुबेरमूर्त्तिदानम्
 दारिद्र्योजायतेमन्योदानविघ्नंकरोतियः । कुबेरमूर्त्तिदानेनऐश्वर्य्यलभते
 पुनः ॥ अत्रसार्द्धमाषद्वयादारभ्यपंचाशन्माषावधिवाचित्तशा
 ऋराहित्येनपुष्पविमानस्थांकुबेरमूर्त्तिपार्श्वयोःपद्मशंखाकारयुतांकु
 त्वांशुभेहिवा ॥ अद्येत्यादि० ममेहजन्मनिपूर्वजन्मनिवादान
 विघ्नजनितदारिद्र्य विनाशपूर्वकयथे प्सितधनप्राप्त्यर्थंकुबेरमू
 र्त्तिदानंकरिष्ये ॥ इतिसंकल्प्यगोमयो पलितेद्विचतुष्केद्रोण
 तंदुलराशौकुबेरप्रतिमांराजाधिराजेतिसंपूज्य ततश्चप्रेष्यांस्व
 गृह्यविधिनाग्निप्रतिष्ठाप्यसमिदाज्यचरुभिः प्रत्येकमष्टोत्तरशतं
 राजाधिराजायेति मंत्रेणहुत्वातत्संख्ययाघृताक्ततिलैर्व्याहृति
 भिश्चहुत्वाकुबेरमूर्त्तिदद्यात् ॥ अद्येत्यादि० ममेहजन्मनिज
 न्मांतरेवाकृतदानविघ्नजनिततीव्रदारिद्र्यविनाशनपूर्वकंयथेप्सितध
 नप्राप्त्यर्थंचइमांकुबेरमूर्त्तिपुष्पविमानस्थांपार्श्वयोः पद्मशंखाकार
 युतांसोपस्करांगोत्रायशर्मणेतुसुपूजितायतुभ्यमहंसंप्रददेनममेति ॥
 मंत्रस्तु ॥ उत्तराशापतेदेवकुबेरनरवाहन ॥ पद्मशंखनिधीनांतवं
 पतिःश्रीकंठवल्लभः ॥ दानविघ्नान्मयाप्राप्तंदारिद्र्यंममदुःखदम् ॥ त

त्सर्वतददानेनपापमाशुविनाशयेति ॥ देयद्रव्यतृतीयांशंचतुर्थांशं
 वादक्षिणांदद्यात् ॥ ततोब्राह्मणभोजनंसंकल्प्य भूयसींदक्षिणां
 दद्यात् ॥ अथ श्रावणशुक्लपक्षेनागपंचम्यांसर्पभयंनिवृत्यर्थं
 नागदानम् ॥ कृत्वाहेममयान्नागान्सतःसप्तपलैःशुभान् ॥ तद्
 द्वाद्धेनवाकुर्घ्यादित्तशाठ्यंविवर्जयेत् ॥ तेषुनागान्प्रतिष्ठाप्यनाममं
 त्रैःपृथक्पृथक् ॥ अनंतवासुकिंशंखंपद्मंकंबलमेवच ॥ तथाकर्को
 टकंनागंनागमश्वतरंतथा ॥ संपूज्यविधिवत्पश्चाद्दानंतेषांसमाच-
 रेत् ॥ यएवंकुरुतेमर्त्यस्तस्यसर्पभयंनहि ॥ तेषांदानेपूजनेचविष-
 निषेधकमंत्रो॥यथा ॥ ॐकुरुकुल्योहुंफट्स्वाहा॥ देयद्रव्यंब्राह्मणं
 चसंपूज्य ॥ अद्येत्यादि० ॥ ममसर्पादिसमस्तविषभीतिनिराकर-
 णपूर्वकसौभाग्यशौर्घ्याभिवृद्धये एतान्नागान्सुवर्णमयान्गोत्रायश-
 र्मणेतुभ्यंसंप्रददेनममेति ॥ मंत्रस्तु ॥ वसुंधराधरोदेवःशेषोविषवि-
 नाशकः॥ प्रीतोस्तुनागदानेनअभयंमेप्रयच्छंतु ॥ तेषांफणासुमौक्ति-
 कानिनिधायताम्रपात्रेषुसतिलान्नागान्दद्यादितिदिशेषः ॥ अथाश्वि-
 नकार्तिकयोःशुक्लपंचम्योर्वेणुपात्रदानम् ॥ यथाशक्तिवेणुपा-
 त्रेषुसप्तधान्यफलसौभाग्यद्रव्यंनिधाय तत्रललितांनाममंत्रैःसंपूज्य-
 यथा॥ ॐभृष्टचैनमः ॐश्रियै० ॐनंदायै० ॐविजयायै० ॐसर्वार्थ-
 दायिन्यै० इतिसंपूज्य ब्राह्मणान्संपूज्य अद्येत्यादि० ममसर्वसंप-
 त्प्राप्त्युत्तरश्रीदेवीसालोक्यप्राप्तिकाम० ॥ मंत्रस्तु ॥ वेणुपात्रप्रदानेन
 तुष्यतेललितासदा ॥ तथाहिमेशिवंसर्वजायतांश्रीप्रसादतइति॥ अथ
 माघशुक्लपक्षेश्रापंचम्यारतिकामप्रीतयेकुंकुमहरिद्रासिंदूर-
 रोचनाकस्तूरीकर्पूरादिनानासुगंधिदानम् ॥ एतेषांविधानंतु

मीनसंक्रमणदानंविधौद्रष्टव्यम्॥ अथ रतिकाममूर्तिदानम्॥
 रतिकामप्रतिमांसौवर्णीसर्वलक्षणसंपन्नांकृत्वा तद्यथा। शुभारतिः प्रक
 र्तव्यावसंतोज्ज्वलभूषणानृत्यमानाशुभादेवीसमस्ताभरणैर्युता। वीणा
 वादनशीलाचमदकर्पूरचर्चिता॥ कामदेवस्तु कर्तव्यारूपेणाप्रतिमोभू
 वि। अष्टबाहुस्त्रिनेत्रश्चशंखपद्मविभूषणः। चापबाणकरश्चैवमदादंचित
 लोचनः॥ रतिप्रीतिस्तथाशक्तिर्मदशक्तिस्तथोज्ज्वला। चतस्रस्तस्य क
 र्तव्याः पत्न्योरूपमनोहराः। केतुश्चमकरःकार्ग्यः पंचबाणमुखो महान्
 एवंविधायवसंतोत्सवपूजांविधायब्राह्मणं वस्त्रालंकारादिभिर्वृत्वा अ
 येत्यादि० सकलपापक्षयपूर्वकगंधर्वाप्सरोगणपूज्यमानत्वविशिष्टवै
 भवेनयावदाभूतसंपुवसोमलोकनिवासकाम इमारतिकाममूर्तिं सर्वा
 वयवसंपन्नांसौभाग्यभूषितांगोत्रायशर्मणेतुभ्यमहंसंप्रददेनममेति। दा
 नवाक्यंतु। सर्वलोकप्रियः श्रीमान्कामस्त्वंसौख्यवर्द्धनः। दानेनानेनदेवे
 शममस्वस्तिकरो भवेति॥ अनेनविधिनायस्तुकाममूर्तिंप्रदापयेत्॥ कु
 रूपत्वंपत्तिशोकंदारिद्र्यंचनपश्यति । कामरूपी भवेन्मर्त्यः सर्वसौभा
 ग्यसंयुतः। पुत्रवान्धनवांश्चैवजायतेसप्तजन्मनि। अस्यामेवगुडाच्छनं
 ताम्रस्वर्णसहितंवृषभदानं। वसंतोत्सवपंचम्यामनङ्गाहंददातियः। सोरि
 ष्टान्विनिहत्वाशुदीर्घायुत्वंचविंदति। अथप्रयोगः। कर्ताकृतनित्यक्रि
 यः गोमयोपलिप्तेमंडपेगणेशंसंपूज्य। अयेत्यादि० ममसमस्तारिष्टापन्नि
 वारणपूर्वकंदीर्घायुष्यकामः वसंतोत्सवपंचम्यामनङ्गाढकीसहित
 स्वर्णतिलकमुक्ताग्रैवेयप्रवालपुच्छवस्त्रोपशोभितंवृषदानमहंकरिष्ये
 इतिप्रतिज्ञाप्याचार्यंवृत्वा यथोक्तोपस्करसहितंवृषभंसंपूज्यपूजन
 मंत्रोपथा॥ वृषध्वजस्यबाहस्त्वंधर्ममूर्तिः सनातनः॥ गृहाणमत्कृतांपू

जाप्रसन्नो वरदो भवेति ॥ संकल्पस्तु ॥ अद्येत्यादि ० ममानेकजन्मार्जि-
तपापसंसूचितानेकविधदुष्टारिष्ठानेकोपद्रवापमृत्युनिराकरणपूर्वकं नै-
रुज्यबलपुष्टिदीर्घायुष्यावाप्तयेऽमुं वृषभंतु वरीगुडसहितं स्वर्णालक्तक-
प्रवालपुच्छमुक्ताग्रैवेयदुकूलोपशोभितं रुद्रदैवतं गोत्राय शर्मणे तुभ्यम्
हंसं प्रदेनममेति ॥ मंत्रस्तु ॥ धर्मस्त्वं वृषरूपेण जगदानंदका-
रकः ॥ अष्टमूर्तेरधिष्ठानमतः शांतिं प्रयच्छ मे ॥ अथ हिरण्यवृष-
भदानम् ॥ हिरण्यवृषं दानं च कथयामि समासतः ॥ वृषरूपं हिरण्ये-
न सहस्रेणाथ कारयेत् ॥ तदर्द्धेनाथ वाधीमांस्तदर्द्धार्द्धेन वा पुनः ॥ अष्टो-
त्तरशतेनापि वृषभं धर्मरूपिणम् ॥ ललाटे कारयेत्पुंड्रमर्द्धचंद्रकलाकृ-
तिम् । स्फाटिकेन तु कर्तव्याः खुराश्च रजतेन च ॥ ग्रीवां तु पद्मरागेण ककु-
द्गोमेदकेन च ॥ ग्रीवायां घंटावलयरत्नचित्रं तु कारयेत् ॥ वृषां कं-
कारयेत्तत्र किंकिणीकृतपन्नगम् ॥ वृषां कंशिवमुक्तलक्षणं काप्य-
मिति ॥ देशकालकुंडमंडपवेदिकादितुलापुरुषदानोक्तवद्विधेयम् ॥
वृषं च स्थापयेत्तत्र पश्चिमाभिमुखन्ततः ॥ ईश्वरं पूजयेद्भक्त्या वृषारूढं
वृषध्वजम् ॥ वृषेद्रं पूज्य गायत्र्यानमस्कृत्य समाहितः ॥ ओं तीक्ष्णशं-
गायविग्रहे धर्मपादाय धीमहि तन्नो वृषः प्रचोदयात् ॥ इति वृषगाय-
त्री ॥ ततो यथाकाममुल्लिख्य विप्राय दद्यात् ॥ सुवर्णदक्षिणा च देया
अन्यत्सर्वं तु लावदोध्यम् ॥ एतच्च कुरुते भक्त्या वृषदानमनुत्तमम्
शिवस्यानुचरो भूत्वा मुचिरंतत्र मोदते ॥ शिवाय स्वर्णवृषभदानेऽप्येते दे-
वविधिः । पश्चाच्छिवस्य पश्चिमे वृषभं स्थापयेदिति शेषः ॥ अथ कुष्ठहरं
रौप्यवृषभदानम् ॥ अथ कुष्ठहरं वक्ष्ये वृषदानमनुत्तमं ॥ यत्काप्यं कु-
ष्ठरोगार्तैः शरीरसुखकारकं । तत्तु हेमशृंगखुरयुतं पलत्रय रौप्यनिर्मितं वृ-

षष्ठसौवर्ण्यमामाहेश्वरीप्रतिमायुतं पलाष्टककांस्यनिर्मितपात्रेश्वेतव
 स्त्रयुतसंपूज्य केयूरकटकवस्त्रमाल्यांगुलीयकादिभिर्ब्राह्मणंसलक्षणं
 संपूज्य यथाकामंसंकल्प्यदद्यात् ॥ तत्रमंत्रः ॥ अष्टमूर्तिर्महे
 शानःकृपयावृषभध्वजः ॥ श्वेतमौदुंबरसर्वमथवाचित्रमेवच ॥
 त्वग्दोषजनितंयच्चमण्डलान्यथवानघ ॥ सर्वकर्मविपाकोत्थंपार्वती
 नाथसर्वग ॥ कुष्ठहाभवसर्वेशरक्षमांपार्वतीपतेति ॥ अन्यत्सर्वस्वर्ण
 वृषभदानवत्कर्त्तव्यम् ॥ कृतेनानेनकुष्ठानिब्रजंतिविलयंध्रुवम् ॥
 तस्मात्कुष्ठाभिभूतानांकरणीयमिदंजगुः ॥ शिवाय वृषभदानेविधि
 स्तुपूर्ववत् ॥ मंत्रोयंविशेषः ॥ यथा ॥ उमाप तेत्रिलोकेश
 जमत्कारणकारणम् ॥ स्ववाहनप्रदानेनप्रीतोभवनमोस्तुतेइति ॥

इतिमहीधरकृतेदानसंग्रहेपंचमीदानविधि

र्नामदशमःकोशः ॥ १० ॥

अथषष्ठीदानानि॥तत्रादौकपिलाषष्ठ्यांकपिलादानम् ॥ भाद्रे
 मासिसितेपक्षे भानौचैवकरेस्थिते ॥ पातेकुजेचरोहिण्यांसाषष्ठीक
 पिलाभवेत् ॥ कपिलाषष्ठ्यांकपिलादानम् ॥ साचदशधोक्ता ।
 सुवर्णकपिलापूर्वाद्वितीयागौरीपिंगला । तृतीयाचैवरक्ताक्षीचतुर्थीगुड
 पिंगला । पंचमीबहुवर्णास्यात्षष्ठीचश्वेतपिंगला । सप्तमीश्वेतपिंगाक्षीभि
 ष्टमीकृष्णपिंगला । नवमीपाटलाप्रोक्तादशमीपुच्छपिंगला । एषादशवि
 धारुयाताकपिला भुक्तिमुक्तिदा ॥ सर्वाह्येतामहाभागास्तारयंतिनसं
 शयः ॥ इति ॥ सहस्रयोगवांदद्यात्कपिलांत्वेकदैवहि ॥ सममेवपुराप्राह
 ब्रह्माब्रह्मविदांबरः । स्वर्णशृंग्योरौप्यस्वराः सवत्सायाभवंतिहि । सुरभी
 लोकमासाद्यरमतेतावतीःसमाः ॥ अथप्रयोगः ॥ ब्राह्मणंवस्त्रालंकारा
 दिभिः संपूज्यकपिलांचसंपूज्य अद्येत्यादि० ममगोसहस्रदानफ

लावानिसवत्सकपिलायाः रोमपरिमितवत्सरपर्यंतकामधेनुलोक
निवासकामइमांकपिलांसुवर्णशृंगीरौप्यखुरांताम्रपृष्ठीकांस्योपदोहां
घंटाचामरभूषितांश्वैतवस्त्रयुगच्छन्नांचंदनस्रग्विभूषितांसोपस्करांरु
द्रदैवत्यांगोत्रायशर्मणसुपूजितायब्राह्मणायतुभ्यमहंसंप्रेदद नममेति
मंत्रस्तु। कपिलेसर्वदेवानांपूजनीयासिरोहिणी। तीर्थदेवमयीयस्मादतः
शांतिप्रयच्छमे ॥ यालक्ष्मीःसर्वदेवानांयाचदेवेष्ववस्थिता ॥ धेनुरूपे
णसादेवीममशांतिप्रयच्छतु। देहस्थायचरुद्राणांशंकरस्यचयाप्रिया
धेनुरूपेणसादेवीममपापंव्यपोहतु। विष्णोर्वक्षसि ० चतुर्मुखस्यसुधात्वं
पितृमुख्यानां ० गावोममाग्रतःसंतु ० नमस्तेकपिलेदेविसर्वपापप्रणा
शिनि ॥ संसारार्णवमग्नमांगोमातस्त्रातुमर्हसि ॥ हिरण्यगर्भगर्भेतिच
इतिमंत्रांप्रदक्षिणांकुर्ध्यात् सुवर्णदक्षिणांदद्यात् ॥ इतिकपिला॥
महाकपिलातु ॥ वस्त्रंचतुर्गुणंदत्वादक्षिणांचचतुर्गुणं। सर्वालंकारकादी
नितथैवपरिकल्पयेत् ॥ दत्तामहासाकपिलास्वर्गमोक्षफलप्रदा। सप्तज
न्मरुतात्पापान्मुच्यतेनात्रसंशयः यान्यान्प्रार्थयतेकामांस्तांस्तान्प्रा
प्नोतिमानवइति अथ माघशुक्लेसूर्य्यषष्ठ्यांसूर्य्यमूर्तिदानं॥ एत
द्दानंसर्वासुषष्ठीषुभवति ॥ स्थंडिलंकारयेच्छुभंचतुरस्रंमुशोभनं ॥ स्था
पयेदव्रणंकुंभंपंचरत्नसमन्वितं। रक्तवस्त्रयुगच्छन्नंरक्तचंदनचर्चितं ॥
तस्योपरिन्यसेत्पात्रंसौवर्णताम्रमेववा ॥ कुंकुमेनलिखेत्पद्मंद्वादशारं
सकर्णिकं। तस्योपरिन्यसेत्सूर्य्यसौवर्णसरथारुणं। शक्त्यावावित्तसा
रेणवित्तशाठ्या विवर्जितः। तमर्चयेद्ब्रधपुष्पैर्विधिर्मंत्रपुरस्सरं। पंचा
मृतेनस्नपनंकुर्ध्याद्देवस्यसंयतः। गंधैर्नानाविधैर्दिव्यैः कर्पूरागरुकुंकु
मैः। फलैस्तदृतुसंभूतैरनेकैश्चसुगंधिभिः। ततस्तुकमलोपरि पूजनंयथा।

ॐ आदित्याय नमः । तपनाय पूष्णे ० भानुमते ० भानवे ० अर्यम्णे ०
 विश्वचक्राय ० अंशुमते ० सहस्रांशवे ० खनायकाय ० सूराय ०
 सूर्याय ० खगाय ० ॥ इति जन्मांतरसहस्रेण दुष्कृतं यन्मया कृतं ।
 तत्सर्वनाशमाया तु दिवाकरतवार्चनात् ॥ प्रार्थना ॥ विनता तनयो देवः
 कर्मसाक्षी तमो नुदः ॥ सप्ताश्वः सप्तरज्जुश्च अरुणो मे प्रसीदतु ॥ ततः
 संपूजयेच्छुक्लांसवत्सांगांपयस्विनीं । सवस्त्रकण्ठाभरणांसुघंटाभिरलंकृ-
 तां । पूजनमंत्रास्तु ॥ ब्रह्मणोत्पादिते देवि सर्वपापविनाशिनि । संसारार्णव-
 मग्नं मां गोमातस्त्रातुमर्हसि ॥ सुखपांबहु रूपाश्च मातरोलोके मातरः । गावो
 मामुपसर्पतु सरितः सागरं यथा । यालक्ष्मीः सर्वदेवानां याच्ये देवेषु संस्थिता
 धेनुरुपेण सा देवी मम पापं व्यपोहतु । ततो ब्राह्मणं वस्त्रालंकारादिभिः संपू-
 ज्य अद्येत्यादि ० सकलपापक्षयानंतरं कल्पशतावधिसूर्यलोकनि-
 वासानंतरं सप्तद्वीपाधिपत्योत्तरं जन्मायुतं यावदविच्छिन्नायुरारोग्य-
 कामइमांसौवर्णीं सूर्यमूर्तिं रौप्यरथोपरि स्थितां रत्नगर्भकलशयुतां सा-
 लंकारश्वेतगोसहितां गोत्राय शर्मणे तुभ्यमहं संप्रददे । नममेति दद्यात् ॥
 वाक्यं तु ॥ सकुंभवस्त्रैरत्नैश्च सर्वोपस्करणैः सह ॥ ददामि भानो भवते सर्वो
 पस्करसंयुतम् ॥ मनोभिलषिता वाप्तिकरो तु मम भास्करः ॥ प्रतिग्रहं
 त्रस्तु ॥ गृह्णामि भास्कररवे भवं तं विश्वतो मुखम् ॥ मनोभिलषिता वा-
 प्तिमुभयोः कर्तुमर्हसि ॥ ततो द्वादशविप्रान्संभोज्य दक्षिणां च दद्यात्
 अथ प्रतिषष्ठ्यां दुग्धशर्करायुतोदनदानम् ॥ षष्ठीं तिथिं समु-
 द्दिश्य ब्राह्मणस्य तु भोजनम् ॥ शाल्योदनं च पयसि कृत्वा शर्करया युतम्
 वर्तुलं घृतसंयुक्तं कर्षमेकं प्रदापयेत् ॥ कुले तस्यैव ये जाता ये भविष्यं-
 ति मानवाः ॥ अक्षय्यास्ते महात्मानो दानेनानेन पावनाः ॥ इह तस्यै

वयेसंतिदरिद्रानभवंतितेइति ॥ दानवाक्यंतु ॥ अन्नं ब्रह्म मयं साक्षात्सदु
ग्धघृतशर्करम् ॥ ओदनं ते प्रयच्छामि दारिद्र्यं मे विनाशयेति ॥
इति महीधरकृते दानसंग्रहे षष्ठीदानविधिर्नामैकादशः कोशः ॥ ६ ॥

अथ सप्तमीदानानि ॥ तत्रादौ वैशाखशुक्लपक्षे गंगासप्तम्यां
गाप्रीतये सुवर्णकमलदानं ॥ शयनं वस्त्रं संवीतं शर्कराकलशान्वितम् ॥
सर्वोपस्करसंयुक्तं तथैकां गांपयस्विनीम् ॥ गृहं च शक्तितो दद्यात् सम
स्तोपस्करान्वितम् ॥ सहस्रेणाथ निष्काणां कृत्वा दद्याच्छतेन वा ॥
दशभिर्वा त्रिभिर्वापि पद्मं कृत्वा विधानतः ॥ सौवर्णशक्तितो वापि वित्त
शाठ्यविवर्जितः ॥ संपूज्य पद्मसौवर्णसर्वोपस्करसंयुतम् ॥ ब्राह्मणं च
ततो वृत्वा वस्त्रालंकरणादिभिः ॥ अद्येत्यादि० मम श्रीगंगाप्रीतिपूर्व
कानेकविधपातकोपपातकक्षयोत्तरे हस्त्रीपुत्रधनधान्याद्यैश्वर्यभोगा
नंतरं श्रीविष्णुलोकगतिप्राप्तिकाम इदं सौवर्णपद्मं पूर्वोक्तोपस्करयुतं गो
त्राय शर्मणे तुभ्यं संप्रददे नममेति ॥ मंत्रस्तु ॥ एष पद्मो मया द
त्तः सर्वोपस्करसंयुतः ॥ प्रीतये तव गंगेह प्रसन्ना वरदा भव ॥ अंत्रवृद्धिरो
गहरं नारायणमूर्तिदानम् ॥ यज्ञविघ्नकरो मर्त्यो जायते अंत्रवृद्धि
मान् ॥ वक्ष्यामि तत्प्रतीकारं दानहोमादिकर्मणा ॥ निष्कमितसुवर्ण
स्य यथोक्तलक्षणां नारायणीमूर्तिं प्रकल्प्य श्वेतवस्त्रैः संवेष्ट्य षोडशोप
चारैः संपूज्य ब्राह्मणं च वा सोलंकारादिभिर्वृत्वा यथाकाममुल्लिख्य दद्या
त् ॥ मंत्रः ॥ नारायणजगन्नाथशंखचक्रगदाधर ॥ पूर्वजन्मनियज्ञा
देर्विघ्नाद्यद्वैकृतं मम ॥ अंत्रवृद्धिमहारोगदानेनानेन तोषितः ॥ चक्रह
स्तगदापाणेशमयाशुजगत्पते ॥ अन्यत्सर्वं तुलापुरुषदानवद्वोध्यम् ॥
अथाश्विनशुक्लसप्तम्यां आमुक्ताभरणं वा पुत्रशोकहरं सुवर्णनि

मितवृषदानम् ॥ बालोपघातीपशुहान्यासहारीचमित्रध्रुक् ॥ दावा
 ग्निज्वालकोपश्च अभिचारक्रियारतः । विश्वासघातीगरदोधर्मेविघ्नं क
 रोतियः । एतेहिपुत्रशोकार्त्ताजायंतेमानवाभुवि । तेषांपापोपशांत्यर्थं सु
 खसंतानवृद्धये । सौवर्णिकंबलीवर्ददानमुक्तंपुरातनैः ॥ तद्यथा ॥ शतक
 र्षसुवर्णेनतदर्द्धार्द्धेनवापुनः । वृषभंसर्वशृंगारयुतंसर्वांगपूरितम् । मुक्तादा
 मयुंतरम्यंसर्वरत्नोपशोभितं । ताम्रपात्रेतिलद्रोण्यांवृषभंपूजयेत्सुधीः
 आचार्य्यवस्त्रभूषाद्यैर्वृत्वादानंसमाचरेत् ॥ अद्येत्यादि० ममानेक
 जन्मांतरार्जितेहपुत्रशोकादिदुष्टपरिपाकसंस्तूचकज्ञाताज्ञातबालोप
 घातभूणहत्यादिमहापापोपपापजनित अपुत्रत्ववामृतापत्यत्वदो
 षनिराकरणोत्तरसंततिमुखाभिवृद्धये ० ॥ अन्यत्सर्वस्वबुद्ध्याकल्प
 नीयं ॥ पूर्वोक्तोपस्करसहितंसुवर्णवृषभंरुद्रदैवतमितिशेषः ॥ दानमंत्र
 स्तु ॥ धर्मोसिवृषरूपेणह्यधर्मनाशयाशुमे । पुत्रशोकाकुलं दीनं पाहि मां शं
 करप्रिय ॥ अथ माघेरथसप्तम्यामचलाख्यायांसूर्य्यमूर्तिदानं ॥
 तत्पुष्पीदानविधावुक्तम् ॥ अथ चतस्यामेवरथदानमुक्तंतत्तुधनुस्सं
 क्रमदानविधौद्रष्टव्यम् ॥ अथ ताटकदानम् ॥ ताम्रादिपात्रेकांचनं
 कर्णाभरणंरत्नखचितं घृतगुडतिलपिष्टसहितंसंस्थाप्यरक्तवस्त्रेणा
 च्छाद्य पुष्पादिभिःसंपूज्यब्राह्मणैःस्वास्तिवाचनंकुर्व्यात् ॥ अद्येत्या
 दि० ममसर्वापन्निवारणपूर्वकसर्वसंप्रप्तप्राप्तये सौभाग्याभिवृद्धयेवा०
 ॥ मंत्रस्तु ॥ भूषणंकर्णयोःस्वच्छंस्वर्णरत्नादिसंयुतम् । ताटकस्य
 प्रदानेनसौभाग्यंवर्द्धतांमम । आदित्यस्यप्रसादेनविप्रस्यपूजनेनच
 दुष्टदौर्भाग्यदुःखघ्नमयादत्तंतुताटकम् ॥ अथास्यामेवकूष्माण्डदा
 नम् ॥ रथसप्तमीकार्तिकशुक्लपक्षेचेतिमतांतरम् । ब्रह्महत्यादिपापघ्नकू

ष्मांडं सुतसौख्यदम् । कार्तिकेरथसप्तम्यांदद्यात्पुण्यदिनेष्वपीति । अथेत्यादि ० मम ब्रह्महननादिसप्तपापक्षयपूर्वकं बहुपुत्रपौत्रसौभाग्यादिसकलमनोरथावाप्तिकूष्मांडबीजसहस्रसंख्याकाब्दब्रह्मलोकनिवासकामोगोत्रायशर्मणसुपूजिताय इदं कूष्मांडं घृतप्लुतं तिललिप्तं मुक्ताप्रवालरत्नहेमफलतांबूलवस्त्रादियुतंगोधूमराशिस्थितं वनस्पति दैवतं सुवर्णदक्षिणायुतंतुभ्यमहंसंप्रददेनममेति ॥ दानवाक्यम् ॥ ब्रह्महत्यादिपापघ्नं ब्रह्मणानिर्मितं पुरा । कूष्मांडं बहुबीजाढ्यं पुत्रपौत्रादिवृद्धिदं मुक्ताप्रवालहेमादियुक्तं दत्तं तव द्विज । अनंतपुण्यफलदमतः शान्तिं प्रयच्छमे ॥

इति महीधरकृते दानसंग्रहे सप्तमी दानविधिर्ना

महादशः कोशः ॥ १२ ॥

अथाष्टमी दानानि ॥ तत्रादौ मधुमाधवयोरष्टमीषु पंचसु गंधिसंज्ञकफलदानम् ॥ कंकोलपूगकर्पूरजातीफललवंगके । सुगंधिपंचकं प्रोक्तमायुर्वेदप्रकाशकैः । देयद्रव्यं संपूज्य ब्राह्मणं च संपूज्य । अथेत्यादि ० मम सप्तपापक्षयपूर्वकं सर्वसौभाग्यमांगल्यप्राप्तये ॥ मंत्रस्तु ॥ सुगंधिपंचकफलं नित्यं सौभाग्यवर्द्धनम् । सर्वमांगल्यजनकमतः शान्तिं प्रयच्छमे इति । अथाश्विनचैत्रशुक्लपक्षे ऽष्टम्यां जगदंबिकामूर्तिदानं । पल्लेर्द्वादशभिः कुर्यात्तदर्द्धार्द्धेन वा पुनः । कर्षेस्तत्तुल्यसंख्यैर्वानिजवित्तानुसारतः । सिंहं रुक्ममयंकृत्वामूर्तिसर्वांगशोभनां । त्रिनेत्रांशशिचूडां च चतुर्बाह्वीं स्मिताननाम् । रत्नकंकणवैडूर्यमुक्ताहारादिशोभिताम् । विधाय दुर्गासंपूज्यविधिवद्भक्तिभावतः । ब्राह्मणं च सुवस्त्राद्यैर्वृत्वा दानं समाचरेत् ॥ अथेत्यादि ० सशैलवनकाननससागरपृथ्वीदानं समफला

वाप्तये इमांश्रीजगदंबिकामूर्तिमणिभूषणभूषितांसिंहारूढांगोत्राय
 शर्मणेतुभ्यमहंसंप्रददेनममेति ॥ मंत्रस्तु ॥ आदिमायामहाशक्ति
 विश्वमाताजगन्मयी ॥ दानेनास्याः प्रसन्नास्तु सर्वदाममशांभवी ॥ अथ
 यस्मिन्कस्मिन्नष्टम्यां रात्र्यंधत्वा पहंगोपालमूर्तिदानम् ॥
 नक्तांध्यं जायते तस्य योगवांनयनद्वये । करोति शूलप्रक्षेपंतस्य वक्ष्यामि
 निष्कृतिम् । यथाशक्तिमुवर्णेन कर्षादूर्ध्वेन गोपवेषांगोपालमूर्तिं कृत्वा
 तंडुलोपरिसंस्थाप्य षोडशोपंचारैः संपूज्य होमादिस्तु तुलापुरुषदानो
 क्तवत्कृत्वा ब्राह्मणं संपूज्य यथाकाममुल्लिख्य दद्यात् ॥ मंत्रः ॥ गो
 विंदगोपीजनवल्लभेशकंसासुरघ्नत्रिदशेशवंघा गोवर्द्धनाद्रिप्रवरैकहस्त
 संरक्षिताशेषगवामनीक । गोचक्षुषां चातिनिरोधजेन पापेन मेनाशय
 आंध्यमेतत् ॥ त्वदीयदानेन सुहृष्टरूपं नक्तांध्यमेतत्समुपाकरोतु ॥ इति
 अथ यस्मिन्कस्मिन्नष्टम्यां समस्तपापक्षयकरं त्रिशूलदानम् ॥
 श्रुताध्ययनसंपन्नं पावितारमकिंचनम् ॥ ब्राह्मणं दांतमाहूय दाना
 र्थं न ददाति यः ॥ मनुष्याणां हिंसकश्च जठरे शूलवान् भवेत् ॥ कृष्ण
 पक्षे चतुर्दश्यामष्टम्यां वा समाहितः ॥ कुर्ह्याद्वादशनिष्केण त्रिशूलं
 लक्षणान्वितम् ॥ सुवर्णमानं तु निष्कचतुस्कः सौवर्णिकः षट्पंचा
 शदधिकशतद्वयपलमूल्यो वा ॥ नाभौ निधाय संपूर्णतिलानां ताम्रनिर्मि
 तम् । पात्रमाढकमानं स्यात्तत्र शूलं न्यसेत्पुनः ॥ ततः शैवपंचा
 क्षरेण रुद्रप्रकाशकवैदिकमंत्रेण त्रिशूलायनमः । इति नाम मंत्रेण वा
 त्रिशूलं संपूज्य हैमं विरूपाक्षं कमलोपरि संपूज्य ॐ अघोरेभ्य इति
 मंत्रेण पूजांति प्रणिपत्य ततो विप्रंवृत्वा यथाविभवं वस्त्रालंकारादिभिः संपूज्य
 अघेत्यादि ० मम बुद्ध्यबुद्धिपूर्वककायवाङ्मनःकृतकर्माद्याज

न्मार्जितान्यजन्मोपार्जितमनुष्यहिंसनार्थाहृतब्राह्मणनिराकरणज
न्योदरशूलजनितपीडापनोदकामइदंस्वर्णमयं त्रिशूलं विरूपाक्षप्रति
मायुतं सोपस्करंगोत्रायशर्मणसुपूजितायतुभ्यमहंसंप्रददेनममेति
मंत्रस्तु ॥ भगवन्भगनेत्रघ्नदक्षयज्ञप्रमर्दन ॥ तवायुधप्रदानेनपापंनश्यतु
शंकरः ॥ युगांतेयेनलोकानांत्वमंतक विनाशनः ॥ विदग्धंयत्स्वपापेन
पापौघंचव्यपोथय ॥ येनदग्धंक्षणार्थेनत्रिपुरंसुरदुर्जयम् ॥ तेनपाशुपते
नाशुममशूलंविनाशय ॥ यदाबुद्धिकृतंपापंमनोवाक्कायचाक्षुषं तत्सर्वं
क्षयमेवाशुशूलदानप्रभावतः ॥ इति ॥ ततः सुवर्णपरिमितांदक्षिणां
दत्त्वा द्विजभोजनसंकल्पांविधाय भूयसींदत्त्वा कर्मेश्वरार्पणंकुर्वात्
अथ चक्षुरोगहरंगरुडमूर्तिदानम् ॥ तत्तुएकादश्यामष्टम्यांवा
कार्प्यं ॥ जन्मांतराक्षिरोधेनजायतेह्यक्षिवेदना । तन्नाशार्थमहंवक्ष्येगा
रुडंदानमुत्तमं ॥ पलान्वितसुवर्णेनसलक्षणंगरुडंकृत्वा मणिमयनेत्रयुत
मितिविशेषः ॥ तुलापुरुषदानोक्तवत्सर्वविधायगरुडगायत्र्याहोमंकु
र्वात् ॥ दानवाक्यम् ॥ देवदेवजगन्नाथलक्ष्मीप्रियपरात्पर ॥
वाहनस्यप्रदानेनतुष्टःकर्मविपाकजम् ॥ अक्षिरोगंजगन्नाथनारा
यणजगन्मय पुष्पंवापटलंवापिवातरक्तमथापिवा ॥ रक्तंवाप्यथ
नक्तंध्यंतथान्यद्बुद्धुदादिकमिति ॥ अन्यत्सर्वंतुलापुरुषदानवत्
कार्प्यं ॥ गरुडगायत्रीयथा ॥ ॐ तत्पुरुषायविद्महे वायुवेगायधी
माहितन्नोमृतमथनः प्रचोदयात् ॥

इतिमहीधरकृतेदानसंग्रहे अष्टमीदान

विधिर्नामत्रयोदशः कोशः ॥ १३ ॥

अथ नवमीदानानि ॥ तत्रादौचैत्रशुक्लपक्षेश्वरीरामचंद्रमूर्तिदानंत

त्र ॥ श्रीराममूर्तिं सौवर्णीशतकर्षमितां शुभां ॥ धनुर्बाणधरां दिव्यां मणि
 कुंडलमांडितां ॥ मंडपे पूजयेद्भक्त्यारथस्थां वस्त्रसंयुतां । ततो द्विजं समामं
 ज्य पूजयेद्विधिपूर्वकं ॥ कुंडलाभ्यां सुरतनाभ्यां मंगुलीयैरनेकधा ॥ गंधपु
 ष्पाक्षतैर्वस्त्रैर्विचित्रैः सुमनोहरैः ॥ अद्येत्यादि ० ममानेकजन्मकृतब्रह्म
 हत्यादिपापक्षयोत्तरामरेश्वरपूजितत्वपूर्वकं साग्रकल्पशतावधिविष्णु
 लोकनिवासानंतरं आयुरारोग्यरूपगुणोपेतसप्तद्वीपाधिपत्यकामइमां
 श्रीराममूर्तिं मणिमांडितां सोपस्करांगोत्राय शर्मणे सुपूजिताय तुभ्यमहं
 संप्रदेनममेति ॥ मंत्रस्तु ॥ इमां स्वर्णमयीं रामप्रतिमां समलंकृतां ॥ चित्र
 वस्त्रयुगच्छन्नां रामो हं राघवायते । श्रीरामप्रीतये दास्ये तुष्टो भवतुराववः
 तत्प्रतिष्ठासिद्धयर्थं गोभूहिरण्यं यथाशक्ति दद्यात् ॥ अथ चैत्राश्विन
 शुक्लनवम्यां दुर्गामूर्तिदानम् ॥ कृत्वा स्वर्णमयीं दुर्गामहिषासनशो
 भिताम् ॥ दुर्गास्वरूपं तु ॥ आलीढस्थानसंस्थानात्तथा कुर्व्याच्चतुर्भुजा
 असृक्पात्रकरादेवी शूलखड्गधरा तथा ॥ चतुर्थश्चकरस्तस्यास्तथा का
 र्प्यस्तु सामिषः ॥ इति । रौप्यरथमध्ये तां संस्थाप्य यथोक्तविधिना तां संपू
 ज्य संकल्पादिस्तु अष्टमीदानविधावुक्तं अपरं च ॥ श्रीदुर्गाप्रीतये शय्या
 दानं शूलांकितवृषदानं च कर्तव्यं ॥ तदुक्तं ॥ रत्नोपकरणैर्युक्तां दंतदारु
 मयीं शुभाम् ॥ शय्यां निवेदयेद्यस्तु भगवत्यै विधानतः ॥ संपूज्य गंधपुष्पा
 द्यौर्विधिवच्चण्डिकां नरः ॥ दुकूलवस्त्रतूलानां परिसंख्यातुयावती ॥ ताव
 दर्षसहस्राणि दुर्गालोके महीयते । वृषं शूलांकितं यश्च भगवत्यै निवेदयेत्
 आसप्तमं स तु कुलं महादेवालयं व्रजेत् ॥ अत्र शय्यादानविधिस्तु मिथुन
 संक्रांतिदानविधावुक्तः ॥ वृषदानविधानं तु कन्यासंक्रमदानविधावु
 क्तं ॥ अथ वैशाख्यां प्रौष्ठपद्यां वा कार्तिक्यां वा तथैव च ॥ माघ्यां वा

पिनवम्यांचपितृणांप्रीतयेमुदा ॥ यत्किंचिद्वस्तुमात्रंचदीयतेऽनुपकारिणे ॥ देवान्पितॄन्समभ्यर्च्यतदन्त्यायकल्पतेइति ॥ अथकार्तिकमाघशुक्लनवम्योः कूष्माण्डदानमुक्तंतद्विधिस्तुसप्तमीदानविधावुक्तः ॥ अथनवम्यामायुधदानं ॥ तत्रादावायुधं ॥ अमुकायुधायनमइति संपूज्यब्राह्मणंचसंपूज्य अद्येत्यादि० ममसमस्तपापक्षयौत्तरंश्रीदुर्गाप्रीतिद्वाराविजयायुरारोग्यप्राप्तये० ॥ अथदानमंत्राः तत्रादौखड्गस्य ॥ असिर्विशसनः ॥ खड्गस्तीक्ष्णधारोदुरासदः ॥ श्रीगर्भोविजयश्चैवधर्मधारस्त्वमेवच ॥ तवदानेनसुप्रीताभवेच्छंडीसदामम ॥ तथासंसारचक्रेस्मिन्नभवेच्छत्रुताकचित् ॥ कट्टारस्य ॥ कट्टारकमहातीक्ष्णशत्रूणांहृद्विदारण ॥ दानेनतवतीक्ष्णस्यनश्यंतुममशत्रवः ॥ छुरिकायाः ॥ सर्वायुधानांप्रथमंनिर्मितासिपिनाकिना ॥ शूलायुधाद्विनिष्कृष्यकृत्वामुष्टिग्रहंशुभम् ॥ चंडिकायाः प्रदत्तासिसर्वदुष्टनिबर्हिणी तथाविस्तारिताचासिदेवानांप्रतिमानिता ॥ सर्वसत्वांगभूतासिसर्वाशुभानिबर्हिणी ॥ छुरिकेतवदानेनशांतिरस्तुसदामम ॥ कवचस्य रक्षमांचंडिकेदुर्गेसमरेशर्मदायिनि ॥ प्रसीदचर्मदानेनशांतिंकुरुसदामम ॥ चर्मणः ॥ चंडिकायाः प्रदत्तंवसर्वदुष्टनिबर्हणम् ॥ त्वयाविस्तारितादेवाः सुप्रतिष्ठंपितामहैः ॥ अतस्त्वयिबलंसर्वविन्यस्तंदेवसत्तमैः ॥ तवदानेनमेरक्षाभवेत् संग्राममूर्धनि ॥ धनुषः ॥ सर्वायुधमहामात्रसर्वदेवारिसूदन ॥ धृतः कृष्णेनरक्षार्थंसंहारायहरेण च ॥ दानेनतवशस्त्रेशचंडिकामेप्रसीदतु ॥ शक्तेः ॥ शक्तित्वंसर्वदेवानांग्रहाणांचविशेषतः ॥ शक्तिरूपेणदेवित्वंरक्षांकुरुनमोस्तुमे ॥ कुंतस्य ॥ प्रासपातकशत्रूणांशिरसांविजयप्रदः ॥ दानेनानेनसौभाग्यंसर्वदास्तु

गृहेमम ॥ अग्नियंत्रस्य ॥ तोपबंदूकेत्यादिप्रसिद्धस्य ॥ अग्नि
 शस्त्रोमहातेजादूरतःशत्रुमर्दनः ॥ दानेनास्यभवेन्मह्यंशत्रुभ्योनिर्भयं
 सदा ॥ पाशस्य ॥ पाशत्वंनागरूपोसिविषपूर्णोविषोद्भवः ॥ तवदाने
 नमेरक्षांकरोतुसुरसुंदरी ॥ परशोः ॥ तीक्ष्णाग्रभागःपरशुःसर्वदेवारि
 सूदनः ॥ दानेनास्यविनश्यंतुशत्रवोमेमहाहवे ॥ ध्वजस्य ॥ शक्रकेतु
 र्महावीर्यः पत्रिराजःसुदारुणः ॥ दानेनास्यप्रसन्नास्याच्चंडिकालोकप
 जिता ॥ पताकायाः ॥ पूतनरेवतीनाम्नाकालरात्रिश्चयास्मृता ॥
 दहत्वाशुममारिष्ठान्पताकायाःप्रदानतः ॥

इति महीधरकृतेदानसंग्रहेनवमीदानवि
 धिर्नामचतुर्दशःकोशः ॥ १४ ॥

अथ नवमीदानानि ॥ तत्रादौज्येष्ठशुक्लपक्षेदशहरायथा ॥
 ज्येष्ठेमासिसितेपक्षेदशम्यांबुधहस्तयोः ॥ गुरानंदेव्यतीपातेकन्या
 चंद्रेवृषेरेवाविति ॥ अस्यांयद्दीयतेदानंतदनंत्यायकल्पते ॥ दशपा
 पहरायस्मात्तेनदशहरास्मृता ॥ गंगापूजनमंत्रोयथा ॥ ॐ नमोभगवत्यै
 दशपापहरायैश्रीगंगायैनारायण्यैरेवत्यैशिवायैदक्षायै अमृतानं
 दिन्यैनमोनमइति ॥ अथवा ॥ ॐ नमःशिवायैनारायण्यैद
 शहरायैगंगायैस्वाहा ॥ अथास्यादानानि ॥ सौवर्णिप्रतिमादि
 द्रव्यंसंपूज्य अद्येत्यादि० ममानेकजन्मोपार्जितादत्तदानोपदान
 विधानहिंसापरदारोपसेवारूपंत्रिविधंकायिकंतथाच पारुष्यानृतपै
 शून्यासंबंधप्रलापरूपंचतुर्विधंवाचिकम् ॥ तथाच ॥ परद्रव्याभि
 ध्यानमनसानिष्टचिंतनवितथाभिनिवेशनरूपंत्रिविधंमानसिकातिदश
 विधपापापनोदनोत्तरैहिकामुष्मिकतापत्रयरहितत्वकामेत्यादि० ततो

दानवाक्यानि ॥ तत्रादौसक्तूनाम् ॥ प्राजापत्यायतः प्रोक्तासक्तवो
यवसूनवः । अतस्तद्दानकरणान्ममाभीष्टप्रदोभव ॥ घृतस्य ॥ कामधेनु
समुत्पन्नदेवानां परमंहविः । आयुर्विवर्द्धनं दातुः सौर्यं देहिनमोस्तुते ॥ म
धुनः । यस्मात्पितृणां श्राद्धादौ प्रीतिं मध्वमृतोद्भवम् । तस्मात्तव प्रदानेन र
क्षमांदुःखसागरात् । तंडुलानाम् ॥ अन्नेन जायते प्राणी प्राणिनां प्राण
रक्षणं ॥ तंडुला विश्वदेवत्याः पाकेनान्नं भवन्ति ये ॥ पावनाः सर्वयज्ञेषु प्रश
स्ता होमकर्माणि । तस्मात्तंडुलदानेन प्रीयतां विश्वदेवताः ॥ तिलानाम् ॥
तिलाः पुण्याः पवित्राश्च सर्वकामफलप्रदाः । शुक्लाश्चैव तथा कृष्णा विष्णु
गात्रसमुद्भवाः ॥ यानिकानि च पापानि ब्रह्महत्यादिकानि च ॥ तिलपात्र
प्रदानेन तानि नश्यन्तु मे सदा ॥ शर्करायाः ॥ अमृतस्य कुलोत्पन्ना इ
धुधारातिशर्करा ॥ सूर्यप्रीतिकरानित्यमतः शांतिं प्रयच्छ मे ॥ लव
णस्य ॥ लवणे वैरसाः सर्वे लवणे सर्वदेवताः ॥ लवणं तु हरेत्पापमतः
शांतिं प्रयच्छ मे ॥ चणकान्नस्य ॥ पुरा गोवर्द्धनोद्धारसमये हरिभ
क्षिताः ॥ चणकाः सर्वपापघ्नाः अतः शांतिं प्रयच्छ मे ॥ मुद्गान्नस्य ॥
मुद्गाहविश्यावै यस्मात्प्रियाणि परमेष्ठिनः । तस्मादेषां प्रदानेन ब्रह्माप्रीतो
स्तु सर्वदा ॥ अपूपान्नस्य ॥ आदित्यतेजसाभ्यक्तं जातिश्रेष्ठकरं प
रम् ॥ तस्मादस्य प्रदानेन शांतिरस्तु सदा मम ॥ घटदानमंत्रः ॥ एष
धर्मघटो दत्तो ब्रह्मा विष्णु शिवात्मकः ॥ अस्य प्रदानात्तुष्ट्यं तु पितरश्च पि
तामहाः ॥ उपानदानवाक्यम् ॥ उपानहौ प्रदास्यामि कंटका
दिनिवारणे ॥ सर्वस्थानेषु सुखदे अतः शांतिं प्रयच्छ मे ॥ व्यजनस्य ॥
पत्रिका सर्वजंतूनां शैत्यानंदकरी शुभा । पितृणां तृप्तिदानित्यमतः शांतिं
प्रयच्छ मे ॥ छत्रस्य ॥ इहामुत्र परित्राणं कुरु केशव मे प्रभो ॥ छत्र

त्वत्प्रीतयेदत्तं ब्राह्मणाय मया शुभम् ॥ सुवर्णप्रतिमादानवाक्यम् ॥
 श्रीविष्णुप्रतिमाभेतांस्वर्णेन रचितां शुभाम् ॥ विष्णुभक्त्या यदास्यामि
 श्रीविष्णुः प्रीयतां मम ॥ वाससः ॥ शरण्यं सर्वलोकानां लज्जायारक्ष
 णं परम् ॥ सुवेषधारी त्वयं स्माद्वासः शान्तिप्रयच्छमे ॥ सुवर्णदानम् ॥
 हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजविभावसोः । अनन्तपुण्यफलदमतः शान्तिप्रय
 च्छमे ॥ सर्वान्नस्य ॥ अन्नमेव स दालक्ष्मीरन्नमेव जनार्दनः ॥ अन्नं
 ब्रह्माखिलत्राणमस्तु मे जन्मजन्मनि ॥ दशम्यां सुवर्णनिर्मितमण्डू
 कमत्स्यकूर्ममकरादिदानम् ॥ कर्षोत्तरानुसारेण प्रत्येकं जलचर
 जीवं विधाय संपूज्य अयेत्यादि० मम समस्तपापक्षयपूर्वकब्रह्मांडे
 जलस्थितिपर्यंतं विष्णुलोकनिवासकामेत्यादि० । मंत्रस्तु ॥ तोयजावि
 ष्णुसंभूतानित्यतुष्टानिरंकुशाभयस्मात्तस्माच्छिवं मे स्याद्दानस्यास्य प्र
 भावत इति ॥ अस्यां दशम्यां तिलाचलदानमुक्तं तद्विधिस्तु प्रतिपद्दानवि
 धावुक्तः ॥ तथा शिखरदानं चोक्तं तद्विधिस्तु तृतीयादानविधौ द्रष्टव्यः ॥
 अथाश्विनशुक्लपक्षे विजया दशम्यां सरस्वतीमूर्तिदानम् ॥ वा
 ग्विरोधंगुरोः कृत्वा भवेद्भद्रदवाङ्मनरः ॥ तस्य वक्ष्ये प्रतीकारं दानेन कपि
 भाषितं ॥ मूर्तिं शतसुवर्णेन कारयेद्भूषिताम् ॥ वीणां च पुस्तकं चैव म
 भयं स्फाटिकीं स्रजं चतुर्बाहुषु कर्तव्या कमलासनसंस्थितां । संपूज्य वि
 धिवत्तां तु ब्राह्मणं वरयेत्ततः ॥ तद्दानपूर्णतायां च गोभूस्वर्णप्रदापयेत्
 अयेत्यादि० ससागरवनकाननसप्तद्वीपपृथ्वीदानसमफलावाप्त्यनं
 तरं शतजन्मनि ज्ञानविज्ञानादिसद्बुद्धिप्राप्तये इमां सौवर्णीं सरस्वतीं
 प्रतिमं रत्नालंकारशोभितां सोपस्करांगोत्राय शर्मणेतुभ्यमहं संप्रदेन
 मम ॥ मंत्रस्तु ॥ वीणापुस्तकसंयुक्तावाङ्मूर्तिः समलंकृता ॥ गृह्णाण त्वं

द्विजश्रेष्ठवाक्सिद्धिस्तुकुलेममायावक्त्रेब्रह्मणेदेवीयासावागीश्वरीपरा
 ब्रह्मविष्णुशिवैश्वान्यैः पूजितासर्ववंदिता ॥ तुष्टाभवतुदानेनदत्तेनाने
 नवाक्परा ॥ वाग्विरोधंगुरोःकृत्वायन्मेगद्गदभाषणम् ॥ तत्सर्वंक्षपय
 क्षिप्रंब्राह्मीत्वंलोकपावनी ॥ मूकत्वनिवृत्तयेत्विमंमंत्रमुदीर
 येत् ॥ सौम्येदेविमहाभागेसर्वदेवनमस्कृते ॥ पद्मासनगतेसर्वजग
 तामार्त्तिहारिणी ॥ स्वरोपघातान्ममवैप्रज्ञाजाड्यमपानुद ॥ अस्यादा
 नप्रतिष्ठार्थंगोभूहिरण्यं देयम् ॥ अस्मिन्दशम्यांसिंहासनछत्रकनकदंडं
 चामरशंखघंटादुंदुभि भेष्यादिमुखवाद्यवादित्रदानमुक्तं ॥ तद्यथा ॥
 प्रत्येकंद्रव्यंसंपूज्यब्राह्मणंचसंपूज्य स्वकामनाकथनपूर्वकंसाधार
 णसंकल्पंकृत्वादानवाक्यंपठेत् ॥ तत्रादौसिंहासनस्य ॥ विज
 योदयदोजेतारिपुहंताशुभंकरः ॥ दुःखहाधर्मदःशांतःसर्वारिष्टविनाश
 नः ॥ एतादृशगुणोपेतःसिंहाख्यःपीठकोत्तमः ॥ दत्तमेचंडिकातुष्ट्यैगृ
 ह्णविप्रनमोस्तुते ॥ छत्रस्य ॥ शीतवातातपत्राणंसर्वसौभाग्यदं
 महत् ॥ छत्रंदत्तद्विजाग्र्यायसुखसंपत्तिहेतवे ॥ कनकदंडस्य ॥
 प्रोत्सारणायदुष्टानांसाधुसंरक्षणायच ॥ छत्राधारंददाम्यद्यदंडंपापवि
 नाशनम् ॥ अथयष्टिकादानम् ॥ यतिभ्योवैणवंदंडंद्विजेभ्योपिस्व
 नित्रकम् ॥ प्रदानात्परलोकेसौयमदंडंनगच्छति ॥ प्रददाति यथावर्णं
 योदंडब्रह्मचारिणे ॥ समहाब्राह्मणोभूत्वा ब्रह्मचर्यसमश्नुते ॥ मंत्रस्तु ॥
 गोसर्पोद्धिदिवृत्तिश्चभीतानांभयनाशनम् ॥ शंकापंकादिदोषाणांशमनं
 यष्टिमुत्तमम् ॥ दत्ताविप्रमयातुभ्यं सुखंमेस्तुभवार्षावादिति ॥
 दुंदुभिः ॥ यथाजीमूतघोषेणप्रहृष्यंतिचवर्हिणः ॥ तथात्वद्दानतोभू
 याद्धर्षोस्माकंमुदाबहः ॥ व्यजनदानम् ॥ योददातिद्विजाग्रे

श्रयोव्यजनंजननंदनम् ॥ सनंदनवनामोदमोदमानमनादिवि ॥ वसेदशे
 षकल्पांतपर्यंतमपकल्मषः ॥ चामरस्य ॥ यस्तुभक्त्याद्विजा
 ग्रेभ्योदद्याच्चामरमुज्ज्वलम् ॥ सभूपत्वमवाप्नोतिनिःशेषावनिमंडले
 चामरस्य ॥ चामरस्त्वंमंगलदानिशाकरकरप्रभः ॥ तवदाना
 द्रवेन्मह्यमैश्वर्य्यजन्मजन्मनि ॥ शंखस्य ॥ शंखःशुभकरोनि
 त्यंसर्वमंगलदायकः ॥ तस्मादस्यप्रदानेनशांतिरस्तुसदामम ॥
 घंटायाः ॥ घंटादेवप्रियानित्यंदैत्यनाशकरीसदा ॥ संप्रदानेनचैत
 स्याविजयोस्तुसदामम ॥ काम्यघंटादानम् ॥ गुरुणाह्यननु
 ज्ञातोयोवेदाध्ययनंचरेत् ॥ सप्रज्ञयाविहीनस्तुसंसारेजायतेनरः
 तेनघंटादानंकुर्यादितिशेषः ॥ घंटातुसुस्वराविंशत्पलादूर्ध्वस्व
 शक्तिःदानमंत्रास्तु ॥ सरस्वतिजगन्मातर्जगज्जाड्यविनाशिनी ॥
 साक्षाद्ब्रह्मकलत्रत्वंविष्णुरुद्रादिभिःस्तुता ॥ तन्ममाध्ययनोत्पन्नजा
 ड्यंहरवरानने।घंटादानेनतुष्टात्वंब्रह्माणीलोकपाविनी ॥ भोग्यादीनां ॥
 अस्थानादेनहृष्यंतिदेवताःपितरस्तथा ॥ तस्मादस्याःप्रदानेनहर्षःस्या
 न्ममसर्वदा ॥ अथाश्विनकार्तिकमाघदशमीषुतिलपूर्णकरकदा
 नम्।करकंतिलसंपूर्णमंडलेवह्निदेवतेशिवंवह्निवदाराध्यपूजयेत्करवी
 रकैः ॥ पूजातुरक्तचंदनेनसर्जरसधूपेनधूपयेत् ॥ वह्निमंडलंत्रिकोणम् ।
 मंडलंशिवंवह्निवदिति ॥ वह्निस्वरूपंशिवम् ॥ आदर्शंचततोदद्या
 द्वीपानांचचतुष्टयम् ॥ वह्निरुपीयतःशंभुर्वह्निरुपास्तिलाश्वये ॥
 तेजोरूपंकृतंपापंचाक्षुषंचव्यपोहतु ॥ इतिदत्तेषुनश्यंतिपापान्यग्रे
 कृतानिच ॥ परदारपरद्रव्यपुत्रदर्शनजानिच ॥ शवादिदर्शनोत्था
 निनेत्रदोषकृतानिच ॥ यएवंकुरुतेदानंशिवभक्त्यायतव्रतः ॥ शिवलो

केवसेद्भूयःकल्पत्रयमशंकितः ॥ अथमार्गशीर्षदशम्यांगुडधेनु
दानम् ॥ अजिनंतुचतुर्हस्तं प्राग्ग्रीवं विन्यसेद्भुवि ॥ गोमयेनोपलिता
यांदर्भानास्तीर्थ्य सर्वतः ॥ तत्रैणं वाजिनंतद्वद्वत्सस्यपरिकल्पयेत् ॥ प्रा
ङ्मुखीं कल्पयेद्धेनुमुदक्पादांस्तवत्सकां ॥ उत्तमांगुडधेनुः स्यात्सदाभा
रचतुष्टया ॥ वत्संभारेण कुर्वीत भाराभ्यां मध्यमा स्मृता ॥ अर्द्धभारेण
वत्सः स्यात्कनिष्ठाभारकेण तु । चतुर्थीशेन वत्सः स्याद्बृहवित्तानुसारतः ।
भारः पलसहस्रात्मकः ॥ धेनुवत्सौगुडस्यैतौ सितसूक्ष्मां वरावृतौ ॥
शुक्तिकर्णा विशुपादौ शुचिमुक्ताफलक्षणौ ॥ सितसूत्रशिरालौ तौ सित
कंबलकंबलौ ॥ ताम्रनिर्मितपृष्ठौ तौ सितचामररोमकौ ॥ विद्रुमभ्रूयुगोपे
तौ नवनीतस्तनान्वितौ । क्षौमपुच्छौ कांस्यदोहाविंशनीलकतालुकौ ।
सुवर्णशृंगाभरणौ राजताक्षरसंयुतौ ॥ नानाफलमयौ दंतौ प्राणगंधकरंड
कौ । गंधकरंडकः कर्पूरादिपात्रविशेषः ॥ एवंचित्वा धूपदीपादिभिरभ्य
र्च्य ब्राह्मणं च वस्त्रालंकारादिभिः संपूज्य अद्येत्यादि ० मम समस्तपापक्ष
यद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं मिमां गुडधेनुं पूर्वोक्तोपस्करयुतां गोत्राय शर्म
णे तुभ्यं ० सुवर्णदक्षिणां दद्यात् ॥ प्रार्थना ॥ मंत्रस्तु ॥ यालक्ष्मीः
सर्वभूतानां याचदेवेष्ववस्थिता ॥ धेनुरूपेण सा देवी वांछितं मे प्रयच्छतुं
देहस्थाया च रुद्राणां शंकरस्य सदा प्रिया ॥ धेनुरूपेण सा देवी मम पापं व्य
पोहतु ॥ विष्णोर्वक्षसिया लक्ष्मीः स्वाहा याचविभावसोः ॥ चंद्रार्कशक्र
शक्तिर्या धेनुरूपास्तु सा श्रियो । चतुर्मुखस्य या लक्ष्मीर्या लक्ष्मीर्धनदस्य च
या लक्ष्मीर्लोकपालानां सा धेनुर्वरदास्तु मे ॥ स्वधा त्वं पितृमुख्यानां स्वा
हा यज्ञभुजांस्तथा ॥ सर्वपापहरा धेनुस्तस्माच्छांतिं प्रयच्छ मे । ततो भूय
सीं दक्षिणां दद्यात् ब्राह्मणभोजनं च देयम् एतदेव विधानं गुडादिदशधे

नूनांज्ञातव्यम् ॥ तथैताःअयनविषुवोपरागव्यतीपादादिपर्वसुचकर्त
 व्यः ॥ अथ माघशुक्लदशम्यांकार्पासधेनुदानम् ॥ अतः
 परंप्रवक्ष्यामिधेनुंकार्पासिकींभुवि ॥ सर्वविश्वस्यगुह्यर्थब्रह्मणाचांशु
 कीकृता ॥ साचकार्पासभारेणश्रेष्ठाधेनुःप्रकीर्तिता ॥ मध्यमाचतदर्द्धे
 नतदर्द्धेनकनीयसी ॥ पूर्ववस्त्रंचधान्यंचहिरण्यंचतथैवच ॥ वत्सकंतुच
 तुर्थाशान्मानमत्राभिधीयते ॥ कुर्वीतपूर्ववद्वत्संवस्त्रधान्याद्युपस्करम्
 पूर्ववत्ततिलधेनुवत् क्रियासंकल्पादिसर्वकार्यम् ॥ तत्तुसंकमदान
 विधौद्रष्टव्यम् ॥ प्रार्थनाविशेषोयथा ॥ हेमकुंदेदुसदृशेक्षीरार्णवसमुद्भ
 वे ॥ सोमप्रियेसुधेन्वाख्येसौरभेयिनमोस्तुते ॥ दत्तेयमुदुनाथायशशां
 कायामृतायच ॥ अत्रिनेत्रप्रजातायसोमराजायवैनमः ॥ यस्त्वैवंपर
 याभक्त्याब्राह्मणायप्रयच्छति ॥ सयातिचंद्रलोकंतुसोमेनसहमोदते ॥
 पौषशुक्लदशम्यांगुडाचलदानम्, माघेधान्याचलदानम् ॥
 फाल्गुनदशम्यांलवणाचलदानंकर्तव्यमुक्तम्, सर्वपर्वतदा
 नविधिस्तुप्रतिपदानविधौबुक्तः ॥

इति महीधरकृतेदानसंग्रहेदशमीदानविधिर्नामपंच

दशःकोशः ॥ १५ ॥

अथैकादशीदानानि ॥ तत्रादौचैत्रशुक्लपक्षेकामदैकाद
 श्यांतथाचभाद्रपदेवामनद्वादश्यांवामनमूर्तिदानम् ॥ सौव
 र्णरत्नसंयुक्तद्वादशांगुलमुच्छ्रितम् ॥ पीतवस्त्रैःशुभैर्वेष्टयंशृंगारेनिर्व्रणे
 नवेति ॥ तथा ॥ कांचनीवामनीमूर्तिंचतुर्बाहुषुविभर्ती ॥ शंखचक्रगदा
 पद्मकिरीटोज्ज्वलमस्तकाम् ॥ रौप्यसिंहासनेस्थाप्यपूजयेद्विधिवज्र
 रः ॥ वामनायेतिपादौतुविष्णवेकटिमर्चयेत् ॥ वासुदेवेतिजठरेउरः

संकर्षणाय च ॥ कंठं विश्वभूते पूज्यः शिरो वैव्योमरूपिणे ॥ बाहू विश्व
जिते पूज्यः स्वनाम्ना शंखचक्रके ॥ अनेन विधिना भ्यर्च्य देवदेवं जनार्दनम् ॥
प्राग्वद्रक्तोदरं कुम्भं संयुग्मपुरतो न्यसेत् ॥ युग्मं बन्धयुग्मम् ॥
कुण्डिकां स्थापयेत्पश्चाच्छत्रिकां पादुके तथा ॥ अक्षमालां च संस्थाप्य
यष्टिकां च विशेषतः ॥ एतैरुपस्करैर्युक्तं प्रभाति ब्राह्मणाय तु ॥ दापयेत्
प्रीयतां विष्णुर्नृस्वरूपीति कीर्तयेत् ॥ ब्राह्मणं संपूज्य अयेत्यादि ०
मम समस्त जन्मोपात्त पापनाशकामात्मपितृपुत्रापमृत्युपरिहार
भार्याधनदेशाद्यवियोगकामः सकलेष्टफलावातिकामश्च इमां सौव
र्णावामनमूर्तिपूर्वोक्तोपस्करयुतां गोत्राय शर्मणे तु भ्यमहं संप्रददेन ममेति
प्रार्थना ॥ यथादितेरपुत्रायाः स्वयंपुत्रत्वमागतः ॥ भगवांस्तेन
सत्येन ममाप्यस्तु सुतो वरः ॥ दानेनानेन गोविंदरक्षमांदुःखसागरात् ॥
तव प्रसादाद्भूयान्मे संततिः सुखवर्द्धनीति ॥ प्रार्थ्य ब्राह्मणान्संभोज्य भू
यसीं दक्षिणां दद्यात् ॥ माहात्म्यं यथा ॥ अपुत्रो लभते पुत्रान्धनहीनो
लभेद्धनम् ॥ भष्टराज्यो भवेद्राजा खर्वमूर्तिप्रदानतः ॥ अस्यामेकाद
श्यां दशहरोक्तवच्छुक्तिदानप्रभृतिजलजंतुदानपर्यंतं सर्वविधेयम् ॥
तथा चात्र जलधेनुघृतधेनुदानं चोक्तम् ॥ जलधेनुविधिस्तु ज्ये
ष्ठसंक्रांतिदानविधावुक्तः घृतधेनुदानंतु कर्कसंक्रांतिदानविधावुक्त
मेव बोध्यम् ॥ तथा चात्रैव सुवर्णाचलदानमुक्तम् ॥ तद्विधिस्तु प्र
तिपदानविधावुक्तः ॥ अथास्यां शालग्रामशिलादानम् ॥ इदं तु हारि
शयनीबोधिनीपौर्णमास्यादिषु पूर्वमुभवत्येव ॥ विधानंतु ॥ शाल
ग्रामशिलाचक्रं यो दद्याद्दानमुत्तमम् ॥ भूचक्रं तेन दत्तं स्यात्स शैलव
नकाननम् ॥ यथा शक्तिस्वर्णमयं रौप्यमयं वा छत्रसिंहासनपूज्योप

करणद्रव्यंचसंपाद्य तांशिलांसंपूज्यब्राह्मणंचवासोलंकारादिभि
 र्वृत्वा अद्येत्यादि० सशैलवनकाननभूचक्रदानसमफलकामद्रमंशा
 लग्रामंघटाशंखादिशोभितंसोपस्करणकंतुलसीपत्राद्यर्चितंसवस्त्रफ
 लकंस्वर्णादिसिंहासनेस्थितंगोत्रायशर्मणेशालंकृतायतुभ्यमहंसंप्रददे
 नममेति ॥ मंत्रस्तु ॥ महाकोशनिवासेनचक्राद्यैरुपशोभितः ॥
 शालग्रामप्रदानेनममसंतुमनोरथाः ॥ सुवर्णदक्षिणांदद्यात् ॥
 तथैवशिवनाभिदानंचतथैवकर्त्तव्यम् मंत्रस्तुविशेषः ॥
 शालग्रामशिलापुण्या भुक्तिमुक्तिप्रदायिनी ॥ शिवनाभेःप्रदाने
 नपुर्णाः संतुमनोरथाः ॥ तथा ॥ महाकोशेनिवासत्वं शालग्रामम
 हेश्वर ॥ प्रीयतांतवदानेनब्रह्मविष्णुमहेश्वराः ॥ इतिनिर्जलादाना
 नि ॥ अथाषाढशुक्लपक्षे ॥ हरिशयिन्यांचातुर्मास्यनियममुक्तं तद्वि
 धानंतवग्रेवक्ष्यते ॥ देवस्यशयनोत्सवानंतरंश्रीभगवतोमत्स्यमूर्तिदान
 म् ॥ यथा ॥ दुःखदारिद्र्यदौर्भाग्यभीताह्यसौख्यकांक्षिणः ॥ तेषां
 मुद्धरणार्थायमत्स्यदानंवदाम्यहम् ॥ निर्मायमीनंसौवर्णवित्तशा
 ठ्यविवर्जितः ॥ नावरौप्यमयींकृत्वातस्योपरिसमर्चयेत् ॥ नारा
 यणंमत्स्यरूपंवज्जनेत्रविभूषितम् ॥ ब्राह्मणंचततोवृत्वावस्त्रालंकर
 णादिभिः ॥ अद्येत्यादि० ममसमस्तस्थूलशूक्ष्माणुरूपज्ञातज्ञातपाप
 दुःखदौर्भाग्यदारिद्र्यविनाशनपूर्वकसुखसौभाग्यायुरारोग्यवर्द्धनोत्तर
 श्रीविष्णुसायुज्यकाम इमानारायणीमत्स्यमूर्तिंवज्जनेत्रारौप्यनाव्यु
 ष्ररिस्थितांगोत्रायशर्मणेषुपूजितायतुभ्यमहंसंप्रददिनममेति ॥ मंत्रस्तु ।
 यथामत्स्यावतारेणवेदोद्धारःकृतस्त्वया । संसारार्णवमग्नमांतथो
 द्भ्रजगत्पते । सुवर्णदक्षिणांदद्यात् । अथ कार्तिकेवोधिन्त्यांबोधनो

त्सवानंतरं वराहदानम् ॥ अपुत्राये मृतापत्याः कल्मषैः पूर्वसंचितैः
तेषां संतानसौख्याय वाराहं दानमीरितम् ॥ सौवर्णसूकरं कृत्वा सर्वावय-
वसंयुतम् ॥ शुक्तिकर्णवज्रनेत्रं रौप्यदंतायुधोज्ज्वलम् । मुक्तापुच्छं
ताम्रपृष्ठं लोहपादं खुरान्वितम् । कृत्वा कुंभोपरि स्थाप्य पूजयेद्विधिव-
न्मुदा ॥ ब्राह्मणं च समभ्यर्च्य वेदवेदांगपारगम् । दानांतिभूद्विरण्या-
दिदक्षिणार्थं प्रदापयेत् । अद्येत्यादि० ममानेकजन्मार्जितानेकविध-
पापापनोदनपूर्वकापुत्रत्वमृतापत्यत्वदोषनिराकरणद्वारा पुत्रसुख-
प्राप्तये इत्यादि० ॥ संसारोद्धरणार्थाय ह्यवतीर्णो हरिः स्वयम् । वाराहं
वपुरास्थाय मर्यादामभ्यवंधयत् । तेन सत्येनेदं वेशमेपापान्यपनोदय-
तथा वराहदानेन सप्रजं मांकुरुप्रभो । पूर्वोक्तदक्षिणां दद्यात् ॥
अथ पौषे पुत्रदैकादश्यां पुत्राप्तिकरं कूर्मदानम् ॥ कूर्माय पादौ
प्रथमतः पूज्य नारायणयेति कटिं हरेस्तु ॥ संकर्षणायेत्युदरं सपार्श्वमु-
रोविशोकाय भवाय कंठम् ॥ सुबाहवेत्येव भुजौ शिरश्च नमो विशाला-
यस्थांगशंखौ ॥ स्वनाभमंत्रैश्च सुगंधधूपैर्नानाविधैर्विविधैः फलैश्च ॥
अभ्यर्च्य देवं कलशं तदग्रे संस्थाप्य माल्यास्तृतदामकंठम् ॥ तं रत्नगर्भं
तु पुरैव कृत्वा स्वशक्तितो हेममयं च देवम् ॥ समंदरं कूर्मरूपं तु कृत्वा सं-
स्थापयेत्ताम्रपात्रे घृतस्य । पूर्णे घटोपर्य्यथ संनिवेश्य दद्याद्विजाग्र्या-
यसुरत्नभूषितम् ॥ संकल्पस्तु वराहमूर्त्तिदानोक्तवत्कर्त्तव्यः ॥
स्वीयकामनानुरूपो वा । मंत्रस्तु । नारायणजगद्योने मंदराच-
लधारक । कौर्ममूर्त्तिप्रदानेन संततिर्वर्द्धतां ममेति । ततो द्विजा-
न्भोज्यसदक्षिणांश्च यथाशक्त्या प्रीणयेद्देवदेवम् ॥ नारायणं कूर्मरूपे-
ण पश्चात्स्वयं भुंजीत भाग्यया भृत्यवर्गैः । एवं कृते वै त्रिविधं हि पापं वि-

नश्यतेविंदतेपुत्रपौत्रान् ॥ संसारचक्रंतुविहायशुद्धमानोतिलोकंतुहरेः
 पुराणम् ॥ अथ माघेषट्त्रितिलैकादश्यामादौतिलदानम् ।
 तिलागावोहिरण्यंचअलंकृत्यवसुंधरा ॥ दत्तान्येतानिविधिव
 चारयंतिमहाभयात् । तथा । तिलस्नायीतिलोद्वर्त्तीतिलहोमीति
 लोदकी । तिलभुक्तिलदाताचषट्त्रितापापनाशिनी । कृष्णा
 जिनेतिलान्कृत्वासुवर्णमधुसर्पिषी । द्रोणैकंवाससाच्छन्नं त्रि-
 धातद्वत्सदिक्षणम् । ब्राह्मणायचतद्वत्वासर्वतरतिदुष्कृतम् ।
 अथेत्यादि० अमुकगोत्रायामुकशर्मणेब्राह्मणायसुपूजितायकृष्णा
 जिनस्थंसुवर्णमधुसर्पिर्युतंवस्त्राच्छन्नंतिलद्रोणंसोमदैवतंसर्वपापक्षय
 कामस्तुभ्यमहंसंप्रदे । सुवर्णदक्षिणांदद्यात् । अथतिलपा
 त्रदानम् ॥ ताम्रपात्रंतिलैःपूर्णप्रस्थमात्रंद्विजायच । सहिरण्यं
 चयोदद्यात्प्रत्यहंश्रद्धयान्वितः । सर्वपापविशुद्धात्मा लभतेपरमां
 गतिम् । संकल्पंतुपूर्ववत् । मंत्रस्तु० । तिलाःस्वर्णयुतास्तु
 भ्यंप्रदत्ताह्यघनाशनाः । विष्णुप्रीतिकरानित्यमतःशांतिप्रयच्छमे
 अथ फाल्गुनोभयपक्षयोरेकादश्योर्नृसिंहमूर्त्तिदानम् । रत्नग
 भ्रंघटंस्थाप्यसितवस्त्रयुगान्वितम् । तस्योपरि नृसिंहंतुसौवर्णरौप्य
 भाजने । शक्तितःसर्वसंभारयुतंकृत्वाप्रपूजयेत् । नरसिंहायपा
 दौतुगोविंदायोदरंतथा । कटिविश्वभुजेपूज्य अनिरुद्धायऊरुच ।
 कंठंतुशितिकंठायपिंगकेशायवैशिरः । असुरध्वंसनायेतिवक्रंतोया
 त्मनेतथा । शंखमित्येवसंपूज्यगंधपुष्पफलैस्तथा । अथेत्यादि०
 ममानेकजन्मार्जितपापक्षयोत्तरसप्तद्वीपसागरवतीपृथ्वीदानसमफला
 वाप्तये इमांसौवर्णीनृसिंहमूर्त्तिरत्नपूरितघटोपरिरौप्यपात्रस्थितां

यथाशक्तिसंभारसंभूतामित्यादि० ॥ प्रल्हादस्ययथारक्षाकृतानर
हरेत्वया ॥ तथामांदुःखदौर्भाग्यपापेभ्योरक्षगोपते ॥ इतिमंत्रः॥
एतद्दानंकृतंपूर्वपार्थिवेणमहात्मना ॥ तत्प्रभावात्सपत्नानांध्वंसनंचक्र
मापह ॥ तेनास्त्रेणस्वकंराज्यंजितवान्सन्तृप्तोत्तमः ॥ राज्येस्थि
त्वाश्वमेधानांसहस्रमकरोत्प्रभुः ॥ अंतेचब्रह्मलोकारूपंपदमागाच्चस
त्तमः ॥ एवंयःकुरुतेमर्त्योभक्तिश्चद्धासमन्वितः ॥ तदेवफलमाप्नोति
नान्यथाब्रह्मणोदितम् ॥

इतिमहीधरकृतेदानसंग्रहेएकादशीदानविधिर्नाम
षोडशः कोशः ॥ १६ ॥

अथ द्वादशीदानानि ॥ तत्रादौमधुमाधवयोःसर्वासुद्वादशी
पुलक्ष्मीनारायणमूर्तिदानम् । जलकुंभंताम्रमयंस्थापयित्वाविच
क्षणैः । पंचरत्नसमोपेतंसोपवीतंसुपूजितम् । तस्यस्कंधेसुघटि
तंस्थापयित्वाजनार्दनम् ॥ यथाशक्त्यास्वर्णमयंशंखशार्ङ्गविभूषि
तम् । स्नापयित्वाविधानेनसितचंदनचर्चितम् । सितवस्त्रयुग
च्छन्नच्छत्रोपानयुगान्वितम् ॥ ॐनमोवासुदेवायशिरः संपूजयेत्त
तः ॥ श्रीधरायमुखंतद्वैकुण्ठायदशौनमः ॥ नमःश्रीपतयेवक्रंभुजौ
सर्वास्त्रधारिणे ॥ व्यापकायनमः कुक्षिकेशवायोदरंनमः । त्रैलो
क्यजनकायेतिमेदं संपूजयेद्धरेः । सर्वाधिपतयेजघेपादौसर्वात्मनेन
मः॥तथातद्वामपार्श्वेतुलक्ष्मींस्वर्णमयींबुधः॥पूजयेद्ब्रह्मपुष्पाद्यैर्लक्ष्मी
सूक्तेनभक्तितः ॥ ब्राह्मणंचततोवृत्त्वावस्त्रालंकरणादिभिः ॥ अये
त्यादि०ममसमस्तपापक्षयोत्तरसशैलवनकाननभूचक्रदानसमफला
वाप्तिकाम०ऐश्वर्यादिवृद्धिकामोवा ॥ मंत्रः॥ लक्ष्मीनिवासदेवेश

शंखचक्रगदाधर ॥ तवदानात्स्थिरालक्ष्मीर्मद्ब्रूहेस्यात्सदाध्रुवम् ॥
 सुवर्णगोभूदक्षिणांदत्वाब्राह्मणैश्चभोजयेत् ॥ भाद्रपदशुक्लद्वा
 दश्यांवामममूर्तिदानम् ॥ तत्तु कामदैकादशीदानविधावुक्तम् ॥
 अथ कार्तिकेवत्सद्वादश्यांशर्कराधेनुदानम् ॥ अनुलिप्तेम
 हीपृष्ठेरुष्णाजिनकुशोत्तरे । भारचतुष्टयपरिमिता । तच्चतुर्थाशोव
 त्सः । भारद्वयेअष्टमांशइति । स्वशक्त्यावाकाय्या । सर्व
 धान्यानिचतुर्द्विंशसंस्थाप्य । अथेत्यादि० गोत्रायशर्मणेसालं
 कृतायइमांशर्कराधेनुसुवर्णशृंगीमौक्तिकनयनांगुडमुखीपिष्टमयजि
 हांकंबलपट्टसूत्रेणवेष्टितांकंठाभरणभूषितांश्चक्षुपादारौप्यखुरांनवनी
 तस्तनींप्रशस्तपर्णश्रवणांसितचामरभूषितां पंचरत्नसमायुक्तांदर्भरो
 मांकांस्यदोहां गंधपुष्पाद्यर्चितांसमस्तपापक्षयकामस्तुभ्यमहंसंप्रद
 दे नममेति । सुवर्णदक्षिणांदद्यात् । ततोयालक्ष्मीरित्यादिमं
 त्रेणसंप्रार्थ्य भूयसींदद्यात् विप्रमुखंनेक्षेदिति ॥ प्रार्थनामंत्रास्तु ॥
 तिलधेनुदानविधौद्रष्टव्याः ॥ अत्रपंचरत्नानितु ॥ कनकंहीरकंनीलं
 पद्मरागंचमौक्तिकम् ॥ पंचरत्नमिदंप्रोक्तमृषिभिः पूर्वदर्शितिरिति
 कार्तिकमाघयोर्द्वादशीषुतिलाचलदानम् ॥ फालगुनशु
 क्लद्वादश्यांरत्नाचलदानम् ॥ एतेषांदानविधिस्तु प्र
 तिपदानविधावुक्तः ॥ अथसर्वासुद्वादशीषुतथायथावका
 शंसर्वेषुदिनेष्वन्नदानम् ॥ देयद्रव्यंसंपूज्य ब्राह्मणंचसं
 पूज्य । अथेत्यादि० ममसद्यस्तापापनोदनपूर्वकं सर्वांगीष्टफला
 वाप्तये० वा यथाकाममुल्लिख्यदत्वा ॥ प्रार्थयेत् । तत्रादौतंडुलान्न
 प्रार्थना । पावनाःसर्वयज्ञेषुप्रशस्ताहोमकर्मणि ॥ तंडुलानांप्रदानेन

प्रीयतामग्निदेवता ॥ तथा । ब्रीहिजास्तंडुलाः शुद्धाः पितृदेवद्विज
प्रियाः ॥ तस्मादेषांप्रदानेन सर्वकामाश्च मे सदा ॥ ब्रीहि० । ब्रह्मणा
निर्मिताः पूर्वब्रीहयो यज्ञसाधनाः ॥ अनेन ब्रीहिदानेन मम संतुमनोर
थाः ॥ यव० ॥ धान्यराजाश्च मांगल्ये द्विजप्रीतिकरा यवाः ॥ त
स्मादेषांप्रदानेन ममास्त्वभिमतं फलम् । तथा । पूर्वमेव हियज्ञार्थं निर्मि
ता ब्रह्मणायवाः ॥ अनेन यवदानेन शांतिरस्तु सदा मम ॥ गोधूम० ।
धान्यचूडामणेर्जंबूद्वीपे गोधूमसंभवः ॥ गंधर्वसौख्यतृप्तिः स्यादतः
शांतिप्रयच्छ मे ॥ मुद्ग० । मुद्गधान्यं प्रियं चैव मनुष्याणां च नित्य
शः ॥ तस्मादेषांप्रदानेन शांतिः स्वस्त्ययनं मम ॥ माष० ॥ यस्मां
न्मधुवधे काले विष्णुदेहसमुद्भवाः ॥ पितॄणां तृप्तिदामाषा अतः शांति
प्रयच्छ मे ॥ चणकान्न० ॥ पुरा गोवर्द्धनोद्धारसमये कृष्णभक्षिताः ।
चणकाः सर्वपापघ्ना अतः शांतिप्रयच्छ मे ॥ कुलित्थदानमंत्रः ॥
अग्निगर्भोद्भवाः सौम्या बलारोग्ययशःप्रदाः ॥ कुलित्थानांप्रदानेन
शांतिरस्तु सदा मम ॥ तिल० ॥ तिलाः पापहरानित्यं विष्णुदेहसमु
द्भवाः ॥ तस्मादेषांप्रदानेन पापनाशनमुच्यते ॥ निष्पाव ॥ नि
ष्पावानिर्मिताः पूर्वलोकानां हितकाम्यया ॥ तस्मादेषांप्रदानेन ममा
पव्यपोहंतु ॥ प्रियंगू० ॥ प्रियंगवः प्रियायस्मादग्नेश्च हव्यसाध
नाः ॥ तस्मादेषांप्रदानेन प्रीणातु पुरुषोत्तमः ॥ इयामाक० ॥ श्या
माकास्तु सदा पुण्याः पवित्रायज्ञसाधनाः ॥ अतस्तेषांप्रदानेन पावको
वरदः सदा ॥ कोद्रव० ॥ कोद्रवानिर्मिता देवैः प्राणिनां जीवना
यवैः ॥ तस्मादेषांप्रदानेन प्रीणाति पुरुषोत्तमः ॥ लंक० ॥ वात
प्रधर्षकालंका बलदाः पुष्टिकारकाः ॥ प्राणिप्रीतिकरानित्यमतः

शांतिप्रयच्छमे ॥ यावनाल० ॥ यावनालाःप्रीतिकराःकांतिपुष्टि
बलप्रदाः ॥ तस्मादेषांप्रदानेनसस्यपूर्णगृहंमम ॥ मसूरिका० ॥
सवल्कलामसूरास्तुदुरितक्षयकारकाः ॥ तस्मादेषांप्रदानेनविष्णुः
प्रीतिकरोमम ॥

इति धान्यदानमंत्राः ॥

अथान्नानाम् ॥ तत्रादौपायसान्नस्य ॥ पायसंशर्करायुक्तं
सघृतंकांस्यभाजने ॥ प्रदानान्मेफलंचास्तुऐहिकामुष्मिकंचयत् ॥
कमंडलुः॥सूर्य्यमंडलसंभूतागव्यदुग्धयुताःप्रियाः ॥ जनार्दनादिदे
वानामतःशांतिप्रयच्छमे ॥ ओदनम् ॥ अन्नं ब्रह्ममयंसाक्षान्नराणां
जीवरक्षणम् ॥ ओदनस्यप्रदानेनममसंतुमनोरथाः॥दध्यन्न०॥चंद्रमं
डलमध्यस्थंचंद्रांबुदसमप्रभम् ॥ दध्यन्नंचास्यदानेनप्रीयतांवामनोमम
कृसरान्न० ॥ कृसरान्नंस्वादुवर्ध्यदेवानांप्रीतिवर्द्धनम् ॥ घृतव्यं
जनसंयुक्तंदत्वारोगैःप्रमुच्यते ॥ नानाभक्ष्य० ॥ केशवस्यप्रिया
भक्ष्याःशंभुब्रह्मादितुष्टिदाः ॥ पृथग्विधापूपकायायच्छंतुबलमौरसम्
सर्वान्न ॥ अन्नमेवयतोलक्ष्मीरन्नमेवजनार्दनः ॥ अन्नं ब्रह्माखिलत्राण
मस्तुमेसर्वजन्मनि ॥ सक्तु० ॥ प्राजापत्यायतःप्रोक्ताःसक्तवोय
ज्ञकर्मणि ॥ तस्मादेषांप्रदानेनप्रीयतांमेप्रजापतिः ॥ शर्करा० ॥
अमृतस्यकुलोत्पन्नाइक्षवोप्यथशर्करा ॥ सूर्य्यप्रीतिकरानित्यम
तःशांतिप्रयच्छमे ॥ तथा ॥ शर्करेश्वरसोद्भूतासदास्वादुकरा
प्रिया ॥ दानेनास्यास्तुमेनित्यंतुष्टाः स्युर्द्विजदेवताः ॥ गुड० ॥
प्रणवःसर्वमंत्राणांनारीणांपार्वतीयथा ॥ तथारसानांप्रवरःसदैवेश्व
रसोमतः ॥ ममतस्मात्परांशांतिददस्वगुडसर्वदा ॥ इक्षुदं

ड ॥ इक्षुदंङ्गुरुतरंरसालंसर्वकामदम् ॥ दानेनानेनतस्याशुप्रीयतां
 परमेश्वरः ॥ मधु ॥ यस्मात्पितृणांश्राद्धेषुपीतमध्वमृतोद्भवम् ॥ सदा
 तस्यप्रदानेनमोक्षःस्यादुःखसागरात् ॥ घृतस्य ॥ कामधेनोःसमुद्भूतं
 देवानामुत्तमंहविः ॥ आयुर्विवर्द्धनंदातूराज्यंपातुसदामम् ॥ तैल ॥
 तैलपुष्टिकरंनित्यमायुर्वृद्धचघनाशनम् ॥ अमांगल्यहरंश्रीमदतःशां
 तिप्रयच्छमे ॥ नवनीत ॥ कामधेनोःसमुद्भूतंविष्णोःप्रीतिकरं
 परम् ॥ नवनीतप्रदानेनबलपुष्टिचमेसदा ॥ तथा ॥ क्षीरार्णवसमु
 द्भूतंविष्णोस्तुष्टिकरंसदा ॥ नवनीतप्रदानेनवाञ्छितंचास्तुमेसदा ॥
 क्षीर ॥ अलक्ष्मीहरणंचैवसौभाग्यबलवर्द्धनम् ॥ क्षीरमंगलमायु
 प्यमतःशांतिप्रयच्छमे ॥ तथा ॥ शिशूनांजीवनंक्षीरंपितृदेवप्रि
 यंसदा ॥ कांतिदंपुष्टिदंनित्यमतःशांतिप्रयच्छमे ॥ दधि ॥
 क्षीरेणाम्लसमुद्भूतंदेवर्षिपितृतृप्तिदम् ॥ दधिस्यान्मेऽमृतंनित्यमतः
 शांतिप्रयच्छमे ॥ तक्र ॥ तक्रंदधिसमुद्भूतंप्राणिनांतृप्तिदंपरम् ॥
 अतस्तस्यप्रदानेनशांतिरस्तुसदामम् ॥ पुष्प ॥ मनोहराणिपुष्पा
 णिसदादेवप्रियाणिच ॥ अतस्तेषांप्रदानेनममसंतुसुराःप्रियाः ॥
 फल ॥ मनोहराणिरम्याणिनित्यंस्वादुकराणिच ॥ फलानांसंप्रदा
 नेनसंततिस्त्वमलामम् ॥ तथा ॥ फलानिमधुराणीहमुनिदेवप्रिया
 णिच ॥ तस्मात्तेषांप्रदानेनसफलामेननोरथाः ॥ ताबूलदानमंत्रः ॥
 सोपस्करंचतांबूलंसर्वदामंगलप्रदम् ॥ प्रियंचैवतुदेवानांसौगंध्यं
 वदनेस्तुमे ॥

इति महीधरकृतेदानसंग्रहेद्वादशीदानविधिर्नाम

सप्तदशःकोशः ॥ १७ ॥

अथ त्रयोदशी दानानि ॥ तत्रचैत्रकृष्णत्रयोदशीवारुणी
संज्ञकातस्यांकामदेवपूजनपूर्वकम् रतिकाममूर्तिदानमुक्तम् ॥ तद्वि
धिस्तुपंचमीदानविधावुक्तएवबोध्यः ॥ तथाचास्यामेवाजादानमु
क्तंतद्विधिस्तुमीनसंक्रमणदानविधौद्रष्टव्यः ॥ वैशाखेकार्तिकेवा
त्रयोदश्यांघृताचलदानमुक्तम् तद्विधिस्तुप्रतिपदानविधावुक्तः ॥
अथकार्तिककृष्णत्रयोदश्यामपमृत्युनिवारकयमप्रीतिदीपदानम् ।
तत्तुनिशामुखेगेहाद्वहिर्दद्यात् ॥ मंत्रश्च ॥ मृत्युनादंडपाशाभ्यां
कालेनश्यामयासह ॥ त्रयोदश्यां दीपदानात्सूर्यजः प्रीयतांममेति ॥
यमदैवत्वादत्रदीपदानंदक्षिणमुखंकार्प्यम् ॥ आचाराद्दीपपूजनंच ॥
अथास्यांगोवर्द्धनदानार्थमारंभः ॥ गोष्ठेचतुष्पथेवाहस्तच
तुरसंभूमिगृहमंडपंकृत्वा ॥ विधानंपुष्पमालाफलादिभिरलंकृ
त्य ॥ तस्मिन्सर्वतोभद्रंलिखित्वा ॥ तस्यमध्येगोवर्द्धनधरस्य
पर्वतसहितांतदाकारांस्वशक्त्यास्वर्णमयींमूर्तिसंस्थाप्य ॥ तद्वामे
रुक्मिणीमित्रविदां शैव्यांजांबवतींसत्यभामां लक्ष्मणांसुदेवींनाम
जित्वा संपूज्य ॥ दक्षभागे नंदयशोदां बलभद्रम् ॥ पृष्ठे ॥
सुरभिंसुनंदांसुभद्रांकामधेनुंपूज्य ॥ एतेषांपूजार्थेसुवर्णप्रतिमानिर्मा
यपूजयेत् ॥ गोवर्द्धनश्चकर्तव्यःसौवर्णःपलसंमितः ॥ छत्राकारोमहावृ
क्षैःशोभितःपक्षिभिश्चुभः ॥ गोपीगोपसमाकीर्णोमहावृक्षसमन्वितः ॥ पू
जातुवेदागमपुराणोक्तमंत्रैःसर्वेषांकुर्यात् ॥ तदनंतरम् ॥ गोपू
जनविधिनागोपूजनंकृत्वागोपूजनविधिस्तुगोदानविधावग्रेद्रष्टव्यः ॥
एवंदिनत्रयंसंपूजयेच्चतुर्थेह्निगायत्र्यायथाशक्तिर्होमंकृत्वा द्वादशा
ष्टौवागोमिथुनदानंकुर्यात् ॥ गुरोर्दीपत्यमर्चित्वावासोभूषणसंयुतः

मूर्त्यादिप्रतिमासहितं यथाकामं संकल्प्य ब्राह्मणाय दद्यात् ॥ माहा-
 त्म्य ॥ दीपोत्सवेदं शुचिमानसेन कृत्वानरः संततिवृद्धिकारी ॥ भुक्त्वा
 सभोगान् सुखसंप्रयुक्तश्चांते मुरारेर्भवनं प्रयाति ॥ अथ पौषेत्रयो-
 दश्यां घृतदानम् ॥ पौषे मासि त्रयोदश्यां घृतं विप्रा-
 यदापयेत् ॥ समभ्यर्च्य च्युतं देवं सर्वान् कामान् वामुयात् ॥
 घृतं संपूज्य ॥ अथेत्यादि० मम समस्त कायिका शौच निराकरण-
 समस्त कामना वाप्तिपूर्वकं श्रीपरमेश्वरप्रीतये ॥ इदं घृतं द्रोणमितं तदर्थं
 वागोत्राय शर्मणे तुभ्यमहं संप्रददे ॥ सुवर्णदक्षिणां दद्यात् ॥ मंत्रः ॥
 कामधेनोः समुत्पन्नं देवानामुत्तमं हविः ॥ आयुर्विवर्द्धनं यस्मादतः
 शांतिं प्रयच्छ मे ॥ अथ माघफाल्गुनत्रयोदश्यां दारिद्र्यहरं कु-
 बेरमूर्तिदानमुक्तं तद्विधिस्तु पंचमीदानविधौ द्रष्टव्यः ॥ अथ
 सर्वासुत्रयोदशीषु दद्गुरोगहरं उमामहेश्वरमूर्तिदानम् ॥ य-
 था ॥ ब्राह्मणांगानियो हन्याद्गुरोगी भवेत्तु सः ॥ तस्योपशमनं वक्ष्ये दानं
 गौरीश्वराभिधम् ॥ तत्र सौवर्णीं मणिमयीं वा यथाशक्त्यो मामाहेश्व-
 रीं मूर्तिं प्रकल्प्य यथोक्तविधिना संपूज्य ॥ ब्राह्मणं च वा सोलंकारादि-
 भिः संपूज्य ॥ अथेत्यादि० ॥ सशैलवनकाननसप्तसागरपृथ्वी-
 दानसमफलावाप्तये ॥ इमामुमामाहेश्वरीं मूर्तिं सालंकृतां सोपस्करांगो-
 त्राय शर्मणे तुभ्यमहं संप्रददे नममेति ॥ मंत्रस्तु ॥ शिवशक्त्यात्म-
 कं यस्माज्जगदेतच्चराचरम् ॥ तव दानेन मे वश्या पृथिवी स्यात्सुनि-
 श्चला ॥ सुवर्णदक्षिणां दद्यात् ॥ अथ सर्वासुत्रयोदशीषु शर्कराच-
 लदानमुक्तं तद्विधिस्तु प्रतिपदानविधावुक्तः ॥ अथ यास्मिन्क-
 स्मिन् त्रयोदश्यां वा अयनादिपर्वदिनेषु सुवर्णधेनुदानम् ॥ यथा ॥

सुवर्णधेनुश्चाप्यत्रसुवर्णाश्चतुर्दश ॥ सुनिर्णिक्तासुवर्णैश्चसप्तभिर्म
 ध्यमामता ॥ चतुर्भिश्चकनिष्ठास्याच्चतुर्थीशेनवत्सकः ॥ गुडधेनु
 विधानेनदत्तासर्वफलप्रदा ॥ गुडधेनुदानविधानंतुदशमीदानविधौ
 द्रष्टव्यम् ॥ अथेत्यादि० प्रवालशृंगीघृतपात्रंस्तनवतीपद्म
 रोमांकपूर्वागरुनासिकां मिष्टान्नरसवासितां शंखशृंगांतरांशुक्तिल
 लाटस्थानारिकेलश्रवणांगुडजानुकां पंचगव्यापानवतीं कांस्यपृष्ठां
 पट्टसूत्रलांगूलांसप्तधान्यसमायुक्तांफलपुष्पोपेतांछत्रोपानत्समन्वि
 तां सुवर्णधेनुरुद्रदैवत्यांसहस्राश्वमेधफलावाप्तिकामःकुलसहस्रस्य
 स्वर्गेनिवासकामश्च गोत्रायशर्मणेषुपूजितायतुभ्यमहंसंप्रददेनममेति
 ॥ मंत्रस्तु ॥ सुवर्णधेनुंविप्रायप्रतिपद्येदृशीनरः ॥ हिरण्यरेताः
 पुरुषःपुराणःकृष्णपिंगलः ॥ सप्तहेमच्छविःस्रष्टाविश्वात्माप्री
 यतांममेति ॥ अनेनैवतुमंत्रेणधेनुदानंप्रकीर्तितम् ॥ अश्वमे
 धसहस्रस्यफलमाप्नोत्यसंशयम् ॥ कुलानांचसहस्रस्य स्वर्ग
 नयतिगोप्रद ॥ इति ॥

इतिमहीधरकृतेदानसंग्रहेत्रयोदशीदानविधि
 नामाष्टादशःकोशः ॥ १८॥

अथ चतुर्दशीदानानि ॥ तत्रादौचैत्रशुक्लचतुर्दश्यामन्येषुपु
 ण्यदिवसेषुवारौप्याचलदानमुक्तम् ॥ तद्विधिस्तुप्रतिपदानविधावुक्तः
 अथ वैशाखशुक्लपक्षेनृसिंहचतुर्दश्यांनृसिंहमूर्त्तिदानम् ॥
 ॥ तद्विधिस्तु ॥ एकादशीदानविधावुक्तः ॥ ज्येष्ठशुक्लचतुर्दश्यांहे
 मधेनुदानमुक्तम् ॥ तद्विधिस्तुत्रयोदशीदानविधावुक्तः ॥ अथ
 भाद्रपदशुक्लचतुर्दश्यांसौवर्णैराजतंकार्पासिकंवा यथाविभ

वमनंतदानम् ॥ उक्तविधिनासंपूज्य ब्राह्मणंचसंपूज्य सर्वपापक्षयो
 त्तरानंतपुण्यफलप्राप्तयेइत्यादि० यथाकामंसंकल्प्य प्रार्थयेत् ॥ दाता
 चविष्णुर्भगवाननंतःप्रतिग्रहीताचसएवविष्णुः ॥ तस्माच्चयासर्वमिदं
 ततंचप्रसीददेवेशवरान्ददस्व ॥ प्रतिगृह्णद्विजश्रेष्ठ अनंतंफलदायकम् ।
 पक्वान्नफलसंयुक्तंसघृतंदक्षिणान्वितम् ॥ अनंतंप्रतिगृह्णातिह्यनंतं
 वैददातिच ॥ अनंतस्तारकोभाभ्यामनंतायनमोनमः ॥ अथ कार्ति
 ककृष्णचतुर्दश्यांप्रदोषेदीपदानम् ॥ अमावास्यांचतुर्दश्योः
 प्रदोषेदीपदानतः ॥ यममार्गान्धकरिभ्योमुच्यतेकार्तिकेनरः ॥
 इत्युक्तत्वात् ॥ ततःप्रदोषसमयेदीपान्दद्यान्मनोरमान् ॥ ब्रह्मविष्णु
 शिवादीनांभवनेषुमठेषुच ॥ प्राकारोद्यानवापीषुप्रतोलीनिष्कुटेषुच ॥
 मंदुरासुविविक्तासुहस्तिशालासुचैवहि ॥ अस्मिन्दिनेभोजन
 दानम् ॥ यथा ॥ ततःप्रेतचतुर्दश्यांभोजयित्वातपोधनात् ॥ शैवा
 न्विप्रांस्तथान्यांश्चशिवलोकेमहीयते ॥ दानंदत्वातुतेभ्यस्तुयमलोकं
 सगच्छति ॥ तत्रप्रदोषेनरकोद्देशेनचतुर्वर्त्तियुक्तदीपदानंपूर्वाभिमुखोभू
 त्वादीपंसंपूज्यदीपदानंकुर्यात् ॥ तत्रमंत्रः ॥ दत्तोदीपश्चतुर्दश्यांनरक
 प्रीतयेमया ॥ चतुर्वर्त्तिसमायुक्तः सर्वपापापनुत्तये ॥ पश्चादन्या
 नपिदीपान्दद्यात् ॥ ततोल्काग्रहणम् ॥ तुलासंस्थेसहस्रांशौ
 प्रदोषेभूतदर्शयोः ॥ उल्काहस्तानराःकुर्युः पितृणामार्गदर्शनम् ॥
 तत्रमंत्रः ॥ शस्त्रसंघहतानांचभूतानांभूतदर्शयोः ॥ उज्ज्वलज्योति
 षादेहोदहेतांव्योमवह्निना ॥ अग्निदग्धाश्चयेजीवा येप्यदग्धाःकुले
 मम ॥ उज्ज्वलज्योतिषादग्धास्तेयांतुपरमांगतिम् ॥ ममलोकंपरि
 त्यज्य आगतायेमहालये ॥ उज्ज्वलज्योतिषावर्त्मप्रपश्यंतोव्रजं

सुवर्णधेनुश्चाप्यत्रसुवर्णाश्वचतुर्दश ॥ सुनिर्णिकासुवर्णैश्वसतभिर्म
 ध्यमामता ॥ चतुर्भिश्चकनिष्ठास्याच्चतुर्थीशेनवत्सकः ॥ गुडधेनु
 विधानेनदत्तासर्वफलप्रदा ॥ गुडधेनुदानविधानंतुदशमीदानविधौ
 द्रष्टव्यम् ॥ अथेत्यादि० प्रवालशृंगीघृतपात्रस्तनवतीपद्म
 रोमांकपूर्वागरुनासिकां मिष्टान्नरसवासितां शंखशृंगांतरांशुक्तिल
 लाटस्थानारिकेलश्रवणांगुडजानुकां पंचगव्यापानवतीं कांस्यपृष्ठां
 पट्टसूत्रलांगूलांसतधान्यसमायुक्तांफलपुष्पोपेतांछत्रोपानत्समन्वि
 तां सुवर्णधेनुरुद्रदैवत्यांसहस्राश्वमेधफलावातिकामःकुलसहस्रस्य
 स्वर्गेनिवासकामश्च गोत्रायशर्मणिसुपूजितायतुभ्यमहंसंप्रददेनममेति
 ॥ मंत्रस्तु ॥ सुवर्णधेनुंविप्रायप्रतिपद्येदृशींनरः ॥ हिरण्यरेताः
 पुरुषःपुराणःकृष्णपिंगलः ॥ सप्तहेमच्छविःस्रष्टाविश्वात्माप्री
 यतांममेति ॥ अनेनैवतुमंत्रेणधेनुदानंप्रकीर्तितम् ॥ अश्वमे
 धसहस्रस्यफलमामोत्यसंशयम् ॥ कुलानांचसहस्रस्य स्वर्ग
 नयतिगोप्रद ॥ इति ॥

इतिमहीधरकृतेदानसंग्रहेत्रयोदशीदानविधि
 नामाष्टादशःकोशः ॥ १८॥

अथ चतुर्दशीदानानि ॥ तत्रादौचैत्रशुक्लचतुर्दश्यामन्येषुपु
 ण्यदिवसेषुवारौप्याचलदानमुक्तम् ॥ तद्विधिस्तुप्रतिपदानविधावुक्तः
 अथ वैशाखशुक्लपक्षेनृसिंहचतुर्दश्यांनृसिंहमूर्तिदानम् ॥
 ॥ तद्विधिस्तु ॥ एकादशीदानविधावुक्तः ॥ ज्येष्ठशुक्लचतुर्दश्यांहे
 मधेनुदानमुक्तम् ॥ तद्विधिस्तुत्रयोदशीदानविधावुक्तः ॥ अथ
 भाद्रपदशुक्लचतुर्दश्यांसौवर्णराजतंकार्पासिकंवा यथाविभ

वमनंतदानम् ॥ उक्तविधिनासंपूज्य ब्राह्मणंचसंपूज्य सर्वपापक्षयो
 तरानंतपुण्यफलप्राप्तयेइत्यादि० यथाकामंसंकल्प्य प्रार्थयेत् ॥ दाता
 चविष्णुर्भगवाननंतःप्रतिग्रहीताचसएवविष्णुः ॥ तस्मान्त्वयासर्वमिदं
 ततंचप्रसीददेवेशवरान्ददस्व ॥ प्रतिगृह्णद्विजश्रेष्ठ अनंतंफलदायकम् ।
 पक्वान्नफलसंयुक्तंसधृतंदक्षिणान्वितम् ॥ अनंतंप्रतिगृह्णातिह्यनंतं
 वैददातिच ॥ अनंतस्तारकोभाभ्यामनंतायनमोनमः ॥ अथ कार्ति
 ककृष्णचतुर्दश्यांप्रदोषेदीपदानम् ॥ अमावास्यांचतुर्दश्योः
 प्रदोषेदीपदानतः ॥ यममार्गान्धकारेभ्योमुच्यतेकार्तिकेनरः ॥
 इत्युक्तत्वात् ॥ ततःप्रदोषसमयेदीपान्दद्यान्मनोरमान् ॥ ब्रह्मविष्णु
 शिवादीनांभवनेषुमठेषुच ॥ प्राकारोद्यानवापीषुप्रतोलीनिष्कुटेषुच ॥
 मंदुरासुविविक्तासुहस्तिशालासुचैवहि ॥ अस्मिन्दिनेभोजन
 दानम् ॥ यथा ॥ ततःप्रेतचतुर्दश्यांभोजयित्वातपोधनात् ॥ शैवा
 न्विप्रांस्तथान्यांश्चशिवलोकेमहीयते ॥ दानंदत्वातुतेभ्यस्तुयमलोकं
 सगच्छति ॥ तत्रप्रदोषेनरकोद्देशेनचतुर्वर्त्तियुक्तदीपदानंपूर्वाभिमुखोभू
 त्वादीपंसंपूज्यदीपदानंकुर्व्यात् ॥ तत्रमंत्रः ॥ दत्तोदीपश्चतुर्दश्यांनरक
 प्रीतयेमया ॥ चतुर्वर्त्तिसमायुक्तः सर्वपापापनुत्तये ॥ पश्चादन्या
 नपिदीपान्दद्यात् ॥ ततोल्काग्रहणम् ॥ तुलासंस्थेसहस्रांशौ
 प्रदोषेभूतदर्शयोः ॥ उत्काहस्तानराःकुर्युः पितृणांमार्गदर्शनम् ॥
 तत्रमंत्रः ॥ शस्त्रसंघहतानांचभूतानांभूतदर्शयोः ॥ उज्ज्वलज्योति
 षादेहोदहेतांव्योमवह्निना ॥ अग्निदग्धाश्चयेजीवा येप्यदग्धाःकुले
 मम ॥ उज्ज्वलज्योतिषादग्धास्तेयांतुपरमांगतिम् ॥ ममलोकंपरि
 त्यज्य आगतायेमहालये ॥ उज्ज्वलज्योतिषावर्त्मप्रपश्यंतोव्रजं

तुते ॥ अथ कार्तिकशुक्लचतुर्दश्यांशिवसन्निधौषष्ट्युत्तरश
तत्रयवर्तिकापूरितदीपदानम् ॥ दीपसंपूज्ययथाकामसंकल्पं
प्रतिज्ञायदीपंप्रज्वाल्यशिवायनिवेदयेत् ॥ तत्रमंत्रः ॥ कीटाःपतं
गामशकाश्चवृक्षाजलेस्थलेयेविचरंतिजीवाः ॥ दृष्ट्वाप्रदीपंनहिजन्म
भाजोभवंतिनित्यंश्वपचाहिविप्राः ॥ अथ माघशुक्लचतुर्दश्यांवा
यस्मिन्कस्मिंश्चतुर्दश्यांरुद्राक्षमालादानम् ॥ तत्रसुवर्णसूत्रं
थितंमुक्तमणिप्रवालादियुतांमालांसंपूज्यब्राह्मणंवृत्वाअयेत्यादि०
सर्वसंपदायुरारोग्यसमस्तपापनाशपुत्रपौत्रादिवृद्धिशिवलोकनिवास
मोक्षेष्टसिद्धिकामेत्यादि० ॥ पापघ्नाःसर्वसुखदारुद्राक्षानिर्मितायतः ॥
रुद्राक्षाःशिवदानित्यमतः शांतिप्रयच्छमे ॥ योददातिद्विजाति
भ्योरुद्राक्षान्मणिसंयुतान् ॥ तस्यप्रीतोभवेद्भुद्रः स्वपदंचप्रयच्छ
ति ॥ अथमाघफाल्गुनयोश्चतुर्दशीषुवृषदानंतद्विधिस्तुक
न्यासंक्रमदानविधावुक्तः ॥ अथसर्वासुचतुर्दशीषुरौप्या
चलदानमुक्तंतद्विधिस्तुप्रतिपदानविधावुक्तः ॥ अथचतु
र्दश्यांवान्यत्सुपर्वसुलवणधेनुदानम् ॥ गोमयेनानुलिप्तेतुदर्भसंस्त
रसंस्थितम् ॥ आविकंचर्मविन्यस्यपूर्वाशाभिमुखंस्थितम् ॥ वस्त्रेणा
च्छादितांरुत्वाधेनुंकुर्वीतबुद्धिमान् ॥ आढकेनैवकुर्वीतबहुवित्तोप
कल्पिताम् ॥ गांविप्रंचयथाविभवंवस्त्रालंकारादिभिःसंपूज्य अ
येत्यादि० गोत्रायशर्मणेषुपूजितायइमांलवणधेनुंफलस्तनींसिंधुशु
क्तिवर्णांसक्तुपिंडकपोलांयवास्यांकंबलपट्टसूत्रग्रैवेयकांताम्रपृष्ठीं
डापानांकंबललांगूलांमधुयोनिंकांसर्वाभरणभूषितांसर्वपापक्षयकामो
विष्णुप्रीतिकामोवातुभ्यमहंसंप्रददे नममेति ॥ पुत्रभार्या दियुतःप्र

दक्षिणीकृत्यदद्यात् ॥ शेषं मधुघ्नेन वत् ॥ तत्तु कार्तिकसंक्रमणदानवि
धौ द्रष्टव्यम् ॥ दानवाक्यं तु ॥ लवणे वैरसाः सर्वे सर्वास्तिष्ठन्ति देवताः
सर्वदेवमये देविलवणाख्येन मोस्तुते ॥ अथ सर्वासु चतुर्दशीषु
संक्रांत्यादिपर्वसु वा शिवलिंगदानम् ॥ पारदं सौवर्णं राजतं ता
म्रपार्षदं नर्मदादिजं मृण्मयं वा यथाश्राद्धम् ॥ लिंगं यथोक्तविधिना संपू
ज्य पूजोपकरणादिभिः संयोज्य ब्राह्मणं वा सोलंकरणादिभिः संपू
ज्य अथेत्यादि ० सशैलवनकाननभूचक्रदानसमफलकाम ० वा यथा
भिलाषमुल्लिख्य इदममुकद्रव्यनिर्मितं शिवलिंगं सर्वोपस्करयुतं सवस्त्र
फलं स्वर्णादिपात्रे स्थितं सालंकृतं गोत्राय शर्मणे सालंकृताय तुभ्य
महं संप्रददेन ममेति ॥ सुवर्णगांभूमिं च दक्षिणार्थे दद्यात् ॥ मंत्रस्तु ॥
सालंकारं महालिंगं निवसत्वां वृषध्वज ॥ प्रीयतां तव दानेन शिवो गौर्या
युतस्तु मे ॥ तथा ॥ कैलासवासो गौरीशो भगवान् भगनेत्रभित्
चराचरात्मको लिंगरूपी दिशतु वाञ्छितम् ॥ रुद्राक्षमालासहितं
लिंगं दत्त्वा कोटिगुणपुण्यं भवति ॥ अथ मारकतमणिमयलिंग
दानम् ॥ संकल्पादिपुर्ववत् ॥ मंत्रस्तु ॥ इदं मारकतं लिंगं रौप्यपी
ठसमन्वितम् ॥ धान्यैर्द्वादशभिर्युक्तमेकादशफलान्वितम् ॥
संप्रदद्याद्विधानेन पृथ्वीदानफलं लभेत् ॥ काश्मीरलिंगदाने तु ॥
मारकतस्थाने काश्मीरपदं वदेत् ॥ अन्यत्सर्वलिंगदानं वदेत् ॥
मंत्रस्तु ॥ मृत्युं जये शगौरीशसूनृभ्यां वृषवाहन ॥ संप्रदानेन मेशं
भोममसंतु मनोरथाः ॥

इति महीधरकृते दानसंग्रहे चतुर्दशीदान

विधिर्नामैकोनविंशः कोशः ॥ ९५ ॥

अथ पौर्णमासीदानानि॥ तत्रादौ चैत्र्यां भाण्डदानम् ॥ यथा भि
लाषंसंकल्प्यादानवाक्यम् । हिरण्मयानि भांडानि पात्राणि मृन्मयानि
चागृहाणेमानि वैयस्माद्भास्करः प्रीयतां मम ॥ तत्रैव गोधूमपिष्टदान
मंत्रः ॥ गोधूमजनितं पिष्टं शर्कराघृतसंयुतम् ॥ द्विजवर्ष्यगृहाण
त्वमतः शांतिं प्रयच्छ मे ॥ अथ वैशाख्यां सान्नोदकसतिलकुंभ
दानमुक्तम् ॥ यथा ॥ वैशाख्यां पौर्णमास्यां तु स्रष्ट्राकमलयोनि
ना ॥ तिलाः कृष्णाश्च गाश्चैव तृप्तये सर्वदेहिनाम् ॥ तस्मात्कार्यं ति
लैः स्नानं तत्राग्नौ जुहुयात्तिलान् ॥ निवेदितव्यं विधिवत्तिलपात्रं द्वि
जातये ॥ तिलतैलेन दीपाश्च देया देवेभ्य एव च ॥ सोदकैश्च तिलैः सा
र्द्धं कर्त्तव्यं पितृ तर्पणम् ॥ सतिलैर्मधुभिर्युक्तैर्ब्राह्मणेभ्यश्च तर्पणम् ॥ दा
तव्या दक्षिणा चापि स्वर्णवित्तानुसारतः । अत्र तिलदानं तिलपात्रदानं क
न्यासंक्रमणदानविधावुक्तवद्बोध्यम् ॥ सान्नोदककुंभदानं तु मेघसंक्रां
तिदानविधावुक्तवत् तथा त्रितिलदाने मंत्रविशेषः ॥ तिलावै सोमदे
वत्याः सुरैः सृष्टास्तु गोसवे ॥ स्वर्गप्रदाः स्वतंत्राश्च ते मां रक्षन्तु नित्यशः । इ
ति ॥ अथास्यां पौर्णमास्यां श्रावण्यां वा दधिधेनुदानम् ॥ तत्र गोम
योपलिप्तभूमौ कुशकृष्णाजिने आस्तीर्णं सप्तधान्योपरि दधिकुंभं संस्था
प्य ॥ तच्चतुर्थांशेन वत्सं कृत्वा अघेत्यादि० गोत्राय शर्मणे सुपूजि
ताय सुवर्णमुखी प्रशस्तपत्रश्रवणां मुक्ताफलेक्षणां चंदनागरुशृंगीमुखे
विशेषगंधद्रव्यैर्युक्तां शर्करया कृता जिह्वां श्रीखंडेन कृतघ्राणां फलमयदं
तांसितकंबलच्छन्नां दध्नीरोमांसूत्रमयपुच्छां रौप्याखुरीं नवनीतस्त
नवतीमिक्षुपादां सर्वाभरणभूषितां वस्त्रयुग्मेनाच्छादितां गंधपुष्पाद्यर्चि
तां इमां दधिधेनुं सर्वपापक्षयकामो दधिकाष्ण इति मंत्रं पठित्वा तु भ्य

महंसंप्रददेनममेतिगुडधेनूक्तमंत्रेणवादधात् ॥ ततःसुवर्णदक्षिणां
 दत्त्वा ॥ यालक्ष्मीरित्यादिमंत्रैःप्रार्थयेत् ॥ शेषविधानंसर्वगुडधे
 नुवद्भजातव्यम् ॥ वैशाखकार्तिकमाघफाल्गुनपूर्णिमासु
 कृष्णाजिनमतिपुण्यदानम् ॥ तद्विधिस्तुमकरसंक्रमणदानविधा
 वुक्तः ॥ गोदानंतुसार्वकालिकम् ॥ अथ ज्येष्ठीपौर्णमास्यांछत्रो
 पानद्वयजनदानमुक्तम् ॥ यथा ॥ ज्येष्ठेमासितिलान्दद्याच्छ
 त्रोपानद्युगान्वितान् ॥ व्यजनंचाश्वमेधस्यफलंप्राप्नोतिमानवः ॥
 असिपत्रवनमर्माक्षुरधारासमन्वितम् ॥ तीक्ष्णातपंचतरतिछत्रोपा
 नत्प्रदोनरः ॥ एतेषांविधिस्तुकर्कसंक्रांतिविधावुक्तः ॥ आथाषाढ्यां
 पुराणदानम् ॥ यथारुचिपुस्तकदानंवा ॥ स्वर्णादिसिंहासनेस्थितं
 पुस्तकंसंपूज्य ब्राह्मणंवस्त्रालंकारादिभिर्वृत्वा अघेत्यादिममब्रह्म
 हननादिसमस्तपापक्षयपूर्वकबहुपुत्रपौत्रसौभाग्यादिसकलमनोस्था
 वाप्ति पुस्तकलिखिताक्षरसंख्यसहस्राब्दब्रह्मलोकनिवासकामोगोत्रा
 यशर्मणेतुभ्यमहंसंप्रददे नममेति ॥ मंत्रस्तु ॥ मातृकाब्रह्मणोरूपंयै
 व्याप्तिसंचराचरम् ॥ तस्मादस्यप्रदानेनममसंतुमनोरथाः ॥ पुस्तक
 दानंतुयथाश्रद्धंसर्वकालेभवाति ॥ अथ श्रावण्यांयज्ञोपवीतदा
 नांगत्वेनादौरक्षाबंधनमंत्रः ॥ येनवद्धोबलीराजादानवेंद्रोमहा
 बलः ॥ तेनत्वांप्रतिबघ्नमिरक्षेमाचलमाचल ॥ वैदिकंच ॥
 यदावध्नन्तिदाक्षायण २७ शतानीकायसुमनस्यमानातन्मआवध्ना
 मिशतंशास्त्रायापुमान्जरदृष्टिर्यथासत् ॥ ततःफलपुष्पाहि
 स्पृश्य सहितंयज्ञोपवीतंसंपूज्य ॥ अघेत्यादिममसमस्तपातकोपपा
 तकनिरशान् ब्रह्मवर्चस्यायुर्वलाभिवृद्धिद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यै

गोत्रायशर्मणेनुभयमहंसंप्रददेनममेति ॥ सुवर्णदक्षिणां दद्यात् ॥
 उपाकर्मणि विप्रेभ्यो दद्याद्यज्ञोपवीतकम् ॥ आयुष्मान् जायते तेन कर्म
 णामानवो भुवि ॥ अथ शिरोरोगत्रयज्ञोपवीतदानम् ॥ यथाशक्त्या
 सुवर्णेन निर्मितं ब्रह्मसूत्रकम् ॥ सोत्तरीयं रौप्ययुतं दद्यादारोग्यहेतवे ॥
 मंत्रस्तु ॥ धाताविधाता जगतां परमात्मा चतुर्मुखः ॥ विनाशयतु
 मेक्षिप्रं रोगवेगं शिरोगतमिति ॥ अथ गर्भस्रावत्रयज्ञोपवीतदान
 म् ॥ यज्ञोपवीतं सौवर्णमित्यादिसर्वपूर्ववत् ॥ विशेषस्तु तद्वन्धि
 प्रदेशे मौक्तिकं वज्रौ निधापयेत् ॥ पूजातु घृतपात्रोपरि स्थाप्य कुर्या
 त् ॥ दानवाक्यं तु ॥ उपवीतं परमिदं ब्रह्मणा विधृतं पुरा ॥ अनेन
 कांस्यदानेन गर्भसंधारयेत्त्वहम् ॥ फलान्यपि ब्राह्मणेभ्यो तस्मिन्का
 ले प्रदापयेत् ॥ अनुव्रज्य तथा चार्घ्यं प्रणिपत्य क्षमापयेत् ॥ गर्भ
 स्रावभवाद्दोषादेवं कृत्वा विमुच्यते ॥ अथ प्रौष्ठपद्यां पौर्णमास्यां
 भागवतादिपुराणदानम् ॥ प्रौष्ठपद्यां पौर्णमास्यां स्वर्णसिंहासन
 स्थितम् ॥ श्रीमद्भागवतं दत्त्वा नरो मोक्षमवाप्नुयात् ॥ इत्युक्त
 त्वात् महद्विधिस्तु आषाढी पौर्णिमायां पुराणदानविधावुक्तः ॥ अथा
 ध्विन्यां कोजाग्रे रात्रौ लक्ष्मीं संपूज्य ॥ यथाशक्त्या च दातव्या दीपाः
 स्वर्णविनिर्मिताः ॥ ब्राह्मणेभ्यो विधानेन चिरं लक्ष्मीः प्रसीदति
 अद्येत्यादि ० ममानेकजन्मार्जितकूटसाक्ष्यादिपात्रकसंसूचितनेत्र
 विकारोपशमनपूर्वकलक्ष्मीप्रीतये एतान् स्वर्णमयदीपान् ॥ मंत्र
 स्तु ॥ प्रज्ञाकरकरस्पृष्टा दीपा अधत्वन शकाः ॥ तस्मादेषाप्रदाने
 न सद्दृष्टिर्वर्धतां ममेति ॥ वरान् दत्वा यतो विष्णुर्मत्स्यरूपी भवत्ततः
 तस्यां दत्तं हुतं जप्तं दक्षयज्ञफलं स्मृतम् ॥ अथ नानाफलदानम् ॥

फलानियानिविद्यंते सुगन्धान्यगदानि च ॥ कंकोलकट्फलं जातिलवं
 गीलवलीफलम् ॥ खर्जूरनारिकेलं च कदलीफलमेव च ॥ दाडिमं
 मातुलिगंच कर्कोटं त्रपुसंतथा ॥ वृन्ताकं कारवेल्लं च चिंचाकूष्माण्डमेव
 च ॥ इति ॥ फलानामप्रदानेन येषां तु तिथयोगताः ॥ ते व्याधितादिर
 द्राश्च जायंते भुवि मानवाः ॥ फलदानं तु मकरसंक्रातिदानविधावुक्तव
 त् ज्ञातव्यम् ॥ अथ प्रदोषसमये त्रिपुरोत्सवार्थं दीपदान
 म् ॥ तस्य विधिस्तु वैकुण्ठचतुर्दशीदानविधावुक्त एव ॥ अथ च त
 दिने तिलदानम् ॥ रुष्णाजिने तिलान्कृत्वा सुवर्णमधुसर्पिणी ॥ द्रोणे
 कं वा ससाच्छन्नं दद्यात्तद्वत्सदक्षिणम् ॥ ब्राह्मणाय च तदत्वासर्वत
 रतिदुष्कृतमिति ॥ अथेत्यादि० अमुकगोत्रायामुक्तशर्मणे ब्राह्म
 णाय सुपूजिताय रुष्णाजिनस्थं सुवर्णमधुसर्पिर्युतं वस्त्राच्छन्नं तिलद्रो
 णं सोमदैवतं सर्वपापक्षयकामस्तुभ्यमहंसंप्रददेन ममेति दद्यात् ॥ कृतै
 स तिलद्रोणस्य सांगता सिद्धयर्थं इदं सुवर्णमग्निदैवतं दक्षिणात्वेन तुभ्यम
 हंसंप्रददे न ममेति दद्यात् ॥ प्रतिग्रहीता तु देवस्य त्वेति तां संगृह्य यथा
 शाखं कामस्तुतिं पठित्वासमापयेत् ॥ अथ कार्तिक्यामाघ्यांवै
 शाख्यां वानीलवृषभदानम् ॥ गजाश्वस्थदानं च घृतधेन्वादय
 स्तथा ॥ प्रदेयाः पुण्यकृद्भिस्तु शिवलोकप्रकांक्षिभिः ॥ तत्रादौ
 नीलवृषभलक्षणम् ॥ लोहितोयस्तु वर्णेन मुखे पुच्छे च पांडुरः ॥ श्वेतः
 खुरविषाणाभ्यां सवृषो नील उच्यते ॥ तथा च ॥ चरणाश्वमुखं
 पुच्छं यस्य श्वेतानि गोपतेः ॥ लाक्षारससुवर्णश्वतं नीलमिति निर्दिशे
 त् ॥ भूमौ कुर्वतिलांगूलं प्रलंबं स्थूलघोणकः ॥ पुरस्तादुन्नतो नीलो
 वृषभः सः प्रशस्यते ॥ अथवा ॥ ततोदरः रुष्णपृष्ठो ब्राह्मणस्य प्र

शस्यते ॥ स्निग्धवर्णेनरक्तेनक्षत्रियस्यप्रशस्यते ॥ कांचनेनच
 वैश्यस्यकृष्णः शूद्रस्यशस्यते ॥ ग्रन्थप्रागायतेशृंगेभ्रूमुखाभिमु
 खेसदा ॥ सर्वेषामेववर्णानांसचसर्वार्थसाधकः ॥ एतादृशंवृषभंसु
 वर्णतिलकालंकृतमुक्तादामविभूषितप्रवालपुच्छरौप्यसुरस्वर्णशृंगं
 दुकूलाच्छादितं घंटाघैवेयकंकृतवात्राह्मणवस्त्रालंकारादिभिःसंपूज्य
 दद्यात् ॥ अथेत्यादि० ममानेकजन्मार्जितसंस्कारीकरणमलिनीक
 रणादीनांपातकोपपातकानांविनाशनपूर्वकं सुखसौभाग्यायुरारोग्या
 भिवृद्ध्युत्तरवृषांगजरोमसंख्याकदिव्याब्दसहस्रावधिगोलोकनिवा
 स० ॥ मंत्रस्तु ॥ दानार्थब्रह्मणसृष्टोवृषभोगीलसंज्ञकः ॥ त
 स्मादस्यप्रदानेनममसंतुमनोरथाः ॥ सुवर्णदक्षिणांदद्यात् ॥
 अस्यामेवगजाश्वादिदानमुक्तम् ॥ तद्विधिस्त्वग्रेद्रष्टव्यः ॥
 अथमार्गशीर्ष्यापौर्णमास्यांदशाचलदानमुक्तम् ॥ तद्विधिस्तु
 प्रतिपदानविधौद्रष्टव्यः ॥ अथपौष्यांतिलपात्रदानमुक्तम् ॥
 तद्विधिस्तु एकदशीदानविधावुक्तः ॥ अथ माघ्याम् ॥
 तैलमामलकाश्चैवतीर्थदेयास्तुनित्यशः ॥ ततःप्रज्वालयेत्बह्निसेव
 नार्थद्विजन्मनाम् ॥ इतिमाघमासपरत्वम् ॥ एवंस्नात्वावसाने
 तुभोज्यदेयमवारितम् ॥ भोज्योद्विजदांपत्यंभूषयेद्वस्त्रभूषणैः ॥
 कंबलाजिनस्तनानिवासांसिविविधानिचालोचकानिचदेयानिप्रच्छा
 दनपटास्तथा। उपानहौतथागुप्तमोचकौपापमोचकौ। अनेनविधिनाद
 यानमाधवःप्रीयतामिति ॥ अत्रावसानेमाघपौर्णमास्यामिति ॥
 तथा चात्रैवघृतकंबलदानम् ॥ अर्पणवेदिपर्यंतंनोदयाद्दृ
 तकंबलम् ॥ तस्मान्तंतमेत्पुण्यंमाघपूर्णिमप्रवृत्ति ॥ अथेत्यादिम

मसर्वपापक्षयपूर्वकं ॥ इहामुत्रचशीतोष्णादिदुःखनिवारणोत्तरवि
ष्णुसायुज्यकामः ॥ मंत्रस्तु ॥ शीतवातहरंदिव्यं धृतकुंभं संकंचलम् ॥
दानेनानेन संतुष्टो भवेद्द्वैरीपतिः शिवः ॥ अथास्यामेव गोमिथुन
दानम् ॥ सर्वषां गां संपूज्य यथाविभवमलंकृत्य शुद्धं ब्राह्मणं वृ
त्वा ॥ अद्येत्यादि० सर्वषभरुद्रदेवतसहिरण्यदक्षिणायथाशक्त्य
लंकृतां गां समस्तपापक्षयोत्तरविष्णुसायुज्यावाप्तिकामे गोत्राय शर्म
णे तु भ्यमिदं गोमिथुनं यथाशक्त्यलंकृतं संप्रददेन ममेति ॥ यालक्ष्मीरि
त्यादिभिः गां प्रार्थयेत् ॥ ततो वृषभप्रार्थना ॥ धर्मस्त्वं वृषरूपेण जगदानं
दाकारक ॥ अष्टमूर्तेरधिष्ठानमतः पाहिसनातन ॥ अथ फाल्गुन्याम्
दोलास्थितं विष्णुमूर्तिदानम् ॥ तद्विधिस्तु द्वादशीदानविधावुक्तः ॥
तदंगत्वेन शय्यादानं च कर्तव्यम् ॥ शय्यादानविधिस्तु मिथुनसंक्रां
तिदानविधावुक्तः ॥ अथ सर्वासु पौर्णमासीषु मुख्यं पर्वसु वा
हरिहरमूर्तिदानम् ॥ हरेर्हरस्य च तत्रासु वर्णशतकेन तु ॥ तदर्द्धेनां
थवा कुर्यान्मूर्तिलक्षणं संयुते ॥ सर्वोपस्करसंयुक्ते सर्वभरणभूषिते ॥
यो ददाति नरः सम्यक् सर्वान् कामानवाप्नुयात् ॥ एवमुक्तविधानेन ह
रिहरमूर्तिसंपाद्य विधिवत्संपूज्य ब्राह्मणं च ब्राह्मणं च ब्राह्मणं च ब्राह्मणं च ब्राह्मणं च
त्वा ॥ अद्येत्यादि० अपस्त्यु व्याधिसर्वबाधानि वारणा व्याहृते
श्वर्ग्यं प्राप्तिं धर्मश्रीपुत्रपौत्रादिकर्तृकराज्यातिपरपदावाप्तिकामः ॥ मं
त्रस्तु ॥ शिवो नाम शिवः साक्षात्तथानारायणोऽपि च ॥ अस्य दाना
द्धरिहरौ प्रसन्नौ स्तां स दामम ॥

इति महीधरकृते दानसंग्रहे पौर्णमासीदानविधि
नाम विंशतितमः कोशः ॥ २० ॥

अथामावास्यादानानि ॥ तथात्रयस्मिन्कस्मिन्नमादिनेहिर
 ण्यरजतलवणदानान्युक्तानि ॥ तत्रादौहिरण्यदानम् ॥ तच्चनि
 ष्कत्रयमितंकनिष्ठद्वादशमाषकोनिष्कः ॥ अथेत्यादि० गोत्रायश
 र्मणेइदंहिरण्यं अग्निदैवतंसमस्तपापक्षयकामस्तुभ्यमहंसंप्रददेनममे
 ति ॥ मंत्रस्तु ॥ हिरण्यगर्भगर्भस्थंहेमबीजंविभावसोः ॥ अवं
 तपुण्यफलदमतःशांतिप्रयच्छमे ॥ अथ रजतदानम् ॥ पल
 त्रयमितरौप्यंदद्यात् ॥ अथेत्यादि ममसमस्तपापक्षयपूर्वकशि
 वविष्णुपितृप्रीतिकामोगोत्रायशर्मणसुपूजितामइदंरजतंविष्णुदैवतं
 सदक्षिणंतुभ्यमहंसंप्रददेनममेति ॥ मंत्रस्तु ॥ प्रीतिर्यतःपितृणांच
 विष्णुशंकरयोः सदा ॥ शिवनेत्रोद्भवंप्रयमतःशांतिप्रयच्छमे ॥
 ॥ इति रजतदानम् ॥ अथ लवणदानम् ॥ लवणंसार्व
 स्वारीकंदद्यात् ॥ अथेत्यादि० ममसमस्तपापक्षयपूर्व
 कशिवप्रीतिकामोगोत्रायशर्मणसुपूजिताय इदंलवणंसर्वरसोत्कृ
 ष्टंसोमदैवत्यंसदक्षिणंतुभ्यमहंसंप्रददेनममेति ॥ मंत्रस्तु ॥ य
 स्मादन्नरसाः सर्वेनोत्कृष्टालवणंविना ॥ शोभाप्रीतिकरंयस्मादतः
 शांतिप्रयच्छमे ॥ इतिलवणदानम् ॥ अथकार्तिक्याममा
 यांदीपदानम् ॥ अत्रलक्ष्मीपूजनोत्सवम् पूजनग्रंथोक्तंकृत्वादे
 वब्राह्मणगृहादिषुदीपदानंकुर्व्यात्तदुक्तम् ॥ कार्तिकेमास्य
 मायांयःकुर्व्यादीपप्रदीपनम् ॥ देवब्राह्मणगेहादौसगच्छेद्वैष्ण
 वंपदमिति ॥ तत्रमंत्रः ॥ अग्निर्ज्योतिरविर्ज्योतिश्चंद्रो ज्योति
 स्तथैवच ॥ उत्तमःसर्वज्योतीनांदीपोयंप्रतिगृह्यताम् ॥ अथ
 माघ्यममायांनवनीतधेनुदानम् ॥ अमायांमाघमासस्यपूज

यित्वापितामहम् ॥ गायत्र्यासहितदेववेदेदांगभूषितम् ॥ न
 बनीतमयीधेनुंफलैर्नानाविधैर्युताम् ॥ सहिरण्यांसवत्सांचब्राह्म
 णायनिवेदयेत् ॥ अत्रघृतधेनुषत्सर्वविधानंज्ञातव्यम् ॥ की
 र्त्तयेत्प्रीयतामत्रपद्मयोनिःसनातनः ॥ स्थानंस्वर्गंथपातालेय
 न्मर्त्येकिंचिदुत्तमम् ॥ तदवाप्नोत्यसंदिग्धंपद्मायोनेः प्रसादतः ॥
 यानिचान्यानिदानानि दीयन्ते तु बहून्यपि ॥ युगादिषु च सर्वे
 षुअक्षय्याणिभवन्तिहि ॥ वित्तहीनःस्वशक्त्यायोददातिस्वल्पकं
 बहु ॥ तदप्यक्षय्यतांयातिनात्रकार्य्याविचारणा ॥ वित्तानुसारंस्व
 दद्याद्धनीवानिर्द्धनीध्रुवम् ॥ भूहिरण्यगृहंवासःशयनान्यासनानि
 च ॥ छत्रोपानहयानानिदेयानिशुभमिच्छता ॥ एवंदत्वायथाश
 क्त्याभोजयित्वाद्विजोत्तमान् ॥ पश्चाद्भुंजीतसुमनावाग्यतोबंधु
 भिःसह ॥ यत्किंचिदाचिकंपापमानसंक्रायिकंतथा ॥ तत्सर्वनाश
 मायातियुगाऽदिविधिदानतः ॥ गीयमानोऽथगंधर्वैःस्तूर्यमानःसुरा
 सुरैः ॥ रुद्रस्यानुचरोभूत्वारुद्रलोकेवसेन्नरः ॥ यद्दीयतेकिमपिको
 टिगुणंतदाहुःस्नानंजपोनियतमक्षयमेवसर्वम् ॥ स्यादक्षयंतुयुगपूर्व
 तिथीषुसर्वं व्यासादयोमुनिवराइदमाजगन्थ ॥ अथ पौषमाघयोर
 मायामर्द्धोदयदानानितद्यथा ॥ अमार्कपातश्रवणयुक्ताचेत्पौष
 माघयोः ॥ अर्द्धोदयः सविज्ञेयः किंचिन्यूनोमहोदयइति ॥
 तत्र ॥ सहस्रार्कग्रहैःसममितिदानफलमुक्तपूर्वैः ॥ अर्द्धोदयेतुसं
 प्राप्तेसर्वगंगासमंजलम् ॥ शुद्धात्मानोद्विजाःसर्वभवेयुर्ब्रह्मसन्निभाः ॥
 यत्किंचित्क्रियतेदानंसर्वमेरुसमंभवेत् ॥ अत्रविशेषतः ॥
 पात्रदानमुक्तंयथा ॥ चतुःषष्टिपलंमुख्यममत्रंतत्रकारयेत् ॥ चत्वा

रिंशत्पलं वायुपंचविंशतिमेववा ॥ अमंत्रपात्रविशेषम् ॥ तच्चसुव
 र्णरजतादिवटितं तथाविभवं बोध्यम् ॥ निधाय पायसं शुद्धं पद्ममष्टदं
 लिखेत् ॥ पद्मस्य कर्णिकायां तु कर्षमाणं सुवर्णकम् ॥ तदभावे तद
 र्द्धं वा तदर्द्धं वा तु कारयेत् ॥ भूमौ तु तंडुलैः शुद्धैः पद्ममष्टदं शुभम् ॥
 अमंत्रं स्थापयेत् तत्र ब्रह्मविष्णुशिवात्मकम् ॥ शेषा पूजा क्तः कार्या
 श्वेतमाल्यैः सुशोभनैः ॥ वस्त्रादिभिरलंकृत्य ब्राह्मणाय निवेदयेत् ॥
 तत्र मंत्रः ॥ सुवर्णपयसामंत्रं यस्मादितत्रयी मयी ॥ आवयोस्तार
 कं यस्मात्तद्गुहाण द्विजोत्तम ॥ समुद्रमेखलां पृथ्वीं सम्यग्दत्त्वा तु यत्फल
 लम् ॥ तत्फलं लभते मर्त्यैः कृत्वा दानममत्रकमिति ॥ आवयोस्ता
 रकमित्यनेन प्रतिग्रहदोषाभाव उक्तः ॥ गंगा गया प्रयागेषु पुष्कराणां
 त्रये तथा ॥ मानसादिपुतीर्थेषु यत्पुण्यं स्नानदानतः ॥ तत्समं लभ
 ते मर्त्यैः उदयार्द्धस्य दानतः ॥ अश्वमेधायुतं चेष्टमिष्टापूर्तं च तैः कृतम्
 ॥ अर्द्धोदये कृतं येन दानं सम्यगमत्रकम् ॥ अथार्द्धोदये तिलपर्वत
 दानम् ॥ पूर्वोदये संगमे स्नात्वा शुचिर्भूत्वा समाहितः ॥ सर्वपापवि
 शुद्धयर्थं नियमस्थो भवेन्नरः ॥ तत्र मंत्रः ॥ त्रिदैवत्यं व्रतं देवाः करि
 ष्ये भुक्तिमुक्तिदम् ॥ भवंतु सन्निधौ मे यत्र यो देवास्त्रयोऽग्नयः ॥ तथा
 ब्रह्मविष्णुमहेशानां सौवर्णपलसंख्यया ॥ प्रतिमास्तु प्रकर्त्तव्यास्तद
 र्द्धेनाथवापुनः ॥ साग्रं शतत्रयं शंभोर्द्रोणानां तिलपर्वतः ॥ कर्त्तव्यः
 पर्वतो विष्णोर्ब्रह्मणः पूर्वसंख्यया ॥ शय्यात्रयं ततः कुर्यादुपस्कर
 समन्वितम् ॥ संपूज्य विप्रवर्यैः यो दत्त्वेऽप्सितमवाप्नुयात् ॥ अथा
 स्य दानप्रयोगः ॥ यजमानः कृतनित्यक्रियः पुण्यकाले तीर्थादौ
 स्नात्वा चम्य ॥ अथेत्यादि ० ममेऽप्सितं फलं वाप्तये मे रुदानं समं फलं

वाप्तयेवाद्धोदयेतिलपर्वद्वदानंकरिष्येति संकल्प्य ॥ वेदपारगान्ब्राह्म
णान्वृत्वा यथाविभवं वस्त्रालंकारादिभिः संपूज्य ॥ ततस्तिलपर्वते
ब्रह्मादीनां प्रतिमाः स्वर्णमयाः संस्थाप्य षोडशोपचारैः संपूज्य ॥ ब्रह्मा
दीनामंगपूजां कुर्यात्तद्यथा ॥ नमो विश्वसृजतुभ्यं सत्याय परमात्मा
त्मने ॥ देवाय देवपतये यज्ञानां पतये नमः ॥ ॐ ब्रह्मणे नमः पादौ
पूजयामि ॥ इत्यक्षतगंधपुष्पाणि च प्रक्षिपेत् ॥ ॐ हिरण्यगर्भा
य ० उरू ० ॐ परमात्मने ० जानू ० ॐ वेधसे ० जघे ० ॐ पद्मो
द्भाय ० गुह्यं ० ॐ हंसवाहनाय ० कटी ० ॐ शताब्जंदा ० वक्ष ०
ॐ सावित्रीपतये ० बाहू ० ॐ ऋग्वेदाय ० पूर्ववक्त्रं ० ॐ यजुर्वे
दाय ० दक्षिणवक्त्रं ० ॐ सामवेदाय ० पश्चिमवक्त्रं ० ॐ अथर्वणवे ०
उत्तरवक्त्रं ० ॐ चतुर्वक्त्राय ० वक्त्राणि ० ॐ हंसवाहनाय ० नेत्रा
णि ० ॐ कमलासनाय ० शिरांसि ० ॐ लोकेशाय ० सर्वांगं ०
ततो कपालात्परितस्तत्तन्मंत्रैः पूजयेत् ॥ ततो विष्णवंगपूजा ॥
हिरण्यरूपपुरुषप्रधानाव्यक्तरूपधृक् ॥ प्रसीद सुमुखानंतपूजां स्वी
कुरु मत्कृताम् ॥ इति प्रार्थ्य पूजयेत् ॥ अनंताय ० पादौ ० ॐ विश्वरू
पवते ० ऊरू ० ॐ मुकुंदाय ० जानुनी ० ॐ गोविंदाय ० जघे ० ॐ
प्रभुमाय ० गुह्यं ० ॐ अघनाभाय नाभि ० ॐ लंबोदराय ० उदरं ०
ॐ कौस्तुभवक्षसे ० वक्षः ० ॐ चतुर्भुजाय ० बाहु ० ॐ
ॐ विश्वमुखाय ० मुखं ० ॐ सहस्रशिरसे ० शिरांसि ० ॐ सर्वेश्व
राय ० सर्वांगम् ० ॥ ततः शिवांगपूजा ॥ आदित्यचंद्रनयनदिग्वा
सौदैत्यसूदन ॥ पूजां दत्तामया भक्त्या गृहाण करुणां करोति ॥ तथा ॥
महेश्वरमहेशाननमस्ते विपुरांतक ॥ जीमूतकेशाय नमो नमस्ते वृषभध्व

जेति । ॐ ईशानाय नमः पादौ ० ॐ शंकराय ० ऊरु ० ॐ उमाकांताय ०
 गुह्यं ० ॐ नीललोहिताय ० नाभिं ० ॐ कृत्तिवाससे ० उदरं ० ॐ नागय
 ज्ञोपवीतिने ० बाहु ० ॐ पंचवक्राय ० वक्राणि ० ॐ त्रिलोचना
 य ० नेत्राणि ० ॐ रुद्राय ० शिरः ० ॐ विश्वेश्वराय ० सर्वांगं इत्यं
 गपूजा ततः पंचामृताद्युपचायाः पीठत्रयं कमंडलुः श्वेतवस्त्रयुगं ब्रह्मणे
 पीतांबरद्वयं विष्णवे लोहितवस्त्रयुगं शंकराय कमलैस्तुलसीपत्रैर्वि
 ल्वपत्रैश्चक्रमेणं संपूज्य । ततो ब्रह्मविष्णुशिवानां नाममंत्रेणाष्टोत्तर
 शतं तिलैर्घृताक्तैर्हुत्वा गमेकांदद्यात् ॥ ततस्तिलपर्वतम् प्रतिमा
 त्रयं शय्यात्रयं च दद्यात् । संकल्पोक्तफलसंकीर्त्य गोत्राय शर्मणिसु
 पूजिताय तुभ्यमहंसंप्रददेन ममेति । मंत्रैस्तु ॥ यस्मान्मधुवने विष्णो
 र्देहस्वेदसमुद्भवाः ॥ तिलाः कुशाश्च मापाश्वतस्माच्छन्नो भवत्विवह ॥
 हव्यकव्येषु यस्माच्च तिलैरेवाभिरक्षणम् ॥ भवादुद्धरशैलैर्द्रतिलाच
 लनमोस्तुते ॥ अन्यत्सर्वं तिलाचलदानवत्कुर्व्यात् । तत्तु प्रतिपदा
 नविधावुक्तम् ॥ यत्किंचिद्दीयते दानं मे रतुल्यं तु तद्भवेत् ॥

इति महाधरकृते दानसंग्रहे अमादानविधिर्नामैकाविं

शतितमः कोशः ॥ २१ ॥

अथ सूर्यादिवारेषु ग्रहदोषोपशान्तये वा केवलं पुण्यवृद्धये
 दानानि ॥ तत्रादौ ग्रहाणां मणिदानम् ॥ माणिक्यमुक्ताफलविद्रुमाणि
 गारुत्मकं पुष्पकवज्रनीलम् ॥ गोमेदवैदूर्यकमरकताः स्यूरत्नान्यथो
 ज्ञस्य मुदे सुवर्णम् ॥ दद्यादिति शेषः ॥ अथ महामूल्यरत्नदाने यस्य
 सामर्थ्याभावस्तदर्थमल्पमूल्यानिरत्नान्युक्तानि ॥ देयंतुष्ट्यैषि
 द्रुमं भौमभान्वोरुप्यं शुक्लं द्वौश्वहं गुरोश्च ॥ मुक्तासूरे लोहमर्कात्मजस्य

लाजावर्तः कीर्तितः शेषयोश्चेति ॥ अथ प्रत्येकग्रहस्य
 पृथग्द्रव्यदानानि ॥ ग्रहदानक्रमेणवक्ष्येसर्वसिद्धिकरंपरम् ॥ सर्व
 शान्तिकरं नृणां सर्वपापप्राणाशनम् ॥ आदौ सूर्यस्य ॥ कौसुंभव
 खगुडहेमताम्रमाणिक्यगोधूमसुवर्णपद्मम् ॥ सवत्सगोदानमिति प्रणी
 तं सूर्यस्य तुष्ट्यै सुममूरिकाचं ॥ द्रव्यं संपूज्य ब्राह्मणं च संपूज्य ॥ यथा
 कामं संकल्प्य दद्यादिति सर्वत्र बोध्यं ॥ अथ दानवाक्यम् ॥ दिवाकरः
 पद्मसंस्थः मधुसूतप्राणिबोधनः ॥ दानेनानेन संतुष्टो जायतां मे किरीट
 भूत् ॥ चंद्रस्य ॥ घृतकलशंसितवस्त्रं दधिशंखं मौक्तिकं सुवर्णं च ॥
 रजतं च तंडुलान्नं तुष्ट्यै दद्याद्विधोः क्षीरम् ॥ दानवाक्यम् ॥ अमृतां
 शुः प्राणिजीवी किरीटीवरदः शशी ॥ दानेनानेन भवतु प्रसन्नो वरदो म
 म ॥ भौमस्य ॥ प्रवालगोधूममसूरिकाश्च वृषंसताम्रं करवीरपु
 ष्पम् ॥ आरक्तवस्त्रं गुडहेमधेनुं दद्याद्विधिज्ञेहि कुजस्य तुष्ट्यै ॥ दान
 वाक्यम् ॥ चतुर्भुजो मे षण्णः शूलैरक्तो वरः कुजः ॥ तुष्टो भूयात्स
 दास्माकं दानस्यास्य प्रभावतः ॥ बुधस्य ॥ नीलं वस्त्रं मुद्गदानं बुधा
 य रत्नं पाचीं दासिकं हेमसर्पिः ॥ कांस्यदंतं कुंजरस्याथ मेषोरौप्यं स
 स्यं पुष्पजात्यादिकं च ॥ दानवाक्यम् ॥ चतुर्भुजः पीतवपुः
 किरीटी चर्मासि भृङ्गधरश्च हारी ॥ पीतांबरः सोमसुतो बुधस्तु दाने
 न शान्तिं मम संप्रयच्छतु ॥ गुरोः ॥ अश्वः सुवर्णशुभपीतवस्त्रं स
 पीतधान्यं लवणं संपुष्पं ॥ सशर्करं रजनीभिश्च युक्तं दानाय चोक्तं सुरसा
 जमंत्रिणः ॥ दानवाक्यम् ॥ किरीटी पीतवदनः पीतवासाश्च
 तुर्भुजः दानेनानेन संतुष्टो भूयाद्देवपतिर्गुरुः ॥ शुक्रस्य ॥
 चित्रवस्त्रमपि दानवार्चितप्रीतये मुनिवरैः प्रणोदितम् ॥ तंडुलं घृ

तसुवर्णरूप्यकं वज्रकंपरिमलोहित्रीहयः ॥ पाठांतरेक्षयकं
 परिमलसद्वालशाविति क्षयकंयक्षकर्मंतयथा ॥ कस्तूरिका
 यादौभागौद्वौभागौकुंकुमस्यच ॥ चंदनस्यत्रयोभागाःशशिन
 स्त्वेकएवहि ॥ यक्षकर्मइत्येषसमस्तसुरवल्लभः ॥
 इति दानवाक्यम् ॥ दैत्यमंत्रीचतुर्बाहुकिरीटीशांतिदःसदा ॥
 दानेनभूयान्मंत्रज्ञोभार्गवःकविनायकः ॥ अग्नेः ॥ नीलकंमहिषी
 वस्त्रंरुष्णलोहंपयस्विनी ॥ तैलमाणकुलित्थाश्वदेयाःसौरिमुद्देसदा
 दा० वा० ॥ नीलद्युतिःशूलधरःकिरीटीगृध्रंसंस्थितः ॥ दावेन
 वरदोभूयादानेनग्रहनायकः ॥ राहोः ॥ राहोर्दानंरुष्णमेषोगोमेदं
 लोहकंबलम् ॥ सुवर्णनागरूप्यंचसतिलंताम्रभाजनम् ॥ दा०
 वा० ॥ अर्द्धकायोनीलवपुश्चंद्रादित्यविमर्दनः ॥ दानेनानेनवरदो
 भूयाच्चर्मधरस्तमः ॥ केतोः ॥ केतोर्वैदूर्यममलंतैलंमृगमदस्तथा ॥
 ऊर्णातिलैस्तुसंयुक्तं दद्यात्सर्वार्थसिद्धये ॥ दानवाक्यम् ॥ धूम्र
 वर्णोरौप्यवक्रोगृध्रस्थस्तारकाग्रहः ॥ प्रसन्नोवरदोभूयादानेनमम
 सर्वदा ॥ अथान्यच्चवारेषुदानद्रव्यम् ॥ भानुस्तांबूलदाज्ञादप
 हरतिनृणांवैकृतंवासरोत्थंसोमः श्रीखंडद्वनादवनिमुतभवोरक्तपुष्प
 प्रदानात् ॥ सौम्यःशक्रस्यमंत्रीधृतदधिपयसोभार्गवः शुभ्रवस्त्रा
 तैलाहोहाच्चसौरिस्तिलरजतसुवर्णैश्चसर्वैर्गहेन्द्राः ॥ ग्रहान्स्वर्णमंषा
 ऋत्वायोविप्रेभ्यःप्रमुञ्छति ॥ तद्दिनेषुयथाशक्त्यासर्वान्कामान्स
 विदति ॥ अथनक्षत्रदानानि ॥ अभिन्यामभ्विनाविष्टारथमभ्व
 समन्वितम् ॥ इत्वाव्याधिविनिर्मुक्तोदीर्घायुर्जायतेनरः ॥ हस्त्य
 श्वरथसंपन्नेवर्चस्वीजायतेकुले ॥ भरण्यायममभ्यर्च्यकुसुमैरसितैः

शुभैः ॥ तिलधेनुप्रदातव्यादीर्घायुत्वंप्रकांक्षिभिः ॥ कर्मणाने
नगोलोकं प्राप्नुवन्ति यशस्तथा ॥ अनलंकृतिकायां तु रक्तमालया
दिनार्चयेत् ॥ ससर्पिः प्रायसंदत्वा लोकान्प्राप्नोत्यनुत्तमान् ॥ सेहि
प्यां पितृणां पूजां कृत्वा गोजाविकुंजरान् ॥ दद्यान्माषं च मांसं च स्वर्ग
लोकसुखाप्तये ॥ मृगसोमं समभ्यर्च्य दोग्ध्रीं दत्वा सवत्सकाम् ॥
गच्छन्ति मानुषा लोकां सर्वलोकोत्तमोत्तमम् ॥ आर्द्रावांशं करं
पूज्यसितपद्मैर्यथाविधि ॥ सतिलंकृतसंदत्वा दुर्गाण्या तरते न
रः ॥ अदितविदतिपूज्यदत्वा पूषान्धृतां न्वितान् ॥ यशः
स्वीरूपसंपन्नो यज्वनां जायते कुले ॥ पुष्पैर्वृहस्पतिपूज्यदत्वा होमं
सुपुष्कलम् ॥ अनालोकेषु लोकेषु सोमवत्सविराजते ॥ अश्लेषायां
नाम पूजां कृत्वा भक्ष्याद्युपस्करैः ॥ रौप्यं च वृषभं दत्वा सर्वसौख्यमवाप्नु
यात् ॥ पैत्र्ये पितृन्समभ्यर्च्य हव्यकव्यांस्तिलांस्तथा ॥ दत्वेह पुत्रसु
खवान्जायते सचमुक्तिभाक् ॥ फाल्गुन्यां भगमभ्यर्च्य वस्त्रालंकार
भाजनान् ॥ दत्वा सौभाग्यमाप्नोति नारीवानर एव वा ॥ अर्यम्णम
र्यमेभ्यर्च्य धृतं क्षीरं च दापयेत् ॥ यद्यदिष्टतमं वस्तु तद्देयं सुखमिच्छता ॥
रवौ रविं समभ्यर्च्य दत्वा हस्तिरथं तथा ॥ वस्त्राणि च धनी भूत्वा दुर्गाण्या
तरते सदा ॥ चित्रायां चैव त्वष्टारं संपूज्य वृषभं शुभम् ॥ दत्वा राज्यानि
स्सपत्न्यभुक्त्वा स्वर्गं महीयते ॥ स्वाताविष्टं धनं दत्वा वामुं संपूज्य भक्ति
तः ॥ धनं च राज्यामतुलं प्राप्नोति विपुलं यशः ॥ इंद्राग्नीयुग्मदेवर्क्षे
भ्यर्च्य गावंपयस्विनीम् ॥ दत्वा देवान्पितृंश्चैव प्रीणयित्वा दिवं व्रजेत् ॥
मैत्रेमित्रं समभ्यर्च्य प्रवालं वस्त्रं संयुतम् ॥ दत्वा राज्या सुखं भुक्त्वा स्वर्गलो
के महीयते ॥ ज्येष्ठायां कलशान् दत्वा सवस्त्रान् हेमसंयुतान् ॥

इंद्रसंपूज्यविधिवद्गतिमिष्टामवाप्नुयात् ॥ मूलेमूलफलान्दत्वा तथा
 भक्ष्यं समांसकम् ॥ संपूज्यनिर्कृतिसम्यग्भागं मोक्षं च विंदति ॥
 तोये वरुणमभ्यर्च्य कमलैर्दधिदुग्धकम् ॥ ससुवर्णसवस्त्रं च गोलोकं
 प्राप्नुयान्नरः ॥ वैश्ये देवे वैश्वदेवं संपूज्यान्नेन सर्पिषम् ॥ क्वाणितं च प्रभूते
 ज्ञदत्वा सौख्यमवाप्नुयात् ॥ दुग्धं चाभिजिते योगे दत्वा घृतसमन्वि-
 तम् ॥ विधिं संपूज्यविधिवत्स्वर्गलोके महीयते ॥ श्रवणे कंबलं द-
 त्वा वस्त्रांतरितमेव च ॥ विष्णुं संपूज्यविधिवत्स्वर्गे वसति निर्भयः ॥
 वृषयानंधनिष्ठायां सांगं संपूज्य वासवं ॥ वस्त्राणि दत्वा विप्राय स्वर्गसौ-
 ख्यमवाप्नुयात् ॥ वरुणे वरुणं गंधमाल्यप्रभृतिभिर्नरः ॥ संपूज्या
 गरुकस्तूरीर्दत्वा वैश्वर्च्यमवाप्नुयात् ॥ पूर्वा भाद्रे राजमाषान् सर्व-
 भक्ष्ययुतान् शुभान् । दत्वा जपादं संपूज्य स्वर्गसौख्यमवाप्नु-
 यात् + अदधे मुत्तरायोगे यस्तु मांसं प्रयच्छति ॥ अहिर्बु-
 ध्यं च संपूज्य स्वर्गे याति पितृन्सह ॥ पौष्णे पूषार्चनं कृत्वा
 ददाति विविधान् पशून् ॥ कांस्योपदोहां मुद्रां च सर्वान्का-
 मान्वाप्नुयात् ॥ नक्षत्रदेवतानां च साधकानां हिताय वै । भक्त्या
 वित्तानुसारेण भवन्ति फलदाः कृताः ॥ गंतुमिच्छेद्यदान्यत्र क्रिया
 प्रारब्धमेव च ॥ नक्षत्र देवतादानं दत्वा सर्वं समाचरेत् ॥ एवं कृते
 हि तत्सर्वफलममोति मानवः ॥ अथ योगदानानि ॥ विष्कंभा-
 दिषु योगेषु घृततैलफलेक्षवः । यवगोधूमचणकनिष्पावाञ्छालि-
 तैर्दुलान् । लवणं दधि दुग्धं च वस्त्रं कनकमेव च । कंबलं गां-
 वृषं क्षेत्रमुपानयुग्ममेव च ॥ लोहं ताम्रं च कांस्यं च रौप्यं चेति
 यथाक्रमम् ॥ दत्वा स्वशक्त्या विधिवत्सर्वपापैः प्रमुच्यते ॥ न

वियोगमवाप्नोति योगदानप्रभावतः ॥ अत्रव्यतीपातवैधृत्योर्वि
 शेषः ॥ व्यतीपाते वैधृतौ च सुवर्णं गां तथैव च ॥ भूमिवासांसि
 रत्नानि शय्यान्नादीनि यानि च ॥ मुख्यानि यानि प्रोक्तानि तानि
 देयानि सर्वशः । अनामयत्वं शूरत्वं मिद्वत्वं चापि मानवाः ॥ पश्चा
 त्स्वर्गापवर्ग्यं च लभन्ते नात्र संशयः ॥ संकल्पादयस्तु पूर्वोक्ता ।
 एव ॥ तथाच ॥ गोक्षीरेणैव संपूर्णं कांस्यभाजनमुत्तमम् ॥
 स्थापयेद्देवदेवस्य स्थानं तत्रैव कल्पयेत् ॥ शंखचक्रगदापाणिं
 पद्महस्तं हिरण्यमम् ॥ वस्त्रयुग्मेन संवेष्ट्य पूजयेद्गुरुद्वयजम् ॥
 अनन्तशयनं देवमनन्तफलदं प्रभुम् ॥ लक्ष्म्या समन्वितं विष्णुं
 भक्त्या संपूजयेद्गुरुम् ॥ वैदिकैस्तात्रिकैर्मन्त्रैर्जातीपुष्पैः सम
 र्चयेत् ॥ तिलैः पूर्णं शरावं च सगुडं गुरवेर्पयेत् ॥ तथा सोप
 स्करां शय्यां मां च दद्याद्विजातये ॥ तत्र मन्त्रः ॥ व्यतीपाते
 द्रव्वमिदं तवानन्तं समर्पितम् ॥ भवत्वन्तफलदो मम जन्मनि
 जन्मनि ॥ स्वर्गापवर्गदं नृणां मनन्तफलदं शुभम् ॥ मोच
 नं किल्बिषाणां च दानमेतत्प्रकीर्तितम् ॥ अथान्यत्प्रका
 रेण योगदानानि ॥ विष्कंभादिषु योगेषु दानधर्मं महाफलम्
 तदहं संप्रवक्ष्यामि यथोक्तमृषिभिः पुरा ॥ विष्कंभे स
 र्वधान्यानां दानं सर्वाधनाशनम् ॥ प्रीतौ तथा न्नपानानामा
 युष्मति घृतस्य च ॥ कुंकुमस्य च सौभाग्ये यददानं च
 शोभने ॥ अतिगण्डे च वस्त्राणां पायसस्य सुर्कमाणि ॥ धृतौ रजत
 दानं च शूले मूलादिदानकम् ॥ गण्डे मण्डनदानं च वृद्धौ गोत
 दानमिष्यते ॥ ध्रुवे च पंचरत्नानां व्याघाते फण्डितस्य च ॥ हर्षणे

गंधदानं स्याद्वज्रे दद्यान्मर्णानपि ॥ सिद्धौसिद्धार्थका दे
 या व्यतीपाते तु कांचनम् ॥ वरीयसि तिलान्दद्याद्वज्रा
 णि परिधे तथा ॥ जलकुंभाः शिवेदेयाः सिद्धेसिद्धान्नमिष्यते
 साध्येलंकरणान्नच छत्रदानशुभेशुभम् ॥ शुक्लेचोपानहौदेयौ
 शस्त्रबह्नाणिसर्पिषा ॥ ऐन्द्रेचदीपान्दद्याद्वैधृतौकनकंहितम् ॥
 दानान्येतेषु यागेषु यथाशक्त्या विधानतः ॥ भक्तियुक्तोद्विजे
 दत्वा लोके वसति चक्रिणः ॥ अथ करणदानानि ॥ बवेपा
 यसदानंस्यात्सक्तुदानंचबालवे ॥ कौलवेगोरसान्दयात्तिलांस्त्वैति
 लनामनि ॥ गराभिधानेलवणंवणिजेदेयमंबरम् ॥ विष्टौचषट्ठिका
 न्नानिशकुनौसर्पिरेवच ॥ मधुदानंचतुष्पादेशस्तेनागेचवाससी ॥
 दानंप्रियंगोःकिंस्तुघ्नेश्वरमुक्तं द्विजोत्तमैः ॥ अथ मक्षदानानि ॥
 पुष्पाणांचसितेपक्षेदानंलक्ष्मीकरंस्मृतम् ॥ फलानांचतथादानंक
 ण्णपक्षेमहाफलम् ॥ मासदानानिपूर्वोक्तानि ॥ अथ ऋतुदानानि ॥
 स्नानानुलेपनादीनांवसन्तेदंनमिष्यते ॥ पानकानांतथाग्रीष्मेछत्रा
 णांतदनंतरे ॥ यः पुनर्विधिना भक्त्या देवीमुद्दिश्य प्रावृषि ॥ विप्रेषु विप्र
 कन्यासु तिलादीन् संपन्नच्छति ॥ तस्य सा तुष्यते देवी अचि
 रेण तु विद्यया ॥ शरयन्नस्य धर्मज्ञो वच्चाणामपि हैमजै ॥ बर्हिदानं नरः कृ
 त्वा सूर्यस्योदयनंप्रति ॥ लभतेऽन्नांशुके लोके परत्र सुखमाप्नुयात् ॥
 बर्हिदानं शीतापनुत्त्यर्थं बर्हिदानम् ॥ शिशिरे सततं वह्निं तर्पयित्वा
 तथा तिलैः ॥ कुल्माषं सघृतं दत्वा यथाशक्त्या द्विजातिषु ॥ काया
 ग्रिदीप्तिप्राकाशयं शत्रुनाशं च विदति ॥ सक्तुं सिताखंडयुतं त्रपुष्पाधार
 कान्वितम् ॥ लवणाज्ययुतं दत्वा तथा हरितकान्वितम् ॥ मध्या

ह्येप्रावृषिस्नातः सततं नरपुंगवः ॥ जलकुम्भोपरिकृतं ह्यक्षयं फलमश्नुते ॥
 कसंभोजयित्वा तु स्वशक्त्या शिशिरे द्विजान् ॥ दीप्ताग्निं त्वंसमाप्नोति
 स्वर्गलोकं च गच्छति ॥ अथ संवत्सरदानानि ॥ संवत्सरे तु दातृणां
 तिलदानं महाफलम् । परिपूर्वे तथा दानं यवानां च विशेषतः ॥ परिपूर्वे
 परिवत्सरे ॥ इडापूर्वे च वस्त्राणां धान्यानां चानुपूर्वकम् ॥ इत्पूर्वे रज
 तस्यापि दानं प्रोक्तं महाफलम् ॥ इडापूर्वे इत्यादि इडावत्सरः अनुवत्सरः
 इद्वत्सर इत्यादि ज्योतिशास्त्रे प्रसिद्धाः ॥ अथ दानार्थेतिथिवा
 रक्षयोगजपवाणि ॥ रोहिण्यां चंद्रवारे चाष्टमी योगो यदा भवे
 त् ॥ अथ वासोमसं युक्तो दानकालो विधीयते ॥ पायसं घृत
 संयुक्तं शिवप्रीत्यै प्रदापयेत् ॥ आदित्यरेव तीयोगश्चतुर्दश्यां यदा
 भवेत् ॥ अष्टम्यां च मघायोगेशिवं संपूज्य पूर्ववत् ॥ तिलाढकीं
 सुवर्णं च दद्यात् क्लेशपनुत्तये ॥ आरोग्यं जायते तस्य पुत्रबन्धुजनैः सह ॥
 अश्विनीभौमसंयोगश्चतुर्दश्यां यदा भवेत् ॥ अष्टम्यां भरणीयोगस्त
 दा संपूज्य शंकरम् ॥ रक्तोत्पलं सुवर्णं च दत्वा सौख्यमवाप्नुयात् ॥
 रोहिणीबुधसंयोगश्चतुर्दश्यां यदा भवेत् ॥ अष्टम्यां वातदादेयं सुवर्णं
 घृतपायसम् ॥ दत्वा सौख्यमवाप्नोति पुत्रदारधनादिभिः ॥ रेवतीगुरुसं
 योगश्चतुर्दश्यां यदा भवेत् ॥ अष्टम्यां तिष्यसंयोगे वाथ पूजागुरोर्मता ॥
 गावोन्नमाज्यं दुग्धं च दत्वा वाचस्पतिर्भवेत् ॥ श्रवणं भार्गवयुतं च
 तुर्दश्यां यदा भवेत् ॥ पुनर्वस्वष्टमीयोगे वाथ दद्याद्घृतं मधु ॥ ससुवर्णं ब्रा
 ह्मणाय वांछितार्थं च विंदति ॥ भरणीशनियोगस्तु चतुर्दश्यां यदा
 भवेत् ॥ आर्द्रायोगे वा अष्टम्यां शनिवारोऽथ वा भवेत् ॥ तदालोहं
 प्रदातव्यमायुरारोग्यमिच्छता ॥ एषु योगेषु दुष्टानां ग्रहाणां पूजेन च

दानेन विलयं यांति दुष्टारिष्टाग्रहोत्थिताः ॥ दुष्टस्थानस्थिता वा
पिग्रहादानार्चनादिभिः ॥ फलं शुभं प्रयच्छन्ति सर्वा वस्थासु सर्वदा ॥

इति महीधरकृते दानसंग्रहे वारनक्षत्रयोगदानकथनं नाम
द्वाविंशतितमः कोशः ॥ २२ ॥

अथ षोडशमहादानानि ॥ अथातः संप्रवक्ष्यामि महादानानि
कीर्त्तनम् ॥ दानधर्मेऽपि यत्प्रोक्तं विष्णुना प्रभुविष्णुना ॥ सर्वपाप
क्षयकरं नृणां दुःखविनाशनम् ॥ यत्तत्षोडशधा प्रोक्तं वासुदेवेन भू
तले ॥ पुण्यं पवित्रमायुष्यं सर्वपापहरं शुभम् ॥ पूजितं देवताभि
श्च ब्रह्मविष्णुशिवादिभिः ॥ आद्यं तु सर्वदानानां तुलापुरुषसंज्ञितम् ॥
हिरण्यगर्भदानं च ब्रह्मांडतदनंतरम् ॥ कल्पपादपदानं च गोसहस्रं च पं
चमम् ॥ हिरण्यं कामधेनुश्च हिरण्याश्वस्तथैव च ॥ हिरण्याश्व
रथस्तद्वज्रे महास्तिरथस्तथा ॥ पंचलांगलकंतद्वद्धरादानं तथैव च ॥
द्वादशं विश्वचक्रं च ततः कल्पलतात्मकम् ॥ सप्तसागरदानं च रत्नधेनु
स्तथैव च ॥ महाभूतघटस्तद्वत्षोडशः परिकीर्त्तितः ॥ यस्माद्विघ्न
सहस्रेभ्यो महादानानि सर्वदा ॥ रक्षन्ति देवताः सर्वा एकैकमपि भूतले ॥
एषामन्यतमं कुर्व्याद्वासुदेवप्रसादतः ॥ न शक्यमन्यथा कर्तुम्
पिशकेण भूतले ॥ तस्मादाराध्य गोविंदमुमापतिविनायकौ ॥ महा
दानमखंकुर्व्याद्विप्रैश्चैवानुमोदितः ॥ तत्रादौ तुलापुरुषदानम् ॥
अनेन विधिनायस्तु तुलापुरुषमाचरेत् ॥ प्रतिलोकाधिपस्थाने
प्रतिमन्वंतरं वसेत् ॥ विमानेनार्कवर्णेन किंकिणीजालमालिना पू
ज्यमानोऽप्सरोभिश्च ततो विष्णुपुरं व्रजेत् ॥ कल्पकोटिशतं यावत्
स्मिद्धौ किमहीयते ॥ कर्मक्षयादिह पुनर्भुवि राजराजो भूपालमौलिम

णिरंजितपादपीठः ॥ श्रद्धान्वितोभवतियज्ञसहस्रयाजीदीप्तप्रताप
जितसर्वमहीपलोकः ॥ योदीयमानमपिपश्यतिभूतियुक्तः कां
लांतरेस्मरतिवाचयतीहलोके ॥ योवाश्रणोतिपठतीहसमानरूपः
प्राप्नोतिधामसपुरंदरदेवजुष्टमिति ॥ एवंद्रत्वासुवर्णतुल्यहत्यादिकंच
यत् ॥ पापनिहत्यपुरुषः स्वर्गलोकंसगच्छति ॥ तत्रस्थित्वाचिरंरा
जन्यदायातिमहीतले ॥ राजंराजेश्वरः श्रीमान्वीतशोकोनिरामयः ॥
रूपसौभाग्यसंपन्नो नित्यं विष्णुपरायणः ॥ पुनर्विष्णुपदंयातियत्रगत्वा
नशोचति ॥ इति सुवर्णादितुलापुरुषदानफलम् ॥ अथ कुंडमं
डपादि ॥ तच्चसुवर्णतुलायामेवावश्यकमितिहेमाद्यादयः ॥ रत्नर
जतादितुलायांतुल्यताकृतमित्युक्तं तत्रैव । होमाद्यशक्तौ तु मंडपा
दिरहितमेव कुर्यात् ॥ न तत्र मंत्रो होमो वा एवमेव प्रदीयते । इति मात्स्यो
क्तः ॥ ग्रहमंत्राद्वारापापमंत्राश्च नेत्यर्थः ॥ अथ तुलावेदिपरिमाणं
चाह तत्रैव ॥ तत्रादौ शुभोद्दिशो भागं कुंडमंडपमात्रं वा कृत्वा सप्तहस्तां
वापंचहस्तां वा तृतीयांशेन चतुर्थांशेन वा चांवेदिकत्वात् तदुपरि पूर्वपश्चि
मयोः स्तंभद्वयं निखेयम् । हेमाद्रौ मात्स्येशाकेंगुदीचंदनदेवदारुश्रीपर्णि
बिल्वप्रियकांचनोत्थम् । स्तंभद्वयं हस्तयुगावस्वातं कृत्वा दृढपंचकरो
च्छ्रितं तत् । तदंतरं हस्तचतुष्टयं स्यादथोत्तरांगं चतुरस्रमेवेति । शाको
वृक्षविशेषो महासार इति प्रसिद्धः श्रीपर्णी भद्रतरुः प्रियको जीवकः । सा
रमतेकदंबः । अंजनः कांचनतुल्यपर्णो वृक्षविशेषः । स्तंभद्वयं च चतु
रस्रीकृत्य वेदिमध्ये पूर्वपश्चिमभागयोर्निखेयम् ॥ उत्तरांगं स्तंभयोरुपरि
तिर्यक्काष्ठम् । तच्च पंचकरयोः स्तंभयोर्हस्तचतुष्टयं परिनिधेयं चतुर
स्रं । अथोत्तरांगं चतदंगमेवेति पाठे तदीयमिति स्तंभसजातीयकाष्ठमित्य

र्थः ॥ समानजातिश्चतुलावलंब्याहैमेनमध्येपुरुषेणयुक्ता दैर्घ्येणसा
 हस्तचतुष्टयंस्यात्पृथुत्वमस्याश्चदशांगुलानि ॥ सुवर्णपट्टाभरणाच
 कार्यासलोहपाशद्वयशृङ्खलाभिः युतासुवर्णेनचरत्नमालाविभूषिता
 माल्यविभूषणाढ्या ॥ समानजातिस्तोरणसमानजातिः ॥ तुलो
 च्चरांगमध्येद्वादशभिरंगुलैरधस्तादुदगग्राअवलंब्यापुरुषेणविष्णुनाशृं
 खलावलंबितयोःसुवर्णनिर्मितयोःतत्प्रतिमयोःद्वयेनयुक्तेतिज्ञेयम् ॥
 तयोर्विहिः स्थितमंगुलषट्कंविहायविज्ञेयं समतुलायाअष्टोत्तर
 शतांगुलमितत्वात् ॥ पृथुत्वंचास्यादशांगुलपरिमितेनवलयाकृ
 तिसूत्रेणसंमितंविधेयमित्यर्थः ॥ सलोहपाशद्वयशृङ्खलाभिर्युक्ता
 कार्येत्यर्थः ॥ आश्वत्थीखादिरींचापिपालाशींषुक्षजांतुवा ॥
 चतुर्हस्तप्रमाणेनसुश्लक्ष्णांसुदृढान्वाम् ॥ सुवर्तुलांसमांतद्वत्स्नि
 ग्धांछिद्रत्रयान्वितां॥मौजशिक्यद्वयोपेतां बद्धांस्तंभेतुयज्ञियेइत्या
 हनारदः ॥ चतुरस्रातुलाकार्यापादौंचापितथाविधौ ॥ चतु
 र्वर्षपिचपार्श्वेषुमानंस्याच्चतुरंगुलम् ॥ मुक्तातावत्कुटकावंतयोर्वि
 न्यसेद्बुधः ॥ चतुर्हस्ताघटतुलामध्यशृङ्खलयान्विता ॥ शिवंहस्त
 त्रयंकुर्यात्कुटकंचतुरंगुलमिति ॥ यदाहतत्रैवविश्वकर्मा ॥ विशेषदानं
 कथितंतुलादितस्मात्तुलालक्षणमुच्यतेप्राक् ॥ तुलाप्रमाणंस्मृतमं
 गुलानिदैर्घ्येगुलैःषण्णवतिप्रमाणैः ॥ प्रतिद्वयेप्यंगुलषट्कषट्कंश
 तांगुलाष्टोत्तरमंगुलानाम् ॥ स्युर्विशतिःपंचचधातुबंधाबंधेष्वधिष्ठा
 नसुरानिवेश्याः ॥ ईशःशशीमारुतरुद्रसूर्य्याःस्याद्विश्वकर्मागुरुंरुग्नि
 राग्नी ॥ प्रजापतिर्विश्वजगद्विधातापर्जन्यशंभूपितृदेवताच ॥सौम्य
 श्वभर्माभरराजअश्विनौजलेशमित्रावरुणामरुद्रणाः ॥ धनेशगंधर्व

जलेशविष्णुर्दंडेचतुर्विंशतिरेवदेवताः ॥ अत्रसौम्योबुधः ॥ स्यात्पंचविंशः पुरुषः स एकोयस्तोल्पमानस्तुल्यमहात्मा ॥ एताविधेयास्तपनीयमग्नोरत्नार्चितादैवतमूर्तयस्ताः ॥ षडंगुलः स्याच्चतुरस्रपिंडः प्रांतद्वयेविष्णुरनंतनामा ॥ पार्श्वद्वयंतच्चतुरंगुलं स्यादेवंमया तेकथितं प्रमाणम् ॥ मध्येकुटशंकुलिकांगुलानि पंचाधिकाविंशतिरेव दैर्घ्यं ॥ एकांगुलः स्याद्भवतीहपिंडस्तत्राधिदेवः किलवासुकिः स्यात् ॥ एकैकरज्जुलं भूतंगुलानि त्रिः सप्ततिपिंडगतांगुलानि ॥ तच्चेलकद्वंद्वमथांगुलानि त्रिंशत्तथा पंचदशाधिकं स्युः ॥ तद्धातुबद्धं शुभकाष्टपीठं पिंडेतथा द्वंद्वमथोविधेयम् ॥ अधोघटाद्भूम्यधिदेवतास्यात्तुलांतरेभूमिपतिर्निवेश्यः ॥ इति हेमाद्रौमात्स्योक्तेः ॥ वेद्यादितुलाकृत्यलक्षणंच ॥ अथ वेद्यां षोडशशाखाचक्रलेखनप्रकारउक्तो मदनरत्ने ॥ तत्राचार्यो वेद्यां मध्ये त्रिहस्तव्यासं चतुरस्रं प्रसाध्य प्रागपरं दक्षिणोत्तरनवरेखाभिस्तच्चतुष्पष्टिकोष्ठकंकुर्यात् ॥ तत्र कोष्ठानि प्रत्येकं नवनवांगुलानि संपद्यन्ते ॥ ततो वहिरंत्यपंक्तिषु चतुर्दिक्षु मध्यकोष्ठानि चत्वारि मार्जयित्वा तदुपर्युपांत्यपंक्तिषु पार्श्वयोः त्रयं त्रयंत्यत्क्राप्रतिदिशं प्रति मध्यकोष्ठद्वयं मार्जयेत् ॥ तच्चतुर्दिक्षु षट्षट्कोष्ठानि चत्वारि द्वाराणि सिद्ध्यन्ति ॥ ततो मध्यस्थितषोडशकोष्ठानि मार्जयेत् ॥ ततो बाह्ये एकैकं कोणकोष्ठं विहाय कोणकोष्ठद्वारपीठांतरालवर्तीन्यवशिष्टानि पंचपंचकोष्ठानि मार्जयेत् ॥ तथा च मध्यचतुरस्रपीठादाः सिद्ध्यन्ति ॥ ततो मध्याच्चत्वारिवृत्तानि कुर्यात् ॥ तत्राद्ये चत्वार्यंगुलानि व्यासः द्वितीयेऽष्टौ तृतीयचतुर्विंशतिः चतुर्थे षड्विंशतिरिति ॥ तच्चतुरंगुलं वृत्तं कर्णिकारूपपीतेन रजसा पूरयित्वा कर्णिकावधिरेखांसितेन रजसानिर्मायतद्वहिर

षांगुलात्मके वृत्ते पीतरक्तसितरजोभिः संपादितमूलमध्याग्राणि षोड-
 शकेसराणिसंपाद्य तत्केसरावधिरेखांसितेनैवरजसांगुलोन्नतांसंपा-
 द्य चतुर्विंशांगुलात्मके तद्बहिर्वृत्ते रजसाष्टदिक्ष्वष्टौपत्राणिरक्ताग्राणि
 कुर्यात् ॥ ततोदलांतररेखांसितेन रजसाविधाय दलांतराणि कृष्णे-
 न रजसा पूरयित्वा तद्बहिरेकांगुलांतरांबहिर्वृत्ते रेखांसितेनैवरजसासंपा-
 द्य वृत्तद्वयांतरं परितोष्टदलाय तंतन्मध्यं चिन्हैः षोडशधा विभज्य प्रति-
 भागं यवाकारान् षोडशारान् श्यामपीतारुणश्चेतरजोभिः कल्पयि-
 त्वा तदंतरेण यथायोगं रजोभिः पूरयित्वा तद्बहिः सितपीतारुणश्याम-
 हरिताः पंचरेखालिखेत् ॥ तद्बहिः पीठे क्षेत्रं चतुरस्रं यथाशोभं र-
 जोभिः रक्तं कृत्वा पीठावधिरेखांसितेन रजसा चतुरस्रं रचयेत् ॥
 द्वारक्षेत्राणि पूर्वोदितः पीतश्यामसितहरितरजोभिः पूरयेत् ॥ आग्नेया-
 दिकोणकोष्ठं चतुष्टयं लोहितहरितश्यामधवलैः पूरयेत् ॥ आग्नेया-
 दिपीठपादचतुष्टयं पंचकोष्ठात्मकं तु क्रमात् सितरक्तपीतकृष्णरजोभिः
 पूरयेत् ॥ ततः सितेन रजसांगुलोन्नतेन बहिश्चतुरस्रे रेखांकुर्यादिति ग-
 दनरत्नादयः ॥ ठकुरमते तु ॥ चतुरस्रं चतुर्हस्तम् ॥ तत्र प्रत्येकं
 द्वादशांगुलानि नवकोष्ठानि । वृत्तानि तु पंच । तत्राद्यवृत्ते चत्वार्यंगुलानि
 व्यासः द्वितीये षष्ठौ तृतीये विंशतिः चतुर्थे चतुर्विंशतिः पंचमे चतुरस्रं
 बहिस्ततोष्टत्रिंशदिति पंचकोष्ठात्मकं पीठपादचतुष्टयम् ॥ आग्नेयादि-
 क्रमेण रक्तहरितश्यामसितैः पूरणीयम् ॥ कोणकोष्ठचतुष्टयं प्रत्येकं त्रि-
 भिस्त्रिभिर्वर्णैरिति विशेषः । इदमेव वारुणं मंडलं जलाशयोत्सर्गादौ ज्ञेयम् ।
 ॥ पुनस्तत्रैव ॥ वज्रं प्रागुक्तमेभागे आग्नेय्यांशं किमुज्ज्वलां ॥ आलिखे-
 दक्षिणे दंडं नैऋत्यां खड्गं मालिखेत् ॥ पाशं तु वारुणं लेख्यं ध्वजं वैवायु-

गोचरे ॥ कौवेर्यातुगदालिख्यईशान्यांशूलमालिखेत् ॥ शूलस्यवा
मदेशेतुचक्रंपञ्चदक्षिणे ॥ ततोमहावेद्युपरिपञ्चवर्णफलपुष्पोप
शोभितं वितानंकुंडमंडपेवधीयादिति ॥ ॥ इतिवेद्युपरिषोडशारचक्र
म् ॥ अथ घृतादितुलाफलमुक्तं हेमाद्रौ विष्णुधर्मोत्तरे ॥
प्रथमातुघृतस्त्रोक्तातेजोवृद्धिकरीशुभा ॥ माक्षिकेणतुसौभाग्यंतैलेन
बहुलाः प्रजाः ॥ वस्त्रेण दिव्यवस्त्राणि प्रामोति तुलया ध्रुवम् ॥ लवणेन तु
लावण्यमरोगित्वंगुडेन च ॥ असपत्नः शर्करया सुरुपंचंदनेन तु ॥ अवि
योगो भवेद्भर्त्रा तुलया कुंकुमस्य च ॥ न संतापो हृदि भवेत् क्षीरस्य तुलया
तथा ॥ सर्वकामप्रदाः सर्वाः सर्वपापक्षयंकराः ॥ यः करोति तुलाः स
र्वाः सगौर्यालयमामुयात् ॥ मंत्रेण दद्यादभि मंत्रितां तु सकृत् तुलामेक
तमां द्विजेभ्यः ॥ सयाति गौर्याः सदने सपुण्यं न शोकदौर्भाग्यमुपाश्रुते पुमा
न ॥ त्वंतुले सर्वभूतानां प्रमाणमिह कीर्तिता ॥ मांतो लयंती संसारा
दुद्धरस्वनमोस्तुते ॥ इत्यारुह्य ॥ गोदोहकालं तत्रैव चिंत
यित्वा हरिप्रियाम् ॥ अवरुह्य ततो दद्यादध्वं पाद्यमथापि वा ॥ गुरुं
संपूज्य विधिवद्वस्त्रालंकारभूषणैः ॥ विसर्जयेन्नमस्कृत्य भोजयेद्वि
जपुंगवान् ॥ शेषं द्विजेभ्यो दातव्यं स्त्रीभ्यो न्येभ्यस्तथैव च ॥ कद
लीदलसंस्था च पंचपिंडाहिमाद्रिजा ॥ कर्पूरस्य तुलां चार्च्यं कुंकुमे
मालभेतताम् ॥ विधिनानेन यो दद्यात्तुलादानं विमत्सरः ॥ स लोकमे
ति पार्वत्याः सेव्यमानोऽप्सरोगणैः ॥ तत्रापि कालं रुचिरमिह लोके नृ
पो भवेत् ॥ आत्मतुल्यं सुवर्णं वारजतं रत्नमेव वा ॥ यो ददाति द्विजाग्रेभ्यः
स ह्येतद्विफलं भवेत् ॥ एतद्भूमिदानजन्यं ब्रह्महत्यादिपापाद्यैर्मुक्तः शि
वपुरं व्रजेत् स च यत्पापनिर्मुक्तः प्रोक्तं विष्णुपुरं व्रजेत् ॥ तुलापुरुषभूमिं

चदीयमानेतुयेनराः ॥ पश्यंतितेपिवायांतिथेवास्यरनुमोदकाः ॥ गुडंवा
 यदिवाखंडंलवणंवापितोलितम् ॥ योदद्यादात्मनातुल्यंनारीवापुरु
 षोपिवा ॥ पुमान्प्रद्युम्नवत्स्यात्तुनारीस्यात्पार्वतीसमा ॥ सुभगौरूपसंप
 न्नौभुंजीतांतेत्रिविष्टपम् ॥ हिरण्यदक्षिणायुक्तंसवस्त्रंभूषणान्वितम् ॥
 अलंकृतत्वाद्विजाय्यंतंपरिधाय्यचवाससी ॥ खंडादितोलितंपश्चाद्गुरवे
 प्रतिपादयेत् ॥ सर्वकामसमृद्धात्मानंतंकालंवसेद्वितीति ॥ इति
 घृतादितुलादानफलम् ॥ अथनानारोगनिरासार्थद्रव्यविशेष
 तुलादानान्युक्तानि ॥ तुलापुरुषदानंतुशृणुमृत्युंजयोद्भवम् ॥
 अथलोहंप्रदातव्यंसर्वरोगोपशांतये ॥ कांस्यंचयक्ष्मणेदेयंत्रपुचा
 शौंविकारके ॥ अपस्मारेतुसीसंस्यात्ताम्रंकुष्ठेचदारुणे ॥ पित्त
 लंरक्तपित्तेचरूप्यंप्रदरमेहयोः ॥ सुवर्णंसर्वरोगेषुप्रदद्यान्मृत्युनाश
 नम् ॥ फलोद्भवंतथादेयं ग्राहिण्यांदीर्घवाहिने ॥ गौडंभस्मकरोगेचपौगं
 स्याद्गंडमालके ॥ पौगपूंगीफलम् ॥ काष्ठजंचाग्निमांसेस्याद्रोगोत्पत्तौ
 तुषैष्टकम् ॥ मधूद्भवंतथादेयंकामसश्वासजलोदरे ॥ घृतोद्भवंतथादेयंछ
 दिरोगोपशांतये ॥ क्षीरंपित्तविनाशायदधिस्याद्भगदारणे ॥ लवणं
 वेपनाशायपौष्टंद्रुविनाशने ॥ धान्यंचसर्वरोगस्यनाशनेमुनिभिः
 स्मृतमिति ॥ अत्रायंसंक्षेपोदानोद्योतेपि ॥ रूप्यतुलायांसुवर्णतु
 लाफलमेवपितृतृप्तिःप्रदरमेहनाशश्च ॥ रत्नतुलायांस्वर्णतुलाफल
 मेव ॥ ताम्रेणकुष्ठनाशः ॥ घृतेनतेजोवृद्धिःछर्दिनाशश्च ॥ गुडे
 नारोगित्वंसौभाग्यवृद्धिश्च ॥ लवणेनलावण्यंसौभाग्यंच ॥ मधु
 नासौभाग्यंकामसश्वासजलोदरनाशश्च ॥ तैलेनप्रजावान्भव
 ति ॥ क्षीरेणपित्तनाशःसंतापनिवृत्तिश्च ॥ दध्नाभगंदरनाशःशर्कर

यासपत्नबाधानिवृत्तिः ॥ अन्नेनारोगित्वम् ॥ पिष्टेनदद्गुनाशः ॥ फलैः
संग्रहणीनाशः ॥ क्रमुकैर्गण्डमालानाशः मुखदुर्गन्धनाशनं दद्गुनाशश्च
क्रमुकं पूगीफलम् ॥ चन्दनेन सौन्दर्यवान् ॥ गन्धेन सौभाग्यम् ॥
वस्त्रेण दिव्यवस्त्रावाप्तिः ॥ काष्ठैरग्निमांघनाशः । विष्णुप्रीतिर्वास
र्वद्रव्यैरपीति ॥ ॥ इति नानारोगनिरासद्रव्यविशेषतुलाः ॥
अथ पूजार्थं तत्र द्रव्याधिदेवतामाह ॥ अधिदेवं तु लोहे वै महाभैर
व उच्यते ॥ कांस्ये त्रपुण्यश्विनौ च वायुर्वै सीसके स्मृतः । ताम्रे सूर्यस्त
था प्रोक्तः पैतले च कुहूस्तथा ॥ रौप्ये च पितरो ज्ञेयाः सौवर्णे सर्वदेवताः ।
फले सोमो गुडे चापस्तांबूले च विनायकः ॥ गंधर्वाः कुसुमे चैव जांगलेऽग्नि
स्तथा स्मृतः ॥ मधौ यक्षप्रयत्नेन घृतमृत्युं जयंतथा ॥ क्षीरे तारागणाः स
र्वे दग्नि सर्पाः प्रकीर्तिताः ॥ लवणे पार्वती देवी समुद्रिष्ठाधिदेवता ॥ पिष्टे प्र
जापतिर्देवो अन्ने सर्वाश्च देवताः ॥ आर्तिर्यदा स्यात्पात्राणां प्रामुष्यात्पुण्यं
देशतः नित्यं मृत्युं जयप्रप्तिर्विधिना यत्प्रदीयते । तदेव सर्वशान्त्यर्थं भवती
ति न संशयः ॥ तुलापुरुषदानेन मृत्युं जयति मानवः ॥ आगमोक्तमृत्युं
जयमंत्रेण पूजयित्वेति शेषः ॥ नाममंत्रेण वा यथाधिकारं योज्यम् ॥
इति द्रव्याधिदेवताः ॥ अथ कालविशेषः ॥ आदित्ये राहुणाग्र
स्ते सुवर्णैस्तोलयेत्तनुम् ॥ सोमग्रहेतुरौप्येण यद्वादानं यथाविधि ।
प्रवर्ग्यस्य मुखे जात उत्पन्नः पितृदेहतः ॥ सर्वपापहरं चैतद्ददामि प्री
यतां विभुः ॥ इत्युच्चार्य जलं त्वाशु निक्षिपेद्विजहस्तेके ॥ अथ
तुलापुरुषदानविधिः ॥ तुलादानं प्रवक्ष्यामि सर्वपापप्रणाशनम् ॥
यद्गौर्याचरितं पूर्वलक्ष्मीनारायणेन तु ॥ पुण्यं दिनमथासाद्य तृतीया
यां विशेषतः ॥ गोमयेनानुलिप्तायां भूमौ कृत्वा घटं शुभम् ॥ दारवं

शुभवृक्षस्य च तुर्हस्तप्रमाणतः । सुवर्णतत्र बध्नीयात्स्वशक्त्या घटितं च टे
 सौवर्णं स्थापयेत्तत्र वा सुदेवं च तुर्भुजम् ॥ शिष्यद्वयं च बध्नीयात्स्थाप
 येत्पीठकेततः ॥ तत्रारोहेत्सवस्त्रास्त्रः सर्वालंकारभूषितः ॥ अत्रीष्टदे
 वतां गृह्यस्नापयित्वा घृतादिभिः । तुलापुरुषदानस्य विधिरेषः प्रकीर्ति
 तः अत्र विधिरेषः प्रकीर्तित इत्यनेन एतावत्यत्राकृतं व्यतेत्युक्तं
 भवतीति दामोदरः ॥ नान्यदितितुलादानमधिकृत्य लिंगपुराणे ॥
 दक्षिणां च शतं सार्द्धं तदर्थं दद्यादपि दापयेत् ॥ गुरोरिति शेषः ॥ ऋत्विजां
 चैव सर्वेषां दशनिष्कान् प्रदापयेदिति ॥ तथा यजमानः अयनग्रहण
 संक्रमादिपुण्यकालमासाद्य पूर्वधूरे भक्तः आचरितप्रायश्चित्तश्च ।
 कृतनित्यक्रियो दर्भेष्वासीनो दर्भान्धारयमाणः शुचिराचम्य देशका
 लौ संकीर्त्य ममामुककामनासिद्धिद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं अमुकद्र
 व्यतुलापुरुषदानं करिष्ये इति संकल्पः ॥ तथारोगनिरासार्थं तु म
 मामुकरोगनिरासेन ममास्यशिशोर्वा मुकरोगनिरासेन क्षिप्रारोग्यासिद्धि
 द्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थमिति ॥ तथा यदा तु शिष्टाचारवशात्ताम्रा
 दितुलासु अष्टमांशं चतुर्थांशं वा सुवर्णरजतादि प्रक्षिप्यते चेत्तदा सु
 वर्णादितुलया चतुर्थांशाष्टमांशादितुला विशेषफलावाप्तिद्वारा इत्युल्ले
 खः कार्यः । तदंगतया गणपतिपूजनं पुण्यां हवाचनमाचार्यवरणमं
 गदेवतापूजनमहं करिष्ये इति संकल्प्य ॥ गणपतिसंपूज्य पुण्यां
 हं स्वस्ति ऋद्धिं श्रीकल्याणमिति शब्दपंचात्मकं बोधायनोक्तं ब्राह्मणे
 स्त्रिंश्विवाचयित्वाचार्यं वृत्वाचार्यं तुलायां गौरीविष्णवादितुलांगण ॥
 देवताश्च पूजयित्वा रोगनिरासार्थं तु महामृत्युंजयमंत्रेण प्रतिमायां मृत्युं
 जयंताम्रादितोलनीयद्रव्यादिदेवताश्च पूजयेदिति ॥ ॥ इतितुला

पुरुषदानविधौविशेषः ॥ अथ तुलादानप्रयोगः ॥ यजमानः शुचि
राचम्यप्राणानायम्यदेशकालौसंकीर्त्य एकैकमन्वंतरकालावच्छि
न्नप्रतिलोकपालस्थाननिवासपूर्वकार्कवर्णकिंकिणीजालमालिविमा
नकरणकाप्सरःपूजासहितशिवपुरगमनपूर्वककल्पकोटिशतावच्छि
न्नविष्णुपुराधिकरणकनिवासकामः सुवर्णरत्नरौप्यतुलापुरुषमहादा
नमहंकरिष्ये ॥ यद्वाब्रह्महत्यादिसकलपापक्षयद्वाराश्रीपरमेश्वर
प्रीत्यर्थं सुवर्णरत्नरौप्यतुलापुरुषमहादानं करिष्ये ॥ तत्रादौ गणपति
पूजनं पुण्याहवाचनं मातृकापूजनं नां दीश्राद्धाचार्यवरणादिकुर्यात् ॥
ताम्रद्विदुलायां तु संकल्पोत्तरंगणपतिपूजनं पूर्वोक्तं पुण्याहवाचनमात्रं
कृत्वा चार्यवृत्वा यथाविभवं वस्त्रालंकारादिभिः पूजयेत् ॥ तत आ
चार्यो गोमयोपलिप्तवेद्यादौ सर्षपविकिरणपंचगव्यप्रोक्षणे कृत्वा वेद्यां
वारुणमंडलं विलिख्य उपरिकंठमंडपे पंचवर्णावितानं फलपुष्पोपशोभि
तध्वजं बद्ध्वा वेद्यादौ घटमावध्य तत्र दक्षिणोदकशिक्ष्यां तुलां बध्नीयात्
गौरीप्रीत्यर्थं तुलायां कर्पूरकृतपंचपिंडिकारूपां गौरीं कुंकुमेनानुपूजये
त् । ततो धर्मराजसूर्याविष्णुप्रतिमां स्तिष्ठो माषमात्रमुवर्णनिर्मिता अ
ग्न्युत्तारणादिपूर्वकं संपूज्य ० इष्टदेवतां च पंचामृतेनाभिषिच्य आभ्यर्च्य
विष्णुप्रतिमां तुलामध्ये बध्वा पूर्वोक्ततोलनीयद्रव्यादिदेवतां संपूज्य तु
लायै नम इति तुलां च तुलाप्रांतकूटयोर्विष्णुमनंतं मध्यकूटे वा सुकिं
फलकद्वये भूमिं च संपूज्य रक्तवस्त्रेण तुलां संवेष्ट्य शक्तौ सत्यां तुलादंडे
सुवर्णनिर्मितां सुचतुर्विंशतिप्रतिमां सुउदकसंस्थां देवतां आवाहयेत् ॥
पूजयेच्च ॥ तदित्यम् ॥ ॐ ईशानाय नमः ईशानमावाहयामि १ एवं
सर्वत्र ॐ शशिने नमः शशिनामावाहयामि २ ॐ मारुताय ० ३ ॐ

रुद्राय० ४ ॐ सूर्याय० ५ ॐ विश्वकर्मणेनमः६ ॐ गुरवे० ७ ॐ
 अंगिरोग्रिभ्यां० ८ ॐ प्रजापतये० ९ ॐ विश्वेभ्यो देवेभ्यो० १०
 ॐ धात्रे० ११ ॐ पर्जन्यशंभुभ्यां० १२ ॐ पितृभ्यो० १३
 ॐ सौम्याय० १४ ॐ धर्माय० १५ ॐ अमरराजाय० १६
 ॐ अश्विभ्यां० १७ ॐ जलेशया० १८ ॐ मित्रावरुणभ्यां
 न० १९ ॐ मरुद्गणेभ्यो० २० ॐ धनेशाय० २१ ॐ गंधर्वाय०
 २२ ॐ जलेशाय० २३ ॐ विष्णवे० २४ इत्यावाह्यसंपूज्य
 जमानो वस्त्राभरणगंधमाल्याद्यलंकृतः कुसुमांजलिं गृहीत्वा तुलां त्रिः
 प्रदक्षिणीकृत्य प्राङ्मुख उपविश्य प्रार्थयेत् ॥ ॐ नमस्ते सर्वदेवानां श
 क्तिस्त्वं सत्यमाश्रिता ॥ साक्षिभूता जगद्धात्री निर्मिता विश्वयोनिना ॥
 एकतः सर्वसत्यानि तथा नृतशतानि च । धर्माधर्मकृतां मध्ये स्थापिता
 सि जगद्धिते ॥ त्वं तुल्ये सर्वभूतानां प्रमाणमिह कीर्तिता । मां तोलयंती
 संसारादुद्धरष्वनमोऽस्म्युक्ते ॥ योऽसौ तत्त्वाधिपो देवः पुरुषः पंचविंशकः
 स एषो विष्ठितो देवित्वायितस्मान्नमोनमः ॥ नमोनमस्ते गोविंद तुलापुरु
 षसंज्ञक ॥ त्वं हरे तारय स्वास्मान्स्मात्संसारसागरादिति पठित्वा तुलो
 परिपुष्पांजलिं क्षिपेत् ॥ पुनस्तुलां त्रिः प्रदक्षिणीकृत्य वामहस्ते ध
 र्मराजं दक्षिणे सूर्यमंके स्वाभीष्टदेवतां पंचामृताभिषिक्त्वा चिंतां चादाय
 प्राङ्मुखस्तुलायामुत्तरफलकमारुहेत् ॥ दक्षिणेन सुवर्णः स्यादुत्तरे
 ण नराधिपः ॥ नराधिप इत्युपलक्षणम् ॥ ततः आचार्यो
 दक्षिणफलके तोलनीयद्रव्यमारोपयेत् ॥ सुवर्णाद्यं वत्समधिकं
 स्यात् पुष्टिकामेन भूयिष्ठमधिकं कार्यम् ॥ ततो यजमानस्तुलाम
 ध्यदंडस्थितदृष्टिर्हरिमुखं पश्यन्मंत्रौ पठेत् ॥ ॐ नमस्ते सर्वभूतानां
 साक्षिभूते सनातनी ॥ पितामहे न देवित्वं निर्मिता परमेष्ठिना ॥

त्वयाधृतं जगत्सर्वसहस्थावरजंगमम् ॥ सर्वभूतात्मभूतस्थेनमस्ते
विश्वधारिणी इति ॥ गोदोहकालंतत्रस्थित्वा तुलामवती-
र्य तोलितद्रव्येतुलसीपत्रनिधाय देशकालौ संकीर्त्या मुककामद्वयमुक-
द्रव्यमात्मसमतोलितमाचार्यादिभ्यो न्येभ्यो ब्राह्मणेभ्यः समस्ताश्रित-
बंधुवर्गेभ्यो दीनानाथेभ्यश्च दातुमहमुत्सृजेनममेत्युत्सृज्य कृतस्यामुक-
तुलापुरुषदानकर्मणः सांगतासिद्ध्यर्थमाचार्याय इदं सुवर्णमग्निदैवत्यं
दक्षिणात्वेन तुभ्यमहं संप्रददे नममेति दद्यात् ॥ पुनः कृतस्यामुक-
तुलापुरुषदानकर्मणः सांगतासिद्ध्यर्थं नानानामगोत्रेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो
यथाशक्तिभूयसीं दक्षिणां दातुमहमुत्सृजे तथा कृतस्यामुकतुलापुरुष-
दानकर्मणः सांगतासिद्ध्यर्थं यथाशक्ति ब्राह्मणान् यथाकालं यथोप-
पन्नेनान्नेन भोजयिष्ये ॥ इति संकल्पयेत् ॥ तत आचार्यस्त्वावा-
हितदेवताः सर्वाः अर्चनपूर्वकं विसृजेत् ॥ आचार्याय तुलार्धपादं वा
प्रतिमावस्त्राभरणादिसर्वं तुभ्यमहं संप्रददे नमम इति दत्त्वा सदस्याया-
दावेतदधंदत्त्वा तुलाशेषं च सद्य एव यथोद्देशं दत्त्वा प्रमादात् कुर्वतां कर्म-
यस्य स्मृत्येति जपित्वा कर्मेश्वरार्पणं कृत्वा सुहृद्युतो भुंजीतेति ॥ केचित्तु
अत्र तुलापूजात्तरमग्निसंस्थाप्य ईशानादितुलास्थदेवताभ्यो षष्ठाष्टाज्या-
हुतयश्चेच्छंतीति ॥ तुलाप्रतिग्रहप्रायश्चित्तं वाचार्यश्चांद्रायणमेकं कु-
र्यात् प्रतिग्रहानुसारं नेत्युक्तं दानोद्योतेरहस्येषु हेमाद्रौ मात्स्ये ॥ नचिरं-
धारयेद्देहे सुवर्णं तोलितं बुधः ॥ तिष्ठेद्रयावहं यस्माच्छोकव्याधिकरं नृ-
णाम् ॥ शीघ्रं परस्वकरणाच्छ्रेयः प्राप्नोति पुष्कलमिति सुवर्णादिस-
र्वद्रव्यतुलात्वेकैमुतिकन्यायात् ॥ अत्रत्यः सुवर्णशब्दो रजतादिसर्व-
द्रव्यतुलोपलक्षको बोध्यः ॥ इति कुंडमंडपवेदिकासहिततुला

दानविधिः ॥ अथ हिरण्यगर्भदानम् ॥ अथातःसंप्रवक्ष्यामि
 महादानमनुत्तमम् ॥ हेम्राहिरण्यगर्भाख्यमहापातकनाशनम् ॥
 पुण्यंदिनमथासाद्यतुलापुरुषदानवत् ॥ ऋत्विगमंडपसंभारभूषणा
 च्छादनादिकम् ॥ कुर्घ्यादुपोषितस्तद्वल्लोकेशावाहनंविधिम् ॥
 पुण्याहवाचनंकृत्वातद्वत्कृत्वाधिवासनम् ॥ अत्रदेशकालवृद्धिश्चा
 द्दशिवादिपूजापुण्याहवाचनगुरुऋत्विगवरणमधुपर्कदानकुंडमंडपवे
 दिसंभारहोमाधिवासनादि सर्वहिरण्यगर्भादिपंचदशमहादानप्रकृति
 भूतंतुलापुरुषदानविहितंवेदितव्यम् ॥ ब्राह्मणैरानयेत्कुंडंतपनीयम
 यंशुभम् ॥ द्वासप्तत्यंगुलोच्छ्रायंहेमपंकजगर्भवत् ॥ त्रिभागही
 नविस्तारंप्रशस्तंमुरजाकृति ॥ कुंडमितिहिरण्यगर्भाख्यंपात्रं
 तपनीयमयंस्वर्णमयं हेमपंकजं अष्टदलं तदेवनाभिश्चब्दवा
 च्यम् ॥ त्रिभागहीनविस्तारमिति ॥ अष्टाचत्वारिंशदंगुलविस्ता
 रमित्यर्थः ॥ मुरजाकृतिःमृदंगाकृतिः ॥ आज्यक्षीराभिपूरितमि
 तिकचित्पाठः ॥ तत्रघृतक्षीरतुल्यपरिमाणे यद्यपिचाभिपूरितमि
 त्युच्यते तथापि यजमानप्रवेशेन यथातन्नबहिरुच्चलिततथापूरणी
 यम् ॥ दशांत्राणिसरत्नानिदात्रंसूचीतथैवच ॥ हेमनालंसपिट
 कंबहिरादित्यसंयुतम् ॥ तथैवावरणंनाभेरुपवीतंचकांचर्नम् ॥ पा
 र्श्वतःस्थापयेत्तद्वद्धेमदंडंकमंडलुम् ॥ दशांत्राणिदशखंडानि ॥ अ
 भ्राणीतिकचित्पाठः ॥ तानिकांचनानि अभ्राकारतया ॥ अभ्रंस्व
 नित्रमितिकेचित् ॥ रत्नानिपंचप्रसिद्धानि ॥ सपिटकमंजूपान्वि
 तम् ॥ बहिरिति ॥ हेमकुंडाद्वाह्यप्रदेशेपार्श्वतःस्थापयेदित्यनेन
 संबन्धः ॥ बहिरादित्यसंयुतमितिचपाठांतरम् ॥ बह्निभास्करयो

लक्षणं ब्रह्मांडदाने वक्ष्यते वह्निमप्ययसंयुतमिति तदा अप्ययः
वरुणः ॥ तल्लक्षणमपितत्रैव ॥ नाभेरावरणमिति नाभ्या
वरणार्थसौवर्णवस्त्रम् दशांत्रादीन्यपिसुवर्णमयान्येव काप्याणि ॥
पद्माकारं विधानं स्यात् समंतादंगुलाधिकम् ॥ मुक्तावलीसमो
पेतं पद्मरागदलान्वितम् ॥ तिलद्रोणोपरिगतं वेदिमध्ये ततोर्च
येत् ॥ इह खलु हिरण्यगर्भनिर्माणसुवर्णपरिमाणस्यानामान
त् ॥ यावता यजमानस्य प्रवेशधारणोपायिकं कुण्डं भवति ताव
ता घटनीयम् ॥ तच्च वेदिकामध्ये लिखितचक्रस्योपरि तिलद्रोणं नि
धाय तदुपरि संस्थाप्य पूजयेत् ॥ अथ तुलापुरुषदानं तदधिवासनदि
नादन्येद्युर्ब्राह्मणवाचनं विधाय पूर्णाहुतिप्रभृतिकर्मशेषसमाप्तिकु
र्यात् ॥ ततश्च कुंडसमीपवर्तिकलशजलैः पूर्ववदभिषेकः तदु
च्यते ॥ ततो मंगलशब्देन ब्रह्मघोषरवेण च ॥ सर्वौषधोदकस्नानस्ना
पितो वेदपुंगवैः ॥ शुक्लमाल्यांबरधरः सर्वाभरणभूषितः ॥ इम
मुच्चारयेन्मंत्रं गृहीतकुसुमांजलिः ॥ नमो हिरण्यगर्भाय हिरण्यकव
चाय च ॥ सप्तलोकसुराध्यक्षजगद्धात्रेण मोनमः ॥ भूर्लोक
प्रमुखालोकास्तव गर्भे व्यवस्थिताः ॥ ब्रह्मादयस्तथा देवानमस्ते
विश्वधारिणे ॥ नमस्ते भुवनाधारनमस्ते भुवनाश्रय ॥ नमो हिरण्यगर्भा
य गर्भेयस्य पितामहः ॥ यतस्त्वमेव भूतात्मा भूतमूर्ते व्यवस्थितः ॥ तस्मा
च्च मामुद्धरा शेषदुःखसंसारसागरात् ॥ एवमामंत्र्यतन्मध्यमाविष्या
स्त उदङ्मुखः ॥ मुष्टिभ्यां परिसंगृह्य धर्मराजं चतुर्मुखौ ॥ जानुमध्ये शिरः
कृत्वा तिष्ठेदुच्छ्रासपंचकम् ॥ धर्मराजोऽत्र सुवर्णमयः । तल्लक्षणं च
तुलापुरुषेभिहितम् ॥ चतुर्मुखोऽपि सौवर्णः ॥ तल्लक्षणं ब्रह्मांडदाने

वक्ष्यते ॥ तत्रदक्षिणमुष्टौधर्मराजःवाममुष्टौचतुर्मुख इति ॥ गर्भा
 धानंपुंसवनंसीमंतोन्नयनंतथा ॥ कुर्युर्हिरण्यगर्भस्यततस्तेद्विजपुं
 गवाः ॥ अनवलोभनमप्यत्रविज्ञेषु ॥ एतेषुगर्भाधानादिषुवक्ष्यमा
 णेषुमंत्रयुक्तमनुष्ठानमात्रमत्राचरणम् ॥ गीतमंगलघोषेणगुरुसं
 तोषयेत्ततः ॥ जातकर्म १ नामकरणम् ॥ २ निष्क्रमणम् ॥
 ३ अन्नाशनम् ॥ ४ चूडा ॥ ५ उपनयनम् ॥ ६ प्राजापत्यम् ।
 ७ ऐंद्रम् ॥ ८ आग्नेयम् ॥ ९ सौम्यम् ॥ १० इति चत्वारिणो
 दानम् ॥ ११ केशांतश्चेति ॥ १२ द्वादशपूर्वाश्वतस इत्युभयेषुषो
 ढशत्वम् ॥ सूच्यादिकंचगुरवेदत्वामंत्रमिमंजपेत् ॥ नमोहिरण्य
 गर्भायविश्वगर्भायतेनमः ॥ चराचरस्यजगतोगृहभूतायवैनमः ॥
 मंत्रोऽहंजनितःपूर्वमर्च्यधर्माद्विजोत्तमः ॥ त्वद्गर्भसंभवादेपादिव्यदे
 होभवाभ्यहम् ॥ चतुर्भिःकलशैर्भूयस्ततस्तेद्विजपुंगवाः ॥ स्नानं
 कुर्युःप्रसन्नाश्वसर्वाभिरणभूषिताः ॥ कलशैःकुंडसमीपस्थैरेवस्नानं
 कुर्युर्यजमानस्येतिशेषः ॥ देवस्यत्वेतिमंत्रेणस्थितस्यकनकासने ॥
 अद्यजातस्यतेज्ज्ञानिचाभिषेक्ष्यामहेवयम् ॥ दिव्येनानेनवपुषाचिरं
 जीवमुखीभव ॥ ततोहिरण्यगर्भतत्तेभ्योदद्याद्विचक्षणः ॥ तत्र
 दानंवाक्यप्रयोगोद्रव्यविभागश्चक्रत्विगाचार्याणांतुलापुरुषवद्वेदित
 व्यः ॥ तेपूज्याःसर्वभावेनवदेद्राचातदाज्ञया ॥ तत्रोपकरणंसर्वं
 गुरवेविनिवेदयेत् ॥ पादुकोपानहच्छत्रचामरासनभाजनम् ॥
 ग्रामंवाविषयंवापियच्चान्यदपिसंभवेत् ॥ विषयःग्रामसमूहः ॥
 अन्यत्स्नादि ॥ अत्राप्यात्मालंकारंगुरवेदद्यात् ॥ ग्रामादयश्च
 दक्षिणात्वेनैवसंबध्यते ॥ प्राकृतौयथादर्शनात् ॥ ततःपूर्ववत्पुण्या

हवाचनेकृतेदेवतापूजाविसर्जनादिविधेयम् ॥ अनेनविधिनायस्तुपु
ण्येहिविनिवेदयेत् ॥ हिरण्यगर्भदानंसब्रह्मलोकेनिधीयते ॥ पुरेषु
लोकपालानांप्रतिमन्वंतरेवसेत् ॥ कल्पकोटिशतंयावद्ब्रह्मलोकेम
हीयते ॥ इति हिरण्यगर्भदानम् ॥ अथब्रह्मांडदानम् ॥ अथ
ब्रह्मांडदानस्यविधिंवक्ष्याम्यशेषतः ॥ सर्वभोगीभवेद्येनमोक्षभाक्चैव
जायते ॥ पीठनिष्कसहस्रेणपद्मंतत्रप्रकल्पयेत् ॥ तत्रब्रह्मातत्रमध्ये
पद्मरागैरलंकृतः ॥ सावित्र्याचैवगायत्र्याऋषिभिर्मुनिभिःसह ॥
नारदाद्यैःसुतैःसर्वैरिन्द्राद्यैश्चसुरैस्तथा ॥ सौवर्णविग्रहाःसर्वेब्रह्माद्यास्त
पुरस्तराः ॥ वराहरूपोभगवान् लक्ष्म्यासहसनातनः ॥ नीलान्मर
कतांश्चैवभूषणंतस्यकारयेत् ॥ रजतस्यविशुद्धस्यदेहंरुद्रस्यकार
येत् ॥ योमौक्तिकैस्तस्यशोभांकारयेदत्रबुद्धिमान् ॥ मौक्तिकैश्चा
पिसोमस्यशोभांवल्कैर्द्वािकरैः ॥ सावित्रीगायत्र्यौतुब्रह्मणःपार्श्व
भागेस्थापनीयौ ॥ ऋषयःसप्तगौतमाद्याः ॥ सप्तर्षयस्तुजटिलाः
कमंडल्वक्षसूत्रिणः ॥ ध्याननिष्ठावशिष्टस्तुकाय्योभाग्यासमन्वि
तः ॥ मुनयोवानप्रस्थानारदाद्याइतितेषांविशेषणानि ॥ नारदस्तु
कर्पूरगौरःसाक्षसूत्रकमंडलुः ॥ इंद्रादिरूपाणितुध्यानोक्तवत् ॥
वाराहरूपंतु ॥ वाराहरूपःकार्यस्तुशेषोपरिगतःप्रभुः ॥ शेषश्चतु
र्भुजःकार्यश्चारुरूपफणान्वितः ॥ कर्त्तव्यौसीरमुसलौकरयोस्त
स्ययत्नतः ॥ सर्परूपश्चकर्त्तव्यस्तथैवराचितांजलिः ॥ तस्यपृष्ठेभ
गवान् ॥ वामेस्त्रीरूपापृथ्वी ॥ शंखकरांपद्मासनेसर्वाभरणाभूषितां
श्रियंकृत्वा ॥ रौप्यरुद्रं ॥ नवग्रहाश्चस्वस्ववर्णाःकार्याः ॥ ब्रह्मांडं
सर्वधातुभिः ॥ पीठंतुसौवर्णकुर्व्यात् ॥ पीठात्सप्तगुणंरौप्यंरौप्या

चांघ्रंतथाविधम् ॥ ताम्रात्सप्तगुणंकार्प्यंकांस्यंसर्वांगसुंदरम् ॥ त्र
 पुणःपरतःसीसंतावह्लोहंचकारयेत् ॥ सप्तद्वीपाःसमुद्राश्चसप्तैवकु
 लपर्वताः ॥ अनयासंख्ययाज्ञात्वानिपुणैःशिल्पिभिःकृताः ॥ त
 थाविधंसप्तगुणमित्यर्थः । सप्तद्वीपाइत्यादि ॥ एतेषामेकैकधातुनाए
 कैकंद्वीपंसमुद्रंकुलाचलंचरचयेदित्यर्थः ॥ यादृशानिचभूतानिराज
 तान्येवकारयेत् ॥ अरण्यानिचसत्वानिसौवर्णानिचकारयेत् ॥
 वृक्षान्वनस्पतींश्चात्रतृणवह्नीस्सवीरुधः ॥ यादृशानिजलसंभवानि ।
 पुष्पफलवंतंवृक्षाः ॥ अपुष्पाःफलिनोवनस्पतयः ॥ वीरुधोमु
 च्छगुल्मादयः ॥ सर्वप्रकल्प्यविधिवत्तीर्थेदेयंविचक्षणैः ॥ दिन
 च्छिद्रेषुसर्वेषुअयनेदक्षिणोत्तरे ॥ व्यतीपातेबहुगुणंविषुवेचविशेष
 तः ॥ बालाग्निहोत्रिणंविप्रंसुरूपंचगुणान्वितम् ॥ सपत्नीकंच
 संपूज्यभूषयित्वाविभूषणैः ॥ पुरोहितंमुख्यतमंकृत्वान्यांश्चतथार्त्वि
 जः ॥ चतुर्विंशद्गुणोपेतान्सपत्नीकाग्निमंत्रितान् ॥ अहतांबरसं
 छन्नान्स्नग्विणःसुविभूषितान् ॥ अंगुलीयकरत्नानिकर्णवेष्टांश्च
 दापयेत् ॥ एवंविधांश्चसंपूज्यतेषामग्रेस्वयंस्थितः ॥ अष्टांग
 प्रणिपातेनप्रणम्यचपुनःपुनः ॥ पुरोहितायपुरतःकृत्वावैकरसंपुटम् ॥
 यूयंवैब्राह्मणाधात्रामैत्रत्वेनानुबोधिताः ॥ सौमुख्यमत्रभवताम्भवेत्पू
 तोनरःस्वयम् ॥ भवतांप्रीतियोगेनस्वयंप्रीतःपितामहः ॥ ब्रह्मांडे
 नतुदत्तेनतोषमेतिजनार्दनः ॥ पिनाकपाणिर्भगवान्शक्रश्चत्रिदशे
 श्वरः ॥ एतेवैतोषमायांतिअनुध्याताद्विजोत्तमैः ॥ इति
 स्तुत्वागुरवेदद्यात् ॥ गुरुस्तुब्राह्मणैःसहविभागंकुर्यात् ॥ यतः ॥
 ब्रह्मांडंभूमिदानंचशाह्यंनैकेनतद्भवेत् ॥ गृह्णन्तोषमवाप्नोतिब्रह्महत्यां

नसंशयः ॥ दीयमानंचपश्यंतितेपिपूताभवन्तिहीति ॥ इति ब्रह्मांड
दानम् ॥ अथ कल्पपादप दानम् ॥ अथान्यत्संप्रवक्ष्यामिकल्प
पादपमुत्तमम् ॥ शतनिष्केणकर्त्तव्यंसर्वशाखासमन्वितम् ॥ शा
खायांविधिनाकृत्वामुक्तादामप्रलंबितम् ॥ दिव्यैर्मरुतैश्चैवचांकु
राणिप्रविन्यसेत् ॥ प्रवालंकारयेद्धीमान्प्रवालैर्द्रुमस्यच ॥ प्रवा
लावालपल्लवाइत्यर्थः ॥ फलानिपद्मरागैश्चपारिजातस्यशोभनम् ॥
मूलदंडंचनीलेनवज्जेणस्कंधमुत्तमम् ॥ वैडूर्येणद्रुमाग्रंचपुष्परागेण
मस्तकम् ॥ गोमेदकेनवैस्कंधंसूर्य्यकान्तेनवेदिकाम् ॥ चंद्रकान्तेन
वैकाग्र्यास्फाटिकेनद्रुमस्यवा ॥ वितस्तिमात्रआयामोवृक्षस्यपारि
कीर्तितः ॥ शाखाष्टकसमानंचविस्तारंचोद्धृतस्तथा ॥ तन्मूले
स्थापयेल्लिङ्गलोकपालसमावृतम् ॥ पूर्वोक्तवेदिमध्येतु मंडले
स्थाप्यपादपम् ॥ पूजयेद्देवमीशानंलोकपालांश्चयत्नतः ॥
पूर्ववज्जपहोमाद्यंतुलाभारवदाजपेत् ॥ निवेदयेद्भुमंशंभोर्ब्राह्मणाया
थवैशुभम् ॥ ब्राह्मणेभ्योथवाराजासार्वभौमोभविष्यति ॥ अत्रा
पितृद्धिश्चाद्धंशिवादिपूजागुरुकृत्विग्वरणंमधुपर्कदानंहोमवेदिकोपरि
चक्रलेखनपंचवर्णवितानपताकातोरणादितुलापुरुषदानवद्वेदितव्य
म् ॥ अथगोसहस्रदानम् ॥ गोसहस्रदानंचिकीर्षुरधिवासनदिना
त्प्राक्त्रिरात्रमेकरात्रंवाशक्तितःपयोव्रतोधिवासनदिनेशुचिर्यजमा
नोदेशकालौसंकीर्त्यममसमस्तपापक्षयोत्तरसिद्धचारणसेवितार्कवर्ण
किंकिणीजालमालिविमानारोहणोत्तरानेकमन्वंतरावच्छिन्नैर्द्रादिस
कललोकपाललोकाधिकरणकंपुत्रपौत्रसमन्वितशिवलोकगमनै
कोत्तरसंख्येयपितृवृत्तिमातामहकुलतारणकल्पशतावच्छिन्नशिवपु

रनिवासानंतरराजराजीभवनाश्वमेधशतकर्तृत्वशिवध्यानपरत्ववि
ष्णुसादृश्यापन्नयोगस्थानकसंसारमोचनकामःश्वोगोसहस्रदानंप्रति
पादयिष्ये इति संकल्पयेत् ॥ तत उपवासगुर्वादिनियोगांतं
तुलापुरुषमहादानवत्कुर्व्यात् ॥ अथाचार्यः ॥ एकंलक्षण्यंनंदि
केश्वरंवृषंसवत्सदशोत्तरगोसहस्रात्सवत्संधेनुदशकंचस्वर्णघंटास्वर्ण
पट्टकौशेयवस्त्रमाल्यहेमरत्नयुतशृंगरौप्यखुरचामरोपशोभितंसताम्र
दोहनंपादुकोपानच्छत्राद्यनेकोपस्करयुतंवेदीपरितःस्थापयेत् ॥
मंडपाद्वहिस्तुयथावकाशंगोसहस्रं वस्त्रमाल्यस्वर्णशृंगरौप्यखुराद्यैरलं
कृत्याधिवासयेत् ॥ अथासादितसगोवृषदशकमध्येचक्रोप
रिस्थापितलवणद्रोणोपरिपूर्वोक्तलक्षणंकौशेयसंवीतंनानाभरणभूषि
तंमाल्येक्षुफलसंयुक्तंनंदिकेश्वरंस्थापयेत् ॥ वेद्युपरिफलपुष्पा
दिशोभितंपंचवर्णवितानंकूटेवधीयात् ॥ ततः आचा
र्यादयः स्वस्वकुंडसन्निधौसर्वौषध्यादियुतकलशचतुष्टयस्थाप
नादियजमानाभिषेकांतंतुलादानवत्कुर्व्युः ॥ ततः शुक्ल
माल्यांबरधरःसकुसुमांजलिनासवृषगोदशकमात्रंप्रार्थयेत् ॥
तत्रमंत्रः ॥ नमोवोविश्वमूर्तिभ्योविश्वमातृभ्यएवच ॥ लोका
धिवासिनीभ्यश्चरोहिणीभ्योनमोनमः ॥ गवामंगेषुतिष्ठंतिभुवना
निचतुर्दश ॥ ब्रह्मादयस्तथादेवारोहिण्यःपांतुमातरः ॥ गावोमेअग्रतः
संतुगावोमेसंतुपृष्ठतः ॥ गावोमेहृदयेसंतुगवांमध्येवसाम्यहम् ॥
यस्मात्त्वंवृषरूपेणधर्मएवसनातनः ॥ अष्टमूर्त्तैरधिष्ठानमतःपाहिसदा
हिमाम् ॥ पुष्पांजलिनासंपूज्यवेदिपश्चिमेप्राङ्मुख उपविश्य
पूर्ववद्देशकालादिसंकीर्त्य ममसमस्तपापक्षयादिसंसारमोचन

कामद्वयमवृषामिमाःसवत्सधेनुदशकसहिताःसहस्रंगाःसांगोपांगाःअमु
 कगोत्रामुकवेदाध्यापकामुकशर्मभ्योगुर्वृत्तिगादिभ्यश्चसंप्रददे नम
 मेति गुर्वाद्विहस्तेषुजलंदद्यात् ॥ तेचदेवस्यत्वेतियजुषा
 रुद्रायगामित्युक्तापुच्छेषुप्रतिगृह्यस्वस्तीत्युक्त्वायथाशाखंकामस्तु
 तिकइदंकस्माअदादितिपठेयुः ॥ ततोयजमानःकृतस्यगोसहस्रम
 हादानकर्मणःसांगतासिद्ध्यर्थग्रामंभूमिवादत्वासुवर्णदक्षिणात्वेनतु
 भ्यमहंसंप्रददे नममेतिप्रत्येकंतेभ्योदक्षिणांदद्यात् ॥ ततःकृत
 स्यगोसहस्रदानस्यसांगतासिद्ध्यर्थनानानामगोत्रेभ्योब्रह्मणेभ्योयथा
 शक्तिभूयसींदक्षिणांदातुमहमुत्सृजेनममेतिसंकल्पयेत् ॥ तथाच
 यथाशक्तिब्राह्मणांश्चभोजयेत् ॥ ततआचार्य्यःपुण्याहवाचनाया
 वाहितदेवताःसंपूज्य उत्तिष्ठब्रह्मणस्पत इति देवान्विसृजेत् । तद्वि
 नेपयोव्रतमशक्तौयजमानोनकाशीब्रह्मचारीभवेत् ॥ ततःप्रमादा
 त्कुर्वतांकर्म०यस्यस्मृत्या० इति कर्मेश्वरार्पणंकुर्यात् ॥ एवमेवगो
 शतदानंच ॥ सहस्रस्थानेशतमुदीरयेदितिविशेषः ॥ इति गोसहस्र
 दानंगोशतदानंच ॥ अथ हिरण्यकामधेनुदानम् ॥ अथातः
 संप्रवक्ष्यामिहेमधेनुविधिक्रमात् ॥ सर्वपापप्रशमनदेशदुर्भिक्षनाश
 नम् ॥ उपसर्गविनाशंचसर्वव्याधिविनाशनम् ॥ निष्कान्तांतुसहस्रे
 णसुवर्णेनतुकारयेत् ॥ तदर्द्धेनापिवासम्यक्तदर्द्धेनवापुनः ॥
 शतेनवाप्रकर्तव्यंसर्वकार्येषुसुव्रतः ॥ शिवाग्रेकामधेनुंतुपलानां
 पंचभिःशतैः ॥ योददातिविधानेनराहुग्रस्तेदिवाकरे ॥ तेनदत्तंभ
 वेत्सर्वमाब्रह्मभुवनांतिकम् ॥ गोरूपंसखुरंदिव्यंसर्वलक्षणसंयुतम् ॥
 खुराग्रेविन्यसेद्वज्रंशृंगेवैपश्चरागकम् ॥ भ्रुवोर्मध्येन्यसेद्विव्यंमौक्ति

कंरत्नसत्तमम् ॥ वैदूर्येणस्तनान्कुर्याद्वाङ्गूलं नीलनिर्मितम् ॥ दंत
 स्थानं प्रकर्त्तव्यं सर्वरत्नविभूषितम् ॥ पशुवत्कारयित्वा तु वत्सं कुर्वा
 त्सुथो भनम् ॥ दशांशकेन कर्त्तव्यं सर्वरत्नविभूषितम् ॥ ततः पूर्वोदित
 वेदिकामध्यमंडले मुरभिसंस्थाप्य वस्त्रयुग्मेनाच्छाद्य गायत्र्या संपूज्य
 होमादि पूर्ववत् कुर्यात् ॥ शिवं संपूज्य पूर्ववत् संकल्प्य दद्यात् ॥ त्रिंश
 त्त्रिंशदक्षिणा देया ॥ ततो गोसावित्रीं पठेत् ॥ त्रिस्तप्तकुलसंयुक्तो वि
 मानैर्दिव्यवर्चसैः ॥ शिवलोकमवाप्नोति यावदिंद्राश्चतुर्दश ॥ तदंते च
 क्रवर्त्ती स्याज्ज्ञानवांस्तु शिवं व्रजेत् ॥ एतस्यास्तु प्रदाताय स्तेनदत्तं
 चराचरम् ॥ इति हिरण्यकामधेनुदानविधिः ॥ अथ हिरण्या
 श्वदानम् ॥ हिरण्याश्वप्रदानं च वदामि विजयावहम् ॥ अश्वमेधा
 युतश्रेष्ठं रहस्यं भोगमोक्षदम् ॥ शक्तितस्त्रिपलादूर्ध्वमासहस्रपलावधि
 अल्पे त्वेकाग्रिवत् कुर्वाद्धिमवाजिमखं बुधः ॥ पंचकल्याणकं सम्यक्
 रजतेन तु कारयेत् ॥ चतुर्षु पादेषु मुखे च श्वेतो हयः पंचकल्याणकः ॥ श्वेत
 स्थाने रजतेनान्यत्र सुवर्णेनेति ॥ सर्वलक्षणान्वितं सर्वायुधयुक्तं मंडप
 मध्ये संस्थाप्य उच्चैश्च श्रवस्समं ज्ञात्वा र्चयेत् ॥ मंडपतिलद्रोणीविधा
 नंतुलादानं वं ज्ञातव्यम् ॥ तस्य पूर्वदिशो भागे ब्राह्मणं वेदपारग
 म् ॥ सुरेंद्रबुद्ध्या संपूज्य पंचनिष्कं प्रदापयेत् ॥ आचार्यं संपूज्य
 घृतेन शिवं संपूज्य होमसंकल्पादि पूर्वोक्तवत् कुर्यात् ॥ श्रोत्रियादिभ्यो
 हिरण्यमाचार्यायाम्भं निवेदयेत् ॥ भूयसीं दक्षिणां च दद्याद्ब्रह्म
 णांश्च भोजयेत् ॥ इति हिरण्याश्वदानम् ॥ अथ हिरण्याश्वर
 थदानम् ॥ अथातः संप्रवक्ष्यामि महादानमनुत्तमम् ॥ पुण्यमश्व
 रथं नाम महापातकनाशनम् ॥ तत्तुल्यपुरुषदानवत् पुण्याहवाचन

लोकपालपूजनादिकंकृत्वा—कृष्णाजिनेतिलान्कृत्वाकांचनंकारये
 इथम् ॥ अष्टाश्वंचतुरश्वंचतुश्वकंसकूबरम् ॥ इंद्रनीलेनकूंभे
 नध्वंजरूपेणसंयुतम् ॥ लोकपालाष्टकोपेतंपद्मरागदलान्वितम् ॥
 रथंसुवर्णस्य ॥ तदुपरिइंद्रनीलमणिमयंकलशंसंस्थाप्य—लोकपाल
 लक्षणंतुपूर्वोक्तंज्ञेयम् ॥ चत्वारःपूर्णकलशाधान्यान्यष्टौ दशैवतु ॥
 कौशेयवस्त्रसंयुक्तमुपरिष्ठादितानकम् ॥ माल्येक्षुपलसंयुक्तंपुरुषेण
 समन्वितम् ॥ योयद्भक्तःपुमान्कुर्ष्याच्छतनाम्नाधिवासनम् ॥
 वितानंपंचवर्णम् । पुरुषइष्टदेवताकारः सौवर्णरथेस्थापनीयः । व
 स्त्रोपानत्पादुकागोमिथुनादिविभवेन सार्द्धंदद्याच्चशयनासनम् ॥
 आभारात्रिपलादूर्ध्वशक्तितःकारयेद्बुधः॥हेमसिंहयुतंच ।चक्ररक्षावु
 भौतस्यतुरगास्यावथाश्विनौ ॥ तल्लक्षणम् ॥ द्विभुजौदेवभिषजौक
 र्तव्यावश्ववाहनौ ॥ तयोरोषधयःकाय्यादिव्यादक्षिणहस्तयोः ॥
 वामयोःपुस्तकेकार्येदर्शनीयौतथाद्विजौ ॥ विधिवत्संपूज्य
 आचार्य्यंचवस्त्रालंकरादिभिःसंपूज्य पूर्वोक्तसंकल्पेनदद्यात् ॥ ततः
 पुण्यांजलिं गृहीत्वापठेत् ॥ ॐ नमोनमः पापविनाशनाय
 विश्वात्मने वेदतुरंगमाय ॥ धाम्नामधीशायभवाभवायपापौघदा
 वानलवारणाय ॥ वस्वष्टकादित्यमरुद्गणानांत्वमेवधातापरमंनिधा
 नम् ॥ यतस्ततोमेहृदयंप्रयातुधर्मैकतानत्वमघौघनाशात् ॥ सर्वे
 षामेवदानानांफलंयत्तत्प्रकीर्तितम् ॥ तत्तदामोतिविप्रेभ्योविधिना
 श्वरथंददत् ॥ अनामयंस्थानमवाप्यदेवैरलंघनीयंसुकृतंहिरण्मयैः॥
 सुवर्णतेजाःप्रविमुक्तपापोरथैश्वरन्दीव्यतिसूर्य्यलोके ॥ इति हिरण्य
 रथदानम् ॥ अथ हेमहस्तिरथदानम् ॥ अथातःसंप्रवक्ष्यामिहे

महस्तिरर्थशुभम् ॥ यस्यप्रसादाद्भवनंवैष्णवंयांतिमानवाः ॥ तत्तुपुण्य
दिनेतुलापुरुषदानविधिवत्कार्यम् ॥ विप्रवाचनलोकेशावाहनक्र
त्विङ्मंडपसंभारभूषणाच्छादनदेशकालवृद्धिश्राद्धादिसर्वकर्तव्यम् ।
तल्लक्षणम् ॥ कुर्व्यात्पुष्परथाकारंकांचनमणिमंडितम् । वलभीभिर्वि
चित्राभिश्चतुश्चक्रसमन्वितम् । लोकपालाष्टकोपेतंशिवार्कब्रह्मसंयुत
म् ॥ मध्येनारायणोपेतंलक्ष्मीपुष्टिसमन्वितम् । नारायणादिलक्षणंतु
नारायणश्चतुर्बाहुःशंखादियुतःइत्याद्यन्यत्रकृष्णाजिनेतिलद्रीणो
परिरथंतथाष्टादशधान्यानिचदीपिकोपानच्छत्रदर्पणानिसंस्थाप्य
ध्वजाग्रेगरुडंकुबेरंविनायकंचतुःकलशाष्टगोयुतंचतुर्भिर्हयैर्मातंगैर्वा
युतं पंचपलादूर्द्ध्वकृत्वाप्रदापयेत् ॥ संकल्पादिपूर्ववत् ॥ दान
मंत्रस्तु ॥ नमोनमःशंकरपद्मजार्कलोकेशविद्याधरवासुदेवैः ॥
त्वंसेव्यसेवेदपुराणयज्ञतेजोमयस्यंदनपाहिचास्मान् ॥ यत्तत्पदंगुह्य
तमंमुरारेरानंदहेतुंगुणरूपमंतः ॥ योगैःसमानसुदृशोमुनयःसमाधौप
श्यंतितत्त्वमसिनाथरथेधिरूढः ॥ यस्मात्त्वमेवभवसागरसंस्थिताना
मानंदभांडमृतमध्वरपानपात्रम् ॥ तस्मादघौघशमनेनकुरुप्रसादंचा
मीकरेभरथसाधनसंप्रदानात् ॥ इतिप्रणम्यसुवर्णदक्षिणामुपकल्प्य
भूयसीदक्षिणांदद्यात् ॥ आचार्योयजमानमभिषिच्यावाहितदेवान्
विसर्जयेत् ॥ इति हेमहस्तिरथदानम् ॥ अथपंचलांगलदानम् ॥
अथातःसंप्रवक्ष्यामिपंचलांगलमुत्तमम् ॥ दानंयेनमहापापैर्मुच्यते
तत्क्षणात्तरः ॥ पुण्यांतिथिसमासाद्ययुगादिग्रहणादिकाम् ॥ भूमिदानं
नरोदयात्पंचलांगलकान्वितम् ॥ खर्वटंखेटकंवापिश्रामंवासस्यशालि
नं ॥ निवर्त्तनंशतंवापितदूर्ध्वंवापिशक्तिः ॥ सारदारुमयान्कृत्वाहलान्पं

चविचक्षणः ॥ सर्वोपकरणैर्युक्तांस्तथान्यांश्चैवकांचनान् ॥ सर्वटादिरूपंतु सोत्सेधवप्राकारखातावृतं योजनाद्धांर्द्धविष्कुभंतदद्धेनसेटकंसुसमृद्धवसतीति ॥ सारदारुचंदनेगुदीत्यादि । उपकरणानियुगयोऽक्रफालकरज्जुप्राजनादीनि ॥ वृषांस्तुसलक्षणान्सुवर्णशृंगरौप्यपादमुक्तालांगूलरक्तकौशेयस्रग्दामचंदनयुतान् शालायामधिवासयेत् ॥ एकस्मिन्कुण्डेपर्जन्यादित्यरुद्रेभ्यःपायसचरुंनिर्वपेत् ॥ अत्रपलाशसमिधः ॥ अत्रैकंकुण्डम् ॥ आचार्यएवक्रत्विग् ॥ अन्यत् लोकेशावाहनदेशकालवृद्धिश्राद्धशिवपूजागुरुवरणमधुपर्कदानकुण्डमण्डपवेदिकावितानचक्रलेखनतोरणपताकादि तुलापुरुषविहितंगृह्यते ॥ ततः पूर्वप्रयोगेणतंप्रतिपाद्य-दानमंत्रः ॥ यस्माद्देवगणाःसर्वेस्थावराणिचराणिच ॥ धुरंधरांगेतिष्ठंतितस्माद्भक्तिःशिवेस्तुमे ॥ यस्माच्चभूमिदानस्यकलानाहंतिषोडशीम् ॥ दानान्यन्यानिमेभक्तिर्धर्मएषदृढोभवेत् ॥ इत्युच्चार्य्यसुवर्णगांचदक्षिणांप्रकल्प्यभूयसीं दक्षिणांदद्यादन्यत्सर्वपूर्ववत् ॥ इति पंचलांगलारूपमहादानम् ॥ अथ धरादानम् ॥ सुवर्णमेदिनीदानंप्रवक्ष्यामिसमासतः ॥ पूर्वोक्तदेशकालेतुकारयेन्मुनिभिःसह ॥ पूर्वोक्तकुण्डमण्डपादिलोकपालपूजनहोमादिकंविधाय सहस्रसुवर्णेनवापंचपलादूर्द्ध्वथाशक्त्याहस्तमितांचतुरस्रांसप्तद्वीपसमुद्रपर्वततीर्थयुतांमध्येमेरुशोभितानवखंडात्मिकांपृथ्वीकृत्वा सहस्रकलशार्चैःशंकरंसंपूज्यान्यत्सर्वतुलादानविधिवत्कृत्यंनिर्वर्त्तयेत् ॥ तदधस्तदद्धेनकूर्मपद्मंचकुर्प्यात् ॥ पृथ्वीतुल्यसुवर्णेनमेरुतद्विगुणेनद्वादशपर्वतान्कुर्यात् ॥ तथाच तद्दशांशेनग्रहान्पराशी

नूनक्षत्राणिद्वीपान्समुद्रान्पाताललोकसप्तकंभूर्लोकैकादिसप्तकंपरिक-
 ल्प्यअधोरेभ्यइति संपूज्य पूर्ववद्विधिनादद्यात् ॥ परमाणवो
 हियावंत्योब्रह्मांडस्यभवंतिहि ॥ तावत्कल्पसहस्राणिशिवलोके
 महीयते ॥ पितरस्तस्यनंदंतिवल्गंतिचयथासुखम् ॥ रुद्रायुर्यावदंते
 चरुद्रलोकेवसंतिच ॥ महीभुजस्तदंतेतुशिवभक्त्याभवंतिहि ॥ मो-
 क्षःप्रजायतेतेषांशिवभावानुदीक्षया ॥ इति सुवर्णपृथ्वीदानम् ॥
 अथ प्रसंगाद्वैष्णवलोकप्रदम् ॥ भुक्तिमुक्तिदंचजंबूद्वीपदानवि-
 धानंशिवोक्तम् ॥ तत्रविंशतिहस्तामितांभूमिंगोमयेनोपलिप्यसमं
 ताल्लवणेनोदधिविधायाक्षतपुष्पैःसंशोभ्यतन्मध्येधान्यभारत्रयेणमे-
 रुरुक्त्वा सुवर्णकल्पद्रुमंपूर्वेमुक्तावज्रयुतंदक्षिणेगोमेदयुतंपश्चिमे
 गारुत्मतनीलमाणियुतंतत्तरेवैडूर्यपद्मरागयुतंशुक्तिशिलातलयुतंव-
 स्त्रान्वितंसुवर्णब्रह्मणायुतम् । चतुर्दिक्षुजलकुंभान्संस्थाप्यलोकपा-
 लादीन् पूर्ववत्संपूज्यपरितःमंदरादिसप्ताचलान्सुवर्णेनविधायस-
 तद्वीपविभागंमंडलेकृत्वापूर्ववच्छेषकार्घ्यविधाय मेरुमूलेशिवंसंपू-
 ज्य होमादिकंतुपृथ्वीदानवद्बोध्यम् ॥ देवस्तथोत्तरकुरुष्वपिनित्य-
 मास्तेमत्स्यःसुरेन्द्रगणपूजितपादपद्मः ॥ रक्षत्वशेषजगतांपतिरच्युतो
 सौसंसारदुःखचलितंशरणागतंमाम् ॥ दत्वातिमात्रमधनाशनदानमा-
 त्रंप्रत्येकमेवशुभदंद्विजपुंगवानाम् ॥ भुक्त्वाशुभानिमनसेच्छतिया-
 निवासौगच्छेच्चयत्रननिवर्ततएवमर्त्यः ॥ प्रदद्याद्विजमुख्येभ्यः सुवर्णं
 चैववाससी ॥ यागोपकरणंसर्वगुरवेविनिवेदयेत् ॥ अथ
 पांडुरोगशमनार्थंपृथ्वीदानम् पलयत्रजरतेनपृथ्वींसमुद्रवेष्टि-
 तांनवरत्नयुतांवस्त्रवेष्टितांकांस्यपात्रेनिधाय—आवाहनंयथा—एह्ये

हिदेविधात्रीत्वरूपेस्मिन्सम्यगाविश ॥ सहितापर्वतद्वीपसमुद्रैः
सुमनाभव ॥ ततः षोडशोपचारैराचार्यहस्तेन तां संपूज्य— भूमिर्भू
मिमगात्मा नामातामातरमित्यपि इति मंत्रेण समिद्धोमंकुर्व्या
त् ॥ अग्रे रुत्तरतो वस्त्रवेष्टितं कुंभं संस्थाप्य पवमानेति मंत्रेण यजमानम
भिषिच्य शन्नो देवीत्यनुवाकेन शांतिं कृत्वा यथाभिलषित
मुल्लिख्याचार्यापदयात् ॥ तत्र मंत्रः ॥ धात्री धरित्री भूतानां वराहे
णोद्धृतापुरा ॥ रत्नगर्भसमुद्रैकवसना सर्वशोभना ॥ दानेनानेन सु
प्रीता पाण्डुरोगं व्यपोहतु ॥ अनेन विधिना दत्त्वा पृथ्वीदानं प्रयत्नतः ॥
यद्दानं वैकृतं मर्त्यैरंत्यजागमनेन तु ॥ तत्सर्वनाशमायाति पाण्डुरोगा
दिकं महत् ॥ शांत्यर्थं ब्राह्मणैः सार्द्धं कुर्व्यात् पुण्याहवाचनम् ॥ इति
पाण्डुरोगहरं पृथ्वीदानम् ॥ अथ विश्वचक्रदानम् ॥ शुद्धसुवर्णसहस्र
पलात्मकं भ्रमन्नेम्यष्टकावृत षोडशारं चक्रं विधाय नातिसमृद्धौ वि
शत्पलादूर्द्ध्वसहस्रपलपर्यंतं यथाशक्ति चक्रं रचयेत् ॥ तस्य कर्णिका
यां योगारूढं विष्णुमष्टदले विमलाद्यष्टशक्तियुतं— द्वितीयावरणे जल
शायिनम् ॥ अत्रिभृगुवसिष्ठब्रह्मकश्यपमत्स्यकूर्मवराहनृसिंहवा
मनश्रीरामरामकृष्णबुद्धकल्कीनितिक्रमेण विधाय— तृतीयावरणे
मातृसहितांगौरीं— चतुर्थावरणे अष्टवसून् द्वादशादित्यान् पंचमाव
रणे लोकपालान् षष्ठे दिग्गजान् वज्राद्यायुधांश्च सप्तमे वेदान्
अष्टमे पंचभूतानि यथामूर्तिचक्रमानातिरिक्तसुवर्णेन कृत्वा तत्तन्मं
त्रैः संपूज्य होमं च तेषामेवमंत्रैः कृत्वा चक्रं कृष्णाजिनतिलोपरि नि
धाय तस्य समंतदक्षिणावर्त्ते शंखरोचनाचंदनमुक्ताफलहिरण्येति पं
चमांगल्यद्रव्याणि स्थापयित्वा तद्बहिर्मंडपे समंतादष्टादशधान्यानि

लवणादिरसांश्च संस्थाप्य वस्त्रमाल्येषु पल्लवरत्नादियुतानष्टौ
 पूर्णकलशानष्टादिषु संस्थाप्यान्यदृद्धिश्चाद्धशिवादिपूजाब्राह्मणवाच
 नकुण्डहोमदेवतापूजनादिसर्वविधानंतुलापुरुषवत्संपाद्य यथाकाम
 मुल्लिख्याचार्य्यादद्यात् ॥ ततस्त्रिःप्रदक्षिणीकृत्वा पठेत् । नमो
 विश्वमयायेति विश्वचक्रात्मने नमः ॥ परमानंतरूपी त्वं पाहिसंसार
 कर्दमात् ॥ तेजोमयमिदं यस्मात्सदा पश्यंति योगिनः ॥ हृदि
 तत्त्वंगुणातीतां विश्वचक्रं न मास्यहम् ॥ वासुदेवे स्थितं चक्रं चक्रमध्ये
 च माधवः ॥ अन्योन्याधाररूपेण प्रणमामि स्थिताविह ॥ विश्वच
 क्रमिदं यस्मात्सर्वपापहरं परम् ॥ आयुधं चाधिवासस्य भवादुद्धर माम
 तः ॥ इत्यामंत्र्य च यो दद्याद् विश्वचक्रं विमत्सरः ॥ विमुक्तः सर्वपापे
 भ्यो विष्णुलोके महीयते ॥ वैकुण्ठलोकासाद्य चतुर्बाहुस्तनातनः ॥
 सेव्यतेऽप्सरसां स वै स्तिष्ठेत्कल्पशतत्रयम् ॥ यथाशक्तिसुवर्णदक्षि
 णा सहितं जलपूर्णमाचार्य्यादिभ्यः प्रतिपादनं तदनुज्ञयान्येभ्योऽपि द
 द्यात् दीनानाथ तर्पणम् ॥ स्वल्पे त्वेकाग्निविधानमृत्विगाचार्य्याणां
 विभागव्यवस्थाचेति सर्वप्रकृतिवदनुष्ठेयम् ॥ ततः पुण्याहवाचनदेव
 तापूजनविसर्जनानि कुर्ष्यादिति ॥ इति विश्वचक्रदानम् ॥ अथ
 कल्पलतादानं त्रयोदशम् ॥ अत्रापि कृत्विक् मंडपसंभारभूषणा
 च्छादनलोकेशावाहनादितुलापुरुषवत्कुर्ष्यात् । शुद्धसुवर्णस्य नाना
 पुष्पफलांशुकविद्याधरसुपर्णसहिता दशकल्पलताः कृत्वा वेदिकोप
 रिलिखितचक्रस्योपरिलोकपालानुसारिण्यः कर्त्तव्याः पूज्याश्च ॥
 यथा ॥ मध्ये ब्राह्मीकल्पलता लवणराश्युपरि ऐंद्रीपूर्वे गुडराशौ
 याम्यां यमी तंडुलोपरि आग्नेय्यामाग्नेयी सुवर्णोपरि नैऋत्यानै

ऋती धृते वारुण्यां वारुणीक्षारे वायव्ये वायवी शर्करोपरिसौम्यां
 शंखिनीनिधिसंस्थिता ईशान्यां ईशानी वृषे प्रत्येकं कल्पलता पंच
 पलादूर्ध्वमासहस्रात् यथाविभवं कर्त्तव्या । सर्वासामुपरि पंचवर्ण
 वितानकं कुर्यात् ॥ ततः सांगतायां दशधेनुर्दशकुंभांश्च वस्त्रस हि
 तान् दद्यात् ॥ होमाधिवासनादि सर्वपूर्ववत् निर्वर्त्य यथाकाममुल्लि
 ख्याचार्यादिभ्यो दद्यात् ॥ तत्रमंत्रः ॥ नमोनमः पापविनाशिनीभ्यः
 ब्रह्मांडलोकेश्वरपालनीभ्यः ॥ आशंसिताधिक्यफलप्रदाभ्यो दि
 ग्भ्यस्तथाकल्पलतावधूभ्यः ॥ इतिसकलदिगंगनाप्रदानं भवभयसू
 दनकारियः करोति ॥ अभिमतफलदेसनाकलोके वसतिपिताम
 हवत्सराणि त्रिंशत् ॥ पितृशतमवतारयेद्भवाब्धेः सचदुरितौघवि
 नाशशुद्धदेहः ॥ सुरपतिवनितासहस्रसंख्यैः परिवृतमंबुजसंसदाभिर्वं
 यः ॥ इति कल्पलतादानम् ॥ अथ सप्तसागरदानं चतुर्द
 शम् ॥ तत्रपुण्यदिनेस्वस्तिवाचनलोकेशावाहनऋत्विङ्मंडपसं
 भारभूषणाच्छादनवृद्धिश्राद्धपुण्याहवाचनादिसर्वतुलापुरुषदानवत्
 कर्त्तव्यम् ॥ प्रादेशमात्राणितथाऽरत्निमात्राणि सप्तकुंडानिस
 तपलादूर्ध्वमासहस्राद्यथाशक्तिसुवर्णेन कृत्वा कृष्णाजिने तिलोपरिस
 र्वाणि संस्थाप्यानि ॥ प्रथमं कुंडलवणेन द्वितीयं पयसा तृतीयं स
 पिषा चतुर्थं गुडेन पंचमं दध्ना षष्ठं शर्करया सप्तमं तीर्थवारिणा परि
 पूर्य क्षीरमध्ये कानं ब्राह्मणं धृते तथैव महेश्वरं गुडे भास्करं ॥ दूर्वा
 द्रंशर्करायां लक्ष्मीं जले पार्वतीं संस्थाप्य—सर्वेषां मूर्तीः सौवर्गीः सर्वेषु सर्व
 रत्नानि निधाय तुलापुरुषवत् शेषं परिकल्पयेत् ॥ त्रिःप्रदक्षि
 णानंतरं यथाकाममुल्लिख्य आचार्यादिभ्यो दद्यात् ॥ तत्रमंत्रः ॥

नमोवःसर्वसिंधूनामाधारेभ्यःसनातनाः ॥ जंतूनांप्राणदेभ्यश्चसमुद्रे
 ऋणोनमोनमः ॥ क्षीरोदकाज्यदधिमाधवलावणेशु,सौरामृ
 तेनभुवनत्रयजीवसंधान् ॥ आनंदयंतिवसुभिश्चयतोभवंतस्तस्मा
 न्ममाप्यघविनाशमलंविदद्धम् ॥ यस्मात्समस्तभुवनेषुभवंतएव
 तीर्थामरासुरसुबद्धमणिप्रतानाः ॥ पापक्षयांबरविलेपनभूषणाय
 लोकस्यविभ्रतितदस्तुममापिलक्ष्मीः ॥ ततोबथाशक्तिदक्षिणासहि
 तसंप्रदानांतेपुर्ववत् पुण्याहवाचनदेवतापूजनविसर्जनानिकुर्यात् ॥
 इतिददातिरसामरसंयुतान् सुचिरविस्मयवानिहसागरान् ॥ अमल
 कांचनवर्णमयानसौपदमुपैतिहरेरमरावृतः ॥ सकलपापविघातविरा
 जितःपितृपितामहपुत्रकलत्रकम् ॥ नरकलोकसमाकुलमप्यलंझनि
 तिसोर्पयतेशिवमंदिरम् ॥ इति सप्तसागरदानविधिः ॥ अथरत्नसंज्ञ
 कंपंचदशं महादानंविबक्ष्यते ॥ अत्रापि देशकालवृद्धिश्राद्धशि
 वादिपूजाब्राह्मणवाचनगुर्वृत्तिगवरणमधुपर्कदानकुंडमंडपवेदिकाच
 क्रलेखनवितानतोरणपताकालोकपालावाहनादिसर्वतुलापुरुषविहि
 तंबोध्यम् ॥ लवणद्रोणोपरिप्राङ्मुखीमुदक्पादांरेखाभिःसवत्सां
 गवाकृतिरचयेत् ॥ गोरूपंतु—एकाशीतिपञ्चरागेणमुखम् ॥
 शतपुष्परागेणघोणाम् ॥ हेमतिलकंललाटे ॥ मुक्ताफलशतदंशोः ॥
 भूयुगेविद्रुमशतम् ॥ शुक्तीकर्णद्वये ॥ शृंगेकांचने ॥ वज्र
 शतात्मकंशिरः ॥ गोमेदशतंघ्रीवायाम् ॥ इंद्रनीलशतंपृष्ठे ॥
 वैडूर्यशतंपार्श्वयोः ॥ स्फाटिकैरुदरम् ॥ सौगंधिकशतात्मिका
 कटिः ॥ सुरा हेममयाः ॥ मुक्तावलीपुच्छम् ॥ सूर्यकां
 तचंद्रकांतकर्पूरचंदनयुतंघ्राणम् ॥ कुंकुमानिरोमाणि ॥ रौप्य

नाभिः ॥ गारुत्मकापानम् । अन्यन्माणिक्यादीनिरत्नानिसंधिषु ॥
 एवंविधांगांपरिकल्प्य शर्कराजिह्वांगुडगोमयामाज्यगोमूत्रांस्व
 रूपतोदधिदुग्धयुतांचामरयुतपुच्छां हेमकुंडलांधान्येक्षुपादांगांगोपू
 जाविधानेनसंपूज्य गूडधेनुवदामंज्य यथाकाममुल्लिख्यगुर्वादिभ्यो
 दद्यात् ॥ मंत्रास्तु ॥ त्वासर्वदेवगणधामयतः पठंतिरुद्रेंद्रविष्णुकमलास
 नवासुदेवाः ॥ तस्मात्समस्तभुवनत्रयदेवयुक्तेमांसाहिदेविभवसागरपी
 ड्यमानम् ॥ आमंज्यचेत्थमभितः परिवृत्य भक्त्या दद्याद्दिजायगुरवेज
 लपूर्वकांताम् ॥ यः पुण्यमाप्यदिनमत्रकृतोपवासः पापैर्विमुक्ततनुरे
 तिपदंमुरारेः ॥ इति ॥ ततः सुवर्णदक्षिणांदत्वा पुण्याहवाचनदेव
 ताविसर्जनादिकंपूर्ववदेवकुर्यात् ॥ इति रत्नधेनुदानम् ॥ अथमहा
 भूतघटं षोडशं महादानम् ॥ तत्तुमहारत्नाचितं कांचनकुंभं प्रादेशा
 दांगुलशतं क्षीराज्यपूरितं कल्पवृक्षसमन्वितं कृत्वा तत्र ब्रह्मविष्णुमहे
 श्वरपृथ्वीवरुणहुताशनगणेशवेदचतुष्टयलोकपालान्सौवर्णान्कृत्वा
 तत्तन्मंत्रैः संपूज्य परितः सर्वधान्यचामरासनदर्पणपादुकोपानच्छ
 त्रदीपिकाभूषणशय्याजलपूर्णकलशाष्टकपंचवर्णवितानानिविधाय
 स्वस्तिवाचनगुर्वादिवरणपुण्याहवाचनवृद्धिश्राद्धकुंडमंडपसंभारशि
 वादिपूजालोकपालावाहनादि पूर्णाहुतिपर्यंतं कर्मशेषं समाप्य त्रिः
 प्रदक्षिणमावृत्य यथाकाममुल्लिख्यगुर्वादिभ्यो दद्यात् ॥ तत्रमंत्राः ॥
 नमोवः सर्वदेवानामाधारेभ्यश्चराचरे ॥ महाभूतादिदेवेभ्यः शांतिर
 स्तु शिवं मम ॥ यस्मान्न किंचिदप्यस्ति महाभूतैर्विनाशितम् ॥
 ब्रह्मांडे सर्वभूतेषु तस्माच्छीरक्षयास्तु मे ॥ इत्युच्चार्य महाभूतघटं यो
 विनिवेदयेत् ॥ सर्वपापविनिर्मुक्तः प्रयाति परमांगतिम् ॥ विमाने

नार्कवर्णेनपितृबंधुसमावृतः ॥ स्तूयमानोमरस्त्रीभिःपदमभ्येतिवै
ष्णवम् ॥ दानांतेसुवर्णदक्षिणामाचार्यायतदनुज्ञयाऋत्विग्भ्योपि
दानंदीनानाथकामनापूरणंचकर्त्तव्यम् ॥ अन्यद्विभागादिकंपूजादि
विसर्जनांतंतुलापुरुषदानवत्कर्त्तव्यम् ॥ इतिमहाभूतघटदानंषोड
शम् ॥ षोडशैतानियःकुर्ग्यान्महादानानिमानवः ॥ नतस्यपुनरा
वृत्तिरिहलोकेभिजायते ॥

इति महीधरकृतेदानसंग्रहेषोडशमहादानविधिर्नाम

त्रयोविंशःकोशः ॥ २३ ॥

अथातिदानानि ॥ त्रीण्युद्धरंतिदानानिगावःपृथ्वीसरस्वती ।
नरकादुद्धरंत्येवजपवापनदोहनैरिति ॥ अत्रापिगोशब्देनगुडधेन्वा
दयोदशधेनवः । तेषांतुविधानानिपूर्वोक्तानि ॥ अथ स्वरूपतोगो
दानमधिकृत्यश्वैतवर्णादिगोदानविधानसहितं कामनामु
द्दिश्यगोदानप्रकरणम् ॥ तत्रादौस्वरूपगोदानविधिः ॥ गौरेक
स्यैवदातव्याश्रोतियायकुटुंबिने ॥ साहितारयतेपूर्वान्सप्तसप्तचसप्त
चेति ॥ देवलः ॥ सुशीलालक्षणवर्तीयुवतीवत्ससंयुताम् ॥ बहुदुग्ध
वर्तीस्निग्धांधेनुंदयाद्विचक्षणे ॥ अथ गोदानप्रयोगः ॥ कर्ता
कृतनित्यक्रियःपुण्यकाले अद्येत्यादियथाशक्तियथाज्ञानंगोदानम
हंकरिष्ये इति संकल्प्यसवत्सांधेनुंद्विजंचयथाविभवंवस्त्रालंकारा
दिभिः संपूज्य गोशृंगमूलादिस्तनान्तस्थानादिषुदेवताः पूजयेत् ॥
तद्यथा ॥ शृंगमूलेब्रह्मविष्णुभ्यांनमः ब्रह्मविष्णुपूजयामि ॥
शृंगाग्रेसर्वतीर्थेभ्योनमःसर्वतीर्थानिपूजयामि ॥ एवंसर्वत्र ॥ शिरो
मध्येशिवाय ० ॥ ललाटेदेव्यैनमः ॥ नासिकायांषण्मुखाय ० ॥

नासापूटयोः कंबलाश्वतरनागाभ्यां ॥ कर्णयोरश्विभ्यां ॥ च
 क्षुषोः शशिभास्कराभ्यां ॥ दंतैषु वायवे ॥ जिह्वायां वरुणाय
 हुंकारे सरस्वत्यै ॥ गंडयोः पक्षमासाभ्यां ॥ ओष्ठयोः ॥ संध्या
 द्वयां ॥ ग्रीवायां इंद्राय ॥ कुक्षिदेशे रक्षोभ्यो ॥ उरसि सा
 ध्येभ्यो ॥ पादेषु धर्माय ॥ जंघासु अधर्माय ॥ खुरमध्ये गं
 धर्वेभ्यो ॥ खुराग्रे पद्मगेभ्यो ॥ खुरपश्चिमाग्रे अप्सरोभ्यो ॥
 पृष्ठे एकादशं रुद्रेभ्यो ॥ सर्वसंधिषु वसुभ्यो ॥ श्रोणितटे पितृ
 भ्यो ॥ लांगूले सोमाय ॥ गुह्ये आदित्यरश्मिभ्यो ॥ गोमूत्रे
 गंगायै ॥ गोमये यमुनायै ॥ क्षीरे सरस्वत्यै ॥ दध्नि नर्म
 दायै ॥ घृते अग्नये ॥ रोमस्वष्टाविंशतिकोऽटि देवताभ्यो न ॥
 उदरे पृथिव्यै ॥ पद्मे धरेषु चतुस्समुद्रेभ्यो ॥ चतुरः समुद्रान् पूजया
 मि । एता देवता अंगेषु संपूज्य ॥ अद्येत्यादि गोत्राय शर्मणे
 सुपूजिताय पृथ्वीदानसमफलप्राप्तिकामः सर्वपापक्षयकामो वि
 ष्णुप्रीतिकामो वा इमां प्रत्यक्षधेनुं सुवर्णशृंगीरौप्यखुरां ताम्रपृष्ठां घंटाग्रै
 वेयां मुक्तालांगूलां कांस्योपदोहनीं सितवस्त्रद्वयोपेतां सर्वाभरणभूषि
 तां सोपस्करां रुद्रदैवत्यां तुभ्यमहं संप्रददेनममेति तिलपात्रे घृ
 ताक्तं मोपुच्छं कृत्वा विप्रहस्ते स तिलकुशोदकं दद्यात् ॥ मंत्रस्तु ॥
 यज्ञसाधनभूताया विश्वस्याघौघनाशिनी ॥ विश्वरूपधरा देवी प्री
 यता मनया गवा ॥ ततो दाता दानप्रतिष्ठां सिद्धयर्थं सुवर्णं दक्षिणां दत्त्वा
 प्रार्थयेत् ॥ नमो गेभ्यः श्रीमतीभ्यः सौरभेयीभ्य एव च ॥ नमो ब्रह्म
 सुताभ्यश्च पवित्राभ्यो नमो नमः ॥ पूजितासि वसिष्ठे न विश्वामित्रेण धी
 मता ॥ सुरभे हरमे पापं यन्मया दुष्कृतं कृतमिति ॥ गावो ममाग्रतः

संतुगावोमेसंतुपृष्ठतः ॥ गावोमेहृदयेसंतुगवांमध्येवसाम्यहमिति
 पठित्वा—धेनुद्विजंचप्रदक्षिणीकृत्यकिंचिदनुव्रजेदिति ॥ इति गो
 दानप्रयोगः ॥ अथश्वेतादिवर्णगोदानफलम् ॥ श्वेतासु
 तप्रदाप्रोक्ताचंद्रलोकप्रदायिनी ॥ कृष्णास्वर्गप्रदाज्ञेयागौरी
 स्यात्कुलवर्द्धिनी ॥ कपिलासर्वपापघ्नानानावर्णाचमोक्षदेति ॥
 अथ समानवर्णगोवत्सदान फलम् ॥ महाभारते ॥ रोहिणीतुल्य
 वर्णांतुसवत्सांचपयस्विनीम् ॥ प्रदत्तावस्त्रसंवीतांसूर्यलोकेमही
 यते ॥ समानवत्सांकृष्णांतुधेनुंसर्वाघनाशिनीम् ॥ सुव्रतां वस्त्रसंवी
 तामस्मिल्लोकेमहीयते ॥ वातरेणुसवर्णांतुसवत्साकांस्यदोहनीम् ॥
 प्रदायवस्त्रसंवीतांवारुणलोकमश्नुते ॥ हिरण्यवर्णापिंगाक्षींसवत्सां
 दक्षिणायुताम् ॥ प्रदद्याद्वस्त्रसंवीतांकौबेरलोकमाप्नुयात् ॥ पला
 लधूम्रवर्णांतुपितृलोकेमहीयते ॥ सवत्सांपीवरांदत्ताशितिकंठामलं
 कृताम् ॥ वैश्वदेवमसंवाधंस्थानश्रेष्ठंप्रपद्यते ॥ समानवत्सांगौरीं
 तुधेनुंसर्वाघनाशिनीम् ॥ सवत्सांकांस्यदोहांतुवसूनालोकमाप्नु
 यात् ॥ वत्सोपपन्नांनीलांगीसर्वरत्नसमन्विताम् ॥ गर्धर्वाप्सरसां
 लोकान्दत्त्वाप्राप्नोतिमानवः ॥ इतिसंकल्प्यतुतत्फलंसंकीर्त्यदद्यात् ॥
 इति समानवर्णसवत्सगोदानफलम् ॥ अथ कृष्णधेनुदानम् ॥
 संकल्पादिपूर्ववत् ॥ मंत्रस्तु ॥ कृष्णधेनोमस्तुभ्यंब्रह्मविष्णु
 शिवात्मके ॥ त्रिजन्मार्जितपापानिध्रुवंदानात्प्रणाशयेति ॥ अथ
 हेमशृंगीदानम् ॥ मात्स्ये ॥ दशसौवर्णिकेशृंगेखुरांपंचपला
 न्विताः ॥ पंचाशत्पलकंकांस्यंताग्रंचापितथैवच ॥ वस्त्रंचत्रिगुणं
 धेन्वादक्षिणाचचतुर्गुणेति ॥ एवंविधिवद्दातुःफलमुक्तम् ॥ नंदिपुरा

णे ॥ विधिनातुयदादत्तापात्रेधेनुःसदक्षिणा ॥ दातुस्तारयतेजं
तून्कुलानामयुतंशतमिति ॥ महाभारतेपि ॥ प्रासादा यंत्रसौव
र्णाशशय्यारत्नोज्ज्वलास्तथा ॥ वराश्चाप्सरसोयंत्रतत्रगच्छन्तिगोप्र
दाः ॥ तथा ॥ यावन्तिरोमाणि भवन्ति तस्यास्तावन्ति वर्षाणि मही
यते सः ॥ स्वर्गाच्चयुतश्चापिततोत्रलोकेकुलेसमुत्पत्स्यतिगोमतां
सः ॥ तथा—सालंकृतांसवत्सांचधेनुंसंपूज्यभक्तितः ॥ सरत्नपूर्णा
पृथिवीतेनदत्तानसंशयंइति ॥ इति स्वरूपतोगोदानम् ॥ अथ प्रमे
हघ्नसुवर्णधेनुदानम् ॥ धेनुस्वर्णमयींकुर्यात्पूर्वेणविधिनाततः ॥
पूर्वेण पूर्वोक्तस्वर्णधेनुक्तवदिति ॥ स्वर्णशृंगीरत्नयुतांशौप्यखुरामष्ट
मांशेनवत्ससहितां गांनिर्माय सर्वलक्षणसंपन्नंब्राह्मणंवृत्वापंलाशस
मिद्धिःपूर्ववद्धोमंसमाप्यहोमांतेअद्येत्यादिममपूर्वार्जितज्ञाताज्ञातपाप
क्षयोत्तरेहप्रमेहरोगनाशनपूर्वकबलपुष्टिशरीरसौख्यप्राप्तयेइत्यादिय
थाकाममुल्लिख्यदद्यात् ॥ मंत्रः ॥ चक्रंसुदर्शनंयस्यराजंतेजस्तथै
वहि ॥ प्रमेहंहरतुक्षिप्रंविष्णुर्गरुडवाहनः ॥ दानंप्रमेहरोगघ्नमेतत्का
र्यमनीषिभिः ॥ कृतेनानेनशाम्यन्तिप्रमेहादारुणाअपि ॥ अथा
शौघसुवर्णधेनुदानम् ॥ सौवर्णींगांप्रकुर्वीतपलेनार्द्धेनवापुनः ॥
वित्तशाठ्यंनकुर्वीतकुर्वन्नैवफलंलभेत् ॥ तांतु रत्नशृंगीरौप्यखु
रांनानावस्त्रयुतांग्रहमंडपेनवधान्योपरिसंस्थाप्यपूर्ववद्धोमादिसर्ववि
धाय प्रतद्विष्णुस्तवतेतिमंत्रेणप्रधानहोमंसमिदाज्यचरुभिःकृत्वा
पूर्णाहुत्यंतंसमाप्य सलक्षणंब्राह्मणमंगुलीयकोपानच्छत्रादिभिः
संपूज्यअद्येत्यादि० ममानेकजन्मार्जितपापनिर्हारद्वारास्वकृतदुष्क
र्मजनिताशोरोगनिवृत्तिपूर्वकसुखसौभाग्यायुरारोग्याभिवृद्धयेइमां

सुवर्णधेनुंसोपस्करामित्यादि० ॥ गोविंदमनसाध्यायनृगवांमध्येस्थि
 तंशिशुम् ॥ बर्हापीडकसंयुक्तं वैष्णवादनतत्परम् ॥ गोपीजनैः परिवृतं व
 न्यपुष्पावतंसकम् ॥ मंत्रः ॥ गोविंदगोपीजनवल्लभेशकंसासु
 रंघ्नत्रिदशैर्द्रव्यं ॥ गोदानतृप्तः कुरुमेदयालोह्यशोविनाशं क्षयि
 तारिवर्गः ॥ दानेनानेननियतमर्शसां जायतेक्षयः ॥ तस्मात्कुर्व्या
 त्प्रयत्नेन सुखार्थं मामनर्शसम् ॥ अथ वंध्यात्वहरं सुवर्णधेनुदानम् ।
 चतुर्विधाचयाबंध्याभवेद्वत्सवियोजनात् ॥ वक्ष्येतस्यप्रतीकारं
 येनपुत्रवतीभवेत् ॥ पलादूर्द्धसुवर्णेन धेनुं चतुर्थांशेन वत्सकं च कृत्वा—
 धेनुंतुरौप्यखुरां रत्नपुच्छां घंटाचामरभूषितां गंधानुलेपनार्चितां पा
 यसापूपमोदकगुडलवणजीरकपूरितसूर्यमेकं धेनवो दशाष्टौ वा पुत्रवती
 भ्यस्त्रीभ्यो दद्यात् ॥ ततो ब्राह्मणं सलक्षणं वस्त्राद्यैः संपूज्य सोमो धेनु
 मिति मंत्रेण समिदाज्यचरुञ्जुहुयात् ॥ अन्यत्सर्वपूर्वोक्तसुवर्णधे
 नुवत्कर्म समाप्य अथेत्यादि० ममानेकजन्मोपार्जितवत्सवि
 योजनादिपापसंसूचितबंध्यात्वनिराकरणपूर्वकपुत्रसुखप्राप्तये इत्या
 दियथाकाममुल्लिख्य दद्यात् ॥ तत्र मंत्रः ॥ धेनुर्यागिरसः सा तु
 वसिष्ठे सुरभी च या ॥ दुहिता या तथा भानोरग्नेश्ववरुणस्य च ॥ या
 श्रवावः प्रवर्त्तते वनेषूपवनेषु च ॥ प्रीणंतु ताममसदा पुत्रपौत्रप्रदाः सु
 खम् ॥ प्रयच्छंतु दिवारात्रमविच्छेदं च संततेः ॥ ततः सुवर्णदक्षि
 णादेर्या ॥ ब्राह्मणभोजनं दीनतर्पणं च विधेयम् ॥ अथ नानागो
 दानमाहात्म्यम् ॥ सालंकारां कृष्णां गां दत्वा यमलोकं न पश्यति ॥
 तथा विधांश्चेतां दत्वा कुलोद्धारः ॥ तथैव गौरीदानेन नीलवर्णगोदाने
 न कल्पकोटिं यावद्गुरुण लोकः ॥ समानवत्साकपिलादाने ब्रह्म

लोकनिवासः ॥ समानवत्सांकृष्णादत्वाग्निं लोकः ॥ तद्वद्धूययाय
मलोकेमोदते ॥ हिरण्यवर्णादानेऽपि तु लोकः ॥ कपिलादाने दशधेनुदान
समंपुण्यम् ॥ इति नानागोदानमाहात्म्यम् ॥ अथोभयतोमु
खीगोदानम् ॥ रुक्मशृङ्गीरौप्यखुरांमुक्तालांगूलभूषिताम् ॥ कां
स्योपदोहनांशुभांसवस्त्राद्विजपुंगवे । प्रसूयमानां योदद्याद्धेनुं द्रविणसं
युताम् ॥ यावद्रसो योनिगतो यावद्रंजनमुञ्चति ॥ तावद्रौःपृथिवीज्ञेया
सशैलवनकानना ॥ देवलः ॥ अलंकृत्योक्तविधिना सुवर्णत्रिपलान्वि
ताम् ॥ देया च द्विपलामध्यापलैकादक्षिणाधमा ॥ वराहेतु ॥
सुवर्णसाहस्रं तदर्द्धार्द्धं मुख्यमुक्तम् ॥ सुवर्णस्य सहस्रेण तदर्द्धेनापि
वा पुनः ॥ तस्याप्यर्धशतं वापि पञ्चाशच्चततोर्धकम् ॥ यथाशक्त्यापि दा
तव्या वित्तशाल्यविवर्जितेति ॥ उभयतोमुखीं स्वर्णनिष्केण दत्त्वा स
द्यः शुद्धयेत्पातकेभ्यश्च मर्त्यः इति सुवर्णनिष्कदक्षिणायुतेनापि
अत्र निष्कचत्वारिंशन्माषक एव ग्राह्यः ॥ अत्यंशकौ विंशतिमाष
कं वा दद्यादित्यर्थः ॥ अथ दानप्रयोगः ॥ शुचिरयेत्यादि ० उभ
यतोमुखीदावं कर्तुं गोब्राह्मणपूजां करिष्ये ॥ इति संकल्पः ॥ द्विजं
कुटुंबिनंदरिद्रं वेदपारगं सुशीलं वृत्त्वा यथाविभववस्त्रालंकारादिभिः त
थागामपिसंपूज्य—ॐ त्वं महीमवनि विश्वधेनां तुर्वीतयेष्याय क्षरंतीम् ।
अरं मयो नमसैज दर्णः सुतरणां ॥ अमुकशाखाध्यायिने इमं धेनुं सोपस्क
रामुभयेतोमुखीं समुद्रशैलवनोपेतपृथ्वीदानसमफलावाप्तये धेनुवत्सरो
मसंख्याकयुगदेवलोकमहिमत्त्वपितृपितामहप्रपितामहकुलशतनरको
त्तारणपूर्वकं घृतक्षीरबहुकुल्याकदधिपायसकर्दमदेशाधिकारणकोत्त
रकेप्सितकामो ब्रह्मलोकावाप्तिकामो रुद्रदैवत्यामिमांस्तुभ्यमहं संप्रददेन

ममेतिसधृततिलपूर्णकांस्यपात्रयुतगोपुच्छंतद्वस्तेसकुशजलंदत्वा प्रा
 र्थयेत् ॥ मंत्रस्तु ॥ इमांगृहाणोभयमुखीभवात्राताममास्तु
 वै।ममवंशविशुद्धेश्वसदास्वस्तिकरो भवेत्।विप्रोदेवस्यत्वेतिप्रतिगृह्य
 स्तस्तीत्युक्तायथाशाखंकामस्तुतिपठेत् ॥ ततःसुवर्णसहस्रमां
 राज्यपंचविंशतिचतुर्द्विंशतिसुवर्णमितांदक्षिणांदद्यात् ततो नन्यू
 ना मिति।ततो विप्रस्तु ॐ इरावतीधेनुमतीहिभूतंसूयवसिनीमनुषेदश
 स्या ॥ व्यस्कंभारोदसीविष्णवेतेदाध्वर्थपृथिवीमभितोमयूखैः ।
 ॐस्योनापृथिविभवानृक्षरानिवेशनी ॥ यच्छानःशर्मस
 प्रथाः ॥ इति मंत्रद्वयंपठित्वावदेत् ॥ प्रतिगृह्णन्त्विमां
 धेनुंकुटुंबार्थेविशेषतः ॥ स्वस्तिभवतुमेनित्यंरुद्रमातर्नमोस्तु
 ते ॥ इति ॥ नत्वा गृहीतायाःदक्षिणेनपाणिना ॐगर्भे
 नुसन्तन्वेषामवेदमहंदेवानांजनिमानिविश्वाशतंमापुर ॥ आय
 सीररक्षन्नघश्येनोजवसानीरदीयमितिमंत्रेणवत्समाकृष्येत् ॥ नि
 ष्कासितेसतिकृत्यांतरमाह ॥ ततोयजमानःप्राणानायम्यअद्येत्या
 दि० कृतस्योभयतोमुखीदानकर्मणःसांगतासिद्धयर्थदेवादिमंत्रैस्त
 र्पणहोमंचकरिष्ये ॥ इतिसंकल्प्य ॥ स्थंडिलेभिप्रतिष्ठाप्यान्वाद
 ध्यात् अस्मिन्नन्वाहितेग्रावित्यादिचक्षुषी आज्येन्येत्यंतमु
 क्त्वाऽत्रप्रधानंपृथिवीत्रिगौरिंसकृदाज्येनप्रजापतिंचतुरश्रत्याज्येनशो
 षेणस्विष्टकृतमित्यादिसद्योयक्ष्ये इत्यंतमुक्त्वासमिद्वयमग्नावाधा
 यइध्मार्वाहिषीपरिसन्नह्यपरिसमूहनादिचक्षुष्यंतंकृत्वाकुशांस्तृतभू
 मौअग्नेःपश्चादेव साक्षताभिरद्भिर्वक्ष्यमाणमंत्रैर्देवादींस्तर्पयेत् ॥
 तेचमंत्राः ॥ ॐयेदेवासोदिव्येकादशस्थपृथिव्यामध्येकादशस्थ ॥ अ

पुष्कितोमहिर्नैकादशस्थतेदेवासोयज्ञमिमंजुषध्वं ॥ देवांस्तर्पयामि ॥
 ॐ उशंतस्त्वानिधीमह्युशंतःसमिधीमहि ॥ उशन्नशतआवहपितृ
 न्हविषेअत्तवेपितृन्स्तर्पयामि ॥ ॐ इमंमेगंगेयमुनेसरस्वतिशुतुद्रिस्तो
 मंसचतापरुण्या ॥ असिक्कयामरुद्धोवितस्तयार्ज्जिकियेशृणुह्यासु
 षोमया ॥ सरितस्तर्पयामि ॥ ॐ अद्रिभिःसुतोमतिभिश्चनोहितः
 प्ररोचयन्नरोदसीमातराशुचिः ॥ रोमाण्यव्यासमयाविधावतिमधो
 धारापिन्वमानादिवेदिवे ॥ पर्वतांस्तर्पयामि ॥ ॐ वनस्पतेशतवल्शो
 विरोहसहस्रवल्शाविवयरुहेम ॥ यंत्वामयंस्वधितस्तेजमानःप्रणिना
 यमहतेसौभगायवनस्पतीन्स्तर्पयामि ॥ ॐ समुद्रज्येष्ठाःसलिलस्यम
 ध्यात्पुनानायंत्यन्वीयमानाः ॥ इंद्रोयावज्जीवृषभोररादस्ताआपोदेवी
 रिहमामवंतु ॥ समुद्रांस्तर्पयामि ॥ ॐ अहिरिवभोगैःपर्येतिबाहुं
 ज्यायाहेतिपरिबाधमानः ॥ हस्तघ्नोविश्वावयुनानिविद्वान् पुमान्पुमा
 संपरिपातुविश्वतः ॥ नागांस्तर्पयामि ॥ ॐ मधुवाताःक्रतायतेमधुक्षरंति
 सिंधवः ॥ माध्वीर्नस्संतवीषधीस्तर्पयामित्यष्टाभिस्तर्पयित्वाचतस्रआ
 ज्याहुतीर्जुहुयात् ॥ ॐ इंद्रेद्यावापृथिवीपूर्वचित्तयोर्निधर्मसुरुचंयाम
 न्निष्टये ॥ याभिर्भरेकारमंशयाजिन्वधस्ताभिरुषुऊतिभिरश्विनागतं
 स्वाहापृथिव्याइदंनमम ॥ ॐ महीधौःपृथ्वीचनइमंयज्ञमिमिक्षतां । पि
 पृतान्नोभरीमभिः स्वाहा पृथिव्याइदंनमम २ ॐ उर्वीपृथ्वीबहुलेदूरेअं
 तेउपज्जुवेनमसायज्ञेअस्मिन् । दधातेयेसुभगेसुप्रतूर्तीद्यावारक्षतंपृथिवी
 नोअभ्वात्स्वाहापृथिव्याइदंनमम ३ ॐ गौरीमिमायसलिलानितक्षत्प्रे
 कपदीद्विपदी साचतुष्पदी ॥ अष्टापदीनवपदीबभूवुषी सहस्रा
 क्षरापरमोव्योमन्त्स्वाहागौघ्यइदंनमम ४ इति चतस्रआज्याहुतीर्हु

त्वासुमस्तव्याहृतिभिश्चतुरशीत्याज्याहुतीहुत्वाप्रजापतयेद्दंनममे
 तित्यजेत् ॥ ततःस्विष्टकृदादिहोमशेषंसमाप्यभूयसीदक्षिणां दत्त्वा
 गामनुव्रज्यगोमतीं जपेत् ॥ यथा ॥ गावो मामुपतिष्ठंतु हेमशृंग्यः पयो
 मुचः ॥ सुरभ्यः सौरभेयाश्च सरितः सागरा यथा ॥ गावः पश्याम्यहं नित्यं
 गावः पश्यंतु मांसदा ॥ गावोस्माकं वयं तासां यतो गावस्ततो वयम् ॥ घृत
 क्षीरप्रदा गावो घृतयो न्यो घृतावहाः । घृतनद्यो घृतावतास्तामे संतु सदा गृ
 हे ॥ घृतं मे हृदये नित्यं घृतं नाभ्यां प्रतिष्ठितम् ॥ घृतं मे सर्वतश्चैव घृतमध्ये
 वसाम्यहम् ॥ गावो मे अग्रतः संतु गावो मे संतु पृष्ठतः ॥ गावो मे हृदये संतु
 गावां मध्ये वसाम्यहम् ॥ गावः सुरभ्यो नित्यं गावो गुग्गुलुसन्निभाः ॥
 गावः प्रतिष्ठाभूतानां गावः स्वस्त्ययनं महत् ॥ अन्नमेव परं गावो देवानां ह
 विरुत्तमम् ॥ पावनं सर्वभूतानां क्षरं तिच बहं तिच ॥ हविषामंत्रपूतेन त
 पयंत्यमरान् दिवि ॥ ऋषीणामग्निहोतृणां गावो होमे प्रतिष्ठिताः ॥ स
 र्वेषामेव भूतानां गावः शरणमुत्तमम् ॥ गावः पवित्रं परमं गावो मंगल
 मुत्तमम् ॥ गावः सर्वस्य लोकस्य गावो धन्याः सनातनाः ॥ नमो गोभ्य
 श्श्रीमतीभ्यः सौरभेयीभ्य एव च ॥ नमो ब्रह्मसुताभ्यश्च पवित्राभ्यो न
 मो नमः ॥ पुनः प्रदक्षिणं कृत्वा धेनुं द्विजवरं च तम् ॥ नमस्कृत्य
 विसृज्य पायसादिना सम्यग्द्वादशब्राह्मणान् भोजयित्वा तेभ्यो दक्षिणां
 दत्त्वा स्वस्त्ययनं वाचयित्वा सुहृद्युतो भुंजीत ॥ इत्युभयमुखीगोदा
 नप्रयोगः ॥ अथ प्रसंगादुभयतो मुखीगोप्रतिग्रहप्रायश्चित्त
 म् ॥ ममोभयतो मुखीगोप्रतिग्रहदोषपरिहारार्थं कृच्छ्रत्रयप्रायश्चित्तं य
 थाप्रत्याम्नायेन करिष्ये इति संकल्प्य कृच्छ्रत्रयप्रायश्चित्तं कुर्व्या
 दित्युक्तं दानीयोतिऽरुणस्मृतौ ॥ रहस्यप्रायश्चित्तेष्वशक्तस्येति ॥

इति प्रायश्चित्तम् ॥ अथ देवतोद्देशेन गोदानम् ॥ देवदक्षिणदि
ग्भागेधेनुःकार्घ्याद्युदङ्मुखी ॥ प्राङ्मुखं वत्सकं कृत्वा ब्राह्मणं चाप्युदङ्-
मुखम् ॥ प्राङ्मुखो यजमानस्तु पूजयेद्ब्राह्मणं ततः ॥ कोदातेति च मंत्रेण
गृह्णीयाद्ब्राह्मणः स्वयम् ॥ तथा हि ॥ सपुत्रां वस्त्रसंवीतां सितयज्ञोपवी-
तिनीम् ॥ स्वर्णशृंगीरौप्यखुरांसुवर्णोपरिसंस्थिताम् ॥ शक्तितोदक्षि-
णायुक्तां ब्राह्मणाय निवेदयेत् ॥ गावो ममाग्रतः संतु गावो मे संतु पृष्ठतः
॥ गावो मे हृदये संतु गवांमध्ये वसाम्यहम् ॥ इमानः प्रतिगृह्णीष्वधेनुं
दत्तां मया तव ॥ समेषां पापं नो दायममेषः प्रीयतामिति ॥ अन्यत्सर्वं
गोदानवदनुष्ठेयम् ॥ अथ देवताभ्यो गोदानम् ॥ शिवाय वि-
ष्णवे चापि यस्तु दद्यात्पयस्विनीम् ॥ धेनुं स्नानोपहारार्थं सपरंब्रह्मण-
च्छति ॥ सौरीं सूय्याय यो दद्यात्तत्तु रूपां च पयस्विनीम् ॥ तेन दत्तं
भवेत्सर्वजगत्स्थावरजंगमम् ॥ स्नानाग्निकार्य्यमुद्दिश्य सवत्सांसुपय-
स्विनीम् ॥ कुलीनां कपिलां दत्त्वा दत्तं भवति गोशतम् ॥ य एवं
गामलं कृत्य दद्यात्सूय्याय मानवः ॥ सोऽश्वमेधस्य यज्ञस्य फलमष्टगुणं
लभेत् ॥ यो दद्यादुभयमुखीं सौरभेयीं दिवाकरे ॥ सप्तद्वीपां महीं
दत्त्वा यत्फलं तदवामुयात् ॥ पादद्वयां शिरोर्ध्वं च यदा स्यादेव निर्गतम् ॥
तदा सा पृथिवी ज्ञेया स शैलवनकानना ॥ अथ ग्रहणीरोगहरगो-
दानम् ॥ धेनुं पयस्विनीं हृद्यां घंटाभरणं भूषिताम् । हेमशृंगीरौप्यखु-
रां वा सोभिर्वेष्टितानरः ॥ नवधान्यैः समायुक्ता मे कैकद्रोणपंचकैः ।
सहिरण्यं तु तां दद्याद्ब्राह्मणाय कुटुंबिने ॥ होमश्च पूर्ववत् कार्घ्यः स-
मिदाज्यचरुत्कटम् ॥ तस्मै हुतवते दद्यात्पूजिताय ङ्गुलीयकैः ॥
गां कृष्णां कृष्णरूपाय मंत्रेणानेन रोगवान् ॥ दानमंत्रः ॥ देवकीपुत्र

चाणूरकंसारिष्टविनाशन ॥ नाशयग्रहणीरुष्णगोपीजनमहोत्सव ॥
 इतिदानमंत्रः ॥ कृतेनानेनदानेनग्रहणीशांतिमृच्छति ॥ तस्मा
 देतत्तुकर्त्तव्यंग्रहणीरुष्णयासदा ॥ अथ असृग्दरनाशनधेनु
 दानविधिः ॥ धेनुंपयस्विनींदातालोहिताहेमशृंगिकाम् ॥ त
 थारूप्यस्फुरारक्तवस्त्रेणसमलंकृताम् ॥ ब्राह्मणायाग्निवर्णायदद्या
 त्सत्कृत्यमानवः ॥ पलेनवापलाद्धेनतदर्द्धेनाथवापुनः ॥ सुवर्णे
 नयुतांशुभ्रांयद्वास्वविभवेनतु । द्विजोत्तमायश्रेष्ठायसर्वशास्त्रार्थवेदिने
 धेनुतामतिरंजणेमंत्रेणानेनभक्तितः ॥ मंत्रः ॥ गावोमेहृदयेसंतुगावोमे
 सन्तुपृष्ठतः ॥ देवानांयातुसुरभीकृपयासृग्दरंमम ॥ इतिदानवा
 क्यम् ॥ विनाशयत्तदोदानमपिदीर्घमसृग्दरम् ॥ तेनेदंयत्नतः
 कुर्यादसृग्दरगदार्दितः ॥

इतिमहीधरकृतेदानसंग्रहेनानाविधगोदान
 विधिर्नामचतुर्विंशः कोशः ॥ २४ ॥

अथ दशदानानि ॥ उक्तांत्यादीनिदानानिदशदद्यान्मृतस्य
 तु ॥ गोभूतिलहिरण्याज्यवासोधान्यंगुडानिच ॥ रौप्यंलवणमि
 त्याहुर्दशदानान्यनुक्रमात् ॥ एतानिदशदानानिनराणांमृत्युजन्म
 नोः ॥ कुर्यादभ्युदयार्थंचत्विहप्रेत्यपरत्रच ॥ तत्रादौगोदानम् ॥
 दानविधिस्तुपूर्वोक्तएव ॥ ममसर्वपापक्षयार्थंगांसर्वोपस्करारुद्रदैव
 त्यांसुवर्णदक्षिणायुतांगोत्रायशर्मणंसुपूजितायतुभ्यमहंसंप्रददे नममे
 तिदद्यात् ॥ मंत्रस्तु ॥ यज्ञसाधनभूतायाविश्वस्यान्नप्रदायिनी ॥ वि
 श्वरूपधरोदेवःप्रीयतामनयागवा ॥ गवामंगेष्वितिप्रार्थयेदपि ॥
 अथ भूमिदानम् ॥ निवर्त्तनमिताभूमिर्देया ॥ दशहस्तेनदं

डेनत्रिंशद्दण्डानि वर्तनमिति स्मरणात् ॥ दानान्यन्यानि सर्वाणि कनका
 दीन्यानि च ॥ तानि भूमिप्रदानस्य कलानाहंति षोडशीम् ॥ अथे
 त्यादि० गोत्राय शर्मणे सुपूजिताय षष्टिवर्षसहस्रपरिमितस्वर्गशिवपुर
 निवासकामः सर्वपापक्षयकामः इमां भूमिं बहुसस्यप्रदो विष्णुदैवत्यां तु
 भ्यमहंसंप्रददे नममेति दद्यात् ॥ मंत्रस्तु ॥ सर्वेषामाश्रया भूमि
 र्वराहेण समुद्धृता ॥ अनंतसस्यफलदा अतः शांतिप्रयच्छ मे ॥ य
 स्यारोहंति बीजानि काले चैव महीतले ॥ तत्प्रसादाच्च सकलाममसं
 तुमनोरथा इति ॥ अथ तिलदानम् ॥ तिलास्तु द्रोणत्रयमिता
 देयाः पंचमणपरिमिता भवन्ति ॥ अथेत्यादि० गोत्राय शर्मणे इमां स्ति
 लान् सोमदैवत्यां विष्णुदैवत्यां वा सर्वपापक्षयकामस्तु भ्यमहंसंप्रददे
 नममेति द० ॥ मंत्रः ॥ महर्षेर्गोत्रसंभूताः कश्यपस्य तिलाः स्मृताः ॥ त
 स्मादिषांप्रदानेन मम पापं व्यपोह तु ॥ अथ हिरण्यदानम् ॥ तच्च निष्क
 त्रयमितं कनिष्ठम् ॥ द्वादशमाषको निष्कः । संकल्पस्तु पूर्ववत् ॥
 मंत्रः ॥ हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः ॥ अनंतपुण्यफलदमतः
 शांतिप्रयच्छ मे ॥ अथाज्यदानम् ॥ घृतं तु प्रस्थमितं दद्यात् ॥
 विंशतिसेटकमितं भवति ॥ अथेत्यादि० गोत्राय शर्मणे इदमा
 ज्यं विष्णुदैवतं समस्तपापक्षयकामस्तु भ्यमहंसंप्रददे नममेति द० ॥ मं
 त्रस्तु ॥ कामधेनोः समुद्धूतं सर्वकृतुषु संस्थितम् ॥ देवानामाज्यमा
 हार अतः शांतिप्रयच्छ मे ॥ अथ वस्त्रदानम् ॥ सूक्ष्मवस्त्रद्वयं बहु
 मूल्यमष्टहस्तमितं दद्यात् ॥ अथेत्यादि० गोत्राय शर्मणे समस्त
 पापक्षयकाम इमे बार्हस्पत्ये वाससी तुभ्यमहंसंप्रददे नममेति द० ॥
 मंत्रस्तु ॥ शीतवातोष्णसंत्राणं लज्जाय रक्षणं परम् ॥ देहालंकरणं वस्त्रम्

तः शांतिप्रयच्छमे ॥ अथ धान्यदानम् ॥ सार्द्धस्वारीद्वयं ब्रीह
योदेयाः ॥ तच्च सार्द्धशतद्वयमणपरिमितमणषट्कंचेति ॥ गो
त्रायशर्मणे इदममुकं संख्यं प्रजापतिदेवत्यं समस्तपापक्षयपूर्वकैहिकामु
ष्मिकशिवफलाघातिकामस्तुभ्यमहंसंप्रददे नममेतिद० ॥ मंत्रस्तु ॥
सर्वदेवमयंधान्यंसर्वोत्पत्तिकरं महत् ॥ प्राणिनां जीवनोपा
यमतः शांतिप्रयच्छमे ॥ अथ गुडदानम् ॥ गुडं पलषष्टिमितं
दद्यात् ॥ अथेत्यादि० समस्तपापक्षयपूर्वकं गृहे लक्ष्म्यास्थैर्य
सिद्धिकामो गोत्रायशर्मणे सुपूजिताये मंगुडं सर्वसोमदैवतंसदक्षिणं
तुभ्यमहंसंप्रददे नममेतिद० ॥ मंत्रस्तु ॥ गुडमिश्रसोद्भूतमंत्रा
णां प्रणवो यथा ॥ दानेनानेनमेतस्य परालक्ष्मीः स्थिरा गृहे ॥ अथ र
जतदानम् ॥ पलत्रयमितं रौप्यं दद्यात् ॥ अथेत्यादि० स
मस्तपापक्षयपूर्वकशिवविष्णुपितृप्रीतिकामो गोत्रायशर्मणे सुपूजिता
य इदं रजतं विष्णुदैवतंसदक्षिणं तुभ्यमहंसंप्रददे नममेतिद० ॥ मंत्रस्तु ॥
प्रीतिर्यतः पितृणां च विष्णुशंकरयोः सदा ॥ शिवनेत्रोद्भवं रूप्यमतः
शांतिप्रयच्छमे ॥ अथ लवणदानम् ॥ लवणं सार्द्धस्वारीकं
दद्यात् अथेत्यादि० समस्तपापक्षयपूर्वकशिवप्रीतिकामो गोत्रायश
र्मणे सुपूजिताय इदं लवणं सर्वरसोत्कृष्टं सोमदैवतंसदक्षिणं तुभ्यमहं
संप्रददे नममेतिद० ॥ मंत्रस्तु ॥ यस्मादन्नरसाः सर्वे नोत्कृष्टा लवणं विना
शंभोः प्रीतिकरं यस्मादतः शांतिप्रयच्छमे ॥ अथ पंचधेनुदाना
नि ॥ तत्रादौ पापानोदकधेनुदानम् ॥ ब्राह्मे-दानोपस्करास्तु शोदानो
क्ता एव ॥ अथेत्यादि० मम मनोवाक्कायकर्मभिराजन्मोपाजित
पापापानोदकामो गोत्रायशर्मणे सुपूजिताय इमां कृष्णां पापापानोदकधे

नुंयथा शक्तिसोपस्करारुद्रदैवत्यांतुभ्यमहंसंप्रददेनममेति ॥
 ॥ मंत्रस्तु ॥ आजन्मोपार्जितपापमनोवाक्कायकर्मभिः ॥ तत्स
 वैनाशमायातुपापधेनुप्रदानतः ॥ ततःसुवर्णदक्षिणांदद्यात् ॥ अथ
 ऋणापनोदकधेनुदानम् ॥ अथेत्यादि० आजन्मोपार्जितैहिका
 मुष्मिकसमस्तऋणपातकच्छेदकामोगोत्रायशर्मणसुपूजितायइमांस
 मस्तऋणापनोदकधेनुंयथाशक्तिसोपस्करारुद्रदैवत्यांतुभ्यमहंसंप्रददे
 नममेति ॥ ततःसुवर्णदक्षिणांदद्यात् ॥ अथ प्रायश्चित्तधेनुदानम् ॥
 अथेत्यादि० मयाजन्मप्रभृतिअद्ययावदाचरितसमस्तपातकस्याकृ
 तप्रायश्चित्तस्यामरणांतपापस्यापनोदकामोगोत्रायशर्मणसुपूजिताय
 प्रायश्चित्तत्वेनइमांकपिलांधेनुंयथाशक्तिसोपस्करारुद्रदैवत्यांतुभ्यम
 हंसंप्रददेनममेति ॥ ॥ मंत्रस्तु ॥ प्रायश्चित्तेसमुत्पन्नेनिष्कृतिर्नकृताक
 चित् ॥ तस्यपापस्यशुद्ध्यर्थधेनुमेतांददामिते ॥ ततःसुवर्णदक्षिणांद
 द्यात् ॥ अथवैतरणीधेनुदानम् ॥ यासावैतरणीनामयमद्वारेमहा
 नदी ॥ शतयोजनविस्तीर्णापृथुस्त्वेषामहासरित् ॥ अगाधानंतरूपाच
 दृष्टमात्राभयप्रदा। पतंतितत्रवैमर्त्याःक्रंदमानाःसुदारुणम् ॥ उष्णेवर्षा
 मुशीतेचमारुतेचातितीक्ष्णके ॥ दातारंतारयेद्यस्मात्तस्माद्वैतरणीस्मृ
 तेति ॥ दानकालोपितत्रैवमदनरत्ने ॥ अयने विषुवेषुण्येव्यतीपातोदिन
 क्षये ॥ अन्येषुपुण्यकालेषुदीयतेदानमादरात् ॥ पाटलामथवाकृष्णां
 दद्याद्वैतरणींतुगाम् ॥ स्वर्णशृंगीरौप्यसुरांकांस्यपात्रोपदोहिनीम् ॥
 कृष्णवस्त्रयुगच्छत्रांसप्तधान्यसमन्विताम् ॥ ॥ कार्पासद्रोण
 शिखरेआसीनांहैमीयमप्रतिमांलोहदंडयुतांमहिषारूढांपाशहस्तां
 कृत्वाइक्षुदंडमयमुदुपंपट्टसूत्रेणबध्वाउडुपेधेनुंकृत्वाछत्रोपानत्समायु

क्तांवैतरणींगांमृत्युकालेवादद्यात् ॥ तद्यथा ॥ मम
 यमद्वारस्थितवैतरण्याख्यनद्युतरणार्थगोत्रायशर्मणेषुपूजितायइमां
 कृष्णांगांसवत्सांयमप्रतिमायुक्तांकृष्णवस्त्रयुगच्छत्रांसतधान्ययुतां
 रक्तमाल्याद्यलंकृतांस्वर्णशृंगाद्युपस्करोपेतांकार्पासद्रोणशिखरां
 सच्छत्रोपानतक्रांरुद्रदैवत्यांतुभ्यमहंसंप्रददे नममेति इति
 तिलजलघृतयुतंगोपुच्छंद्विजहस्तेदद्यात् ॥ मंत्रस्तु ॥ यमद्वारपथे
 घोरेघोरावैतरणीनदी ॥ तांतर्तुकामोयच्छामि कृष्णांवैतरणींतुया
 मिति ॥ ततःसुवर्णदक्षिणांदत्वाप्रार्थयेत् ॥ विष्णुरूपद्विजश्रेष्ठभू
 देवगतिपावन ॥ तर्तुवैतरणीमेनांकृष्णांगांप्रददाम्यहम् ॥ ततःपुच्छं
 स्वकरेधृत्वातुव्रजेत्सप्तपदानिधे । नुप्रार्थनामंत्रस्तु ॥ धेनुकेत्वंप्रतीक्ष
 स्वयमद्वारेमहापथे ॥ उत्तितीर्षुरहंदेविवैतरण्यैनमोस्तुते ॥ इतिप्रणम्य
 भूयसींदक्षिणांदद्यात् ॥ कृष्णायाअभावेअन्यापिदेयागोरभावेद्र
 व्यंदेयम् । पित्रादेरशक्तौपुत्रादिर्दद्यात् ॥ तत्रांत्यमंत्रेउत्तितीर्षुरयमि
 तिपठेत् मध्यमेतर्तुवैतरणमिंस्येतिप्रथमेतांतर्तुमस्येति ॥
 ॥ इतिवैतरणीगोदानम् ॥ अथउक्तांतिधेनुदानम् ॥
 उक्तांतिवैतरण्यौचदशदानानिचैवहि ॥ प्रेतैपिकृत्वातंप्रेतशव
 धर्मणदाहयेदिति ॥ यथा ॥ योमुमूर्षुःपुरुषःस्वयंचेतनवेलायां
 श्रोत्रियंवेदपारगं ब्राह्मणमाहूय ॥ अद्येत्यादि० ममसुखेनप्रा
 णोत्क्रमणप्रतिबंधकोक्तनिष्कृत्यनुक्तनिष्कृतिजनितसकलपापक्ष
 यद्वारासुखेनप्राणोत्क्रमणसिद्धयर्थमिमामुत्क्रांतिसंज्ञिकांभेतुंयथाश
 क्तिसोपस्करांरुद्रदैवत्यांगोत्रायशर्मणेषुपूजितायतुभ्यमहंसंप्रददेन
 ममेतिदद्यात् ॥ मंत्रस्तु ॥ असूत्क्रांतौप्रवृत्तस्यसुखोत्क्रमणसिद्ध

ये । तुभ्यमेनांसंप्रददेधेनुमुत्क्रांतिसंज्ञिकामिति ॥ ततःसुवर्णदक्षिणां
 दद्यात् ॥ गोरभावेतुतत्स्वरूपभूतंगोमूल्यंवादद्यात् ॥ पित्रादेरश
 कौतुपुत्रादिर्दद्यात् ॥ तत्रममेतिपदस्थानेपित्रादेरितिबदेत् ॥
 इत्युत्क्रांतिधेनुदानम् ॥ इयमेवमोक्षधेनुरितिकेचित् ॥
 तद्यथा ॥ मोक्षदोवासुदेवस्तुवेदशास्त्रेषुगीयते ॥ तत्प्रीतयेद्विजाग्र्याश्च
 मोक्षधेनुंददाम्यहम् ॥ इत्युक्त्वा अथेत्यादिसमस्तपापक्षयपूर्व
 कसंसारमोक्षावाप्तिकामःश्रीपापापहमहाविष्णुप्रीतिकामश्चइमामो
 क्षधेनुंयथाशक्ति सोपस्करांरुद्रदैवत्यांगोत्रायशर्मणेसुपूजितायतु
 भ्यमहंसंप्रददे नममेतिदद्यात् ॥ मंत्रस्तु ॥ मोक्षंदेहिहृषीकेशमोक्षं
 देहिजनार्दन ॥ मोक्षधेनुप्रदानेनमममोक्षोस्तुवेगतः इति ॥ ततः
 सुवर्णदक्षिणांदद्यात् ॥ गोरभावेतुपूर्वोक्तमनुसंधेयम् ॥ अथ म
 हिषीदानम् ॥ महिषीदानमाहात्म्यंकथयामियुधिष्ठिर ॥ पुण्यंपवित्र
 मायुष्यंसर्वकामप्रदंतथा ॥ दानकालोपितत्रैव ॥ चंद्रसूर्यग्रहेका
 र्तिक्यामयनेसितचतुर्दश्यांसंक्रांतौ सर्वारिष्टनाशायचित्तप्राशस्त्याय
 देया ॥ प्रथमप्रसूतांदोषवर्जितांदद्यात् ॥ तत्रादौयमस्वरूपायै
 महिष्यैनमइतिनत्वाप्रार्थयेत् ॥ महिषीब्रह्मपुत्रीचलक्ष्मीरूपेणसं
 स्थिता ॥ प्रार्थितासिमयादेवीयममार्गनिवारयेति ॥ तथा ॥ महि
 षीयमरूपात्वंविश्वामित्रविनिर्मिते ॥ पूजिताहरमेपापं सर्वदानफल
 प्रदे । यथाशक्रस्याप्सरसोरूपेणमहिषीतथा ॥ सर्वभाग्यप्रदेदेवीदीर्घ
 श्रृंगीनमोस्तुतइति ॥ अथेत्यादि० दीर्घायुष्यैहिकामुष्मिकयज्ञया
 जित्वप्सितृतारणात्यंतशुभविंशतिधेनुदानसमफलावाप्तिसर्वदोत्तमफ
 लपुत्रपौत्रबहुत्वसूर्यलोकनिवासमहाराज्यावाप्तिकामश्चसर्वारिष्ट
 निवारणार्थंशनैश्वरजनितपीडाशांत्यर्थंगोत्रायशर्मणेसपूजितायेमां

महिषीं सलंकृतारक्तमाल्यवस्त्रावृतां स्वर्णशृंगीरौप्यसुरांताम्रदोहांहै
 मतिलकांसप्तधान्ययुतां वंदां भरणांधेनूपस्करां यमदैवत्यां तुभ्यमहंसंप्र
 ददेनममेतिसकुशातिलजलंतद्धस्ते दद्यात् ॥ विप्रो देवस्य त्वेति पठन्पृ
 ष्ठदेशं स्पृष्ट्वा स्वस्तीति प्रतिगृह्यथशाखां कामस्तुतिं पठेत् ॥ दाता
 तु ॥ इंद्रादिलोकपालानां याराज्यमहिषीशुभा ॥ महिषीदानमाहात्म्या
 त्सांस्तु मे सर्वकामदा ॥ धर्मराजस्य साहाय्येयस्याः पुत्रः प्रतिष्ठितः ॥
 महिषासुरस्य जननीयासास्तु वरदाममेति दत्त्वा प्रदक्षिणीकृत्य ब्रह्मणे तां
 पयस्विनीमिति । दक्षिणा तु दशपंचत्रयः सुवर्णाः एको वा सुवर्णः अतिनि
 कृष्टो ज्ञेयः । ततोभूयसीं दक्षिणां दत्त्वा परमेश्वरार्पणं कुर्व्यात् ॥ अनेन वि
 धिना दत्त्वा महिषीं द्विजपुंगवे ॥ सर्वान् कामानवाप्नोति इह लोके परत्र
 चेति ॥ ब्राह्मणः सर्वकामस्तु क्षत्रियोजयकाम्यया ॥ धनकामस्तु
 वैश्यो वै शूद्रो भिलषितत्विद्यात् ॥ महिषदानमप्येवं ज्ञेयम् ॥
 अथ मेषीदानम् ॥ भविष्ये ॥ शृणु पार्थ परं दानं सर्वकल्मषनाशनम् ॥
 यद्वत्त्वा विविधपापं सद्यो विलयमृच्छति ॥ अघने विषुवे ग्रहणद्वये दु
 स्स्वप्नदर्शने चित्तवित्तानुसारेण काले तीर्थे गृहे वा कार्यम् ॥ शंकरं ब्रह्मा
 णं विष्णुगौरांगायत्रीं श्रीसहितां यथाशक्ति सुवर्णप्रतिमां कृत्वा शच्या
 सहैवं ह्यल्लोकपालांश्च कृत्वा संपूज्य तत्पश्चिमतः स्वगृह्येणाग्निं प्रतिष्ठा
 प्यस्थापितदेवतामत्रैस्तिलाज्यैरष्टोत्तरशतमष्टाविंशतिरष्टाष्टसंख्या
 कावा आहुतीं हुत्वा ततो मेषीं द्विजं च वस्त्रालंकारादिभिर्यथाविभवं संपू
 ज्य अघेत्यादि सर्वपापक्षयदुस्स्वप्नसूचिता रिष्टविनाश
 पुत्रपौत्रधनकीर्तिर्यशः कामइमां मेषीं सुवर्णतिलकाद्यं कितां कौशेयप
 रिधानां सप्तधान्यसमायुक्तां पुष्पेत्पहारां सन्मुखस्थापितलवणांब्रह्म

विष्णुशिवादिप्रतिमायुक्तामुक्तोपस्करांगोत्रायशर्मणेषु पूजिताय इमां
तुभ्यमहंसंप्रददेनममेति दत्त्वा सुवर्णदक्षिणां दद्यात् ॥ मंत्रस्तु ॥
वाङ्मनःकायजनितं यत्किञ्चिन्मम दुष्कृतम् ॥ तत्सर्वं विलयं यातु त्व
द्दानेनोपसंचितमिति ॥ प्रतिमास्थापनं तिलकुंभे । मेषीप्रत्यक्षा सुवर्णनि
र्मिता वा । विप्रो देवस्य त्वेति शृंगे प्रतिगृह्य यथाशाखं कामस्तुतिं पठेत् ॥
प्रतिग्रहीतृविप्रसंभाषणं मुखावलोकनं च वर्जयेत् ॥ शतेन कारयेत्तां
तु सुवर्णस्य प्रयत्नतः ॥ यथाशक्त्यथवा कुर्याद्विचितां च न कारयेत् ॥
अथ अजादानम् ॥ अजपालो महीपालो ह्यजादानैर्दिवंगतः ॥
अयने विषुवे चैव युगादौ ग्रहणेषु च ॥ अमावास्यामजादानं पौर्णमास्यां
च शस्यते ॥ विधितस्य प्रवक्ष्यामि विश्वामित्रेणानिर्मितम् ॥ अजां वि
प्रं च यथाविभवं वस्त्रालंकारादिना संपूज्य अघेत्यादि० गोत्रायश
र्मणे इमामजां सप्तधान्योपरि संस्थितां वस्त्रमाल्योपशोभितां वज्रनेत्रां
हेमशृंगीताभ्रपृष्ठीरौप्यपादांस्रदोहनपात्रांसपुत्रां त्वाष्ट्रदैवतां तुभ्यमहंसं
प्रददे नममेति कुक्षौ तिलोदकं दत्त्वा दद्यात् ॥ मंत्रस्तु ॥ मंत्र
वासे अजेश्लक्ष्णे यज्ञसंपत्करेशुभे ॥ सदा त्वंदहमेपापं जन्मांतरश
तैः कृतमिति ॥ तथा ॥ त्वंपूर्वं ब्रह्मणा सृष्टापवित्रा कामदापरा ॥
त्वत्प्रसूतौ स्थिता यज्ञास्तस्माच्छांतिं प्रयच्छ मे ॥ देवस्य त्वेति शृंगे प्र
तिग्रहः ॥ ततः सुवर्णदक्षिणां दद्यात् ॥ इत्यजादानम् ॥ अथ वृ
षदानम् ॥ अयने विषुवे चैव युगादौ ग्रहणेषु च ॥ अमायां च प्रदात
व्यं वृषदानं जगुर्बुधाः ॥ अघेत्यादि० पूर्ववत् ॥ दानमंत्रस्तु ॥ धर्म
स्त्वं वृषरूपेण जगदानं दकारकः ॥ अष्टमूर्तेरधिष्ठानमतः शांतिं प्रयच्छ
मे ॥ अथ मंदाग्निं हरं मेषदानम् ॥ बोधायनः ॥ अग्निमान्द्यं

भवेद्यस्ययस्त्रेताग्नेर्विनाशनः ॥ वक्ष्यामितत्प्रतीकारं यथोक्तं ब्रह्म
 णापुनः ॥ पलार्द्धेनतदर्द्धेनतदर्द्धार्द्धेनवापुनः ॥ राजतंकारयेत्सौम्य
 मग्नेर्वाहनमुत्तमम् ॥ सौवर्णाश्वखुराःकार्याःश्वेतवस्त्रेणवेष्टयेत् ॥
 तत्रश्वेतपुष्पंश्वेतगंधंमधूत्कटं धूपंदद्यात् । द्रोणद्वयतंडुलराशौस्थितं
 पूजयेत् ॥ मेषादाग्नेय्यादिशिसमिदाज्यतिलैर्होमःकार्यः ॥ अथा
 स्यप्रयोगः ॥ पुण्यकालेअद्येत्यादि० ममपूर्वकर्मविपाकोत्थत्रेता
 ग्निनाशजनिताग्निमांघनिरासक्षिप्रजाठराग्निप्रबलत्वसिद्ध्यायुरारो
 ग्यसिद्धयर्थमेषदानंकरिष्ये इतिसंकल्प्य मेषप्रतिमांमेषंवाप्रत्यक्षं
 संस्थाप्य आग्नेय्यांस्वगृह्योक्तविधिनाग्निप्रतिष्ठाप्यान्वाधायत्रिर
 भिक्रमेणसमिदाज्यतिलैरष्टोत्तरशतैरष्टाविंशत्याष्टाष्टसंख्ययावाजुहु
 यात् ॥ एतैर्मन्त्रैःसमिदाज्यघृताक्ततिलाहुतिभिःॐअग्निर्मूर्धा०
 तिस्वहा ॥ अग्नयइ० ॥ १ ॐ अग्नेनयसुपथा० स्वाहा ॥ अ
 ग्नयइ० ॥ २ ॐ अग्निनाग्नि०स्यस्वाहाअग्नयइ० ॥ ३ इतित्रिभि
 र्मन्त्रैर्विवक्षितसंख्ययासमिदाज्यतिलैर्हुत्वास्विष्टकृदादिप्रणीताविमो
 कांतंकृत्वाकुंभोदकैर्यजमानमभिषिचेदेतैर्मन्त्रैः ॥ बोधायनाआपो
 हिष्ठेत्यपित्र्यूचाहिरण्येतित्र्यूचेनचपवमानानुवाकेनमार्जयेद्वोमिपांत
 तः ॥ शन्नोवातानुवाकेनशांतिंचापिप्रकल्पयेत् ॥ तस्मैहुतवत्तेरोगी
 प्राङ्मुखायह्युदङ्मुखः ॥ सदक्षिणंपूजितायदत्त्वावाहनमुत्तममिति ॥
 गोत्रायशर्मणेतुभ्यंसोपस्करंमेषंप्रत्यक्षंराजतंवावरुणदैवतं संकल्पो
 क्तफलकामस्तुभ्यमहंसंप्रददे नममेतिदत्त्वाप्रार्थयेत् ॥ देवानांयोमुखं
 हव्यवाहनःसर्वपूजितः ॥ तस्यत्वंवाहनंपूज्यंदेवेन्द्राद्यैर्महर्षिभिः ॥
 अग्निमांघंपूर्वकर्मविपाकोत्थंतुयन्मम ॥ तत्सर्वनाशयक्षिप्रंजाठरा

मिप्रवर्द्धयेति ॥ विप्रस्तुशृंगेदेवस्यत्वेतिप्रतिगृह्ययथाशाखंकामस्तुतिप
ठेत् ॥ ततःसुवर्णदक्षिणांदद्यात् ॥ यथाशक्तिभूयसींदक्षिणांदत्वाब्राह्म
णांश्वभोजयित्वासुहृद्युक्तोभुंजीतेति ॥ इति मंदाग्निहरंमेषदानम् ॥

इतिमहीधरकृतेदानसंग्रहेदशदानविधिर्ना

मपंचविंशःकोशः ॥ २५ ॥

अथातिदानानि ॥ तत्रादौगोदानंतद्विधिस्तुगोदानाध्यायेक
थितः ॥ अथभूमिदानम् ॥ दोग्धिवासांसिरत्नानिपशून्व्रीही
न्यवांस्तथा ॥ भूमिदःसर्वभूतेषुशाश्वतीरेधतेसमाः ॥ यावद्भूमे
रायुरितितावद्भूमिदपधते ॥ मुच्यतेब्रह्महागोघ्नः पितृघ्नोगुरुतल्प
गः ॥ भूमिसर्वगुणोपेतांदत्वापापान्नरस्स्वयम् ॥ दशहस्तेनदंडे
नदशहस्तान्समंततः ॥ पंचचाभ्यधिकान्दद्यादेतद्गोचर्मकथ्यते ॥
सप्तहस्तेनदंडेनत्रिंशद्वंदानिवर्त्तनम् ॥ त्रिभागहीनंगोचर्ममानमाहप्रजा
पतिः ॥ मानेनानेनयोदद्यान्निवर्त्तनशतंबुधः ॥ विधिनानेनतस्या
शुक्षीयतेपापसंहतिः ॥ अथप्रयोगः ॥ भूमिंस्थोनापृथिवीतिमंत्रेण
संपूज्य ब्राह्मणंचवासोलंकारादिभिर्वृत्वा अद्येत्यादि० अमुकगो
त्रायामुकशर्मणे इमांभूमिंप्रियदत्तांविष्णुदैवतां अमुककामस्तुभ्यम
हंसंप्रददे नममेतिसपुष्पंकुशतिलोदकंब्राह्मणहस्तेनिक्षिपेत् ॥ तेनच
मनसाभूमिंप्रदक्षिणीकृत्यप्रतिग्रहःकार्ग्यः ॥ भूमिसमीपेचेत्साक्षात्
प्रदक्षिणीकुर्यात् ॥ सुवर्णदक्षिणात्वेनदद्यात् । गोचर्ममात्रांयःपृथ्वींब्रा
ह्मणायप्रयच्छति ॥ सर्वदःसतुविज्ञेयःशक्रवद्विविमोदते ॥ ग्रामंवान
गरंवापिविप्रेभ्योयःप्रयच्छति ॥ क्षेत्रंवासस्यसंपन्नंसर्वपापैःप्रमुच्य
ते ॥ आस्फोटयंतिपितरःप्रजल्पंतिपितामहाः ॥ भूमिदोस्मत्कुले

जातः सोऽस्माकं तारयिष्यति ॥ अथ शिवाय भूमिदानम् ॥ वि
 धिस्तु पूर्ववत् ॥ यावद्दंडाभवेद्भूमिर्मीयमाना समंततः ॥ सतावत्क
 ल्पसंख्यानं रुद्रलोके महीयते ॥ अथ विष्णवे भू० ॥ विष्णवे विषयं
 ग्रामं ग्रामार्द्धमपिशक्तिः ॥ दत्त्वा क्रीडति वैकुण्ठोपकंठेषु निरत्य
 यम् ॥ अथ सूर्याय भू० ॥ भूभागाश्चैव यावन्तो भूतले भांति स
 त्तमाः ॥ तावद्युगसहस्राणि स्वर्गलोके महीयते ॥ एवं सर्वत्र वि
 ज्ञेयं फलं द्रव्यानुसारतः ॥ ग्रामादिदाने देवेभ्यो गणेशादिभ्य एव चे
 ति ॥ अथान्यश्च महीदानविधिः ॥ गोचर्ममात्रं भूखंडमधि
 कं वा स्वशक्तिः ॥ विधिस्तु दक्षिणां कृत्वा दत्त्वा शिवपुरं व्रजेदिति ॥
 त्रिष्वेकासु वर्णदक्षिणेत्यर्थः ॥ अपि गोचर्ममात्रेण सम्यक् दत्तेन मा
 नवः ॥ धूतपापो विशुद्धात्मा स्वर्गलोके महीयते ॥ इति ॥
 तथा ॥ दशहस्तेन दंडेन त्रिंशद्दंडानि वर्तनम् ॥ त्रिभागहीनं गोचर्म
 मानमाह प्रजापतिः ॥ यथा ॥ गवांशतं वृषश्चैको यत्र तिष्ठेदयं त्रितः ॥
 तद्धि गोचर्ममात्रं तु प्राहुर्वेदविदो जनाः ॥ तथा ॥ षष्टिवर्षसहस्राणि स्वर्गे
 वसति भूमिदः ॥ आच्छेत्तावानुमंता च तावन्ति नरके वसेत् ॥ भूमियः
 प्रतिगृह्णाति भूमियश्च प्रयच्छति ॥ तावुभौ पुरुषौ लोके सूर्यमंडले
 दिनौ ॥ तथा ॥ भूमिप्रदानपुण्यस्य कलानाहंति षोडशीम् ॥ दाना
 न्यन्यानि मे शांतिर्भूमिदानाद्भवति हेति ॥ दानवाक्यं तु ॥ अयेत्या
 दि० गोत्राय शर्मणे सालं कृताय षष्टिवर्षसहस्रमितस्वर्गं शिवपुरं निवास
 कामः सर्वपापक्षयकामो वा इमां भूमिं सस्योद्भवांसवुक्षफलपुष्पाद्युपेतां
 विष्णुदेवतां तुभ्यमहं संप्रददे नममेति साक्षतकुशतिलोदकं द्विज
 हस्ते दद्यात् ॥ ब्राह्मणस्तु भूमिप्रदक्षिणं कुर्वन् प्रतिगृह्णीयात् ॥ देव

स्यत्वेतियथाशाखंकामस्तुतिपठित्वास्वस्तीतिवदेत् ॥ मांडव्य
वचनादत्रसुवर्णदक्षिणामतां ॥ मंत्रस्तु ॥ सर्वेषामाश्रयाभूमिर्वरा
हेणसमुद्धृता ॥ अनंतसस्यफलदाह्यतःशांतिप्रयच्छमे ॥ यस्यारो
हंतिबीजानिवर्षाकालेमहीतले ॥ भूमेःप्रदानात्सकलाममसंतुमनोर
थाः ॥ इति ॥ शिवधर्मैविश्वामित्रः ॥ ग्रामंवानगरंवापिविप्रेभ्योयः
प्रयच्छति ॥ क्षेत्रंवासस्यसंपन्नंसर्वपापैःप्रमुच्यते ॥ इति ॥ भूमिहरणे
तुविश्वामित्रः ॥ स्वदत्तांपरदत्तांवायोहेरच्चवसुंधराम् ॥ षष्टिवर्षस
हस्राणिविष्टायांजायतेकमिरिति ॥ सविष्टायांकुमिर्भूत्वापितृभिः
सहमज्जतीतिवा ॥ इति शिवधर्मोक्तंभूदानम् ॥ अथ प्रसंगात्
गृह दानम् ॥ शक्तितःसर्वविचेनपूर्णगृहमपित्रिधा ॥ सदक्षिणं
द्विजेदत्वाब्रह्मलोकंव्रजेन्नरः ॥ ऐष्टकंदारुवंवापिमृन्मयंवापिशक्ति
तः ॥ सर्वोपकरणोपेतंयोदद्याद्विपुलंगृहम् ॥ ब्राह्मणायदरिद्रायवि
दुषेचकुटुंबिने ॥ सर्वकामसमायुक्तोब्रह्मसायुज्यमाप्नुयादिति ॥ तथा—
नगार्हस्थ्यात्परोधर्मो नैवदानंपरंगृहात् ॥ नानृतादधिकंपापंनपूज्यो
ब्राह्मणात्परः ॥ गृहनिर्माणप्रकारस्तु ॥ स्नानागारंदिशिप्राच्यामा
ग्रेध्यांपचनालयम् ॥ ग्राम्यांशयनगेहंचनैर्कृत्यांशस्त्रमंदिरम् ॥
प्रतीच्यंभोजनागारंवायव्यांपशुमंदिरम् ॥ भांडागारंतूत्तरस्यामैशा
न्यांदेवमंदिरमिति ॥ कुर्यादितिशेषः ॥ तत्रकूपेदिग्विशे
षफलंदेवीपुराणे ॥ पूर्वामाश्रित्यकर्त्तव्यःकूपःस्यादनिलेपिवा ॥
नपूर्वव्यत्ययंकुर्यान्मध्येदेवालयद्रुहादिति ॥ कृतंभयप्रदंलोके
तथाचास्याग्निर्जभयम् ॥ वायव्यांचापिदेवस्यभयदंजायतेक
तमितिबराहमिहिरः ॥ पुष्टिभूतिपुत्रहानिपुरंघ्रीनाशंमृत्युंसंपदं

शस्त्रबाधाम् ॥ किञ्चित्सौख्यंदिक्षुपूर्वादिकासुकूपोमध्यगेहमर्थक्ष
 यंचेत्यादि ॥ मत्स्यपुराणे ॥ देवतापंचकंतत्रचत्वारिंशत्समावृतम् । पूज
 यित्वायथान्यायंततोदद्याद्गृहं गृही ॥ पूजयित्वास्वयंवास्तुशांतिं कृ
 त्वादद्यादित्यर्थः ॥ अथविद्यादानम् ॥ दानानामुत्तमंदानं वि
 द्यादानं विदुर्बुधाः ॥ आहुः समस्तविद्यानां श्रियमेवाधिदैवतम् ॥
 यथावरिष्ठो देवानां विष्णुः कारणपूरुषः ॥ तथाविद्याप्रदः श्रेष्ठो गरीयांश्च
 गरीयसाम् ॥ सहस्रमेव धेनूनां शतं चानडुहांसमम् ॥ दशानडुत्स
 मं यानंदशयानसमो हयः ॥ दशवाजिसमाकन्याभूमिदानंचतत्स
 मम् ॥ भूमिदानात्समं नास्ति विद्यादानंततोधिकम् ॥ विद्याकाम
 दुग्धाधेनुर्विद्याचक्षुरनुत्तमम् ॥ विद्यादानात्परंदानं न भूतं न भविष्यति ॥
 शिल्पविद्यां नरोदत्वायाति वैभ्रह्मणोऽन्तिकम् ॥ कलां विद्यां नरोदत्वा
 वैष्णवं लोकमाप्नुयात् ॥ कल्पमेकं न सन्देहः स्वर्गभोगसमन्वितः ॥
 तस्य विद्यां नरोदत्वा तृप्तिमान् कामसंयुतः ॥ प्रजापतिपुरंगच्छेन्नर
 कात्तारयेत्पितॄन् ॥ आयुर्वेदं नरोदत्वा लोकान् प्राप्नोति निर्म
 लान् ॥ अश्विनोर्दिव्यकामाद्यान् दिव्यमन्वन्तरं नरः ॥ तर्कवि
 द्यां नरोदत्वा वारुणं लोकमाप्नुयात् ॥ मीमांसांतु बुधे दत्वा शास्त्रमि
 न्दुपुरे वसेत् ॥ धर्मशास्त्रं नरोदत्वा स्वर्गलोके महीयते ॥ दशमन्वन्त
 रान्मर्त्यस्तारयेन्नरकात्पितॄन् ॥ वेदविद्यां नरोदत्वा स्वर्गलोकत्रये
 वसेत् ॥ आत्मविद्यां च यो दद्यात्तस्य सङ्ख्यानशक्यते ॥ पुण्यस्य ग
 दितुं सम्यगपि वर्णशतायुतैः ॥ एतावच्छक्यते वक्तुं यत्कल्पायुतमुत्त
 मम् ॥ सत्यलोके वसेन्मर्त्यो यत्र ब्रह्मा वसेत्प्रभुः ॥ अप्येकं नीरुजं
 कृत्वा जन्तुं यादृशतादृशम् ॥ आयुर्वेदप्रभावेन किञ्च दत्तं भवेद्भुवि ।

तस्यवेदप्रसादेनसम्पन्नाःसस्यशालयः ॥ किंननामकृतंतत्रपुण्यंभव
तिशाश्वतम् ॥ मीमांसाशास्त्रमहात्म्यंबुद्धवैवेदनिर्णयम् ॥ किंन
नामशुभंदातुर्यज्ञकर्मप्रवर्तनात् ॥ आत्मविद्याचपौराणीधर्मशा
स्त्रात्मिकाचया ॥ एताविद्यास्त्रयीमुख्याःसर्वदानक्रियाफलैः ॥
धर्मशास्त्रनरोबुद्धायत्किञ्चिद्धर्ममाश्रयेत् ॥ तस्यधर्मशत
गुणंधर्मशास्त्रप्रदस्यच ॥ पुराणाख्यानविद्वांसः पितृदेवाच्चेने
रताः ॥ लोकान् सर्वान् कामपूर्णान्यान्तिसर्वशुभोदयान् ॥
पुराणविद्यादातारस्त्वनंतफलभागिनः ॥ आत्मविद्याप्रदातारो
नराधर्मसमाश्रयान् ॥ नपुनर्योनिरिरयंप्रविशन्तिदुरत्ययम् ॥
उत्तीर्णाःसर्वपापेभ्यःसपुत्रपशुबान्धवाः ॥ मुच्यन्तेनिरयैर्धोरैरसंख्यै
र्यातनात्मकैः ॥ तथा ॥ श्लोकंप्रहेलिकांगथामन्यथावासुभा
षितम् ॥ दत्वाप्रीतिकरंयातिलोकमप्सरसांशुभम् ॥ तथा ॥
रामायणंभारतंचदत्वास्वर्गंमहीयते ॥ पुराणंतर्कशास्त्रंचछन्दोलंका
रलक्षणम् ॥ वेदंमीमांसिकंदत्वाशिवधर्माश्ववैनृपः ॥ सप्तद्वीपपृथि
व्याश्वराजराजोभवेत्तुसः ॥ पाणिनीयंनिरुक्तादिवेदाङ्गंस्मृतिकास्त
था ॥ दत्वाज्ञानमवामोतिवेदान्तंचविशेषतः ॥ नित्यंदेयानिराजं
द्रगावःपृथ्वीसरस्वती ॥ विद्यादानंत्रिधाप्रोक्तंपाठनंपुस्तकस्यच ॥
दानंमंत्रोपदेशंचप्रीत्यासर्वचरेद्बुधः ॥ वेददानस्य ॥ सर्वेषामेव
दानानांब्रह्मदानंविशिष्यते ॥ कार्ग्यंनगोमहीवासस्तिलकांचनसर्पि
षाम् ॥ इति विद्यादानप्रशंसा ॥ अथ दानविधिः ॥ विद्यादान
विधिंवक्ष्येयथातत्त्वेनसर्वतः ॥ दत्तेनतत्फलंतस्यदातुरस्यसमासतः
पुण्येसमारभेत्कालेनिम्नोन्नतविवर्जिते ॥ सुसमेभूपदेशेचगोमयेनो

पलेपयेत् ॥ पुष्पप्रकारसंपन्नेगीतवाद्यसमाकुले ॥ अमलंचतु
 रस्रवाचंदनेनैवकारयेत् ॥ पुस्तकंतत्रसथाप्यगंधपुष्पैःप्रपूज
 येत् ॥ सौवर्णलेखनीकार्य्यामषीभाण्डंचरौप्यकम् ॥ जयशब्दंसमु
 द्घोष्यचारभेलेखकःसुधीः ॥ विनीतश्चाप्रमत्तश्चशास्त्रनिष्पत्तिमान
 येत् ॥ ब्राह्मणस्यसुवृत्तस्यवाचकस्यविजल्पतः ॥ अनेनविधिवाद
 त्वादातूरत्नस्ययत्फलम् ॥ तत्फलंकोटिगुणितंपुस्तकैकप्रदायके ॥
 यत्पुण्यंतीर्थयातृणांयत्पुण्यंयज्वनानृणाम् ॥ तत्पुण्यकोटिगुणितं
 विद्यादाने नसंशयः ॥ कपिलानांसहस्रेणसम्यग्दत्तेनयत्फलम् ॥
 तत्फलंसमवामोतिपुस्तकस्यप्रदानतः ॥ आत्मचित्तानुसारेणविद्य
 दानं करोतियः ॥ असाध्यंफलमामोतिचाढ्यतुल्यंनसंशयः ॥
 स्त्रीवानेनैवविधिनाविद्यादानफलंलभेत् ॥ भर्ताचैवाननुज्ञाताविध
 वाचतमुद्दिशेत् ॥ विद्यार्थिनेसदादद्याद्ब्रह्माभ्यंगंचभोजनम् ॥
 छत्रिकामुदकंदीपंयस्मात्तेनविनामही ॥ लेखनीघटितंतीक्ष्णामषी
 पात्रंतुलेखनी ॥ दत्त्वातुलभतेसम्यग्विद्यादानमनुत्तमम् ॥ पुस्तका
 स्तरणंदत्त्वासुप्रमाणंसुशोभनम् ॥ विद्यादानजमामोतिसूत्रबद्धंचबु
 द्धिमान् ॥ यंत्रकंत्वासनंचैवदंडासनमथापिवा ॥ विद्यावाचनं
 शीलायदत्तंभवतिराज्यदम् ॥ अंजनंनेत्रपादानांदत्तंविद्यापरायणे ॥
 भूर्मीगृहंचक्षेत्रंचस्वर्गराज्यफलप्रदम् ॥ यश्चभूम्यांस्थितो नित्यं
 विद्यादानंप्रवर्तयेत् ॥ तस्यापिभवतिस्वर्गस्तत्प्रभावान्नसंशयः ॥
 योपिपत्रमषीपात्रंलेखनीसंपुटादिकम् ॥ लघुशास्त्राभियुक्तायतेपि
 विद्याप्रदायिनाम् ॥ यांतिलोकान्शुभान्मर्त्याःपुण्यभाजोभव

तिहि ॥ अत्रापिपुस्तकादिदानेसंकल्पादिविधिः पौर्णमासदान
विधावुक्तबद्धोद्धव्यः ॥

इतिमहीधरकृतेदानसंग्रहेअतिदानकथनंनामष

द्विंशःकोशः ॥ २६ ॥

अथदशमहादानानि ॥ कनकाश्वतिलानागादासीरथमहीगृहाः ॥
कन्याचकपिलाधेनुर्महादानानिवैदेशेति ॥ अत्रस्वर्णदानममावा
स्यादानविधावुक्तम् ॥ अत्रायंविशेषः ॥ सुवर्णस्यसुवर्णस्यसुवर्णयः
प्रयच्छति ॥ सर्वपापविनिर्मुक्तःस्वर्गलोकेमहीयते ॥ सुवर्णद्वितयंदत्त्वा
चाक्षय्यांगतिमाप्नुयात् ॥ दत्त्वासुवर्णस्यशतंद्विजेभ्यःश्रद्धयान्वितः ॥
ब्रह्मलोकमनुप्राप्यब्रह्मणासहमोदते ॥ प्रथमंसुवर्णशब्देनहिरण्यम
भिधीयते अपरेणतस्यैवशुद्धवर्णत्वंप्रतिपाद्यते पारिमाणविशे
षस्तृतीय इति ॥ सुवर्णदानेरजतंदक्षिणा ॥ दानमंत्रस्तु ॥ हिरण्यग
र्भगर्भेति० ॥ अथनित्यसुवर्णदानम् ॥ आदित्येचोदयंप्राप्तेवि
धिमंत्रपुरस्कृतम् ॥ ददातिकांचनंयोवैदुःस्वंसंप्रतिहंतिसः ॥ योदेवअ
र्च्यतेतेनयस्यचैवप्रयच्छति ॥ तस्यलोकेनिवसतिनित्यंचैवददाति
यः ॥ विधिस्तुपूर्ववत् ॥ अथपापरोगहरणशतमानसुवर्णदानवि
धिः ॥ शतमानंचाक्षयेणसुवर्णेनमितंचयत् ॥ तत्कांस्येनिक्षिपेत्स
म्यकृतिलाढकसमन्वितम् ॥ कांस्यपात्रमष्टपलम् ॥ द्युमीणमावाह्यपो
ढशोपचारैःसंपूज्याष्टाक्षरमंत्रेणब्राह्मणंसंपूज्यदद्यात् ॥ तत्रमंत्रः ॥
पद्मोद्भवःपद्मकरःसप्ताश्वरथवाहनःशतमानेनदत्तेनतुष्टःसर्वजगद्गुरुः
इहजन्मनियत्पापमन्यजन्मनियत्कृतम् ॥ तत्प्रत्ययाप्रत्ययाभ्यां
तत्सर्वक्षपयत्यसौ ॥ इतिशतमानदानम् ॥ अथभद्रनिधिदानम् ॥

आनंदं ब्रह्मणोरूपं नित्यं वेदेषु गीयते ॥ सर्वा वा सो विभुः साक्षादानंदेन
 व्यवस्थितः ॥ तस्माद्दानमिदं पुण्यं देयमानं दशेवधिम् ॥ विधानं
 तु पुण्यदिने उपरागादिषु सर्वेषु वा औदुम्बरं कुम्भं हिरण्यभारेण तदर्थे न
 वापलशतकेन यथाशक्ति पलत्रयादूर्ध्वेन परिपूर्य्य तं ताम्रपात्रे निधाय
 सवज्जनीलोत्पलपद्मरागमुक्तावैदूर्य्यविद्रुमाणिरजतपात्रे धृत्वा तेन तं
 घटमाच्छाद्य कुशदर्पणचामरोपानत्पादुकाच्छत्रक्षौमवस्त्रयुतं तं सं
 पूज्य तस्मिन् विष्णुं शिवं च प्रणवादिनामोतेन नाममंत्रेण संपूज्य प्रार्थये
 त् ॥ ॐ त्वया समस्ता मरुसिद्धयश्च विद्याधरं द्रोणं किकिन्नराद्यैः ॥
 गंधर्वविद्याधरदानवेद्रैर्युतं वृत्तं विश्वमिदं नमस्ते ॥ समस्तसंसारकरी
 त्वमेव विभोः सदानंदमयी च माया ॥ समस्तकल्याणनिधिः समा
 धिर्हरिप्रिये भद्रनिधिर्नमस्ते ॥ ततः किरीटांगदकुण्डलांगुलीयक
 वस्त्रमाल्यैर्विप्रसंपूजयेत् ॥ तत्र मंत्रः ॥ भूदेवो सीत्यतो नि
 त्यं नित्यानंदमयो हरे ॥ हरमेदुष्कृतं कृष्णकृपाकरनमोस्तुते ॥ भू
 देव भगवन् धर्मभव भंगकरेश्वर ॥ भवभूतिकरो जिष्णो प्रभविष्णुर्नमो
 स्तुते ॥ एवं संपूज्य विष्णुरूपं तं हृदि ध्यायन् यथाकाममुल्लि
 ख्य भद्रनिधिं दद्यात् ॥ तत्र मंत्रः ॥ पितृसंतारणार्थाय नित्यानंदवि
 वृद्धये ॥ सर्वा धौघविनाशाय विष्णोर्दानं मया कृतम् ॥ तदनेन सरत्ने
 न धातुत्रययुतेन च ॥ सक्षौमांबरयुक्तेन सादृशपादुकेन च ॥ सदानं
 दविधानेन प्रीयतां विष्णुरीश्वरः ॥ एवमुच्चार्य्य तं दद्याद्विजायहरिरूपि
 णे ॥ गोप्येन विधिना दद्याद्धेमसंख्यां न कीर्तयेत् ॥ एवं कृते स्यान्म
 नुजः कृतात्मा तपेन्न च स्यान्मरणं कदाचित् ॥ प्रयाति विष्णोः
 पदमव्ययं तत् शिवात्मकानंदमयं सख्यम् ॥ इति भद्रनिधिदानम् ॥

अथाश्वाख्यं द्वितीयं महादानम् ॥ तद्विधिस्तुकन्यासंक्रमणदानवि
धावुक्तः ॥ अत्रायं विशेषः ॥ अश्वं वायदिवायुगमं शोभने वाथपादु
के ॥ ददाति यः प्रदाता वै ब्राह्मणेभ्यः सुसंयतः ॥ तस्य दिव्यानि यानानि र
थध्वजपताकिनः ॥ दुष्टः पंथानचैवेह भविष्यति कदाचन ॥ अश्वं
तन्मूल्यमथ वा कनीयो मध्ये मोत्तमम् ॥ दद्याद्वित्तानुसारेण तारागण
परिच्छदम् ॥ तारागण इति । तारानुकार्यश्चालंकारविशेषः । शफैः
पंचपलैरौप्यैः सुवर्णालंकृतं क्रमात् ॥ सदक्षिणं सवस्त्रं च ब्राह्मणाया
ग्निहोत्रिणे ॥ स्वर्णदः प्राप्नुयात्स्वर्गमश्वसालोक्यमश्वदः ॥ अथ
तृतीयं तिलदानम् ॥ तद्विधिस्तुकन्यासंक्रमणदानविधावुक्तः ॥
अत्र कामनाभेदेन विशेषः ॥ तत्रादौ तिलमृगदानम् ॥ मृगं
तिलमयंकृत्वा सुवर्णरजतान्वितम् ॥ दद्यात्कंबलसंस्तीर्णकृ
ष्णमार्गाजिनेन वा ॥ सर्वकामसमृद्धेन विमानेन दिवं व्रजेत् ॥ का
लक्षयादिहागत्य राजराजो भवेत्पुनः ॥ विधिस्तु तिलधेनुवत् ॥
धेनुपदस्थाने मृगपदं वाच्यम् ॥ नित्यं तिलपात्रदानं तु पौर्ण
मासीदानविधौ द्रष्टव्यम् ॥ अथ मातृक्रणमुक्त्यर्थं कांस्यपा
त्रे तिलदानम् । यज्ञसौत्रामणिकर्तुं यद्विशक्तिर्न विद्यते ॥ महासरस्त
थावापीकूपं कर्तुं च दीर्घिकाम् ॥ एवं कृते मातृक्रणान्मुक्तो भवति मान
वः ॥ सदक्षिणं कांस्यपात्रमथ दत्त्वा प्रमुच्यते ॥ तत्तु शुद्धकांस्यपंचविंश
तिपलमिते पात्रे प्रस्थप्रमाणं तिलं चतुर्माषिकं सुवर्णं तत्र निक्षिप्य वस्त्रे
ण संवेष्ट्य कुरुकुमादिनिर्मितकमले संस्थाप्य संपूज्य सलक्षणं ब्राह्मणं
संपूज्य (केचिदत्र मातृश्राद्धं कुर्वन्ति) अद्येत्यादि ० मम मातृक्रणोत्तारण
पूर्वकं पितृणां वैकुण्ठनिवासायेत्यादि ० । दक्षिणार्थं सुवर्णं देयम् ॥ त

त्रमंत्रः ॥ कांस्यपात्रं मया दत्तं मातुरा नृण्यकांक्षया ॥ भगवन्वचना
 तुभ्यं यथा मुक्तिस्तथा वद ॥ दशमासांश्च उदरे जनन्याः संस्थितेन वै ॥
 क्लेशिता बाल्यभावे च स्तनपानाद्विजोत्तम ॥ गूथमूत्रादिसंलेपलिप्ता
 यच्च कृता मया ॥ भवतो वचनादयमममुक्तिर्भवेदृणात् ॥ कांस्यपा
 त्रं सुवर्णं च तिलान् ब्रह्माणि दक्षिणाम् ॥ सप्तधान्यं मया दत्तमृणा
 न्मुक्तिर्भवेन्मम ॥ कांस्यपात्रप्रदानेन तत्त्वज्ञानं शरीरजम् ॥ तथा
 हेमप्रदानेन परमात्मानमव्ययम् ॥ आच्छादनं तु ब्रह्माण्डं गुह्य
 मेतत्सनातनम् ॥ विप्राच्छादनेन परमात्मा सुपूजितः ॥ तिलसं
 ख्याकृतं दुःखं जनन्याममसंचितम् ॥ तिलदानप्रभावेण कृतान्मुक्तो
 भवाम्यहम् ॥ ब्राह्मणेन ततो वाच्यं जननीसंभवाद्दृणात् ॥ मु
 क्तस्त्वं पात्रदानेन महेश्वरवचो यथा ॥ ततो ब्राह्मणान्भोजयेत् ॥
 भूयसीं दक्षिणां च दद्यात् ॥ अथ सर्वपापहरं तिलराशिदानम् ॥
 सर्वपातकसंधातः कामतो वाप्य कामतः ॥ शुद्धितस्य प्रवक्ष्यामि स्वर्गसा
 धनमेव च ॥ शुक्लैः कृष्णैर्यथालब्धैर्द्वात्रिंशदंगुलोत्थिता ॥ राशि
 स्तिलैः समे देशे कर्त्तव्या पुरुषाय ता ॥ यथा विभवविस्तारं यद्विवाश
 क्तिनोरैः ॥ प्रतिमाष्टांगुलास्थाप्या सौवर्णी तत्र माधवी ॥ तत्र क्षौ
 द्रपयो दधिघृतपूरितकलशान्संस्थाप्य यथालब्धोपचारैः संपूज्य यथा
 काममुल्लिख्य दद्यात् ॥ तत्र मंत्रः ॥ अज्ञानाय दिवामोहाल्लोभाद्वा
 जन्मजन्मनि ॥ आर्जितं यन्मया किंचिद्दुष्कृतं मधुसूदन ॥ तत्सर्वं विल
 यंयातु दानेनानेन माधव ॥ एवमुच्चार्य तत्सर्वं ब्राह्मणाय निवेदयेत् ॥
 यावज्जीवकृतं पापं तत्क्षणादेव नश्यति ॥ अथ तिलपद्मदानम् ॥
 सर्वयज्ञेषु यत्पुण्यं सर्वदानेषु यत्फलम् ॥ तत्फलं समवाप्नोति तिलपद्म

प्रदानतः ॥ तत्तुपुण्यदिने चतुरस्रगोमयमण्डलंकृत्वा तत्रकृष्णा
जिनंसवस्त्रमास्तीर्यतस्मिस्तिलद्रोणंतत्राष्टदलकर्णिकांकृत्वातस्यां
निष्कत्रयसुवर्णनिर्मितांश्रीनिवासमूर्तिस्थापयेत् ॥ तस्याध्यानंतु ॥
श्रीनिवासंजगन्नाथंभुक्तिमुक्तिप्रदायकम् ॥ ध्यायेच्चतुर्भुजंदेवंप्रणता
तिहरंहरिम् ॥ हिरण्यगर्भममृतंश्रीगर्भपरतःपरम् ॥ शंखचक्रगदापा
णिपीतवाससमच्युतम् ॥ श्रीवत्सांकंजगद्बीजंसर्वकारणकारणम् ॥
कविपुराणंविश्वेशंपुंडरीकनिभेक्षणम् ॥ आसीनंकर्णिकामध्येसर्व
शक्तिसमन्वितम् ॥ कृतांजलिपुटोभूत्वानमस्कृत्ययुनःपुनः ॥
ततःश्रद्धयायथालब्धोपचारैः संपूज्य इंद्रनीलमहानीलमणी
न्विनिवेद्य तांबूलंपंचसुगंधिद्रव्यंदत्वा दिनत्रयमेकं दिनं
वनिराहारस्तिलाहारोवा भवेत् ॥ देवस्योत्सवंकृत्वा
तत्पार्श्वतस्तिलप्रस्थवृतप्रस्थदध्याढकषोडशधान्यपात्राणिसंस्थाप्य
सलक्षणंब्राह्मणंवृत्वायथाकाममुल्लिख्यपद्मंदद्यात् ॥ प्रीयतां
माधवोदेवइत्युक्तातमनुस्मरन् ॥ हिरण्यगर्भदेवेशपद्मनाभ
जनार्दन ॥ हिरण्याक्षगुणाधारसर्वाधारधरेश्वर ॥ धनधान्यसमृद्धं
चसर्वसंपत्समन्वितम् ॥ पुत्रपौत्रादिसंयुक्तंदासीदाससमन्वितम् ॥
अरोगंचसुमंत्रंचसर्वदुःखविवर्जितम् ॥ कुरुमांपरमोदारंभक्तो
यमितिचितयन् ॥ एवंप्रार्थ्यसुवर्णगांचदक्षिणार्थंदद्यात् ॥ धर्मार्थी
धर्ममाप्नोतिधनार्थीधनमाप्नुयात् ॥ मोक्षार्थीमोक्षमाप्नोतिनात्रका
र्याविचारणा ॥ सर्वपापरतोवापिमुच्यतेनात्रसंशयः ॥ इति तिल
पद्मदानम् ॥ अथ शिवप्रीतयेमूत्रकृच्छ्रहरंतिलपद्मदानम् ॥
विधिस्तुसर्वःपूर्ववत् ॥ दशानि०पंचनिष्केणापिसुवर्णेनभवति ॥ क

णिकायां शिवंतत्परितोषामाज्यैश्वरौ द्रीकालीविकारिणी बलप्र
 मथिनीदमनीशक्तयः पूज्याः ॥ तद्वाह्ये विदेशान् ॥ अथानंतश्वसू
 क्षमश्च शिवश्चाप्येकनेत्रकः ॥ एकरुद्रस्त्रिमूर्तिश्च श्रीकंठश्च शिखांडे
 क इति ॥ अन्यत्सर्वपूर्ववत् ॥ दानमंत्रे तु विशेषो यथा ॥
 स्वयः पूषापतंगोसौ द्वादशात्मा त्रयीतनुः ॥ पद्मेनानेन दत्तेन प्रीतस्तर
 णिरस्तु मे इति ॥ कृतेनानेन मनुजो मूत्रकृच्छ्रात्प्रमुच्यते ॥ मूत्रकृ
 च्छ्रातुरस्तस्मादेतत्कुर्यात्प्रयत्नतः ॥ इति मूत्रकृच्छ्रहरंतिलपद्म
 दानम् ॥ अथ क्षयरोगहरंतिलपद्मदानम् ॥ क्षयेतुराजतंपद्मं
 शतनिष्केण कल्पयेत् ॥ विधानंतु पूर्ववदेव ॥ मंत्रस्तु ॥ पद्मेनरा
 जतेनेह प्रदानादत्रिनेत्रज ॥ जातकर्मविपाकेन क्षयं नाशय मे नघ ॥
 कृतवैवंक्षयरोगी तु शीघ्रं रोगात्प्रमुच्यते ॥ इति क्षयरोगहरंतिलपद्म
 दानम् ॥ अथ रक्तशूलघ्नंतिलपद्मदानम् ॥ अत्र पद्मं सुवर्णेन
 नालं रजतेनेत्युक्तम् ॥ तत्र सूर्यावाहनं यथा ॥ एहो हि भगवन्दे
 व पद्मे स्मिन्सन्निधिक्षुरु ॥ त्रयीतनो द्वादशात्मन्सर्वप्राणिहिताय
 चेति ॥ ततः सर्वोपचारैः सूर्य्यं संपूज्या न्यत्सर्वपूर्ववदेव बोध्यम् ॥ दान
 मंत्रे तु विशेषः ॥ भगवन्सर्वभूतेश्चुमणेलोकनायक ॥ रक्तव
 र्णप्रतापेन्द्र रक्तत्रैलोक्यपावन ॥ सत्पात्राय मया दत्तं मम जन्मनि चै
 वहि ॥ औषधादितु तत्सर्वनाशमाया तु दानतः ॥ ततः पुण्याहवाच
 नं कृत्वा सगुडं पायसं भोजयित्वा भर्तारं देववन्मत्वा घृतपात्रं सं
 भुंजीयात् ॥ एवं कृतेन दानेन नाशं यांति न संशयः ॥ संपत्न्यौष
 धदानेन रक्तशूलमुपार्जितम् ॥ रक्तशूलरुजानां न्यर्दानं कार्यमि
 दंततः ॥ इति रक्तशूलघ्नंतिलपद्मदानम् ॥ अथ कंडूदद्रुहरंतिल

पद्मदानम् ॥ गवांयःपीडनंकुर्यान्नरोरोधनबंधनैः ॥ दद्रुरोगीसो
 तिकंडूयुक्तोभवतिसर्वदा ॥ वक्ष्यामितत्प्रतीकारंपद्मदानादिकर्म
 णा ॥ पद्मसुवर्णनिष्केणनालंराजतेन तिलद्रोणस्याधोद्रोणत्रय
 परिमितास्तंडुलाःस्थाप्याः ॥ तत्रकर्णिकायांसौवर्णभानुंसंपूज्य
 तस्याग्नेय्यांसमिदाज्यतिलैःसूर्य्यतच्चक्षुरितिमंत्रेणहुत्वा व्याहृतिभि
 स्तिलहोमंचकृत्वा आहुतिसंपातशेषंपात्रांतरेधृत्वातेनदद्रुरोगिणोगा
 त्राण्याभ्यज्य अक्षीभ्यामित्यनुवाकेनवाससांसमृज्यअन्यत्सर्वपू० ।
 मंत्रस्तु ॥ देवदेवजगन्नाथदेवरूपपरात्पर ॥ जगतांपरमानंदकार
 कद्युमणेप्रभो ॥ प्रभाकरसुसप्ताश्वदेवेशारुणसारथे ॥ रोधनैर्बधनैश्चैवै
 रूप्यंयच्छरीरके ॥ पूर्वकर्मविपाकेनदद्रुकल्पादिकश्मलम् ॥ पद्मदा
 नेनतुष्टस्त्वंनाशयाशुशरीरके ॥ इति ॥ एवंदत्वातुतत्पद्मंदद्रु
 रोगविवर्जितः ॥ विनाकंडूविनाकुष्ठंत्वग्दोषैश्चविवर्जितः ॥ जाय
 तेरूपवान्सद्यआदित्यस्यप्रभायथा ॥ जीवेद्वर्षशतंमर्त्योधनधान्यस
 मन्वितः ॥ अनंतरंब्राह्मणेभ्यःपायसंविनिवेदयेत् ॥ एवंयःकुरुते
 दानंगौतमोक्तविधानतः ॥ रोगैरन्यैर्विमुक्तश्चमोदतेभानुवद्भुवि ॥
 इति क० ति० ॥ अथ मूकत्वहरंतिलपद्मदानम् ॥ स्वरो
 पवातीवाचांचहर्त्तामूकः प्रजायते ॥ वक्ष्यामितत्प्रतीकारंयेन
 संपद्यतेसुखम् ॥ अष्टपलात्मकेताम्रपात्रेपलमितसुवर्णनिर्मितपद्मंरक्त
 वस्त्रवेष्टितंपूर्ववत्तिलराशौनिधायतत्रषोडशोपचारैःसूर्य्यसंपूज्य ॥
 तत्रमंत्रः ॥ ब्रह्मणःसदनंत्वंहिविष्णोरुत्तमनाभिजः ॥ अभिप्री
 तिकरो भानोरग्रेरुद्रस्यचैवाहि ॥ गृहाणपूजामेतांत्वंसर्वक्लेशविनाश
 कः ॥ ततआग्नेय्यांसाविद्याष्टाक्षरेणसमित्तिलहोमश्चित्रमित्यनेनआ

ज्यहोमःकर्त्तव्यः ॥ अग्रेरुत्तरतःकलशंसंस्थाप्य अन्यत्सर्वपूर्वव
 त्कर्त्तव्यम् ॥ ममवाचउपघातवाग्धरणादिदोषजनितमूकत्वनिर्हर
 णार्थमित्यादिसंकल्पयेत् ॥ दानमंत्रस्तु ॥ यत्प्राग्वाचांनिरोधे
 नवैरूप्यममदेहजम् ॥ अवभेदभवंतीब्रंदुःखरोगाकरंतथा ॥ त
 त्सर्वनाशयंतवत्रब्रह्मसूर्यशिवाग्रयः ॥ त्रिदशाद्यायेचदेवाहविष्मंत
 स्तथाभुवि ॥ इति ॥ एवंदत्वातुतत्पद्ममाचार्यायातिभक्तितः ॥
 पृष्ठतस्तमनुब्रज्यहंगभेदाद्विमुच्यते ॥ इति मू०ति० ॥ अथ त्रिप
 द्मपंचकदानम् ॥ अश्वदानंप्रवक्ष्यामित्रिपद्ममिति विश्रुतम् ॥
 आयुष्यंश्रीकरंपुण्यमारोग्यंपापनाशनम् ॥ व्याधिग्रस्तेचदातव्यं
 दुस्स्वमाद्भुतदर्शने ॥ अथान्यस्मिन्भयेप्राप्तेसर्वरोगप्रशान्तये ॥ गोमयो
 पलितभूमौतिलाढकोपरि अष्टदलेसुवर्णपद्मंधृत्वातत्रब्रह्माणंपूजयि
 त्वादद्यात् ॥ तत्रमंत्रः ॥ संप्रीयतांमेभगवानात्मभूश्चतुराननः ॥ दानेना
 नेनसर्वात्माजगत्स्रष्टाजगत्पतिः ॥ ततोद्वितीयंतंडुलैःकृत्वातत्रविष्णुं
 संपूज्यदद्यात् ॥ मंत्रः ॥ संप्रीयतांमेभगवान् परमात्माजगन्मयः ॥
 दानेनानेनविश्वात्मापरमःपुरुषोत्तमः ॥ ततस्तृतीयंलवणेनकृत्वात
 त्रशिवंसंपूज्यदद्यात् ॥ मंत्रः ॥ संप्रीयतांमेभगवाञ्छंकरःशंकरो
 तुमे ॥ दानेनानेनविश्वात्माचंद्रार्द्धकृतशेखरः ॥ ब्रह्मादीनामूर्तिवि
 धानंधान्यपर्वतदानेद्रष्टव्यम् ॥ इत्यश्वदानम् ॥ अथातिलरंजक
 दानम् ॥ पंचरंगद्वादशारचक्रे अव्रणंतिलपूर्णकुंभनिधाय चंद्राका
 रासौवर्णीप्रतिमातत्रस्थाप्या ॥ तस्मिन्निद्रंसंपूजयेत् ॥ दानमंत्रः ॥
 भूगंधपतिरीशानःशक्ररूपीतिलाशयः ॥ न्यासोत्थंपृथिवीजातं
 ममपापंव्यपोहतु ॥ इतिकृत्वाविनश्यतिपापानिक्षितिजानिच ॥

भोजनेयानिहिंस्यंतेस्थावराणिचराणिच ॥ कंडूतिवमनेया
निशवमद्यादिगंधयोः ॥ घ्राणेघ्राणेगवांगंधेश्रोत्रियस्यातुरस्यच ॥
पुनःशिवपुरेतिष्ठेद्यावदिद्राश्चतुर्दश ॥ इतिति० ॥ अथतिल
पीठदानम् ॥ तिलपीठमथोवक्ष्येसारदारुमयेशुभे ॥ पीठेर
त्निद्रयायामेतिलपूर्णेसुभित्तिके ॥ व्योमाधिपंगणेशानरूपिणंशिव
मर्चयेत् ॥ शुक्लगंधानुलेपनादिभिःसंपूजयेत् ॥ दानमंत्रः ॥
व्योमोर्ध्वनिपतिःशुभोगणनाथस्तिलाश्रयः ॥ व्योमशब्दश्रु
तिप्राप्तपापभीशोव्यपोहतु ॥ इतिदत्तेस्यनश्यंतिपापान्याकाशजा
निच ॥ अनिबद्धकथोत्थानिपरनिंदाभवानिच ॥ कूटसाक्ष्यसमु
त्थानिपैशून्यजनिनानिच ॥ वेदनिंदागुरोर्निंदातयोश्चश्रवणेनच ॥
हंतिपापान्यशेषाणितिलपीठःप्रदानतः ॥ शिवलोकेचकल्पांश्चमो
दतेदशपंचच ॥ इतितिलपीठदानम् ॥ अथतिलादर्शदानम् ॥
पूर्वोक्तकल्पितेपीठेचतुष्कुंभपरिष्कृते ॥ आदर्शविमलंन्यस्यतत्र
देवंमनोमयम् ॥ विष्णुरूपधरंशंभुंविन्यस्यपरितोन्यसेत् ॥
पूजनादिपूर्ववत् ॥ दानमंत्रः ॥ मनोमयनमस्तेस्तुसौम्यरूप
वृषध्वज ॥ नमःकृतानिपापानिसर्वाण्यांशुविनाशय ॥ इति
दत्तेस्यनश्यंतिमानसानिकृतानिवै ॥ परद्रोहप्रवृत्तानिकामलो
भोद्भवानिच ॥ क्रोधजानिचसर्वाणिपापानिचविशेषतः ॥ अवा
च्यवाचनीयानिअध्येयध्यानजानिच ॥ मदनोत्सवजातानिको
धोद्भूतानियानिच ॥ ध्येयान्यावृत्तिवृत्तानिनश्यंतिसकलान्यपि ॥
शिवलोकेवसेद्वर्षाण्यर्बुदान्दशकामतः ॥ इति तिलपीठदानम् ॥
अथ तिलकुंभदानम् ॥ तिलपूर्णकुंभंत्रिकोणमंडलेसंस्थाप्य

तत्रसौवर्णप्रतिमायांशिवरक्तचंदनकरवीरादिभिः ॥ संपूज्यआ
दर्शसहितंदद्यात् ॥ तत्रमंत्रः ॥ वह्निरूपपतिःशंभुर्वह्निरूपीतिला
श्रयः ॥ तेजोरूपंकृतंपापंचाक्षुषंचव्यपोहतु ॥ इति दत्तेस्यनश्यंतिपा
पान्यभिकृतानिच ॥ पाकहोमेषुकाष्ठेषुहिंस्यंतेयानिवह्निना ॥
अंगारवनदाहादिसंभवानिचयानिवै। विरुद्धकरणोत्थानिरूपयागोद्भ
वानिच ॥ परदारपरद्रव्यपुत्रदर्शनजानिच ॥ शवादिदर्शनोत्थानिने
त्रदोषकृतानिच ॥ यएवंकुरुतेदानंशिवभक्त्याप्रयत्नतः ॥ शिवलोके
वसेत्कल्पत्रितयंनात्रसंशयः ॥ इति तिलकुंभदानम् ॥ अथाहंका
रदानम् ॥ तिलपीठोक्तवत्सर्वमादौप्रकल्प्य विष्वगष्टांगुलायंतराजतं
पीठंतत्रधृत्वा तस्मिन्हंकारंपुरुषाकारंवज्रशक्तिधरंकृत्वापरितो
नैगमेशं विशाखंकुमारं गुहंचप्राङ्मूर्तिषुसंपूज्य अन्यत्सर्वपूर्वव
त्कुर्यात् ॥ दानमंत्रः ॥ अहंकारपतेदेवगुह्यरूपदुरंतक ॥ अभि
मानकृतादोषात्सर्वस्मात्पाहिमांप्रभो ॥ इति दत्तेस्यनश्यंतिपा
न्यहंकारजानितु ॥ पारुष्यस्त्रीनिषेध्यादिविप्रक्षत्रियजानिच ॥ तानि
सर्वाणिनश्यंति यानिकृत्यविलंघनैः ॥ अनात्मन्यात्मबुद्ध्यातुगृहक्षे
त्रादिसंगमे । अन्यानियानिपापानितानिनश्यंतिसर्वतः इत्यहंकारदा
नम् ॥ अथैकादशरुद्रःतिलदानम् ॥ अतःपरंप्रवक्ष्यामितिल
दानमनुत्तमम् ॥ यद्वत्वापुरुषःस्त्रीवावैरचिलोकमामुयात् ॥ आयु
रारोग्यदंपुण्यंसर्वपापप्रणाशनम् ॥ शिवप्रीतिकरंनृणांपुत्रवृद्धिक
रंपरम् ॥ एकादशविप्रानेकादशारुद्रबुद्ध्यार्च्यप्रत्येकर्मडले । एकादश
पात्रेषुप्रस्थद्वयपूरितेषुहैमेषुरुद्रान्संपूज्य यथाकाममुल्लिख्यदद्यात् ॥
रुद्रायथा ॥ मृगव्याधश्चशर्वश्वनैर्ऋतिश्वमहायशः ॥ अजैकपाद

हिर्वृक्षयः पिनाकीचपरंतपः ॥ वहनोत्थशिराश्चैवकपालीचम
 हाद्युतिः ॥ स्थाणुर्भवश्चभगवान् रुद्राणकादशास्मृताः ॥ इति एका
 दशरुद्र तिलदानम् ॥ अथ तिलगर्भदानम् ॥ अतःपरंप्रवक्ष्या
 मितिलगर्भमनुत्तमम् ॥ यत्संप्रदानान्मनुजोदीर्घमायुरवामुयात् ॥
 अपमृत्युजयोपायोव्याधिनिर्मोक्षणःक्षमः ॥ जन्मर्क्षस्यग्रहोपरो
 धेव्याध्युत्पातोदयेचकार्यः ॥ पूर्वोक्तेमंडलेअर्द्धाढकास्तंडुलास्त
 न्मध्येअष्टपत्रंसौवर्णपद्मंनवरत्नयुतंकृत्वासंमतात्तिलैःपरिष्ठांकृत्वा
 तत्पद्मं यस्यैयज्ञियोगर्भोयस्यैयोनिर्हिरण्यमयादित्येणसंपूज्य
 त्र्यंबकमितिमृत्युंजयमंत्रेणन्यासान्कृत्वा पंचब्रह्ममंत्रैःसद्योजाता
 दिभिःप्रतिष्ठाप्य ॥ तंपद्मंपुनस्तिलैस्संगर्भ्यपुनःसंपूज्य ॥ शतावृत्तं
 मृत्युंजयंपठित्वा ॥ पुनस्तंपद्मंगर्भस्थानादुत्थाप्यजलेनस्नाप्यपा
 वमानीतिसूक्तेनाभिषिच्य ॥ विनीतायसुपूजितायब्राह्मणाययथा
 काममुल्लिख्यदद्यात् ॥ प्रीयतांभगवान्शंभुश्चंद्रमौलिरितिब्रुवन् ॥
 अत्रदानेदेहनिर्मुक्तःशुद्धःशंकरोस्मीतिचितयेत् ॥ अनेनविधि
 नायस्तुतिलगर्भसमाचरेत् ॥ अकालमृत्युर्नभवेत्तस्यनास्त्यत्रसंश
 यः ॥ व्याधीनांविप्रमोक्षःस्यान्महतामपिनिश्चयः ॥ ग्रहदोषाश्चनश्यंति
 प्रसीदंतिब्रह्माःपुनः ॥ उत्पातानांप्रशांतिश्चत्रिविधानामपिक्षणात् ॥
 इति नानाविधतिलदानविधिः ॥ अथ हस्तिदानविधिः ॥ दद्या
 द्रजंपुराणोक्तंमूल्यंपंचशतानिवा ॥ वित्तानुसारात्तत्रापिकनिष्ठोत्त
 ममध्यमम् ॥ तत्रापिस्वरूपतोगजदानमुत्तमम् ॥ तन्मूल्यंहेममाष
 शतपंचकदानंमध्यमम् ॥ शतत्रयहेममाषदानंकनिष्ठमिति ॥ रूप्य
 स्थूणालंकरणंस्वर्णताराविभूषणम् ॥ सदक्षिणंवित्तशक्त्यादत्वा

शिवपुरं व्रजेत् ॥ स्थूणारज्जुः ॥ तारामौक्तिकजालीगजालंकारः
 ॥ तथाच ॥ यथालाभोपपन्नं वायः प्रयच्छति दंतिनम् ॥ ब्राह्मणाय द
 रित्राय स्वर्गलोके महीयते ॥ इति ॥ ततो गजदानां गंशि वंद्विजं च संपू
 ज्य दद्यात् ॥ दानवाक्यं तु ॥ अथेत्यादि० मम सर्वपापक्षयो
 त्तरसिद्धचारणसेवितार्ककिंकिणीजालमालिविमानारोहणोत्तरानेक
 मन्वंतरावच्छिन्नाक्षय्यदेवराजत्वांते विष्णुपुरावाप्तिकामस्तत्प्रीति
 कामश्च सालंकृतायामुक्तशर्मणे ब्राह्मणायेमंगजं कक्षारज्जुस्थिरासन
 सहितं कांचनमालादिकीर्णचामरगंधपुष्पाद्यलंकृतं प्रजापतिदेवतंतुभ्य
 महंसंप्रददेन ममेति करंधृत्वादद्यात् ॥ करः शुंडादंडः ॥ कृतैतद्ग
 जनदानकर्मणः सांगता सिद्धयर्थं भिदं सुवर्णमग्निदेवतं दक्षिणात्वेन तुभ्य
 महंसंप्रददेन ममेति दद्यात् ॥ ततो द्विजोगजमारुह्य देवस्य त्वेति यथा
 शाखं कामस्तुतिं पठित्वा प्रतिगृह्णामीति स्वस्तीति वदेत् ॥ यजमानो
 गजंप्रार्थयेदतैर्मन्त्रैः ॥ ऐरावतश्चतुर्दंतोगजानां नायकस्तुनः ॥ दिग्दं
 तिनां पूज्यतमः पापं क्षयतु मे प्रभुः ॥ सुप्रतीकगजेन्द्रत्वं सरस्वत्याभिषे
 चक ॥ इंद्रस्य वाहनं श्रेष्ठं सर्वदेवैस्तु पूजितं ॥ गजेन्द्रमत्तमातंगदैत्यसै
 न्यविनाशक ॥ तव दानेन मेशांतिः सर्वदास्तु महत्सुखमिति ब्राह्मणे
 स्तथास्ति वति वदेत् ॥ ततो यजमानः भूयसीं दक्षिणां दद्यादिति स्वरूप
 तो गजदानम् ॥ अथ काम्यगजदानानि ॥ तत्रादौ मुखरोगह
 रगजदानम् ॥ वाग्विरोधंगुरोः कृत्वामुखरोगी भवेन्नरः ॥ तस्य
 दानेन विहितः प्रतीकारो यमुच्यते ॥ सौवर्णराजतं ताम्रं पलेनार्द्धपले
 न वा ॥ कारयेत् करिणं सौम्यं रुक्मदंतं परिच्छदम् ॥ मुक्तापुच्छं
 मणिनेत्रं पीतवस्त्रयुतं धान्यराशिस्थं संपूजयेत् ॥ धान्यराशिं रत्राष्ट

द्रोणमिता ॥ ब्राह्मणंसलक्षणंसंपूज्यसमिदाज्यतिलैर्हुत्वाशुकंचर
तीतिमंत्रेण यथाकाममुल्लिख्यदद्यात् ॥ तत्रमंत्रः ॥ सुप्र
तीकगर्जेद्रत्वंसरस्वत्याभिषेचक ॥ इंद्रस्यवाहनंशश्वत्सर्वदेवैश्चपू
जित ॥ दानेनानेनदत्तेनमुखरोगंविनाशय ॥ ततोब्राह्मणान्भो
जयेद्भूयसींदक्षिणांचदद्यात् ॥ इति मु० रो० दानम् ॥ अथ
व्रणरोगघ्नगजदानम् ॥ पलेनवातदर्द्धेनसुवर्णेनचतुर्दंतवारणंकु
त्वापूर्वकदद्यात् ॥ पूजनमंत्रः ॥ चत्वारोदिग्गजायेचपुष्पदंता
दयश्चये ॥ सार्वभौमादयोयेचत्वादरात्तोषयामितान् ॥ घृणिमंत्रे
णातिलाज्यसमिद्धोमंकृत्वाब्राह्मणंवासोलंकारादिभिर्वृत्वायथाकाम
मुल्लिख्यदद्यात् ॥ तत्रमंत्रः ॥ ऐरावतश्चतुर्दंतोगजानानायकस्तु
षः ॥ दिग्दंतिनांपूज्यतमोव्रणक्षपयतुप्रभुः ॥ ततोब्राह्मणभोजनं
भूयसींदक्षिणांचदद्यात् ॥ एवंकृतेव्रणबाधातत्क्षणादेवसर्पति ॥ ते
नैवव्रणिनानूनंकार्थमारोग्यहेतवे ॥ एवमेवशिवादिदेवताभ्यो
गजदानंस्वर्गापवर्गदम् ॥ विधानंपूर्ववदेव ॥ अथ दासीदा
नम् ॥ स्थिरनक्षत्रसंयुक्तेसौम्येसौम्यग्रहान्विते ॥ दानंकालेप्रशं
संतिसंतःपर्वाणिवापुनः ॥ अलंकृत्ययथाशक्त्यावासोभिर्भूषणैस्त
था ॥ ब्राह्मणायप्रदातव्यायजमानेनशक्तितः ॥ पंचवर्षाधिकासातुच
त्वारिंशत्समावधि ॥ दासीद्विजायदातव्यादासीदानेत्वयंविधिः ॥ दान
वाक्यंतु ॥ अद्येत्यादि० गोत्रायशर्मणेसालंकृतायसुवर्णालंका
रवतींगंधपुष्पार्चितांप्रजापतिदेवत्यांअक्षयसुखावाप्तिकामस्तुभ्यमहं
संप्रददेनममेति ॥ शिरसिधृत्वादद्यात् ॥ प्रार्थनायथा ॥ इयं
दासीमयातुभ्यंश्रीवत्सप्रतिपादिता ॥ सर्वकामकरीभोग्यायथेष्टंभद्र

मस्तुमे ॥ ततःसुवर्णदक्षिणां दत्त्वा ॥ नमस्कुर्यात् ॥ अनुगत्वा तु सी-
 मानंद्विजं चैव विसर्जयेत् ॥ दासीं समीक्ष्य बहुशो गृहकर्मदक्षां यो ब्राह्म-
 णाय कुलशीलवते ददाति ॥ विद्याधराधिपतिभिस्त्वभिपूजितो सौ-
 मर्त्यः प्रयाति स्वजनैः सह विष्णुलोकम् ॥ एवं देवताभ्यो दासीदानं
 कर्त्तव्यम् ॥ तदुपलक्षणार्थं शिवाय यथा ॥ योलं कृत्य स्त्रियं शं-
 भोरुत्तमां विनिवेदयेत् ॥ सोऽश्वमेधस्य यज्ञस्य फलं शतगुणं लभेत् ॥
 सुविनीतां स्त्रियं दासीभृतकार्थं निवेदयेत् ॥ नरमेधस्य यज्ञस्य फलं श-
 तगुणं लभेत् ॥ अथ रथदानम् ॥ रथं चतुर्वलीवदैरुद्धं धान्यावृतं त्रिधा ।
 वित्तानुसारात् स वैश्वरथोपकरणैर्युतम् ॥ सदक्षिणं च विप्राय दत्त्वा
 शिवपुरं व्रजेत् ॥ अस्य दानविधानं तु धनुःसंक्रमणदानविधा-
 वुक्तम् ॥ गंत्रीरथविशेषदानं च तत्रैव ॥ अथ रथदानप्रसंगे
 न शिविकादानं च तत्रैवोक्तम् ॥ भूमिदानं त्वतिदानविधावु-
 क्तम् ॥ अथ गृहदानारूपं महादानम् ॥ तद्विधिस्त्वतिदा-
 नाध्याये कथितः ॥ अथ गृहदानप्रसंगेनाश्वलायनगृह्योक्ता वास्तु-
 शांतिः स्वल्पतरा ॥ तद्यथा ॥ काष्ठादिनिर्मितं संपन्नं धान्यादिस-
 र्वोपस्करीः ॥ शोभने मुहूर्ते ब्राह्मणैः सह तूर्यघोषेण गृहं प्रविश्या-
 गारमध्ये प्राङ्मुख उपविश्य दर्भेषु दर्भान्धारयमाणः पत्न्या सह आचम्य
 प्राणानायम्य देशकालौ संकीर्त्य ममास्य वास्तोः शुभतासिद्ध्यर्थं वा-
 स्तुशांतिकरिष्ये ॥ इति संकल्प्य ॥ तदंगत्वेन गणपतिपूजनं पुण्याहं
 वाचनं मातृकापूजनं नंदीश्राद्धं च कृत्वा पूर्वोक्तवास्तुपीठदेवतास्थाप-
 नार्चनहोमवलिदानं त्रिसूत्र्या गृहवेष्टनमभिषेचनब्राह्मणभोजनसं-
 ल्यान्तं कृत्वा आश्वलायनगृह्योक्ता वास्तुशांतिं कुर्यात् शुचिदेशे

चतस्रःशिलाःसंस्थाप्यतासुदूर्वानिधायतत्रमणिकंसंज्ञकभांडंसंस्था
पयेदेतैर्मन्त्रैः ॥ पृथिव्याअधिसंभवति अरंगरोवावदीति त्रेधा
बद्धोवरत्रया ॥ इरामुह प्रशंसति अनिरामपबाधतामिति वा ॥ ततोम
णिकेजलमांसिचेदनेनमंत्रेण ॥ ऐतुराजावरुणोरेवतीभिरस्मिंस्था
नेतिष्ठतुमोदमानः ॥ इरांवहंतोघृतमुक्षमाणाभिन्नेणसाकंसहसंविशंति
ति ततस्तज्जलंपात्रांतरेणादायतस्मिन् दूर्वाशमीशाखोदुंबरशाखा
व्रीहियवान्फलं हिरण्यं चक्षिस्वा दूर्वाभिः शाखाभ्यां च सर्वगृहं प्रागादि
तः प्रदक्षिणं परिव्रजन् प्रोक्षेदनेन सूक्तेन शंन इन्द्राग्नीति पंचदशर्चस्य सू
क्तस्य वसिष्ठो विश्वेदेवास्त्रिष्टुप् गृहप्रोक्षणे वि० सकृत् सूक्तपाठः ॥ इति
नारायणवृत्यनुरोधात् ॥ वस्तुतस्तु शंतातीयेनेति इच्छेद्यावेति वर्गपं
चकैरित्यन्ये ॥ एवं सति समुच्चयेन कोपिविरोधः । तद्यथा इच्छेद्यावेति पंच
विंशर्चस्य सूक्तस्याप्तमुत्तमम् ॥ अश्विनीयौ पादालिङ्गोक्तदेवता ॥ ज
गस्त्योन्त्ये त्रिष्टुभो ॥ गृहप्रोक्षणो विनि० ॥ इच्छेद्यावापृथिवीवर्ग ५
श्रोत्रापि सकृदेव सूक्तपाठः कार्यः ॥ ततः प्रागादितस्त्रिरविच्छिन्ना
मुदकधारां दद्यादानेनापोहिष्ठेभ्युचस्यांवरिषः ॥ सिंधुद्वीपः ॥
आपोगायत्री ॥ गृहस्य समंताद्द्वारायां विनि० ॥ ॐ आपोहिष्ठाम
योभु० ३ ॥ अत्रापि सकृदेव मंत्रपाठः ॥ ततो वास्तुपीठान्नैर्क
त्यां पश्चिमायां वा कुण्डे स्थंडिले वा गृह्याग्निं वरदनामकं संस्थाप्य चत्वारि
शृङ्गेति ध्यात्वाऽस्मिन् वास्तोष्पतिस्थालीपाके अन्वाधानं करिष्ये ॥
इति संकल्प्य अस्मिन् न्वाहिते गनावित्यादि चक्षुषी आज्येनेत्यंतमुक्त्वा
त्र प्रधानं वास्तोष्पतिं चतुर्वारं चरुणा शेषेण स्विष्टकृतमित्यादिसद्यो य

क्ष्येदत्यंतमुत्कृष्टान्वाधायेध्मावर्हिषीसन्नह्यपारिसमूहनादिपूर्णपात्रनि
धानांतंकृत्वावास्तोष्पतयेचतुःकृत्वा ॥ तूष्णींनिरूप्यतत्संख्ययात
थैवप्रोक्ष्यावधाताद्याज्यभागांतंकृत्वा वदानधर्मेणचरुमवदायवा
स्तोष्पतइति चतसृणांवसिष्ठोवास्तोष्पतिंस्त्रिष्टुप्अंत्यागायत्री
वास्तोष्पतिप्रदानचरुहोमेवि० ॐ वास्तोष्पतेप्रतिजानी० ष्यदेस्वा०
अत्रक्रमंतेस्वाहाकारंपठन् जुहुयात् ॥ नस्वाहाकारातिहोमः ॥
गृह्येतुप्रत्यृचंहुत्वेत्युक्तेः ॥ एवंसर्वत्रवास्तोष्पतयइदंन
मम ॥ पुनःचरुमवदायॐवास्तोष्पतेप्र० ॥ वास्तोष्पतयइदं० २ ॥
ॐवास्तोष्पतेशग्मया० वास्तोष्पतयइदं० ॥ ३ ॥ ॐ अमी
वहावास्तोष्पते० ॥ वास्तोष्पतयइदं० ॥ ४ ॥ ततः
स्विष्टकृदादिहोमशेषंसमाप्यशिष्टेनचरुणान्येनस्वादुव्यंजनपायसा-
दियुक्तेनशतंतदर्द्धंवाशक्त्यावाब्राह्मणान्भोजयेत् ॥ होमात्पूर्व
मन्यःपाकोनकार्यः ॥ ततःशिवंवास्तुशिवंवास्तुशिवंवास्तिवातित्रिः
प्रयुक्तःयजमानःसुहृद्युतोभुंजीतेति ॥ विशीर्णगृहसज्जीकरणेपीष्य
तेवास्तोष्पतिस्थालीपाकः साधारणशांतिवत् ॥ इत्याश्वलायनगृह्यो
क्तावास्तुशांतिः ॥ अथगृहदानप्रयोगः ॥ यजमानःकृतनित्यक्रियः
पुण्यकालेगृहमध्येदक्षिणभागेचंदनेनाष्टदलंपद्मंविलिख्यतदुपरिप्रस्थ
मात्रंतिलान्निक्षिप्यतदुपरिशिष्यांसोपस्करांस्थापयित्वाशिष्योपरि
सौवर्णमयींलक्ष्मीनारायणप्रतिमामग्न्युत्तारणपूर्वकंपंचामृतादिना
भिषिच्यसंपूज्यप्रतिग्रहीतारंचसपत्नीकंवृत्वातंकरे गृहीत्वामंग
लतूर्यघोषेणमंत्रैर्गृहंप्रवेशयेत् ॥ तेचमंत्राः ॥ एह्येहिनारायणदि
व्यरूपसर्वाभिरैर्वदितपादपद्म ॥ शुभाशुभानंदशुचामधीशलक्ष्मीयुत

स्त्वंचगृहं गृहाण ॥ नमःकौस्तुभनाथायहिरण्यकवचायच ॥ क्षीरो
 दार्णवसुतायजगद्धात्रेनमोस्तुते ॥ नमोहिरण्यगर्भायविश्वगर्भायवै
 नमः ॥ चराचरस्यजगतोगृहभूतायवैनमः ॥ भूलोकप्रमुखालोका
 स्तवदेहेष्यवस्थिताः ॥ नंदंतियावत्कल्पांतंतथास्मिन्भवनेगृही ॥
 त्वत्प्रसादेनदेवेशपुत्रपौत्रावृतोगृहे ॥ पंचयज्ञक्रियायुक्तोवसेदाचंद्र
 तारकमिति ॥ ततस्तंपूर्वस्थापितशय्यायामुदङ्मुखमुपवेश्यसपत्नी
 कंयथाविभवंवस्त्रालंकारादिभिःसंपूज्यस्वयमासनेप्राङ्मुखोदर्भेष्वा
 सीनोदर्भान्धारयमाणःपत्न्यासहप्राणानायम्य देशकालौसंकीर्त्यम
 मसमस्तपापक्षयपूर्वकंकल्पकोटिशतावधिब्रह्मलोकनिवासनकामः
 शिलाकाष्ठपक्वेष्टकादिनिर्मितयथोपपत्तिसंपादितताम्रादिभाजनसर्व
 धान्यलवणघृततैलगुडशर्करागोमहिषीवलीवर्ददासदासीमंचकतूलि
 काद्वयवितानादर्शतांबूलायतनैलालवंगादिवर्षपर्याप्तसर्वोपकरणा
 न्वितंसदीपिकाप्रद्योतितंविश्वकर्मदेवतंशक्रदैवत्यंदेवगृहंगोत्रायशर्म
 णे अमुकशाखाध्यायिनेसपत्नीकायसालंकृतायसुपूजितायलक्ष्मी
 नारायणप्रतिमासहितंतुभ्यमहंसंप्रददेनममेतिदत्त्वापठेत् ॥ मंत्रौतु ॥
 इदंगृहंगृहाणत्वंसर्वोपस्करसंयुतम् ॥ तवविप्रप्रसादेनममसंतु
 मनोरथाः ॥ गृहंममबिभूत्यर्थंगृहाणत्वंद्विजोत्तम ॥ प्री
 यतांमेजगद्योनिवास्तुरूपीजनार्दनः ॥ ततः प्रतिग्रहीतागृहम
 ध्यस्तंभंबहिर्द्वारंदेहलीवासंस्पृश्यदेवस्यत्वेतियजुषाप्रतिगृह्यस्वस्ती
 त्युक्तायथाशाखंकामस्तुतिपठेत् ॥ ततः सुवर्णसहस्रमा
 रज्य एकसुवर्णपर्यंतंयथाशक्त्यावित्तशाठ्यविवर्जितांदक्षिणांदद्या
 त् ॥ ततःपादुकोपानच्छत्रचामरादिकंदत्त्वासंपन्नंगृहोपस्कारादी

त्युक्तासर्वसुसंपन्नसंपूर्णमेवास्तिवतिप्रतिवचनंदयात् ॥ ततोब्राह्म
 णान्संपूज्यभूयसीदक्षिणादत्वाशिषोगृण्णीयात् ॥ प्रमादात्कुर्वतां
 कर्म० यस्यस्मृत्येतिकर्मेश्वरार्पणंकुर्यात् ॥ गृहदानफलमुक्तंमा
 त्स्ये ॥ यएवंसर्वसंपन्नपक्षेष्टविनिवेदयेत् ॥ कल्पकोटिशतं
 यावद्ब्रह्मलोकेमहीयते ॥ शैलजंदारुजंवापियोदयाद्विधिपूर्वकम् ॥
 वसेत्क्षीरार्णवेरम्येनारायणसमीपतः ॥ मृन्मयंवापियोदयाद्गृहंसो
 पस्करान्वितम् ॥ पुरेषुलोकपालानांप्रतिमन्वंतरेवसेदिति ॥ अत्रप्र
 विश्यसंस्पृश्यवाप्रतिगृण्णीयादित्युक्तेःप्रविश्यगृहद्वारदेहलीदेहल्यांप्र
 तिग्रहः कर्त्तव्यः ॥ तथैवसंस्पृश्यस्थूणांद्वारदेहलीवासंस्पृश्यप्रतिगृह्णी
 यादितिसांप्रदायिकाः ॥ इति गृहदानप्रयोगः ॥ अथमठदानम् ॥
 कृत्वा मठं प्रयत्नेन शयनासनसंयुतम् ॥ तृणैराच्छादितं चैव वेदिका ॥
 भिः सुशोभितम् ॥ पुण्यकाले द्विजेभ्यो थयतिभ्यो वा निवेदयेत् ॥
 सर्वान् कामान्वाभोतिनिष्कामो भोक्षमाभुयादिति ॥ इति मठदानम् ॥
 अथ धर्मशालादानम् ॥ कुर्यात्प्रतिश्रयगृहं पथिकानां हितावहम् ॥
 निजगेहैकदेशं वा साधूनां यो निवेदयेत् ॥ प्रतिश्रयो धर्मशाला ॥
 तथा ॥ अक्षय्यं पुण्यमुद्दिष्टं तस्य स्वर्गापवर्गदम् ॥ सर्वकामसमृद्धौ
 सौदेववद्वि विमोदते ॥ तथा च ॥ प्रतिश्रये सुविस्तीर्णे कारिते स जलं
 धने ॥ दीनानाथजनार्थाय वद किञ्च कृतं भवेदिति ॥ इति धर्मशाला
 दानम् ॥ अन्यच्च ॥ शंकरात्परमं नान्यदतस्तस्मै विकल्पयेत् ॥
 यतीनामाश्रयं वापि कृत्वा पक्षेष्टकामयम् ॥ विकल्पः ॥ संकल्पः ॥
 तथा—तथागवार्थेशरणं शीतवातहरं शुभम् ॥ आसप्तमंतारयित्वा
 कुलंसंतरते स्वयम् ॥ प्रतिश्रयमतिथीनामाश्रयं ॥ कुर्यात्प्रतिश्रयगृहं

पथिकानां हितावहम् ॥ निजगेहैकदेशे वा साधून् पांथाग्निवासये
त् ॥ अक्षय्यं पुण्यमुद्दिष्टं तस्य स्वर्गापवर्गदम् ॥ सर्वकामसमृद्धौ
सौदेववद्विविमोदते ॥ अथ कन्यादानम् ॥ सहस्रमेव धेनूनां शतं
वानडुहांसमम् ॥ दशानुडुत्समं यानं दशयानसमो हयः ॥ दशवाजिसमा
कन्याभूमिदानं च तत्समम् ॥ तस्मात्सर्वेषु दानेषु कन्यादानं विशिष्यते
इति ॥ अग्निपुराणे ॥ श्रुत्वा कन्याप्रदानं च पितरश्च पितामहाः ॥
विमुक्ताः सर्वपापेभ्यो ब्रह्मलोकं व्रजन्ति ॥ इति ॥ देवलः ॥ तिस्रः
कन्यायथान्यायं पालयित्वानिवेद्य च ॥ न पितानरकं याति नारी वा
स्त्री प्रसूयिनीति ॥ वशिष्ठः ॥ द्वादशक्षितिगौरीणां सप्तजन्मानुगं फलम् ॥
धर्मेण विधिना दातुः समं गोत्रेण युज्यतः ॥ इति ॥ ऋष्यशृंगः ॥
वरगोत्रं समुच्चार्य प्रपितामहपूर्वकम् ॥ नामसंकीर्त्तयेद्विद्वान्
कन्यायाश्चैव मेव हि ॥ तिष्ठेदुदङ्मुखो दाता तिष्ठेत्पूर्वमुखो वरः ॥ मधु
पर्कार्चितायै नान्तस्मै दद्यात्सदक्षिणाम् ॥ उदपात्रं तदा दायमंत्रेणा
नेन दापयेदिति ॥ तिष्ठेदिति ॥ अनुपविष्ट इत्यर्थः ॥ गौरीं क
न्यामिमामित्यादिपुत्रपौत्रप्रवर्धिनीमित्यंतं प्रयोगे वक्ष्यामः ॥ भू
मिधेनूश्च दासीं च वासांसि च स्वशक्तितः ॥ महिषी वाजिनश्चैव द
द्यात्स्वर्णमणीनपीति ॥ ततः स्वगृह्यविधिना होमाद्यं कर्म कारयेत्
तथाचारं विधेयानि मांगल्यकुतुकानि चेति ॥ अथ कन्यादानप्र
योगः ॥ तत्रादौ यथाशाखं मधुपर्केण संपूज्य प्राङ्मुखीमुपविश्य पि
त्रादिको वधूवरदक्षिणतः स्वदक्षिणस्थपत्नी सहित उदङ्मुखो दर्शं प्वा
सीनो दर्भान्धारयमाणो देशकालौ संकीर्त्त्य मम समस्तपितृणां निरतिश
यसानंदं ब्रह्मलोकावाप्त्यादिकन्यादानकल्पोक्तफलावाप्तये अनेन वरे

णास्यांकन्यायामुत्पादयिष्यमाणसंतत्याद्वादशावरान्द्वादशपरान्
 पुरुषान् पवित्रीकर्तुं आत्मनश्चलक्ष्मीनारायणप्रीतयेब्राह्म
 विवाहविधिनाकन्यादानमहंकरिष्ये ॥ इतिकुशाक्षतजलेनसं
 कल्प्यसपत्नीकउत्थायोदङ्मुखएवकन्यांसंप्रगृह्यपठेत् ॥ कन्यां
 कनकसंपन्नांकनकाभरणैर्युताम् ॥ दास्यामिविष्णवेतुभ्यंब्रह्मलो
 कजिगीषया ॥ विश्वंभरःसर्वभूताःसाक्षिण्यःसर्वदेवताः ॥ इमां
 कन्यांप्रदास्यामिपितृणांतारणायच ॥ इतिमंत्रौपठित्वा ॥ स्वद
 क्षिणस्थभार्यादत्तपूर्वकल्पितजलधारामविच्छिन्नानवकांस्यपात्रोप
 रिधृतकन्यांजल्युपरिस्थवरांजलिंदक्षिणहस्तेक्षिपन्वदेत् ॥ कन्या
 तारयतु पुण्यंवर्धताम् ॥ शिवा आपःसंतु ॥ सौमनस्यमस्तु ॥
 अक्षतंचारिष्टंचास्तु ॥ दीर्घमायुःश्रेयःशांतिःपुष्टिस्तुष्टिश्चास्तु ॥
 यच्छ्रेयस्तदस्तुयत्पापंतत्प्रतिहतमस्तु ॥ पुण्याहंभवंतोब्रुवंतु ॥
 स्वस्तिभवंतोब्रुवंतु ॥ ऋद्धिभवंतोब्रुवन्तु ॥ श्रीरस्तिवतिभवं
 तोब्रुवंतु ॥ अस्तुश्रीरितिप्रतिवचनंसर्वत्रज्ञेयम् ॥ अमुकामुकप्रवरोपेतो
 मुकगोत्रोत्पन्नोमुकशर्माहंममसमस्तपितृणामित्यादि ॥ श्रीलक्ष्मीना
 रायणप्रीतयेइत्यंतपूर्वोक्तमुक्ताअमुकप्रवरोपेतायामुकगोत्रायामुक
 प्रपौत्रायामुकपौत्रायामुकपुत्रायामुकशर्मणेवरायश्रीधररूपिणेकन्या
 र्थिनेअमुकामुकप्रवरोपेतामुकगोत्राममुकप्रपौत्रीममुकपौत्रीममुकस्य
 ममपुत्रीममुकदेवीनाम्रींकन्यांश्रीरूपिणींवरार्थिनींयथाशक्त्यलंकृ-
 तांप्रजापतिदैवत्यांधर्मप्रजासहत्वकर्मभ्यस्तुभ्यमहंसंप्रददेकन्यांप्रति
 गृह्णातुभवानितिवरहस्ते सकुशाक्षतजलंक्षिपेत् ॥ प्रजापतिः प्रीय
 तामितिमनसास्मरेत् ॥ नममेति नवदेदितिकेचित् ॥ ततोदाता

गौरीकन्यामिमांविप्रयथाशक्तिविभूषिताम् ॥ गोत्रायशर्मणेत्तुभ्यं
 दत्तांविप्रसमाश्रय ॥ कन्येममाग्रतोभूयाःकन्येमेदेविपार्श्वयोः ॥
 कन्येमेपृष्ठतोभूयास्त्वद्दानान्मोक्षमाप्नुयाम् ॥ ममवंशेसमुत्पन्नापा
 लितावत्सराष्टकम् ॥ तुभ्यंविप्रमयादत्तापुत्रपौत्रविवर्द्धिनी ॥
 धर्मेचार्थेचकामेचनातिचरितव्यात्वयेयम् ॥ नाति चरामीति
 वरः ॥ एवंसमस्तेत्यादि नातिचरामीत्यंतं कन्यादानं त्रिवारं का
 म्यमितिशौनकः ॥ ततोवरःदेवस्यत्वा०भ्यांप्रतिगृह्णामि ॥ ॐ
 स्वस्तीत्युक्ता कन्यायादक्षिणांसमभिमृश्य कइदंकस्माअदादितिय
 थाशाखं कामस्तुतिंपठित्वा पृथ्वीप्रतिगृह्णात्वितिजपित्वा गृहस्था
 श्रमांतर्गतस्मार्तकर्मानुष्ठानाधिकारसिद्धये धर्मप्रजासहत्वकर्मसिद्धय
 र्थंचकन्यांप्रतिगृह्णामीतिवदेत् ॥ ततोदातादेशकालौसंकीर्त्य कृत
 स्यकन्यादानकर्मणःसांगतासिद्धयर्थमिदंसुवर्णमग्निदैवतंदक्षिणात्वेनै
 • तुभ्यमहंसंप्रददे नममेतिवरहस्तेदद्यात् ॥ ॐस्वस्तीतिवरः ॥
 ततोदाता एवमेवजलपात्रभोजनभाजनानि गोमहिष्यश्वगजदासी
 दासभूवाहनालंकारादियथाविभवंसंकल्प्यदद्यात् ॥ अथवासर्वयौ
 तकंविनासंकल्पेनदद्याद्यतःयौतुकागारसहितामितिचकन्यादानसं
 कल्पेब्रूयात् ॥ ततोब्राह्मणभोजनंसंकल्प्यभूयसींदक्षिणांचदद्यात् ॥
 कर्मेश्वरार्पणंकुर्ध्यादन्यदपियथाचारंकार्यविस्तरस्तुप्रयोगरत्नादौज्ञे
 यः ॥ कन्यागृहेभोजननिषेधोयथा ॥ अप्रजायांतुकन्यायांनभुं
 जीतकदाचन ॥ दौहित्रस्यमुखंदष्ट्वाकिमर्थमनुशोचतीति ॥ अथ
 स्थानच्युतस्थापनम् ॥ तत्रादौद्विजस्य ॥ मातापितृविहीनंतुसं
 स्कारोद्बहनादिभिः ॥ यःस्थापयतितस्येहपुण्यसंख्यानविद्यते ॥

राज्ञः ॥ भूमिपालंच्युतराज्याद्यस्तुसंस्थापयेत्पुनः ॥ तस्यवासः
कल्पशतं नाकपृष्ठेन संशयः ॥ साधारणस्य ॥ स्थानभ्रष्टस्ययः
कुप्याद्भूयस्त्वारोपणं नरः ॥ नाकलोकमवाप्नोति चिरं तेनेह कर्मणा ॥
इति ॥ अत्र दशमहादानेकपिलागोदानाख्यं तत्तुषष्टिदानविधावुक्तम् ॥

इति महीधरकृते दानसंग्रहे दशमहादाननिर्देशो नाम
सप्तविंशः कोशः ॥ २७ ॥

अथ विष्णोर्मत्स्यादिदशावतारमूर्तिदानम् ॥ तत्रादावु
पलक्षणार्थमादिवराहदानं यथा ॥ दानमादिवराहस्य कथयामि समा
सतः ॥ पुण्यं पवित्रमायुष्यं सर्वदानोत्तमोत्तमम् ॥ महापापादिदो
षघ्नं पूजितं मुनिसत्तमैः ॥ देयं संक्रमणे भानोर्ग्रहणे द्वादशी तिथौ ॥ य
ज्ञोत्सवविवाहेषु दुःस्वप्नाद्भुतदर्शने ॥ यदावाजायते वित्तं चित्तं भद्रा
समन्वितम् ॥ तदैव तस्य कालः स्यादध्रुवं जीवितं यतः ॥ कुरुक्षेत्रे
त्रादितीर्थेषु गंगाद्यासु नदीषु च ॥ गोष्ठे देवालयेषु वापि रम्येषु वापि गृहां
गे ॥ देयं पुराणविधिना ब्राह्मणाय कुटुंबिने ॥ अव्यंगाय सुशी
लाय वेदवेदांगवादिने ॥ पूर्वोत्तरपृष्ठांगोमयोपलितां कुशास्तरण
युतां भूमिं परिकल्प्य तस्मिन् कृष्णाजिनोपरि द्रोणचतुष्टयतिलान्सं
स्थाप्य तदुपरिवाराहं सुवर्णखुरं रजतदंष्ट्रं पद्मरागविभूषितं रौप्यपा
दं दंष्ट्राग्रैस्वर्णवसुंधरायुतं चक्रगदान्वितं सर्वधान्ययुतं वस्त्रालं कृतं षोड
शोपचारैराराध्य ब्राह्मणं वृत्वा यथाकाममुल्लिख्य दद्यात् ॥ तत्र मंत्रः
वराहाशेषदुष्टानि सर्वपापफलानि च ॥ मर्दमर्दमहादंष्ट्रास्वत्कनक
कुंडलाशंखचक्रासिहस्ताय हिरण्याक्षांतकाय च । दंष्ट्रोद्धृतक्षितिपते
त्रयीमूर्तिमते नमः ॥ इत्युच्चार्य नमस्कृत्य त्रिः प्रदक्षिणीकृत्य अस्वपाद

योःप्रतिग्रहःकार्यः ॥ तत आचार्य्यसंपूज्यान्येभ्यो यथाविभवंभूयसीं
 दक्षिणां दद्यात् ॥ एवमेवमत्स्यादिदशावतारदानविधिर्बोद्धव्यः ॥
 तेषांरूपंतु पृथगेव ॥ यथा ॥ आदौ मत्स्यरूपम् ॥ नरांघ्रिर्मत्स्यरूपीवा
 मत्स्यरूपीजनार्दन इति ॥ कूर्मस्तु मत्स्यवत् ॥ वराहस्य ॥ मधु
 पिंगलवर्णश्चतुर्बाह्यायुर्धैर्युतम् ॥ नरांगंसूकरास्यं चमनाकूपीनंसु
 भीषणम् ॥ श्रीर्वा मकूर्परस्थातु धनानंतौ पदानुगौ ॥ एतद्रूपधरं देवं वराहं
 भुक्तिमुक्तिदम् ॥ नृसिंहस्य ॥ ज्वलदग्निसमाकारं सिंहवक्त्रं
 नरांगकम् ॥ दंष्ट्राकरालवदनं ललज्जिह्वं सुभीषणम् ॥ वृत्ताक्षं जटि
 लंकुच्छमालीढं पीनवक्षसम् ॥ अभेद्यतीव्रनखरं वामोरु कृतदानवम् ॥
 तद्वद्वक्षोदारयंतं कराभ्यां नखरैर्भुशम् ॥ गदाचक्रधरं द्वाभ्यां नरसिंहं
 जगत्प्रभुम् ॥ वामनस्य ॥ कुंडीच्छत्रधरो द्विर्दोर्वा मनःपरिकीर्तितः
 परशुरामस्य ॥ क्षत्रांतकरणं घोरमुद्रहन् परशुंकरे ॥ जाम
 दग्न्यः प्रकर्त्तव्यो रामो रोषारुणेक्षणः ॥ रामस्य ॥ युवा
 प्रसन्नवदनः सिंहस्कंधो महाबलः ॥ आजानुबाहुः कर्त्तव्यो रामो
 बाणधनुर्धरः ॥ बलरामस्य ॥ शंखचक्रधरः कार्प्यो नी
 लोत्पलदलच्छविः ॥ कृष्णो दीर्घद्विबाहुश्च सर्वदैत्यक्षयंकरः ॥
 बौद्धस्य ॥ कषायवस्त्रसंवीतस्कंधसंसक्तचीवरः ॥ पद्मासनस्थो
 द्विभुजो ध्यायी बुद्धः प्रकीर्तितः ॥ कल्किनः ॥ खड्गोद्यतकरः क्रुद्धो
 हयारूढो महाबलः ॥ म्लेच्छोच्छेदकरः कल्की द्विभुजः परिकीर्त्ति
 तः ॥ एतद्विधाः शुभाः कार्प्या मूर्त्तयो दशशार्ङ्गिणः ॥ यथाशक्त्या प्र
 कुर्वीत सुवर्णेन विजानता ॥ प्रत्येकदाने प्रत्येकपूजनविधानं नाम मं
 त्रेण कार्प्यमन्यत्सर्वमादि वराहदानवज्ज्ञातव्यम् । तत्र दानवाक्यं

तु ॥ देवरूपं मया विप्रकारितं कांचनं शुभम् ॥ तद्गृहाण प्रदानेन प्रीय
तां विश्वरूपधृक् ॥ अत्र विशेषविधाने कुंडमंडपसंभारादिसर्वतुलापुरु
षदानवदेवकर्त्तव्यम् ॥ दानमाहात्म्यं यथा ॥ क्षीरेक्षारं यथा क्षितं
पयः संहस्तेनलः ॥ तथा विष्णोः सदा तावैषेक्यं याति न संशयः ॥
ब्रह्महाचसुरापश्च तस्करोगुरुतल्पगः ॥ यथामुंजादिपीकांस्तथा पा
पात्प्रमुच्यते । सहस्रं चैव जंतूनामुद्धरेत्स इदं जगत् । तस्माद्देयामूर्त्तयस्ताः
विष्णोः शक्तेश्च शक्तितः ॥ येन सर्वस्य दानस्य फलं प्राप्नोति सत्वरम् ॥
न तत्तपो भिरत्युग्रैर्विहितैः प्राप्यते फलम् ॥ विष्णोः शक्तेश्च मूर्त्तीनां
दानेन यदवाप्यते ॥ अत्र शक्तेश्चेत्युक्तत्वाद्देव्या दशमूर्त्तिदानं विशिष्य
ते ॥ तेषां दानविधानं पूर्ववदेव ॥ पूजनविधानंतु पृथक्पृथक् तत्रो
दितं कर्त्तव्यम् ॥ दशमहाविद्यानामानितु ॥ काली तारामहा
विद्या षोडशी भुवनेश्वरी ॥ भैरवी छिन्नमस्ताच विद्या धूमावती तथा ॥
बगलास्यासिद्धविद्या मातंगी कमलापरा ॥ दानार्थे मूर्त्तयो य
था ॥ करालवदनां मुंडकपाणवरदा भयाम् ॥ केशवद्वजटाजूटां
कालिकां मुंडमालिकाम् ॥ १ ॥ कर्त्तिकजां शरः खड्गधरा त्रेत्रया
न्वितां ॥ तारशिवासनगतां व्याघ्रचर्मांबरावृताम् ॥ २ ॥ पाशांकु
शशरेष्वासधरां चंद्रार्द्धशेखराम् ॥ हारकुंडलमंजीरभूषाढ्यां विश्व
मातरम् ॥ ३ ॥ पाशांकुशवराभीतिधारिणीं चंद्रशेखराम् ॥ त्रिने
त्रारक्तवसनां विद्येशीं भुवनेश्वरीम् ॥ ४ ॥ मालाविद्याभयवरां चंद्रार्द्धक
तशेखराम् ॥ त्रिनेत्राभैरवीं विद्यां मुंडमालाविभूषिताम् ॥ ५ ॥ करो
टिकां खड्गधरां रक्तासकां विमस्तकाम् ॥ स्मेरासनगतां देवीं छिन्नम
स्तां प्रकल्पयेत् ॥ ६ ॥ क्रुद्धां रूक्षां त्रिनेत्रां च कृष्णां मुक्तशिरोरुहाम्

शूर्पोदरीकलिरतांविद्यांधूमावतीकृशाम् ॥ ७ ॥ पाशमुद्ररजिह्वाग्र
वज्रशोभासुशोभिताम् ॥ वकास्यापीतवसनांत्रिनेत्रांचंद्रशेखराम्
॥ ८ ॥ नवयौवनसंपन्नावीणासक्तामुदान्विताम् ॥ रत्नपद्मासन
गतांमातंगीमरुणांबराम् ॥ ९ ॥ वराभयगदापद्मधरांविद्युन्निभां
शुभाम् ॥ हारोपशोभितोरस्कांकमलांकमलप्रियाम् ॥ १० ॥
स्त्रीपुरुषौहरिहरौयतोयोनिर्जनार्दनः ॥ लिंगरूपीशिवःसाक्षाद्यभ्यां
व्याप्तमिदंजगत् ॥ अनयोरंतरंनस्तिस्त्रीपुंसोर्भगलिंगयोः ॥ भग
लिंगांकितंसर्वदृश्यादृश्यंचराचरम् ॥ एतासांमूर्त्तीनांदानंकुंडमंडप
संभारभूषणाच्छादनपताकातोरणवितानहोमपूजनर्त्विगाचार्य्यपूज
नादिसर्वतंत्रोदितंकर्त्तव्यम् ॥ यतः ॥ बीजानिवेदमंत्राणांसारमुद्धृ
त्यशंभुना ॥ उक्तानिजगतांसिद्धिहेतवेशक्तियोगिना ॥ इति ॥

इति महीधरकृते दानसंग्रहे विष्णुशक्तिदशावतारदान
कथनं नामाष्टाविंशः कोशः ॥ २८ ॥

अथतिथिवारक्षयोगयोगजपर्वसुदानविशेषा उच्यन्ते ॥ तत्रादौ
भौमचतुर्थ्यारुद्रमूर्त्तिदानम् ॥ अन्नचौरोभवेद्यस्तुसोऽकस्माज्जायते
कृशः ॥ वक्ष्येतस्यप्रतीकारंदानहोमाभिषेचनैः ॥ पलमितसुवर्णेनत्रि
नेत्रांचतुर्बाहुंसुखासनस्थांश्वेतवस्त्राभरणांरुद्रमूर्त्तिप्रकल्प्यगोमयो
पलित्तमंडपेतंडुलद्रोणचतुष्टयोपरिसंस्थाप्य मूलमंत्रेणषोडशोपचार
पूजांकृत्वाऋत्विगाचार्य्यवरणंविधायस्थंडिलेर्ग्रेसंस्थाप्य त्र्यंबकं ०
कद्रुद्रा ० वामदेव ० इतिमंत्रैः प्रत्येकमष्टोत्तरशतं जुहुयात् ॥
हुतशेषमग्नेःपूर्वदिशिस्थितदृढकलशेक्षित्वातस्मिन्कलशेसप्तमृत्ति
काःप्रक्षिप्यपूजनानंतरं कलशोदकेनाचार्य्योयजमानमभिषिंचे

त् ॥ तत्रमंत्राः ॥ आपोहिष्ठा० हिरण्यवर्णाः शुचयः पावका०
 पवमानसूक्तं च ॥ ततः सर्वांगमभ्यज्य शुक्लमाल्यांबरधरो यजमा-
 नः शुचिराचार्य्ययितां मूर्तियथा काममुल्लिख्य दद्यात् ॥ तत्रमंत्रः ॥
 देवे देवमहेशानवृषभध्वजशंकर ॥ अन्नचौर्येण यत्पापं कृतं जन्मां-
 तरे मया ॥ तेन यज्जनितं कार्श्यमसह्यं मम देहजम् ॥ तव दाने च दत्ते-
 न प्रीतोऽस्मि नृक्षपापिनम् ॥ ततः पुण्याहवाचनं ब्राह्मणभोजनं
 भूयसीं दक्षिणां दद्यादितिकर्मशेषं समापयेत् ॥ एवं यो विधिनाने-
 न शंकरप्रतिमानरः ॥ ददाति विप्रवर्ध्याय सकाश्यादिप्रमुच्य-
 ते ॥ इति भौ० रु० दानम् ॥ अथ भानुसप्तम्यां सर्वरोगहरम-
 श्विनीकुमारमूर्तिदानम् ॥ शुचौ देशे गोमयोपलिप्ते हस्तमात्रं
 समं तात्तिलतंडुलराशिं कृत्वा तस्मिन्नश्विनीकुमारमूर्तिसंस्थाप्य—तौ-
 यथा ॥ द्विभुजौ देवभिषजौ कर्तव्यौ चारुलोचनौ ॥ तयोरोष-
 धयः कार्य्या दिव्या दक्षिणहस्तयोः ॥ वामयोः पुस्तके कार्य्ये दर्श-
 नीये हिरण्मये ॥ एकस्य दक्षिणे पार्श्वे वामे चान्यस्य शक्तिः ॥
 रौक्म्यौ शक्ती चारुरूपे रत्नयुक्ते शुभांबरे ॥ कार्य्ये तन्नामनीप्रो-
 क्तरूपसंपत्तथाकृती ॥ एवं कृत्वा संपूज्य ब्राह्मणं वृत्वा यथा-
 काममुल्लिख्य दद्यात् ॥ तत्रमंत्रः ॥ नां सत्यदसौ युवयोर्हि-
 रण्यरूपप्रदानान्मम शांतिरस्तु ॥ यथायुवां देवभिषक् क्रमेतां तथा च
 मे रोगशमाय देवौ ॥ इत्यश्वि० कु० दानम् ॥ अथ बुधाष्टम्यां स-
 र्वरोगहरं त्रिमूर्तिदानम् ॥ पुण्यदिने गोमयोपलिप्तमंडले हस्ताया-
 मं वेदिकात्रयं कृत्वा तेषु तंडुलराशिं विधाय राशिषु ब्रह्मविष्णुमहेश्वरा-
 णां हिरण्यमयींश्चतुर्भुजाः किरीटिन्यः सर्वायुधांबरा मूर्तीं धृत्वा संपूज्य

एकं त्रीन्वा ब्राह्मणान्वृत्वा यथा काममुल्लिख्य दद्यात् ॥ तत्र मंत्राः ॥
 त्वया जगत्सृष्टिकृता समेतं त्वमेव सर्वस्य पितामहोसि ॥ त्वमेव कर्ता
 जगतां विकर्ता त्वमेव धाता जगतां विधाता ॥ त्वत्संप्रदानादनघोय
 थाहं त्वया च सायुज्यमुपैमि देव ॥ तथा कुरु त्वं शरणं प्रपन्ने मयि प्र-
 भो देव वरप्रसादम् ॥ त्वया जगद्व्याप्तमिदं समस्तं त्वं विष्णुरित्येव व-
 दंति संतः ॥ त्वयैव लीनं प्रविशंति कल्पे त्वया धृतं विश्वमनंतमूर्ते ॥ त्रिमू-
 र्त्तिदानादनघो भवामि यथा जगत्कारणकारणेश ॥ तथा कु-
 रु त्वं शरणं प्रपन्ने मयि प्रभो देव वरप्रसादम् ॥ त्वयामराणाममृतं
 विधाय हालाहलं संहतमेव सद्यः ॥ तथा सुराणां त्रिपुरं च दग्धमे-
 केषुणालोकहितार्थमीश ॥ त्वद्रूपदानादहमप्यशेषं दोषैर्वि-
 मुक्तांस्तु गणान् प्रपद्ये ॥ तथा कुरु त्वं शरणं प्रपन्ने मयि प्रभो देव वरप्रसा-
 दम् ॥ इत्येव मुक्ताविधिवद्दातिसयातिसायुज्यमथ त्रिमूर्तेः ॥
 यः कारयेद्विप्रवराय तस्मै सुवर्णसंख्यागुणितं हिरण्यम् ॥ दद्याच्च वा-
 सोयुगमादरेण तथा कृतेऽयं लभते फलं तत् ॥ इति त्रिमूर्तिदान-
 म् ॥ अथापमृत्युहरं त्रिपुरुषदानम् ॥ सुवर्णरक्तिका-
 नां च शतेनैकेन शक्तिः ॥ कार्प्यो ब्रह्माथ विष्णुश्च शंकरश्च तथैव
 च ॥ पलद्वादशमानेन पीठलोहेन कारयेत् ॥ देवानां स्थापनार्थाय
 चक्रवत्परिमंडलम् ॥ तत्र ब्रह्मादयः स्थाप्याय मद्भूतं पुरो न्यसेत् ॥
 चतुर्मुखश्चतुर्बाहुः पद्महस्तः पितामहः ॥ शंकरो द्विभुजः शूलीवृषारू-
 ढस्त्रिलोचनः ॥ विष्णुश्चतुर्भुजश्च क्रीडागरुडवाहनः ॥ यमदूतः
 पाशपाणिर्दंडवान् विकृताननः ॥ स तु लोहमयः कार्प्यो भीतो
 बद्ध इवाग्रतः ॥ ततो विधाय देवानां पूजां पुष्पफलादिभिः ॥ यजमा-

नःकरेखङ्गंगृहीत्वानिशितंनवम् ॥ इदंशिरश्छिनन्नीतिदूतस्या-
 स्यदुरात्मनः ॥ इत्युच्चार्य्यशिरश्छित्त्वादूतस्ययमदिङ्मुखः ॥ तत
 श्वतुर्भिर्विप्रेस्तुकार्य्यब्राह्मणवाचनम् ॥ ततोब्रह्मादिदेवानांदानंकु-
 र्यात्प्रयत्नतः ॥ देवालयगृहेवापितीर्थेवान्यत्रकुत्रचित् ॥ ब्राह्म-
 णायतुतान्दद्याद्विव्यांगायसुशीलिने ॥ सुवर्णदक्षिणायुक्तान्ब्रह्मा-
 दीननुपूर्वशः ॥ अपमृत्युभयात्रस्तोयोदद्याद्देवतात्रयम् ॥ तस्य
 मृत्युर्विनष्टस्स्याद्दानादस्मान्नसंशयः ॥ मृत्युनागृह्यमाणोपिजीवत्ये-
 वनरस्स्फुटम् ॥ इति त्रिमूर्तिदानम् ॥ अत्रैवबुधाष्टम्यांन्यप-
 र्वाणिवारुद्राष्टकदानम् ॥ गोमयोपलिप्तेचतुरस्त्रेमंडले सुवर्णनिर्मिता-
 नष्टौरुद्रान्संस्थाप्य तैस्तैर्मन्त्रैस्तान्संपूज्य रुद्रमानार्द्धसुवर्णेनतेषां
 देव्यःपुत्राश्चकार्य्यास्तत्तन्मन्त्रैःपूज्याश्च ॥ तेषांनामानि ॥ तत्रादौरुद्रा-
 यथा ॥ रुद्रोभगश्वशर्वश्वईशःपशुपतिस्तथा ॥ भीमउग्रोमहादेव
 इति ॥ सर्वेजटिलाश्चर्मवसनाःखट्वांगशूलिनः ॥ देव्यस्तु ॥ सौ-
 वर्चलांगवादाचविकेशीचशिवातथा ॥ स्वाहादिशाचदीक्षाचरो-
 हिणीचतथाक्रमात् ॥ ताश्चस्त्रीवेषधारिण्यस्सर्वाभरणभूषिताःपुत्रा-
 यथा ॥ शनैश्चरश्चशुक्रश्चलोहितांगोमनोजवः ॥ वसंतःसर्वगःशां-
 तोबुधश्चैवयथाक्रमम् ॥ तेबालवेषाःकर्त्तव्याःशिखिनोर्दंडपाणयः।
 स्थंडिलेपद्मानिकृत्वातत्रैतेषांपूजनंकृत्वामध्येब्रह्माणं चसंपूज्य ब्रा-
 ह्मणान्वृत्वायथाकाममुल्लिख्यप्रत्येकमेकंदद्यात् ॥ तत्रमन्त्रः ॥
 प्रीयतांभगवान्ब्रह्मापरमेष्ठीप्रजापतिरिति ॥ एवंरुद्राष्टकोपेतंदानं
 दद्याद्यथाविधि ॥ सर्वपापविनिर्मुक्तःसर्वसिद्धिमवाप्यच ॥ आयुरारो-
 ग्यसंयुक्तःपुत्रवान्धनवान्सुखी ॥ भुक्ताभोगान्यथेच्छंचस्वर्गमो

क्षंचविंदति ॥ इतिरुद्राष्टकदानम् ॥ अथपुण्यैकादश्यां
 वान्यस्मिन्पुण्यदिनेवादक्षिणामूर्त्तिदानंमहापातकहरम् ॥
 पुण्यभूमौपंचरंगरंजितंकमलंविधाय तत्कर्णिकायांसौवर्णीदक्षिणा
 मूर्त्तिसंस्थाप्य—अस्य रूपंतुरुद्रमूर्त्तिवत्—सर्वज्ञसर्वगंशांतंसर्वकारण
 कारणम् ॥ सर्वदेवनमस्कृत्यंसर्ववेदांतवेदिनम् ॥ पापेधनमहावह्निचं
 द्रमौलिमहेश्वरम् ॥ वरदानाभयकरंसर्वागममहार्णवम् ॥ एवंध्यात्वा
 श्वेतपद्मैःसितचंदनवारिणाचसंपूज्य क्षौमेवाससीपरिधायपायसनैवे
 द्यंसमर्प्य प्रदक्षिणंकृत्वाचाय्यंवृत्वा । दानेमंत्रः ॥ भगवन्सर्वभूतज्ञसर्व
 ज्ञामृतशंकर ॥ त्वत्प्रसादेनमेशेषंपापंनश्यतुसर्वतः ॥ तत्पापंवाङ्म
 नःकायसंभवंममशंकर ॥ तवरूपप्रदानान्मेविलयंयातुसर्वतः ॥ अ
 ज्ञेपापेनिराचारेत्वामेवशरणंगते ॥ मयिसर्वाघनाशेनदयांकुरुमहेश्व
 र ॥ इत्यामंज्य शिवःप्रीयतामितिदद्यात् ॥ कामोल्लिखनेनवा ॥
 क्रियाकलापमखिलमात्मानोमलसंचयम् ॥ सर्वानिवेदयेत्तस्मै
 विश्वरूपायशंभवे ॥ अनेनविधिनायस्तुप्रदद्यात्सर्वनिष्कृतिम् ॥
 तस्यसर्वाणिपापानिविनश्यंतिनसंशयः ॥ इति दक्षिणामूर्०दानम् ॥
 अथ हस्तद्वादश्यामतीसारहरमग्निमूर्त्तिदानम् ॥ तत्रवह्नि
 मूर्त्तियथाविभवंसुवर्णेनताम्रेणज्वालाकुलारक्तचंदनलिप्तांरक्तवस्त्रवे
 ष्टितामिषस्थांरक्तमाल्यमुक्तादामशोभितांचतुर्बाहुमतींसप्तजिह्वान्वि
 तांत्रिपदांचतुःशृंगांद्विशीर्षांविधायमण्डपेसंस्थाप्याग्निमंत्रेणसंपूज्य
 ब्राह्मणंवृत्वा यथाकामंसंकल्प्यदद्यात् ॥ तत्रमंत्रः ॥ त्रेतारूपोऽग्निरी
 ष्यस्त्वमंतश्चरसिवैवृणाम् ॥ त्वंवेत्थप्राक्तनंपापमतीसारंविनाश
 येति ॥ ततोब्राह्मणान्संभोज्यभूयसींदक्षिणांचदद्यात् ॥ एवं

कृत्वानरःसम्यगतीसारंव्यपोहति ॥ नीरुजःसुसुखीनित्यंदीर्घमायुश्च
 विंदति ॥ इत्यग्नि०दानम् ॥ अथ मघायुक्तत्रयोदश्यामन्य
 स्मिन्पुण्यदिनेवा आत्मप्रतिकृतिदानम् ॥ आत्मप्रतिकृति
 र्नामयन्त्रोक्तंकस्यचित्पुरा ॥ तदहंसंप्रवाक्ष्यामिदानंमानविवर्द्धनम् ।
 तत्रपुण्यसमयेसौवर्णीभव्यामात्मप्रतिकृतिंसवाहनांसेष्टजनांवस्त्रस्रग्भू
 षण्युतां कुंकुमादिलिप्ताग्नीकृत्वा स्त्रीचेच्छयनेशयितांकारयेत् ॥
 यद्यदिष्टतमंवस्तुतत्पार्श्वतोऽन्यसेत् ॥ ततोऽगणेशलोकपालग्रहदेवी
 दिक्पालान् पूजयित्वा आचार्य्यवृत्वायथाभिलाषमुल्लिख्यदद्यात् ।
 तत्रमंत्रः ॥ आत्मनःप्रतिमाचेयंसर्वोपकरणैर्युता ॥ सर्वरत्नसमायु
 क्तातवविप्रनिवेदिता ॥ आत्माशंभुःशिवःशौरिःशक्रोदेवगणैर्युतः ॥
 तस्मादात्मप्रदानेनपरमात्माप्रसीदतु ॥ इति ॥ ब्राह्मणश्चकोदादिति
 कीर्त्तयेत् ॥ ततोऽयजमानःप्रदक्षिणीकृत्यविसर्जयेत् ॥ यश्चात्मनः
 प्रतिकृतिंवरवाहनस्थां हैमींविधायधनधान्यसमाकुलां च ॥ सोऽप
 स्करां द्विजवरायददातिभक्त्याचंद्रार्कवद्विविविभातिसराजराजः ॥
 इति प्रति०दानम् ॥ अथ श्रवणचतुर्दश्यामपमृत्युहरंकल्प
 दानम् ॥ कल्पानुकीर्त्तनंवक्ष्येसर्वपापप्रणाशनम् ॥ यस्यानुकीर्त्त
 नादेववेदपुण्येनयुज्यते ॥ प्रथमःश्वेतकल्पस्तुद्वितीयोनीललोहितः ॥
 वामदेवस्तुतीयस्तुततोराशंतरोपरः ॥ रौरवःपंचमःप्रोक्तःषष्ठःप्राणइ
 तिस्मृतः ॥ सप्तमोऽथबृहत्कल्पःकंदर्पोऽष्टमउच्यते ॥ सद्योऽथनवमः
 प्रोक्तोऽशानोदशमःस्मृतः ॥ व्यानएकादशःप्रोक्तस्तथासारस्वतोपरः
 त्रयोदशउदानस्तुगारुडोऽथचतुर्दशः ॥ कूर्मःपंचदशोज्ञेयःपौर्णमासी
 प्रजायते ॥ षोडशोनारसिंहस्तुसमानस्तुततःपरः ॥ आग्नेयोऽष्टादशः

प्रोक्तःसौमकल्पस्तथापरः ॥ मानवोर्विशतिः प्रोक्तस्तत्पुमानि
तिचापरः ॥ वैकुण्ठश्चापरस्तद्ब्रह्मक्षमीकल्पस्तथापरः ॥ चतुर्विंशस्त
थाप्रोक्तःसावित्रीकल्पसंज्ञकः ॥ पंचविंशोमहा घोरोवाराहस्तुत
तोपरः ॥ सप्तविंशोथवैराजोगौरीकल्पस्तथापरः ॥ माहेश्वरस्ततः
प्रोक्तोत्रिपुरोयत्रघातितः ॥ पितृकल्पस्तत्परस्तुयाकुहूंब्रह्मणस्मृ
ता ॥ इत्येब्रह्मणोमासःसर्वपापप्रणाशनः ॥ आदावेवहिमाहात्म्यं
यस्मिन्यस्यविधीयते ॥ तस्यकल्यस्यतन्नामविहितंब्रह्मणापुरा ॥
यस्तुदद्यादिमान्कृत्वाहैमान्पर्वणिपर्वणि ॥ ब्रह्मविष्णुपुरेकल्पंमुनि
भिःपूज्यतेदिवि ॥ सर्वपापक्षयकरंकल्पदानंयतोभवेत् ॥ मुनिरूपां
स्ततःकृत्वादद्यात्कल्पान्विचक्षणः ॥ मुनिरूपान्मुन्याकारानित्य
र्थः ॥ इति कल्पदानम् ॥ अथ पूर्णातिथिषुदिग्दानम् ॥
प्राच्यादिकुर्वीतदिशश्चतस्रःपृथिवीयुताः ॥ स्त्रीवेषाश्चैवकर्त्तव्याः
पूर्णकुंभकरीःशुभाः ॥ गोरूपापृथिवीकार्ग्यासर्वलक्षणसंयुता ॥
कृत्वाकमलसंस्थानाःसुवर्णद्वितयेनतु ॥ पूजयित्वाद्विजान्पंचसु
वस्त्राभरणैस्ततः ॥ ताम्रपात्रंदलेकृत्वाकदल्याःपीठसंयुताः ॥ यो
ददातिप्रदत्तास्यात्पृथिवीतेननिश्चितम् ॥ पितरःपितृलोकस्थादेव
लोकेदिवौकसः ॥ संप्रीणयंतितंतुष्टावसुपुत्रघनेप्सितैः ॥ अमाष
मन्नंभुंजीतदत्त्वैतद्विधिपूर्वकम् ॥ इति दिग्दानम् ॥ अथ लोक
पालाष्टकदानम् ॥ अथदानमहंवक्ष्येसर्वपापप्रणाशनम् ॥ सर्व
मंगलमायुष्यमारोग्यंश्रीकरंशुभम् ॥ दानानामुत्तमंहेतत्सर्वसिद्धि
करंपरम् ॥ करोतिदानंनारीवासायुज्यंब्रह्मणोब्रजेत् ॥ विषुवत्य
यनेराहोर्ग्रहणेचंद्रसूर्ययोः ॥ पूर्णसुजन्मनक्षत्रेषुण्यदेशोगृहेथवा ॥

चतुरस्रांसमांभूमिलित्वागोमयवारिणा ॥ वेदिकातु षडष्टौदशहस्ता
यथामंडपंकार्या ॥ प्राच्योदीच्यानारेखानांचतुष्टयं कृत्वा तत्रन
वकोष्ठानिस्युः ॥ मध्यकोष्ठेकमलेमुवर्णमयंब्रह्माणंसमंतात्प्रत्येक
कोष्ठेषु इंद्राग्निमनिर्ऋतिवरुणवायुकुवेरेशानान् जातरूपमयान्
सायुधवस्त्रवाहनान् ब्रह्मणोभिमुखान्कृत्वा कुशवारिणासंप्रोक्ष्य
आचार्य्यसहितानष्टौब्राह्मणान्संपूज्यलोकपालान्ब्रह्मसहितान्स्वस्व
मंत्रैःसंपूज्य यथाकाममुल्लिख्यदद्यात् ॥ आचार्य्याय—दक्षिणादश
निष्कास्याद्रूपणैश्चसमन्विता ॥ अत्रहोमपूर्वस्यालोकपालमंत्रैः ॥
शेषंकुंडमंडपवेदिकावितानादिसर्वतुलापुरुषदानवत्कर्त्तव्यम् ॥ इति
लोक० दानम् ॥ अथहस्ताकैर्द्वादश्यांसप्तम्यांवाचक्षूरोगहरं
द्वादशादित्यदानम् ॥ अथदानमहंवक्ष्येपुण्यमादित्यसंज्ञितम् ॥
कर्त्तुःपापहरंश्रीदमायुष्यंभुक्तिमुक्तिदम् ॥ चाक्षुष्यंसर्वरोगघ्नंसर्व
सिद्धिफलप्रदम् ॥ आलिप्यवैद्वादशहस्तदैर्घ्यांक्षितितथागोमयसं
युताद्भिः ॥ तस्मिन्सितैस्तंडुलपुंजकैश्चविस्तारयेद्वादशपंकजा
नि ॥ प्रादेशमात्राणिशुभानितानिसकर्णिकान्यष्टदलेषुतेषु ॥
हिरण्यरूपाग्निरवेर्निधाययथाक्रमादुत्तरतोपवर्गः ॥ प्रत्यङ्मुखा
न्प्राङ्मुखएवदेवांस्तद्वर्णगंधादिभिरर्चयित्वा ॥ दद्यादपूंसस्रुतंगुडाक्तं
वस्त्रैरथावेष्टयथाक्रमेण ॥ प्रत्येकमेकंद्विजपुंगवानामाराध्यगंधा
दिभिरादरेण ॥ संप्रीयतामित्यथचक्रमेणप्रत्येकमुच्चार्य्यतदीयना
म ॥ धाताचमित्रश्चततःपरेणमार्त्तंडनामाचतथार्ग्यमाच ॥ शक्रश्च
देवोवरुणस्तथासौभगोविवस्वान्नवमस्तथैषाम् ॥ आदित्यनामास
वितातथान्यस्त्वष्टास्तथैकादशएवतेषाम् ॥ विष्णुस्तथाद्वादशएव

मंत्रैराराधयेद्देववरान्द्विजांश्चेति ॥ अन्यत्सर्वतुलापुरुषदानविधान
वद्विधेयम् ॥ इत्यादित्य दानम् ॥ अथ पौर्णिमादिपर्वस्वायुष्कर
दानम् ॥ अथ दानं प्रवक्ष्यामि ह्यपमृत्युनिवारणम् ॥ आयुष्करमि
ति प्रोक्तमारोग्यं सर्वसिद्धिदम् ॥ यत्र साधनसिद्धः स्यात्तत्र दानं समाच
रेत् ॥ भूमौ गोमयलिप्तायां दक्षिणोत्तरतः शुभम् ॥ निधाय त
त्र पाणिभ्यां पूर्णानि सिततण्डुलैः ॥ चत्वारितेषु हैमानि मण्डलानि
निवेशयेत् ॥ सौवर्णाश्च ततो देवानर्चयेच्च यथाक्रमम् ॥ पूर्व
मात्मभुवं तत्र विष्टरं श्रवसायुतम् ॥ कृत्तिवाससमीशानं वज्र
पाणिशतक्रतुम् ॥ आत्मभूर्ब्रह्मा ॥ विष्टरश्रवाः विष्णुः ॥ ईशानः
शिवः प्रसिद्धः ॥ एतेषां लक्षणमुक्तं ब्रह्माण्डदाने ॥ एते च यथाश
क्तिसुवर्णमया विधातव्याः ॥ गन्धादिभिरथाभ्यर्च्य दक्षिणोत्तरतः क्र
मात् ॥ प्रत्येकमेकं विप्रेभ्यो दद्यादाराध्य भक्तितः ॥ तंतं दे
वमिति ध्यात्वा मंत्रानेतानुदाहरेत् ॥ संप्रीयतां मे भगवानात्मभू
रित्युदीरयेत् ॥ संप्रीयतां जगद्व्यापी भगवान् विष्टरश्रवाः ॥
संप्रीयतां मे भगवान्वज्रपाणिः शतक्रतुः ॥ अन्यत्सर्वतुलापुरुषो
क्तवद्विधेयम् ॥ इत्यायुष्कर दानम् ॥ अथ सोमवारयुता
यां भौमवारयुतायां वामायां चंद्रसूर्यदानम् ॥ अत्र द्वादशां
गुलवृत्तमंडलाकारं सूर्यविंशसौवर्णतथैव चंद्रराजतंसकर्णिकंपद्मा
कारं कृत्वा तत्रापि भानुघृतपूरिते ताम्रपात्रे सोमं क्षीरपूर्णे शंखे संस्था
प्य ॐ-अमृतमूर्तये सोमाय नमः ॐ-खोल्काय नमः इति मंत्राभ्यां द्र
योः पूजनं विधाय ब्राह्मणमाचार्यं वृत्वा आहिताग्निं संपूज्य यथाभि
लाषं काम्यसंकल्पं कृत्वा दद्यात् ॥ तत्र मंत्रः ॥ रुक्मं च पुरुषं चैव प

र्णपुष्करमेवच ॥ त्रयीतुविद्यासांगातुयस्यांगंविश्वरूपिणः ॥ स
वैचंडकरोदेवःप्रीयतांविप्रमाचिरम् ॥ एवमुच्चार्यभानुंतुब्राह्मणा
यनिवेदयेत् ॥ क्षीरजंदेवदेवंचद्विजराजंतथैवतु ॥ सुधामूर्तिं
शीतांशुतेददामिद्विजोत्तम ॥ गायत्र्याचैवसूर्यस्यग्रहणजायतेत
दा— सोमंतरत्समंदीत्यादिजपेत् ॥ ततःसुवर्णदक्षिणांदत्त्वाब्रा
ह्मणांश्चभोजयेत् ॥ सर्वतेनतुदत्तंस्याद्योदयाचंद्रभास्कराविति ॥

इति महीधरकृतेदानसंग्रहेयौगिकपर्वदानविधि

नामएकोनात्रिंशः कोशः ॥ २९ ॥

अथानंतफलदानानि ॥ तानितु ॥ संपादयेच्चनियमादारोग्यं
भोगसाधनम् ॥ अभयंपांथशुश्रूषामन्नोदकमहीरुहान् ॥ अनंतफ
लदान्याहुर्दानान्येतानिसूरय इति ॥ तत्रादावारोग्यदानम् ॥
आरोग्यदानात्परमंदानंविद्यतेकचित् ॥ अतोदेयंरुजार्तानामा
रोग्यभाग्यवृद्धये ॥ औषधंपथ्यमाहारंतेलाभ्यंगंप्रब्रिश्चयम् ॥
यःप्रयच्छतिरोगिभ्यः सभवेद्व्याधिर्वर्जितः ॥ धर्मार्थकाममोक्षाणा
मारोग्यंसाधनैर्युतम् ॥ अतस्त्वारोग्यदानेननरोभवतिसर्व
दः ॥ आरोग्यशालांकुरुतेमहौषधपरिच्छदाम् ॥ विदग्धवै
द्यसंयुक्तांभृत्यावसथसंयुताम् ॥ आरोग्यशालामेवंतुकुर्याद्योधर्म
संश्रयः ॥ सपुमान्धार्मिकोलोकेसकृतार्थः सवुद्धिमान् ॥ स
म्यगारोग्यशालायामौषधैःस्नेहपाचनैः ॥ व्याधितंविरोजीकृत्यअ
प्येकंकरुणायुतः ॥ प्रयातिब्रह्मसदनंकुलसप्तकसंयुतः ॥ आ
ह्व्योवित्तानुसारेणदरिद्रःफलभागभवेत् ॥ दरिद्रस्यकुतःशालाआ
रोग्यायन्निषग्युवा ॥ अपिमूलैर्नकेनापिमर्द्दनाद्यैरथापिवा ॥ स्व

स्थौकृतेभवेन्मर्त्यः पूर्वोक्तालोक अव्ययः ॥ वातपित्तकफाद्यानां
चयापचयभेदिनाम् ॥ यस्तुस्वल्पाभ्युपायेन मोचयेद्व्याधिपीडि-
तान् ॥ सोपियाति शुभाल्लोकानवाप्यान्यज्ञयाजिभिः ॥
रोगिणो नो द्विजेत्प्राज्ञो दुर्बलानपि सर्वदा ॥ तान् पापानामुवाञ्छित्य
मेवं धर्मः प्रवर्तते ॥ यो नुग्रहीत मात्मानं मन्यमानो दिने दिने ॥ उप-
सर्पेतरोगार्त्तस्तीर्णस्तेन भवार्णवः ॥ तस्माद्भोगापवर्गार्थं रोगार्त्तसमु-
पाचरेत् ॥ विशेषेण तु योगीन्द्रं शरीरेण धनेन च ॥ इत्यारोग्यदा-
नम् ॥ अथ रोगहरदानानि ॥ आधयो व्याधयश्चैव शरीरपरि-
शोषिणः ॥ पुण्यं तत्परिहारार्थं कर्त्तव्यं हितमिच्छता ॥ ज्वरो तिसारो
यक्ष्मा च गुल्मशूलभगदराः ॥ कुष्ठाग्निरोगौ वातश्च कंठशूलमसूरिकाः
कंठदंताक्षिकर्णे तु शिरोरोगोपजिह्वके ॥ त्रिदोषसंभवाः सर्वरोगाः
प्राणिभयंकराः ॥ ग्रंथयो मूत्रकृच्छ्रो च वस्तिरोगो महोदरम् ॥ एते
चान्ये च वहवो महावेगामहाबलाः ॥ व्याधयः शतसंख्याका मृत्योर्हे-
तव एव ते ॥ यद्यद्रोगशमं कुर्व्यात्तत्तत्कार्यमनीषिभिः ॥ औषधं जपहो-
मादिदानं देवार्चनादिकम् ॥ सर्वरोगप्रशमनं सौवर्णदानमुच्यते ॥
ज्वरे मसूरिकायाश्च राजयक्ष्मणि चैव तत् ॥ गुल्मे तथायसं प्रोक्तं कुष्ठे
राजतममुच्यते ॥ रत्नदानाच्छमं यांति गुदोत्पन्नाश्च सर्वशः ॥ श-
मः स्यादंततो व्याधेर्भूदानान्नात्र संशयः ॥ शमार्थं वातरोगाणां वा-
सोदानं विधीयते ॥ कंठजिह्वोद्भवादीनां रोगाणां शांतिमिच्छता ॥
धान्यं वा सोहिरण्यं वा दातव्यानि प्रयत्नतः ॥ सुवर्णदानं सर्वेषां रोगा-
णां शमकारणम् ॥ तस्मात्सर्वप्रयत्नेन दातव्यं सुखमिच्छता ॥ तथा
च रत्नरजतैर्यथाशक्त्या नुरूपतः ॥ कृत्वा च प्रतिमां व्याधेर्दद्यादि प्राय-

यत्नतः ॥ शतेन वा तदर्द्धेन त्रिंशतानिष्कसंख्यया ॥ जातरूपमयं व्याधेः
 प्रतिरूपं तु कारयेत् ॥ निधाय पात्रे संपूर्णे तं दुलैः शतरूपकैः ॥ अलं
 कृत्य च सौवर्णरूपं त्वगरुलेपनैः ॥ वासोयुगेन संवेष्ट्य हिरण्यबहुभूष
 णैः ॥ अलंकृताय विप्राय दत्त्वा मंत्रमुदीरयेत् ॥ ये मां रोगाः प्रबाधन्ते देह
 स्थाः सततं तताः ॥ गृह्णीष्वप्रतिरूपेण तान् रोगान् द्विजसत्तम ॥ बाढ
 मित्येव तद्रूपं गृह्णीयाद्व्याधिभिः सह ॥ ततस्त्वरोगी दाता च दीर्घायु
 ष्च प्रपद्यते ॥ एवं बहुविधं शांत्यै रोगाणामिह कीर्तितम् ॥ यत्कृ
 त्वासर्वरोगेभ्यो मुच्यन्ते व्याधिपीडिताः ॥ इति प्रतिरूपदानानि ॥
 अथ भोगदानानि ॥ तत्रादौ रत्नदानम् ॥ रत्नानि च द्वि
 जेदयः बहुमूल्यानि मानवः ॥ अलंकारनिमित्तं वा देवताभ्यो
 तियत्नतः ॥ सपापतां पनिर्मुक्तो मुक्तिमेव समश्नुते ॥ न रत्ने
 भ्यः परं वस्तु ज्यायोस्ति भुवनत्रये ॥ अतस्तद्दानतोयत्स्यात्
 फलं तत्केन वर्ण्यते ॥ तथा ॥ समुद्रजानिरत्नानि नरो विग
 तकल्मषः ॥ दत्त्वा विप्राय महते प्राप्नोति महातीर्थियम् ॥ विद्रुमाणां
 प्रदानेन रुद्रलोकं ब्रजेन्नरः ॥ सर्वपातकनिर्मुक्तो मुक्तादानेन जायते ॥
 लोकमाप्नोति दानेन नरो वज्रस्य वज्रिणः ॥ तथा प्रदत्तैर्गोमेदैर्भोदतेन
 दने बने ॥ सर्वे ग्रहाः प्रतुष्यन्ति पुष्यरागस्य दानतः ॥ गारुत्म
 तैर्मरुत्वंतं नियतं जयति श्रिया ॥ वैदूर्यैः सूर्यलोकं च पद्मरागैररो
 गताम् ॥ प्रदानादिं द्रनीलानां लीलानां भाजनं भवेत् ॥ सुखी शं
 खप्रदानेन शक्तिशुक्तिप्रदानतः ॥ इति भोगदानानि ॥ अथ
 भगंदररोगहरं नवरत्नदानम् ॥ माणिक्यं पद्मरागं च वज्रं वैदूर्यमे
 व च ॥ गोमेदं मौक्तिकं पुष्यरागं मरकतं तथा ॥ हरितं च नवैतानि स्व

र्णपात्रोपरिन्यसेत् ॥ अथवाराजतेताम्रेचाज्येनपरिपूरयेत् ॥ नव
ग्रहाणांप्रीत्यर्थंब्रह्मणानिर्मितंपुरा ॥ गंधपुष्पाक्षतैर्धूपैर्नैवेद्यैस्तान्प्र
पूजयेत् ॥ स्वर्लिङ्गैश्चैवमंत्रैश्चहोमःकार्ग्यस्तुपूर्ववत् ॥ ततोब्राह्मणं
माहूयसर्वशास्त्रार्थकोविदम् ॥ मंत्रस्तु ॥ आदित्यादिग्रहाःसर्वेन
वरत्नप्रदानतः ॥ विनाशयंतुमेहृष्टाःक्षिप्रमेवभगंदरम् ॥ अनेनकर्म
णानूनंयथावद्विहितेनतु ॥ नरोनैरुज्यमाणोतिनिस्संदिग्धभगंदरी ॥
इति नवरत्नम् ॥ अथ व्रणघ्नरत्नदानम् ॥ माणिक्यंवज्रसहि
तमव्रणंजातितःशुभम् ॥ रक्तवस्त्रेणसंवेष्ट्यखारिकापंचकोपरि ॥
यद्वाविभवसारेणमाणिक्यंयवपुंजके ॥ निधायगंधपुष्पाद्यैरर्चयेद्भ
क्तिपूर्वकम् ॥ सौवर्णेनोपवीतेनविप्रंवस्त्रांगुलीयकैः ॥ पूजयित्वाप
येत्तस्मैमंत्रेणानेनसुव्रती ॥ देवसूर्य्यजगन्नाथसर्वलोकनमस्कृत ॥
माणिक्यवज्रदानेनप्रणाशयममव्रणम् ॥ व्रणाश्चस्त्रेणयेपिस्युर्विष
दिग्धेनसंयुगे ॥ तेषिशुद्धाःप्ररोहंतिच्छिन्नशाखाइवानिलात् ॥ इति
व्रणघ्नरत्नदानम् ॥ अथ गलगंडघ्नरत्नदानम् ॥
गलगंडी गलद्रव्यहर्ताभवतिमानवः ॥ दानेनतत्प्रतीकारं
वक्ष्यामिसुखदंनृणाम् ॥ माणिक्यपद्मरागवज्रगोमेदवैदूर्य्यपु
ष्यरागपाचिकामरकतमालांस्वर्णसूत्रेविधाय अशक्तौपाचिकायन्य
तमैःमालांकृत्वाताम्रपात्रेतिलद्रोणपंचकोपरिधृत्वासंपूज्य नवग्रहपूज
नंकृत्वा आचार्यसंपूज्य आसत्येनतथा० गणानां० ॥ यद्द
दं० सोमंराजानं० एभिःसमिदाज्यतिलान्हुत्वा स्विष्टकृतंहुत्वा
मालांयथाकाममुल्लिख्यदद्यात् ॥ तत्रमंत्रः ॥ मालेयंसावदैवत्या
ब्रह्मविष्णुशिवादिभिः ॥ रुद्रादिलोकपालैश्चतथासर्वामरैरपि ॥ सत

तं कंठलग्नायाधारिताप्रीतिपूर्वकम् ॥ ब्राह्मणायप्रदास्येहंगलगंडं व्यपो
 हतु ॥ इति गल० दानम् ॥ अथालंकारदानम् ॥ द्विजातिभ्यस्तु यो दद्या
 दलंकारान्समुज्ज्वलान् ॥ स्वलंकृतः स्वर्गलोके क्रीडत्यप्सरसांगणैः ॥
 अलंकारप्रदानेन सुरुपः सुभगो भवेत् ॥ तथा लंकारदानेन दीर्घमायु
 श्वविंदति ॥ नराभरणदानेन तुष्टिं याति सदाशिवः ॥ योषिदाभर
 णैर्दत्तैः प्रीयते हिमशैलजा ॥ मूर्द्धाभरणदानेन व्रजेन्मूर्द्धाभिषिक्तता
 म् ॥ कर्णजैः कर्णकीर्त्तिः स्यालक्ष्मीः कंठैरकुंठिता ॥ पाणिजैः पाणिजै
 त्रः स्याज्जघनैरजवन् यजः ॥ जानुजैरनुजैः त्रः स्याच्छरणचरणोद्भवैः ॥
 इत्यल० दानम् ॥ अथ वस्त्रदानम् ॥ वस्त्रं वस्त्रार्थिने दद्याच्छुभं वापि
 यदृच्छया ॥ स भवेद्धनवान् श्रीमान् बृहस्पतिपुरे वसेत् ॥ योगिनां च दरि
 द्राणां चैव वस्त्रप्रदानराः ॥ तेषां दिव्यानि वस्त्राणि सुगंधीनि मृदूनि च ॥
 वातश्चैव प्रवहति सुगंधो ह्यमृतोपमः ॥ दत्त्वा कार्पासकं वस्त्रं स्वर्ग
 लोके महीयते ॥ दत्त्वा सरोमतत्रापि फलं दशगुणं भवेत् ॥ आविकं वसनं
 दत्त्वा भृगूणां लोकमाप्नुयात् ॥ छागं दत्त्वा चांगिरसं क्षौमं दत्त्वा बृहस्प
 तेः ॥ वसूनां लोकमाप्नोति कुशकौशेयवाससी ॥ कृमिजंच तथा दत्त्वा सो
 मलोके महीयते ॥ अग्निष्टोममवाप्नोति दत्त्वा वामृगलोमजम् ॥
 दत्त्वा वल्कलजं वा सोमसूनां लोकमाप्नुयात् ॥ समोचकं कदल्पा
 दि दत्त्वा चैत्रे तथा जिनम् ॥ वारबाणमुरस्त्राणां शिरस्त्राणंतथैव च ॥
 पादत्राणं च ददतः पृथग्यज्ञफलं लभेत् ॥ वस्त्रदानं पवित्रं तु पितृणाम
 पितारणम् ॥ कौसुंभरक्तं दत्त्वा तु सौभाग्यं महदाप्नुयात् ॥ दा
 नात्कुंकुमवस्त्रस्य लावण्यं महदाप्नुयात् ॥ रंगैरन्यैश्च नीलैश्च रक्तं द
 त्त्वा सुखी भवेत् ॥ यथा यथा हि वस्त्रस्य भवतीह महर्घता ॥ यथा य

थातुशुभतातथापुण्यफलमहत् ॥ इति वस्त्रदानम् ॥ अथ रुद्रै
कादशवस्त्रदानम् ॥ वस्त्रयुग्मंसितंसूक्ष्ममेकैकस्यचकल्पयेत् ॥
एकादशानांविप्रणांतत्संख्यारुद्ररूपिणाम् ॥ गंधपुष्पैरलंकृत्यभोजं
यित्वाविधानतः ॥ तत्रमंत्रः ॥ प्रसीदतुभवो नित्यमस्माकं कृत्तिवा
सनः ॥ वस्त्राण्यस्मत्प्रदत्तानि प्रतिगृह्णातु शंकरः ॥ इति ॥ एव
मेव सर्वेभ्यो देवेभ्यः ॥ इत्येका० रु० व० दानम् ॥ अथ शोक
हरवस्त्रदानम् ॥ विघ्नकर्त्ता च वस्त्राणां शोकी भवति मानवः ॥ तस्य कर्म
विपाकोत्थं व्याधिनाशनमुत्तमम् ॥ तदित्थं बहुमूल्यं शौमं वस्त्रं मुक्ता
ग्रथितं कुंकुमांकितं कर्पूरागरुधूपितं तंदुलोपरि संस्थाप्य युवासुवा
सा इति संपूज्य उद्बुध्य स्व० इदं विष्णु० आयस्मिन् सप्त० ॥
इति मंत्रैस्त्रितलाज्यसमिद्धो मं कृत्वा यदस्य कर्मणोत्थरीरीति पूर्णाहुतिं
दत्त्वा संपातेनागमज्वा अक्षीभ्यामिति सूक्तेनांगानि संपूज्य यथाका
ममुल्लिख्य वस्त्रं दद्यात् ॥ तत्रमंत्रः ॥ ऋषीणां प्रवरोगस्त्यो लोपामु
द्रापतिः प्रभुः ॥ शौमवस्त्रप्रदानेन तुष्टो व्याधिं व्यपोहतु ॥ त
तो भूयसीं दक्षिणां दद्यात् ॥ इति व० दानम् ॥ अथोष्णी
षदानम् ॥ उष्णीषदायिनो मर्त्या जायंते मुकुटोज्ज्वलाः ॥ विस्ती
र्णराजवंशे तु सितच्छत्राग्र्यलक्षणाः ॥ विधिस्तु पूर्ववत् ॥ इत्युष्णीष
दानम् ॥ अथोर्णावस्त्रदानम् ॥ निष्किंचनेभ्यो दीनेभ्यः शीत
वातमहातपैः ॥ अर्दितेभ्यो करुणया वस्त्रमौर्णं ददाति यः ॥ न तस्य सुकृतं
वक्तुं शक्यते त्रिदशैरपि ॥ आधिव्याधिविनिर्मुक्तः सोक्षयं सुखमश्नुते ॥
इत्यूर्णादानम् ॥ अथासनदानम् ॥ सुगंधिचित्राभरणोपशोभितं
यस्त्वासनं वेदविदेप्रदद्यात् ॥ ग्रामाधिपत्यं लभते मनुष्यः कुले महत्त्वं

सलभेत्समग्रम् ॥ इत्यासनदानम् ॥ अथापाकदानम् ॥ म
 णिकादीनिशुभाणिस्थाल्यश्चसुमनोहराः ॥ घटकान्करकांश्चैवप्र
 णीताःकुंडकानिच ॥ शरावादीनिपात्राणिभांडान्युच्चावचानिच ॥
 अलिंजराःप्रतिघटामंथनीकटहानिच ॥ एवमन्यच्चयत्किंचिदुपभो
 ग्यंभवेद्गृहे ॥ संपादयेन्मंडलेतुलेपितेगोमयादिना ॥ हैमरौप्याणिभांडा
 निताम्रलोहमयानिच ॥ परितःस्थापयित्वाचस्वशक्त्यातानिषोडश ॥
 तानिचत्वारिचत्वारिन्यसेत्पूर्वादिदिक्मात् ॥ पूजयित्वाप्रयत्ने
 नहुत्वाचापिहुताशनम् ॥ नार्घ्यश्चाविधवास्तत्रसमानीयप्रपूजयेत् ॥
 प्रदक्षिणंततःकृत्वामंत्रेणानेनपूजयेत् ॥ आपाकब्रह्मरूपोसिभांडा
 नीमानिजंतवः ॥ प्रदानांतेप्रजापुष्टिःस्वर्गश्चास्तुममाक्षयः ॥ दानमंत्र
 स्तु ॥ भांडरूपाणियान्यत्रकल्पितानिमयाकिल ॥ भूत्वासत्त्वा
 नुरूपाणिचोपतिष्ठंतुतानिवः ॥ ॐअयेत्यादि० इममापाकंनाना
 भांडरचितंविष्णुदैवतंनानाजनेभ्यःसौभाग्यावैधव्यंसर्वगुणोपेतगृहप्रा
 प्तिपुत्रपौत्रादिसंततिस्वाम्ययोग्यसदामुखकामोहमुत्सृजामीति ॥ यो
 ह्यर्थीयेनभांडेनतत्तस्यप्रतिपादयेत् ॥ स्वेच्छयाचैवगृह्णातुननिवा
 र्यस्तुकश्चन ॥ अनेनविधिनायस्तुदानमेतत्प्रयच्छति ॥ विश्वकर्मा
 भवेत्तुष्टस्तस्यजन्मनिजन्मनि ॥ नारीदत्त्वातुसौभाग्यमतुलंप्रतिपद्य
 ते ॥ गृहंसर्वगुणोपेतंभृत्यमित्रजनैर्वृतम् ॥ अवियोगंसदा
 भर्तृरूपंचानुत्तमंलभेदिति ॥ अथताम्रपात्रदानम् ॥ अथातः
 संप्रक्ष्यामिपात्रदानमनुत्तमम् ॥ कृत्वाताम्रमयंपात्रंयथाविभवविस्त
 रम् ॥ तत्पात्रेहैमीलक्ष्मीनारायणप्रतिमांमुमामहेश्वरप्रतिमांचसंपूज्य
 द्विजमपिपूजयित्वा परापघादपैशून्याभक्ष्यभक्षणादिशरीरोत्थसक

लपापनाशकामोगोत्रायशर्मणेषु पूजिताय इदं ताम्रपात्रं उमामहेश्वरलक्ष्मीनारायणप्रतिमासहितं चतुर्भ्यमहंसंप्रददे नममेति ॥ मंत्रस्तु ॥ परापवादपैशून्यादभक्ष्यस्य च भक्षणात् ॥ पापंगात्रोत्थितं ताम्रपात्रं दानात्प्रणश्यत्विति ॥ एवं संकल्पवाक्यम् ॥ प्रतिमादिसर्वपात्रदानेषु बोध्यम् ॥ इति ताम्रपात्रदानम् ॥ अथ प्रसंगात्ताम्रदानम् ॥ संकल्पादि० अरोग्यबलवृद्धिसूर्य्यप्रीतिकामः ॥ मंत्रस्तु ॥ सूर्य्यप्रीतिकरं ताम्रमारोग्यबलवर्द्धनम् ॥ तस्मादस्य प्रदानेन शांतिरस्तु स दाममेति ॥ इति ताम्रदानम् ॥ अथ कांस्यपात्रदानम् ॥ वराहे ॥ संकल्पादि० कामकृता कामकृतपापनाशकामः । मंत्रस्तु ॥ यानि पापान्यनेकानि कामाकामकृतानि च ॥ कांस्यपात्रप्रदानेन तानि नश्यंतु मे सदेति ॥ इति कांस्यपात्रदानम् ॥ अथ प्रसंगात्कांस्यदानमापि ॥ संकल्पादि० ब्रह्मविष्णुशिवप्रीतिकामः ॥ मंत्रस्तु ॥ कांस्यं ब्रह्मशिवौ साक्षात्कांस्यमेतद्विभावसुः ॥ कांस्यं विष्णुमयं यस्मादतः शांतिं प्रयच्छ मे ॥ इति कांस्यदानम् ॥ अथ लोहपात्रदानम् ॥ संकल्पादि० ॥ ज्ञानज्ञानांकृतं पापं मया लोभात्कृतं चिरात् ॥ लोहपात्रप्रदानेन मम शीघ्रं व्यपोह तु ॥ इति लोहपात्रदानम् ॥ अथ रौप्यपात्रदानम् ॥ संकल्पादि० कन्यादूषणपरदाराभिर्मर्शनादिपापक्षयकामः ॥ मंत्रस्तु ॥ कन्यादूषणतः पापं परदाराभिर्मर्शनात् ॥ रौप्यपात्रप्रदानेन तानि नश्यंतु मे सदेति ॥ इति रौप्यपात्रदानम् ॥ अथ सुवर्णपात्रदानम् ॥ संकल्पादि० जन्मांतरसहस्रोत्थदुष्कृतनाशकामः ॥ मंत्रस्तु ॥ जन्मांतरसहस्रेषु यत्कृतं दुष्कृतं मया ॥ तत्सर्वनाशमायातु स्वर्णपात्रप्रदानतः ॥ अथ सपायसस्या

लीदानम् ॥ कृत्वाताम्रमयींस्थालींपलानांपञ्चभिःशतैः ॥
 अथकस्तुतद्रर्द्धेनतर्द्धेनवापुनः ॥ अत्यशक्तोमृन्मयींपायसपू
 र्णाघृतशर्कराशाकजलपात्रयुतांचसवस्त्रांमंडलैःसंस्थाप्यगंधमाल्या
 दिनालंकृत्यअद्येत्यादि० यावज्जीवंसकुटुंबस्ययथेष्टमन्नमक्षयभो
 ज्यादिलाभकामः इमांस्थालींपायसपूर्णघृतशर्कराशाकजलपा
 त्रवस्त्राभृतां मंडलस्थांसालंकृतांगोत्रायशर्मणेतुभ्यमहंसंप्रददेनममे
 ति ॥ मंत्रस्तुः ॥ इमांपायससंपूर्णायः स्थालींघृतजला
 दिभिः ॥ दद्यात्संपत्तिपात्रेस्यादतःपाहिमहेश्वरेति ॥ सुवर्णद
 क्षिणांदद्यात् ॥ अथाभयदानम् ॥ सएकःपुरुषोलोकेसर्वधर्म
 भृतांवरः ॥ वधभीतस्ययःकुर्यात्परित्राणंनरोत्तमः ॥ शक्र
 लोकेस्थितिस्तस्ययावदिंद्राश्चतुर्दश ॥ तमःप्रवेशभीतस्यपरित्रा
 णेनमानवः ॥ ब्रह्मलोकमवाप्नोति नात्रकार्यविचारणा ॥
 तमःप्रवेशनंचक्षुरुत्पाटनादिनांधीकरणम् ॥ वधादपिपरंपापंचक्षुषां
 तुवियोजनात् ॥ समर्थेननतत्कार्यकदाचिदपिकस्यचित् ॥ तमः
 प्रवेशनंकृत्वाप्रेरणांपुरुषाधमः ॥ अंधत्वंध्रुवमाप्नोति यत्रयंत्रापिजा
 यते ॥ अपिकल्पसहस्राणितमसाहभियुज्यते ॥ अंगच्छेदनभीतस्य
 कृत्वात्राणंविनिर्मितम् ॥ रुद्रलोकमवाप्नोतिकल्पाशेषमितिश्रुतिः ॥
 कल्पादिसर्गेभवतिज्ञानयुक्तोनरस्ततः ॥ कृत्वाबंधनभीतस्यपरित्राणं
 नरोत्तमः ॥ सर्वबंधविनिर्मुक्तोवायुलोकेमहीयते ॥ आसेधनाद्विनी
 तस्यत्राणंकृत्वातथानरः ॥ सर्वदुःखविनिर्मुक्तःसाध्यलोकमवामुया
 त् ॥ ताडनाद्यस्तुभीतस्यत्राणंतत्रसमाचरेत् ॥ सर्वदुःखविनिर्मुक्तो
 भृगूणांलोकमश्नुते ॥ विवासनाच्चभीतस्यत्राणंकृत्वातथानरः ॥

सर्वलोकमवाप्नोतिमानुष्यस्थानमुत्तमम् ॥ धनापहारभीतस्यत्रार्ण
 कृत्वानरोत्तमः ॥ दानपुण्यमवाप्नोतिलोकंदानदण्डवच ॥ अवमाना
 चभीतस्यत्रार्णकृत्वानरोत्तमः ॥ स्वर्गलोकमवाप्नोतिपूजादेवगुणात्त
 था ॥ नरःकृतपरित्राणःपुण्यंकिंचिद्यथाचरेत् ॥ भागीतस्यपरित्राता
 नरःपुण्यस्यकर्मणः ॥ पशूनां चमृगाणांचपक्षिणांचद्विजन्मनाम् ॥
 नाकलोकमवाप्नोतिसुखीसर्वत्रजायते ॥ यावंतितस्यरोमाणितावद्वर्षा
 णिमानवः ॥ सर्वलोकमवाप्नोतिअस्यत्रार्णंकरोत्यसौ ॥ अपिकीटपतं
 गस्यत्राणात्स्वर्गमवानुयात् ॥ बहून्यब्दसहस्राणिदेवेभ्यस्तत्रमोद
 ते ॥ चौरग्रस्तंनृपग्रस्तंरिपुग्रस्तंविमोचयेत् ॥ व्यालग्रस्तमृणग्रस्तं
 सोश्वमेधफलंलभेत् ॥ उपदेशंतथाकृत्वाभिषक्मूल्यंविनैवच ॥ प्रा
 णदानफलंप्राप्यनाकलोकेमहीयते ॥ येरक्षणायाभिरतामनुष्याभी
 रून्गतास्तेत्रिदशेंद्रलोके ॥ अवंतिनाद्यापिचतेनृवीराःकालेपितेषां
 च्यवनंचनास्ति ॥ इत्यभयदानविधिः ॥ अथपांथपरिचर्या ॥
 पांथपरिचरेद्यस्तुशयनासनभोजनैः ॥ सःस्वल्पेनप्रयासेनलोकान्
 जयतियाजिनाम् ॥ प्रतिश्रयंसुनिर्वातंशुचिभूमितलंशुभम् ॥
 अध्वनीनायसंपाद्यसद्योदहतिपातकम् ॥ वर्षायांपुष्कलतमे
 ह्मेतंशेशिरेषुच ॥ ग्रीष्मेचशीतलतलेपांथंविश्रामयेत्सुधीः ॥
 दत्त्वावासोविक्र्वायरोगिणोरुक्प्रतिक्रियां ॥ तृषार्त्तायजलं
 स्वादुमृष्टमन्नंबुभुक्षवे ॥ पथिकाययथा वित्तंसर्वतरतिदुष्क
 तम् ॥ अध्वन्यमनुमान्यापिशकमूलफलैर्जलैः ॥ सकृत्सकृत्य
 वाचापिश्रेयसोभाजनंभवेत् ॥ अध्वगानांसुखार्थायमार्गसत्कारका
 रिणः ॥ अगाधजलसंचारतेषांनौकाधिकारिणः ॥ प्रपामपारंसैर्दि

व्यैः पूर्णापथिकहेतवे ॥ ये कुर्वन्ति नराः पुण्याः सर्वे ते स्वर्गभागिनः
 तथा च ॥ मार्गं सेतुसुखं कृत्वा वह्निष्टोमफलं लभेत् ॥ जलप्रतरणे से-
 तुं यः करोति नरोत्तमः ॥ सतीर्णः सर्वदुःखेभ्यो नाकलोकप्रपद्यते ॥
 शर्करालोष्टपाषाणकंटकानि तथा नरः ॥ मार्गादिपास्य यत्नेन गोदान-
 फलमाप्नुयात् ॥ श्रांतसंवाहनं कृत्वा तदेव फलमश्नुते ॥ बीजयित्वा तथा
 पांथं तालवृतेन मानवः ॥ स्कंधेन श्रांतमूल्यापि वाजपेयफलं लभेत् ॥ वा-
 हनेनाथयानेन स्वेदश्रांतं तथा वहन् । साध्यानां लोकमासाद्य देवभोगानु-
 पाश्रुते ॥ श्रांतस्य भोजनं दत्वा स्थानमाप्नोति शाश्वतम् ॥ श्रांते तु त-
 र्पिते तोयैः स्वस्ति प्राप्नोति मानवः ॥ उपानद्भ्यां च छत्रेण श्रांतं संयोज्य
 मानवः संस्थाप्य शुभदशेषु क्षणाद्बहुफलं लभेत् ॥ भारश्रांतस्य वा भारं
 गृहीत्वा वहते तु यः ॥ कर्मणा तेन पुण्यात्मा स्वर्गलोकमुपाश्रुते ॥ मू-
 ल्येन वा गृहीतायः परभारं विचक्षणः ॥ अश्वमेधस्य यज्ञस्य फ-
 लं दशगुणं लभेत् ॥ रक्षणं पथितत्कृत्वा पांथानां मानवोत्तमः ॥
 प्राप्य वृद्धिपरां लोके रुद्रलोके महीयते ॥ चारैर्भ्योरक्षणं कृत्वा शक्र-
 लोके महीयते ॥ नदीतीरेषु संतार्य पांथान् पथितथानरः ॥
 शीघ्रं तरति दुर्गाणि क्षुरधारांश्च पर्वतान् ॥ सर्वपोतं तथानावं यः करो-
 ति नदीतटे ॥ अश्वमेधफलं तस्य भवतीह न संशयः ॥ सभास्थान-
 नानि रम्याण्यः करोति विचक्षणः ॥ उद्यानानि विचित्राणि श-
 कललोके महीयते ॥ प्रेक्षणीयप्रदानेन स्मृतिमेधां च विंदति ॥
 पांथानां हि दयाकार्यं कर्मणा येन केनचित् ॥ कृपास्थानं तु पां-
 थः स स्वर्गहाद्यो विनिःसृतः ॥ लिंगीवाप्यथ वा वर्षापांथः पथि-
 विचक्षणैः ॥ उपाख्यानैश्च कर्तव्यः पांथः पूज्यस्तु सर्वशः ॥

इतिनानोपचाराः ॥ अथाभ्यंगदानम् ॥ तैलेनशुभ
 मधेनदत्त्वाभ्यंगं द्विजातये ॥ विरुक्ष्यशुभचूर्णैस्संस्नाप्यकोष्णे
 णवारिणा ॥ प्राप्नोतिचंद्रसालोक्यंयावदाभूतसंप्लवम् ॥ यस्तु
 मार्गपरिक्रान्तं द्विजातिग्रामकर्षितम् ॥ तैलेनाभ्यंजयन्प्राज्ञःसमुखी
 मोदतेचिरम् ॥ यच्चपक्वादितैलेनद्विजंवाकेशवंशिवम् ॥ संस्ना
 पयतिपुण्यात्मा किंतस्यबहुभिर्मखैः ॥ योद्वादशीदिनेविष्णुमभ्यंज
 यतिभक्तितः ॥ शुभगंधेनतैलेनशक्तितोगोघृतेनवा ॥ तिलतै
 लेनवालोकैगंधर्वाणांसमोदते ॥ सर्पिषाकपिलाधेनोरथवान्येनस
 र्पिषा ॥ उत्तरायणमासाद्ययमंजयतिधूर्जटिम् ॥ महापूजां
 घृतेनैवतस्मिन्नेवदिनेशुभे ॥ कृत्वामनुष्योलभतेराज्यंनिहतकंठ
 कम् ॥ सर्पिःपलसहस्रेणगोविंदस्यशिवस्यवा ॥ महास्नानंनरःकृत्वा
 ब्रह्महत्यांनिरस्यति ॥ अथ पादाभ्यंगदानम् ॥ पादाभ्यंगंतुयोदद्या
 त्पांथायबहुवेदिने ॥ सशुभाभरणैः पादैर्वादिभिर्नित्यवंदितः ॥
 भवेन्नृपोमहाभागोमंडलेदशयोजने ॥ संबाह्यतुपरिश्रांतंपादाभ्यंगा
 दिनानरः ॥ धर्मस्यपुरमाप्नोतिसर्वकामगुणोज्वलम् ॥ दत्त्वा
 वारिसुखस्पर्शपादाभ्यंगं द्विजातये ॥ उच्छिष्टमार्जनाच्चापिगोदान
 फलमश्नुते ॥ अध्वस्फुटितपादानांपरिचर्याकरोतियः ॥ सस
 र्वभोगसंपूर्णविमानमधिरोहति ॥ इत्यभ्यंगदानम् ॥ अथप्रसंगे
 नगोपरिचर्या ॥ आपाढ्यामाश्वयुज्यांचपौष्यामाघ्यांचसर्वदा ॥
 नगृह्णीयाद्गवांक्षीरंसर्ववत्सायनिक्षिपेत् ॥ नषंडान्वाहयेच्चैवनगांभा
 रेणपीडयेत् ॥ युगादिषुयुगांतेषुषडशीतिमुखेषुच ॥ दक्षिणोत्तरगेसू
 र्येतथाविषुवयोर्द्वयोः ॥ संक्रांतिषुचसर्वासुग्रहणेचंद्रसूर्ययोः ॥

पंचदश्यांचतुर्दश्यांद्वादश्यामष्टमीषुच ॥ उपचारोगवांकाध्यर्घ्यमा
 सिमासियथाक्रमम् ॥ लवणस्यतुचत्वारिपलान्यष्टौघृतस्यच ॥
 परकीयस्यदुग्धस्यतथादेयानिषोडश ॥ द्वात्रिंशच्छीतलस्यापि
 जलस्यचपलानिच ॥ आदौविचार्य्यपयसः परिमाणंबलंरुचिम् ॥
 आंस्मिकंतुदातव्यंपुण्यार्थंतुगवाह्निकम् ॥ प्रभातेलवणंयंत्र
 दीयतेचततोजलम् ॥ ततस्तृणानिभोज्यंचपोषणंमांसवर्जितम् ॥
 निशिदीपः सतंत्रीकोदिव्यापौराणिकीतथा ॥ एवंकृतेमहींपूर्णा
 रत्नैर्दत्त्वाभवेत्फलम् । गोःप्रदानेनतत्पुण्यंगवांसंरक्षणाद्भवेत् ।
 मनुष्यैस्तृणतोयाद्यैर्गावः पाल्याः प्रयत्नतः ॥ देयाः पूज्याश्चपोष्या
 श्वप्रतिपाल्याश्चसर्वदा ॥ तृणोदकाग्रेषुवनेषुमत्ताः क्रीडंतुगावः सवृ
 षाः सवत्साः ॥ क्षीरंप्रमुंचंतुसुखंस्वपंतुशीतातपव्याधिभयैर्विमुक्ताः ॥
 इमंमंत्रंसशुद्धात्माजपेन्नित्यंसमाहितः ॥ गच्छंस्तिष्ठञ्जपञ्जिघ्रन्
 भुंजन्क्रीडन्समुत्सृजेत् ॥ महाभयेषुसर्वेषुसमेषुविषमेषुच ॥ प्रया
 णकालेचतथाश्रोतव्यमभयप्रदम् ॥ घासग्रासादिकंदेयंनिशिदीपः
 सुभास्वरः ॥ इतिहासपुराणानांव्याख्यानंसोपवीणकम् ॥ अंतस्तु
 द्वैर्यथाशक्तिपरिचर्यायथाक्रमम् ॥ तीडनाक्रोशस्वेदाश्चस्वप्नेपिनक
 दाचन ॥ तासांमूत्रपुरीषेतुनोद्वेगःक्रियतेकचित् ॥ शोधनीयश्चगोघा
 तःशुष्कक्षारादिकैःसदा ॥ ग्रीष्मेवृक्षाकुलेवेश्मशीततोयेविकर्दमे ॥ व
 र्षासुचाथशिशिरे सुखोष्णेवातवर्जिते ॥ उच्छिष्टमूत्रविट्श्लेष्ममलं
 जह्यान्नतत्रच ॥ रजस्वलानप्रवेश्यानांत्यजातिर्नपुंश्चली ॥ नलंब
 येद्वत्सतरीं नक्रीडेद्दोष्टसन्निधौ ॥ नगंतव्यंगवांमध्येसोपानत्कैःसपादु
 कैः ॥ हस्त्यश्वरथयानैश्चसवितानैःकदाचन ॥ दक्षिणोत्तरगैःप्रह्वैर्ग

व्यंचपदातिभिः ॥ गावःकृशातुराःपाल्याःश्रद्धयापितृमातृवत् ॥
गिरिप्रपातसिंहर्क्षशीतातपभयातुराः ॥ महाकोलाहलेघोरेदुर्दिनेदेश
विष्टवे ॥ गवांतृणानिदेयानिशीतलंचतथाजलम् ॥ गवांचतीर्थेव
सतीहगंगापुष्टिस्तथासारजसिप्रवृद्धा ॥ लक्ष्मीःपुरीषेप्रणतौचधर्म
स्तासांप्रणामंसततंचकुर्व्यात् ॥ इति गो०र्या ॥ अथान्नदानम् ॥
सर्वेषामेवदानानामन्नदानंपरंस्मृतम् ॥ सद्यःप्रीतिकरंदिव्यंबल
बुद्धिविवर्द्धनम् ॥ नान्नदानसमंदानंत्रिषुलोकेषुविद्यते ॥ अन्ना
द्भवंतिभूतानिप्रियंतेतदभावतः ॥ गर्भस्थाजायमानाश्चबालावृद्धा
श्चमध्यमाः ॥ आहारमभिकांक्षंतिदेवदानवतापसाः ॥ क्षुधाहि
सर्वरोगाणांव्याधिःश्रेष्ठतमास्मृता ॥ तस्यान्नौषधलेपेनप्रतीकारः
प्रकीर्तितः ॥ अन्नदःप्राणदःप्रोक्तःप्राणदश्चापिसर्वदः ॥ तस्माद
न्नप्रदानेनसर्वदानफलंलभेत् ॥ धर्मार्थकाममोक्षाणांदिहःपरमसाध
नम् ॥ स्थितिस्तस्यान्नपानाभ्यामतस्तत्सर्वसाधनम् ॥ अन्नं
प्रजापतिःसाक्षादन्नंविष्णुः शिवःस्वयम् ॥ तस्मादन्नसमंदानं
भूतंनभविष्यति ॥ तथाच-- लवणंचवृत्तैलंगुडंहिंगुस्तथार्द्रक
म् ॥ कटुकंजीरकंचैवपत्रंशाकंचशोभनम् ॥ शुभमिशुरसंचैवदधी
निर्व्यंजनानिच ॥ सुरभीणिचपापानिदत्त्वात्यंतंसुखीभवेत् ॥ तथा ॥
देवतानांचयोदयादन्नाद्यंश्रद्धयान्वितः ॥ सिकथात्सिकथाद्वसेल्लक्ष
समास्वर्गंमरैःसह ॥ एतद्विशगुणंपुण्यमन्नेव्यंजनसंगुते ॥ यथेष्टदेव
तादानोदितत्पुण्यंप्रकीर्तितम् ॥ योदद्याद्ब्राह्मणेन्नानितस्यद्विगुणितं
फलम् ॥ तस्मादस्मैचदत्त्वान्नंद्विगुणंफलमश्नुते ॥ रुद्रायान्नप्र
दानेनफलमेतच्चतुर्गुणम् ॥ श्रद्धाकालसामायोगाद्व्यंजनानांचयोगतः

शतसंख्यं भवेत्पुण्यं सम्यगन्नप्रदायिनाम् ॥ अन्यच्च ॥ यस्त्वे
 कपंक्त्यां विषमं ददाति स्नेहाद्वयाद्वयादिवार्थहेतोः ॥ देवैश्च दृष्टं मुनि
 भिश्च गीतं तां ब्रह्महत्यां मुनयो वदन्ति ॥ मृष्टमन्नं स्वयं भुक्त्वा पश्चात्कद
 शं न लघु ॥ ब्राह्मणान् भोजयेन्मुखो निरये चिरमावसेत् ॥ इति
 पक्वान्नदानम् ॥ अथामात्रदानम् ॥ धान्यानामुत्तमं दानं कथितं
 द्विजपुंगवैः ॥ धान्येभ्योऽपि परं दानं रक्तशालिः प्रकीर्तिता ॥ रक्त
 शालिनरोदत्त्वा मूर्घ्यलोके महीयते ॥ दत्त्वा तथा सुगंधांश्च गंधर्वैः सह
 मोदते ॥ कलमानां प्रदानेन शक्रलोके महीयते ॥ महाशालिप्रदाने
 न वसूमां लोकमाप्नुयात् ॥ कृष्णशालितथा दत्त्वा चालकायां प्रमोदते
 ब्रीहिणां सस्यजातानां दानात्स्वर्गमवाप्नुयात् ॥ यवप्रदानेन नरः
 स्वर्गलोके महीयते ॥ तथा गोधूमदानेन वसूनां लोकमाप्नुयात् ॥
 प्रियो भवति लोकस्य प्रियं गुणैः प्रयच्छति ॥ ददाति यस्तु श्यामाकंप्री
 ताः स्युस्तस्य देवताः ॥ अन्येषां शुष्कधान्यानां प्रदानेनियतो नरः ॥
 स्वर्गलोकमवाप्नोति नात्र काय्या विचारणा ॥ मुद्गदः शक्रलोकं तु यम
 लोकं तु माषदः ॥ यथेष्टं लोकमाप्नोति तिलदानात् न संशयः ॥ षष्टि
 कान्नप्रदानेन लोकं नैर्ऋतिकं लभेत् ॥ सचीनचणकं दत्त्वा लोकं वारुण
 माप्नुयात् ॥ वायव्यं च मसूराणि राजमाषाणि धानदम् ॥ अन्येषां श
 मीधान्यानां दानात्स्वर्गमवाप्नुयात् ॥ इक्षुमृद्दीकयोर्दानात्परं सौभाग्य
 माप्नुयात् ॥ पक्वान्नदानात्फलदं नृलोके शुष्कान्नमुक्तं हितदातिरस्मा
 त् ॥ यजंति यज्ञैर्हिततो द्विजैर्द्रास्तस्मात्तु तत्पुण्यतमं प्रदिष्टम् ॥ इत्यन्न
 दानम् ॥ अथोदकदानम् ॥ सलिलं यः प्रयच्छेत् जीवानां प्राणधार
 णम् ॥ शीतलं ग्रीष्मकाले तु तस्य पुण्यफलं शृणु ॥ कपिलाकोटिदा

नस्ययत्पुण्यं हि विधीयते । तत्पुण्यफलमाप्नोति पानीयं यः प्रयच्छति ।
पूर्णचंद्रप्रकाशेन विमानेनाधिरोहति ॥

इति महीधरकृते दानसंग्रहेऽनंतफलदानं नाम
त्रिंशत्तमः कोशः ॥ ३० ॥

अथोपरागादिषु क्रूरदानानि ॥ तत्रादौ ग्रहणे दानम् ॥ सौवर्णकारयेन्ना
गंपलेनार्द्धपलेन वा ॥ यथाशक्त्या प्रकुर्वीत फणायां तु मणीन् यसेत् । तत्र
पात्रे निधायाथ घृतपूर्णे विशेषतः । कांस्ये वा कांतिलोहे वा न्यस्य दद्यात्स
दक्षिणम् ॥ चंद्रग्रहे तु रूप्यस्य विंबं दद्यात्सदक्षिणम् ॥ नागरुक्ममयं
सूर्यग्रहे विंबं च हेमजम् ॥ तुरंगरथगोभूमितिलसर्पिश्च कांचनम् ॥
विशेषेण प्रदातव्यं न च दोषः प्रतिग्रहे ॥ मंत्रस्तु ॥ तमो मयम
हाभीमसोमसूर्यविमर्दन ॥ हेमताराप्रदानेन मम शांतिप्रदो भव ॥ विधुं
तुदनमस्तुभ्यं सिंहिकानंदनाच्युत ॥ दानेनानेन वै भानोरक्षमां वेधजाद्र
यात् ॥ अथ ग्रहपीडानिवृत्तौ शांतिर्यथा ॥ यस्य राशिं समां
साय भवेद्ग्रहणसंभवः ॥ स्नानंतस्य प्रवक्ष्यामि सर्वौषधिसमन्वित
म् ॥ चंद्रोपरागं संप्राप्य कृत्वा ब्राह्मणवाचनम् ॥ संप्राप्य चतुरो
विप्रान् शुक्लमाल्यानुलेपनैः । पूर्वमेवोपरागस्य समानीयौषधादिकम् ॥
स्थापयेच्चतुरःकुंभान् ग्रतः सागरानिव ॥ गजाश्वरथ्यावल्मीक
संगमाद्भूदगो कुलात् ॥ सजद्वारप्रदेशाच्च मृदमानीय निक्षिपेत् ॥
पंचगव्यं पंचरत्नं पंचत्वक् पंचपल्लवान् ॥ रोचनं पद्मकं शंखं कुंकुमं र
क्तचंदनम् ॥ शुक्तिस्फटिकतीर्थांबु सितसर्पपगुग्गुलून् ॥ मधू
कंदेवदारुंचविष्णुक्रांतांशतावरीम् ॥ वलांचसहदेवींच निशाद्वित
यमेव च ॥ एतत्सर्वं विनिक्षिप्य कुंभेष्ववावाहयेत् सुरान् ॥ सर्वे स

मुद्राःसरितस्तीर्थानिजलदानदाः ॥ आयांतुयजमानस्यदुरितक्षय
 कारकाः ॥ योसौवज्रधरोदेवआदित्यानांप्रभुर्मतः ॥ सहस्रनय
 नश्चंद्रोममपीडांव्यपोहतु ॥ मुखंयःसर्वदेवानांसप्तार्चिरमितद्युतिः ॥
 चंद्रोपरागसंभूतांग्रहपीडांव्यपोहतु ॥ यःकर्मसाक्षीलोकानांधर्मोमहि
 षवाहनः ॥ यमश्चंद्रोपरागोत्थांग्रह ॥ रक्षोगणाधिपःसाक्षान्नीलांजन
 समप्रभः ॥ खड्गहस्तोतिभीमश्चग्रह ॥ नागपाशधरोदेवःसदामकर
 वाहनः ॥ सजलाधिपतिर्देवोग्रह ॥ प्राणरूपोहिलोकानांसदाकृष्ण
 मृगप्रियः ॥ वायुश्चंद्रोपरागोत्थांग्रह ॥ योसौनिधिपतिर्देवःखड्गश
 लगदाधरः ॥ चंद्रोपरागकलुषंधनदोत्रव्यपोहतु ॥ योसाविंदुध
 रोदेवःपिनाकीवृषवाहनः ॥ चंद्रोपरागपापानिसनाशमृतशंकरः ॥
 त्रैलोक्येयानिभूतानिस्थावराणिचराणिच ॥ ब्रह्मविष्णुर्करुद्राश्च
 दहंतुममपातकम् ॥ एवमावाहयेद्देवान् मंत्रैरेभिश्चवारुणैः ॥ एता
 नेवतथामंत्रान्स्वर्णपट्टेविलेखयेत् ॥ ताम्रपट्टेथवालिरुनववस्त्रेत्
 थैवच ॥ मस्तकेयजमानस्यनिदध्युस्तेद्विजोत्तमाः ॥ कलशान्द्र
 व्यसंयुक्तान्नानारूपसमन्वितान् ॥ गृहीत्वास्थापयेद्भूयःभद्रपीठो
 परिस्थितम् ॥ पूर्वैरेवतुमंत्रैश्चयजमानंद्विजोत्तमाः ॥ अभिषेकंततः
 कुर्युर्मंत्रैर्वारुणसूक्तकैः ॥ आचार्य्यपूजयित्वातुस्वर्णपट्टंनिवेदयेत् ॥
 दक्षिणाचतथादेयागोदानंचस्वशक्तिः ॥ होमंचापिप्रकुर्वीतसप्त
 व्याहृतिभिस्तथा ॥ दानंचशक्तितोदयायदीच्छेदात्मनोहितम् ॥
 सूर्य्यग्रहेसूर्य्यनामयुक्तान्मंत्रान्प्रकीर्त्तयेत् ॥ अनेनविधिनायस्तुग्रह
 णेस्नानमाचरेत् ॥ नतस्यग्रहजोदोषःकदाचिदपिजायते ॥ इति ग्रह
 दानविधिः ॥ अथ भूकंपेदानम् ॥ भूमिकंपक्षणेदेयंयस्तुतत्रैववर्त्त

ते ॥ धनधान्यपटादीनि यद्धस्तेह्यागतंतदा ॥ नपूजानाभिर्मन्त्रांश्च
वाङ्मयानिचनमार्गयेत् ॥ नपात्रंनविधानंचदेयंदेयंयथातथा ॥
यदानलभ्यतेतत्रद्रव्यमानंतदाचरेत् ॥ मानसेदानसंकल्पंपश्चाद्देयं
प्रयत्नतः ॥ भूकंपदानमाहात्म्यंवक्तुंनालंचतुर्मुखः ॥ सर्वसौ
भाग्यजननंसर्वसंपादिवर्द्धनम् ॥ संतानसौख्यदंनृणां भुक्तिमुक्तिफल
प्रदम् ॥ तस्माद्देयंधराकंपेयत्किंचिद्द्रव्यमात्मनः ॥ नभूमिकंपात्प
रमःसमयोविद्यतेकचित् ॥ दानस्यसर्वयत्नेनतस्माद्दानंतदाचरेदिति ॥
इति भूकंपेदानम् ॥ अथभद्रादानप्रसंगेनतद्विधानमुच्यते ।
यथा ॥ सुतामार्तंडदेवस्य अक्षयेजनितापुरा ॥ शनैश्चरस्यभगिनी
सासौदर्यभयंकरी ॥ साजातमात्राभुवनंग्रसितुंह्युपचक्रमे ॥ नि
र्घ्यातियदिकार्य्येपिकश्चित्तस्यपुरस्थितः ॥ विघ्नंकरोतिस्वपतोभुं
जानस्यस्थितस्यच ॥ सर्वविघ्नकरीरौद्रासमाजोत्सवनाशिनी ॥ नित्यो
द्वेगकरीसाक्षाद्विनाशयतियाजगत् ॥ तांतुदुर्विनयेसक्तादृष्ट्वादेवोदिवा
करः ॥ चितयामासकस्यापियच्छाम्येनांसुमध्यमाम् ॥ कन्यादु
र्विनयाद्वेहेपितादोषेणगृह्यते ॥ तस्मात्सर्वप्रयत्नेनकन्यादेयाविप
श्चिता ॥ चित्यैवमशुभांभद्रांयस्मयस्मप्रयच्छति ॥ तंतंनयेत्क्षयंचै
पासुरराक्षसकिन्नरम् ॥ मंडपमंडपारंभेविनाशयतितत्क्षणात् ॥
विवस्वांश्चितयामासकस्येयंप्रतिपाद्यते ॥ विरूपादुष्टहृदयागर्दभा
स्यात्रिपादिका ॥ ऊर्ध्वरोमामहादंष्ट्रास्वेच्छाचारविहारिणी ॥ दत्ता
त्र्येषानंसौख्यायभवतीहकथंचन ॥ एवंवितर्कयन्देवआस्तेयावद्दि
वस्पातिः ॥ तावत्तयाजगत्सर्वदूषयामासविद्रुतम् ॥ अथाजगाम
सवितुः पार्श्वेब्रह्मांडसंभवः ॥ उपालंभंददौचाथविष्टिदौष्ट्यमशे

षतः ॥ भास्करस्तमुवाचेदंस्वयंभुवनेश्वरः ॥ भवान्कर्त्ताचहर्त्ता
 चकस्मादेवंप्रापसे ॥ एवमुक्तस्तदाब्रह्माभास्करेणामितयुतिः ॥
 उवाचविष्टिमानाध्यशृणुभद्रेमयोदितम् ॥ करणैःसहवर्त्तस्ववव
 बालवकौलवैः ॥ सप्तमेर्द्धदिवेप्राप्तेयदभीष्टंकुरुष्वतत् ॥ यात्राप्रवेशे
 मांगल्येकृषिवाणिज्यकारकान् ॥ भक्षयस्वाभिमुखगान्नरानुन्मा
 र्गगमिनः ॥ नोद्वेजनीयोहिजनोभवत्यादिवसत्रयम् ॥ पूज्यासु
 रासुराणां त्वंदिवसाद्धंभविष्यसि ॥ उल्लंघ्ययेप्रवर्त्ततेभद्रेत्वांनिर्भयान
 राः ॥ तेषांविनाशयशुभंकार्यमार्ग्येसुनिश्चितम् ॥ एवमुक्त्वा
 गतोब्रह्माभद्रापिभुवनत्रयम् ॥ बभ्रामोद्भ्रांतहृदयाभीषयंतीसुरासु
 रान् ॥ एवमेषासमुत्पन्नाविष्टिरिष्टविनाशिनी ॥ सिंहग्रीवासप्त
 भुजात्रिपादापुच्छसंयुता ॥ खरोत्तमांगवदनाप्रेतारूढाकृशोदरी ॥
 ज्वलच्चक्षुश्चदधतीहस्तैः पाशासिशक्तिकाः ॥ नरमुंडांश्चमालाश्च
 मुद्राःसप्तविधाःस्मृताः ॥ सजलजलदवर्णादीर्घनासोग्रदंष्ट्रा विपुल
 हनुकपोलार्पिण्डकोद्वद्धजंघा ॥ अनलशतसहस्रंचोद्विरंतीसमंता
 त्पततिभुवनमध्येकार्यनाशायविष्टिः ॥ नभोधियाकेतुशताग्रजा
 ताकृष्णांगयष्टिःसततंकुचेला ॥ देवैर्विमुक्ताकरणांतसंस्थाविष्टिस्तुस
 र्वत्रविवर्जनीया ॥ मुखेतुघटिकापंचद्वेतुकंठेसदास्थिते ॥ हृदि
 चैकादशप्रोक्ताश्चतस्रोनाभिमंडले ॥ पंचकट्यांतुविज्ञेयाःतिस्रःपु
 च्छेभयावहाः ॥ मुखेकार्यविनाशायग्रीवायांधननाशिनी ॥ हृदि
 प्राणहराज्ञेयानाभ्यांतुकलहप्रदा ॥ कट्यामर्थपरिभंशोविष्टिपुच्छेभ्रु
 वंजयः ॥ पृथिव्यांयानिकार्याणिअशुभानिशुभानिच ॥ तानिस
 र्वाणिसिद्धयंतिविष्टिपुच्छेनसंशयः ॥ जलानलेंदुकूरेशयाम्यवातै

इदिक्रमात् ॥ संख्यांसमानप्रहरैर्विष्टेर्दुष्टंमुखंयतः ॥ घुंजाटेणीसि
 तेपक्षेडैछीजुंढसितेतरैः ॥ व्यंजनैस्तिथयोज्ञेयास्वरैस्तुप्रहरादिशः ॥ क
 रालीनंदनीरौद्रासुमुखीदुर्मुखीतथा ॥ त्रिशिराभैरवीहंसीह्यष्टौचैता
 स्तुविष्टयः ॥ घनात्वधोमुखीभद्रामहामारीस्वरानना ॥ कालरात्रि
 र्महारात्रिर्विष्टिश्चकुलपुत्रिका ॥ भैरवीचमहाकाली असुराणांक्षयं
 करी ॥ द्वादशैतानिनामानिप्रातरुत्थाययःपठेत् ॥ नचव्या
 धिभयंतस्यरोगीरोगात्प्रभुच्यते ॥ ग्रहाःसर्वेनुकूलाः स्युर्नचविघ्नो
 भिजायते ॥ रणेराजकुलेद्यूतेसर्वत्रविजयोभवेत् ॥ यश्च
 पूजयतेनित्यंशास्त्रोक्तविधिनानरः ॥ तस्यसर्वार्थसिद्धिस्तुजा
 यतेनात्रसंशयः ॥ यस्मिन्दिनेभवेद्विष्टिस्तस्मिन्दानंसमाचरेत् ॥
 सवौषधिजलैःस्नानंसुगंधामलकैरथ ॥ देवान्पितॄन्समभ्यर्च्यततः
 स्वर्णमयींशुभाम् ॥ विष्टिं कृत्वापुष्पधूपनैवेद्यादिभिरर्चयेत् होमं
 तुनामभिविष्ट्याश्शतमष्टोत्तरंक्रियात् ॥ सतैलंकसरंदधात्तत्प्रीत्यैद
 क्षिणान्वितम् ॥ छायासूर्य्यसुतेदेविविष्टेदृष्टार्थनाशिनी ॥ पूजिता
 सिमयाभक्त्याभद्रेभद्रप्रदाभव ॥ ततोमूर्तिलोहमयींपीठेधृत्वाप्रपूज्य
 च ॥ ब्राह्मणाग्रपुनर्दद्याल्लोहतैलतिलैर्युताम् ॥ कृष्णांसवत्सांगामेकां
 तथैवंकृष्णकंबलम् ॥ दक्षिणां चयथाशक्तिदत्त्वाभद्रांविस्र्जयेत् ॥
 एवंयःकुरुतेभक्त्याभद्रायादानमुत्तमम् ॥ विघ्नो न जायतेतस्यका
 र्य्यारंभेकदाचन ॥ राक्षसावापिशाचावापूतनाशाकिनीग्रहाः ॥
 नपीडयंतितंमर्त्यंयोभद्रादानमाचरेत् ॥ नचैवेष्टवियोगःस्या
 न्नहानिस्तस्यजायते ॥ देहांतियातिसदनंभास्करस्यनसंशयः ॥
 सूर्य्यात्मजातिभयद्भागिनीशनेर्ध्यामर्त्येभमत्यतिबलाकरणकमे

ण ॥ तांलृष्णभासुरमुखीप्रददातिविष्टिमिष्टार्थसिद्धिम्बुधोपिपुमानुषै
 ति ॥ इति भद्रादानम् । अथ कालपुरुषदानम् ॥ ज्ञेयो निष्कशतं तत्रंदा
 नेयं विधिरुत्तमः ॥ मध्यमस्तु तदर्धेन तदर्धेनाधमः स्मृतः ॥ अत्यशक्तौ
 पंचसौवर्णिको वा ॥ ततो ल्पेन तु प्रतिग्रहीता दुःखशोकावहः स्यात् ॥
 चतुर्थ्या चतुर्दश्यां भद्रायां करणे वा कुर्व्यात् ॥ तत्स्वरूपं तु ॥ रौप्य
 दशनं सुवर्णनेत्रं खड्गोद्यतकरं मांसपिंडयुतवामकरं जपाकुसुमकुण्डलं
 च वस्त्रं स्रग्विणं शंखमालाधरं छुरिकायुतं कटिदेशे अतिदीर्घलृष्णा
 जिनयुतं निर्माय अद्येत्यादि० अपमृत्युव्याधिसर्वबाधानिवारणाव्या
 हतैश्वर्य्यप्राप्तिधर्मश्रीपुत्रपौत्रादिकर्तृकराज्यातिपरमपदाव्यतिक्रमः
 कालपुरुषदानमहं करिष्ये ॥ इति कालपुरुषं संपूज्य विभूष्या द्विजं
 वृत्वा यथाविभवं वस्त्रालंकारादिभिः संपूज्य पुष्पांजलिं गृहीत्वा
 पठेत् ॥ सर्वकलयसेयस्मात्कालस्त्वं तेन चोच्यसे ॥ ब्रह्मविष्णुशिवा
 दीनां त्वमसाध्योऽसि सुव्रत ॥ पूजितस्त्वं यथाभूत्तया प्रार्थितश्च
 यथा सुखम्—यद्बुध्यते विष्णुरूपतत्कुरुष्व न मोस्तुते ॥ इति
 संप्रार्थ्य ॥ अद्येत्यादि० पूर्ववत्संकीर्त्य गोत्राय शर्मणे सा
 लंकृताय सुपूजिताय इमं कालपुरुषं सालंकृत्युक्तोपस्कं विष्णु
 दैवतं तुभ्यमहं संप्रददेन ममेति दत्त्वा—पंचसुवर्णाद्दृष्टुमानिष्कशतं दक्षि
 णां दत्त्वा तं विसृज्य तन्मुखं न पश्येन्नस्पृशेच्च ततः शांता पृथिवी शिवमंत
 रिक्षम् इति जप्त्वा हस्तौ पादौ प्रक्षाल्या चम्य भूयसीं दक्षिणां दत्त्वा वि
 भ्रान्तं भोज्यमुद्दयुतो भुंजीतेति ॥ अनेन विधिना यस्तु दानमेतत्प्रयच्छ
 ति ॥ नापमृत्युभयं तस्य न च व्याधिकृतं भयम् ॥ भवत्यव्याहतैश्वर्य्यः
 सर्वबाधाविवर्जितः ॥ अथ यममूर्तिदानं अपमृत्युहरम् ॥ लोह

पात्रस्थितं कांस्यं तत्र पञ्चतुराजतम् ॥ तस्मिन्कालेश्वरः स्वर्णैः पुरुषाका-
रतांगतः ॥ तद्रूपं तु ॥ ईषत्पीतोदंढहस्तोरक्तदृक्पाशहस्तकः ॥ कुक्षो-
वस्त्रालंकृतः स्याद्रोगिणामभयप्रदः ॥ अलंकृतः स्वर्णालंकारैः त्रिलोहां-
कारैर्दूतैर्वृतः (त्रिलोहमन्त्रकांस्यताम्रपित्तलाख्यम्) पुरुषाकारैर्दूतैर्द-
ण्डहस्तैः कृत्वा यममहिषपृष्ठे अष्टम्यां चतुर्दश्यां वा दद्यात् । दक्षिणानु-
वृत्तपूर्णघटः सुवर्णवा । एवं कृत्वा दानेन नाशोपमृत्योः ॥

इति महीधरकृते दानसंग्रहे कूरदानविधिर्नामै-

कत्रिंशः कोशः ॥ ३१ ॥

अथ सर्वसंपत्करं दानम् ॥ सूर्य्योपरागादिपुण्यकाले देवालयं
दिपुण्यदशे गृहे वा कार्प्यं दानम् ॥ प्रातस्तिलकुशमिश्रोदकेन स्नात्वा
कृतनित्यक्रियः आचम्य प्राणानायम्याद्येत्यादि ० सर्वसंपदायुरारोग्यस-
मस्तपापनाशपुत्रपौत्रादिकुलवृद्धिस्वर्गनिवासमोक्षेष्टसिद्धिकामेभि-

त्रादिप्रतिमादानमहं करिष्ये । इति संक-
ल्प्य । गुरुवृत्वा यथाविभवं वस्त्रालंकारा-
दिभिः संपूज्य विंशतिहस्तां चतुरस्त्रां भुवं
गोमयं नोपलिप्य तत्र प्रागायताश्चतस्र उ-
दगायत्पश्चतस्रोरेखालिखित्वा तेषु नव-

वह्निं	वृत्रहणं	दिवाकरं
९	८	७
उमापतिं	विष्णुं च	ब्रह्माणं
६	तुर्भुजं ५	४
सोमं	वरुणं	मित्रं
३	२	१

कोष्ठेषु द्रोणमिततं दुलान्निक्षिप्य तेषु नवकुंभान्संस्थाप्य वस्त्रैरावेष्टयते
पुसुवर्णत्रयादूर्ध्वपलावधिसुवर्णनिर्मितानवप्रतिमाः संस्थाप्य पूजयेत्
तत्र पश्चिमपंक्तावुदकसंस्थितं मित्रं वरुणं सोमं मध्यपंक्तौ ब्रह्माणं चतुर्भु-
जं विष्णुमुमापतिं चांत्यपंक्तौ दिवाकरं वृत्रहणं वह्निं च । ततोऽष्टौ विप्रा-
न्संपूज्यैकैकस्मै पूर्वोक्तसंकल्पोच्चारणानंतरंगोत्राय शर्मणे सुपूजिताय

इमांमित्रप्रतिमांसुपूजितांतुभ्यमहंसंप्रददेनममेतिदत्त्वा—वरुणप्रतिमां
 गुरवेदत्त्वादेयद्रव्यसमंसुवर्णदक्षिणां वस्त्रयुगंचदद्यात् ॥ ततःसोमब्रह्म
 विष्णुशिवदिवाकरवृत्रहवह्निप्रतिमाश्चब्राह्मणेभ्योदत्त्वासुवर्णदक्षि
 णांचतेभ्योदत्त्वा ब्राह्मणांश्चभोजयित्वाभूयसींदक्षिणांचदत्त्वासुहृद्यु
 तोभुंजीत ॥ एवंयःकुरुतेमर्त्यःसर्वविधिविधानतः ॥ तस्यक्लेशाःश
 मंयांतिसर्वसंपत्तिभागभवेदितिइतिसंनम् ॥ अथ जलाशयनिर्मा
 णम् ॥ उदकेनविनावृत्तिर्नास्तिलोकद्वयेसदा ॥ तस्माज्जलाशयाः का
 र्ग्याःपुरुषेणविपश्चिता ॥ अग्निष्टोमसमःकूपःसोश्चमेधसमोमरौ ॥
 कूपःप्रवृत्तपानीयःसर्वहरतिदुष्कृतम् ॥ कूपकृत्स्वर्गमासाद्यस
 र्वान्भोगानुपाशनुते ॥ तत्रापिभोगेनैपुण्यंस्थानाभ्यासात्प्रकीर्त्ति
 तम् ॥ अवटंघोणरः कुर्ग्यादपांपूर्णसुशोभनम् ॥ दद्या
 त्सुब्राह्मणेभ्यस्तंभोजयित्वायथाविधि ॥ अष्टाभिः सुविचित्रा
 भिः पताकाभिरलंकृतम् ॥ पितृस्तारयतेपंचाशतंदत्त्वानरोत्तमः ॥
 यात्यप्सरस्सुगीतेनवरुणस्यसलोकताम् ॥ अन्यच्च ॥ योवापीमग्नि
 साक्ष्येण विधिवत्प्रतिपादयेत् ॥ कोणेषूदककुंभस्थान्समुद्रानाचर्य
 श्रद्धया ॥ चतुरश्वतुरोदत्त्वातेनदत्तामहीभवेत् ॥ तत्सन्निधौद्विजा
 नाचर्यविधिवत्पानभोजनैः ॥ सयातिवारुणंलोकंदिव्यकामसमन्वि
 तम् ॥ अन्यच्च ॥ तडागेयस्यपानीयंसततंखलुतिष्ठति ॥ स्वर्गलोकगति
 स्तस्यनात्रकार्ग्याविचारणा ॥ तडागकर्त्तावसतिस्वर्गेयुगचतुष्टयम् ॥
 यत्रविप्रोथगौरेकासालिलंपिबतिक्रचित् ॥ तडागंतादृशंकृत्वास्वर्गे
 दशयुगंवसेत् ॥ शुभेदिनेसुनक्षत्रेसुमुहूर्तेभवेद्यदा ॥ वापीकूपत
 डागानांतस्मिन्कालेविधिःस्मृतः ॥ संपूर्णेतुल्यतेकर्तुःसंपूर्णास्युर्म

नोरथाः ॥ अथैतेषांप्रतिष्ठादिद्रष्टव्यंयत्रकुत्रचित् ॥ ग्रंथंदा
नपरेत्वस्मिन्नोक्ताभूयस्त्वभीषया ॥ इति ज०णम् ॥ अथ वृक्षा
रोपणम् ॥ स्थावराणांचभूतानांजातयःषट्प्रकीर्त्तिताः ॥ वृक्षगु
ल्मलतावल्कत्वक्सारास्तृणजातयः ॥ एतास्तुजात्योवृक्षाणां
तदारोपेगुणोस्तिहि ॥ कीर्त्तिश्चमानुषेलोकेप्रेत्यचैवशुभंफलम् ॥
अतीतानागतौचोभौपितृवंशौयथातथा ॥ तारयेद्वृक्षरोपीचतस्मा
द्वृक्षांश्चरोपयेत् ॥ पुष्पैस्सुरगणान्वृक्षाःफलैश्चापितथापितृन् ॥
छाययाचातिथीनांतुपूजयंतिमहीरुहाः ॥ किन्नरोरगरक्षांसिदेवगंध
र्वमानवाः ॥ तथामहर्षयश्चैवसंश्रयंतिमहीरुहान् ॥ पुष्पिताःफ
लवंतश्चतर्पयंतीहमानवान् ॥ वृक्षदंपुत्रवद्वृक्षास्तारयंतिपरत्रच ॥
तस्मात्तडागेरोप्यावैवृक्षाःश्रेयोर्थिभिःसदा ॥ पुत्रवत्परिपाल्याश्चपु
त्रास्तेधर्मतःशुभाः॥अपुत्रस्यचपुत्रत्वंपादपादहकुर्वते ॥ यच्छंतिरो
पकेभ्यस्तेसतीर्थतर्पणादिकम् ॥ धनीचाश्वत्थवृक्षेणह्यशोकःशौ
कनाशनः ॥ पुक्षोयज्ञपतिःप्रोक्तश्चिचाश्चायुःप्रदाःस्मृताः ॥ जंबूः
कन्याप्रदाप्रोक्ताभाष्यादादाडिमीतथा ॥ अरलूरोगनाशायपला
शोब्रह्मदस्तथा ॥ प्रेतत्वंजायंतेपुंसांरोपयेद्योविभीतकम् ॥ अंगुलेः
कुलवृद्धिःस्यात्बदरेचाप्यरोगता ॥ निंबप्ररोपकोयस्तुतस्यतुष्टोदि
वाकरः॥श्रीवृक्षेशंकरोदेवःपाटलायांतुपार्वती॥ शिशुपायामप्सरसः
कुंदेगंधर्वसत्तमाः ॥ तिन्त्रिडीकेदासवर्गोबकुलोदस्युदस्तथा ॥ पु
ण्यस्त्रिदायकश्चैवचंदनःपनसस्तथा ॥ सौभाग्यदंचंपकंचकरीरः
पारदारकः ॥ अपत्यनाशदस्तालोनादीशःकुलवर्द्धनः ॥ बहुभा
ष्यानालिकेरीद्राक्षासर्वांगसुंदरी॥रतिप्रदाच कदलीमोचिकाशत्रुना

शिङ्ग ॥ इत्यादयस्तथायेन्येयेनोक्तास्तेपिदायकाः ॥ प्रतिष्ठातिग
 मिष्यन्ति येनरावृक्षरोपकाः ॥ अश्वत्थमेकंपिचुमंदमेकंन्यग्रोधमेकं
 दशतित्रिडीकम् ॥ कपित्थविल्वामलकीत्रिपंच पंचाभ्रवापीनर
 कंनपश्येत् ॥ प्रतिश्रयाःश्रांतसमाश्रितत्वादमीचसर्वेफलदाबुभु
 क्षवे ॥ अपत्यमेतेपरलोकहेतोर्विमृश्यतत्किंनरवोनरोपिताः ॥
 नस्वानितापुष्करिण्योरोपितानचपादपाः ॥ मातुर्यौवनचोरेणते
 नजातेनकिञ्चित्तम् ॥ छायांन्यस्यकुर्वन्तिष्ठन्तिस्वयमातपे ॥ फलं
 तिचपरार्थेषुनस्वार्थैकपराद्रुमाः ॥ अतोद्रुमाःसदारोप्याःसर्वकामस
 मृद्धये ॥ इति वृक्षरोपणफलम् ॥ अथ वृक्षदानम् ॥ देवेभ्यो
 थद्विजातिभ्योयोदद्यात्फलदंद्रुमम् ॥ सपीयूषभुजांलोकेसेव्यमानो
 वरोरुभिः ॥ क्रीडतेदेववत्कालमनंतंपूर्वजान्वितः ॥ सहकारद्रुमान्द्रु
 त्वाकिञ्जरैस्सहमोदते ॥ यातिदत्त्वाद्विजेजंबूमंविजायाःसलोकता
 म् ॥ वारुणंनालिकेरेण खर्जुरेणचधानदम् ॥ पूगद्रुमप्रदानेनलो
 कंसारस्वतंत्रजेत् ॥ यातिचंद्रमसोलोकंदत्त्वापनसभूरुहम् ॥ चिंचा
 प्रदानतोयातिरुचिरंलोकमाश्विनम् ॥ कपित्थदाडिमाप्रातकदल्या
 मलकीतरुन् ॥ दत्त्वानक्षत्रलोकेषुसुखमंश्नातिमानवः । अन्येषामपि
 वृक्षाणांमुमनःफलशास्विनाम् ॥ प्रदानतोरोयातिपरमैश्वर्यसंपदम् ॥
 पुष्पोपगंवाथफलोपगंवायः पादपंस्पर्शयतेद्विजाय ॥ सखीसमृद्धं
 दुरतपूर्णप्राप्तोत्ययत्नोपनतंगृह्वै ॥ इति वृक्षदानम् ॥ अथक
 दलीदानम् ॥ कारयेत्कदलीदिव्यांपणैःसर्वत्रसंवृतम् ॥ फलपूगे
 नसंयुक्तंमुवर्णस्यफलेनतुं ॥ यथाविभवतः कुर्याद्वस्त्रेणावेष्टयसूत्र
 कैः ॥ धर्मेज्ञायातिदांतायदद्यात्संपूज्ययत्नतः ॥ मंत्रस्तु ॥ हिरण्य

गर्भपुरुषपरात्परजगन्मय ॥ रंभादानेनदेवेशक्षयक्षपयमेप्रभो ॥ इति
 कदलीदानम् ॥ अथन्यग्रोधदानम् ॥ व्रणाःशस्त्रेणयेपिस्युर्विष
 दिग्धेनसंयुगे ॥ तेपिशुद्धाः प्ररोहंतियथाप्रोक्तंतुवायुना ॥ विधिस्तु
 कदलीवत् ॥ मंत्रस्तु ॥ उत्तराशापतेदेवकुबेरनरवाहन ॥ नाडी
 व्रणंनश्यतुमेन्यग्रोधस्यप्रदानतः ॥ इति न्यग्रोधदानम् ॥ अथाश्वत्थ
 दानम् ॥ भवेत्स्फुटितपादस्तुयोभिहिंस्याद्वनस्पतीन् ॥ दानेनतत्प्रती
 कारंप्रवक्ष्यामियथोदितम् ॥ पलार्द्धेनतदर्द्धेनतदर्द्धार्द्धेनवापुनः ॥ अश्व
 त्थवृक्षंकुर्वीतस्कंधशस्त्रास्त्रासमन्वितम् ॥ माणिक्यवज्रवैडूर्यैःस्कं
 धमध्येस्वलंकृतम् ॥ वस्त्रेणावेष्टयसर्वत्रधान्यस्योपरिविन्ध्य
 सेत् ॥ ततोवृक्षंआचार्य्यचसंपूज्य—यदौषधय० निम्नति० नामवति०
 इति तिसृभिस्तिलाज्यसमिद्धोमंकृत्वाअश्वत्थइतिमंत्रेणस्विष्टकृतंहु
 त्वाआहुतिसंपातशेषेणरोगिणःपादौमृजेत् ॥ सर्पत्वक्कूर्मनिशाचूर्ण
 मिश्रितोदकैःतंस्त्रापयित्वा ॥ दानमंत्रः ॥ पीप्पलीवृक्षराड्देव ह्यग्निगर्भ
 स्त्वमेवहि ॥ प्रभुर्वनस्पतीनांचपूर्वजन्मनियत्कृतम् ॥ हिंसनंयत्कृतं
 यच्चवैरूप्यंपादयोर्मम ॥ नाशयाशुचमेप्राप्तत्वंदानेनातितोषितः ॥
 अश्वत्थमेवंदत्त्वातंप्रणिपत्यविसर्जयेत् ॥ पुनःस्नात्वातुमुंजीतब्रा
 ह्मणैर्बन्धुभिःसह ॥ अथाग्नदानंविद्रधिरोगहरम् ॥ विद्रधिःफलह
 र्तास्यान्मनुष्योब्राह्मणस्यतु ॥ वक्ष्यामितत्प्रतीकारंदानहोमादिभिः
 पुनः ॥ सर्वविधानमश्वत्थवद्बोध्यम् ॥ होमेतु यदहंवायुरित्यादिमंत्रः ॥
 ग्रहशांतिश्चात्रोक्ता ॥ आग्नेय्यामग्निस्थापनम् ॥ उत्तरस्यांकलश
 स्थापनम् ॥ एवंकृत्वासौवर्णह्याग्नवृक्षंदद्यात् ॥ मंत्रस्तु ॥ आग्नस्त्वं
 ब्रह्मणासृष्टःसर्वप्राणिहितायतु ॥ वृक्षाणामादिभूतस्त्वंदेवानांप्रीति

वर्द्धनः ॥ फलचौर्ग्येणयत्प्राप्तं वैरूप्यं पूर्वजन्मनः ॥ सौवर्णवृक्षदाने
 नतुष्टाः सर्वाश्च देवताः ॥ विद्रधिंचशरीरोत्थं बाह्यमाभ्यंतरंतथा ॥ वि
 नाशघंतुसकलं स्वास्थ्यं कुर्वतु मे सदेति । ततस्सुवर्णदक्षिणां दत्त्वा भूयसीं
 दक्षिणां च दद्यात् ॥ इति वृक्षदानविधिः ॥ अथारामविधिः ॥
 क्रीडारामंतुयः कुर्ग्या दुद्यानं पुष्पसंयुतम् ॥ तोयाश्रयसमायुक्तं गुप्तं फल
 समृद्धिदम् ॥ सगच्छेच्छंकरपुरं वा सस्तत्रयुगत्रयम् ॥ उत्तरेण शुभः
 पुक्षो वटं प्राच्यां चरोपयेत् ॥ उदुंबरं च याम्येन सौम्येनाश्वत्थमे
 व च ॥ एते कर्मणि नेष्यंते दक्षिणादिक् समुद्रवाः ॥ समीपजाताश्च
 तथा वज्र्याः कंटकिनोद्गमाः ॥ वामभागे तथोद्यानं कुर्ग्या द्वासगृहा
 च्छुभम् ॥ वायव्ये प्राक् किलांस्तत्र मृद्वीकां तांश्च पुष्पितान् ॥
 ततस्तुरोपयेद्वृक्षान् प्रयतः सुसमाहितः ॥ स्नातोद्गममथाभ्य
 र्च्य ब्राह्मणांश्च शिवंतथा ॥ ध्रुवानि पंच वायव्ये हस्तं पुष्यं सवैष्ण
 वम् ॥ नक्षत्राणि तथा मूलं शस्यतेद्गुरोपणे ॥ उद्यानमज
 लं शुष्कं नाभिरामं यदा तदा ॥ प्रवेशयेन्नदीवाहान् पुष्करिण्यश्च
 कारयेत् ॥ संस्कार्यमुद्भिदंतोयं कूपाः कार्याः प्रयत्नतः ॥
 अरिष्टाशोकपुन्नागशिरीषाः सप्रियंगवः ॥ पनसाशोकक
 दलीजंबूलकुचदाडिमाः ॥ मांगल्याः पूर्वतो वृक्षारोपणीया गृहेषु वा ॥
 कृत्वा बहुत्वमेतेषां रोप्याः सर्वे वनांतरम् ॥ शाल्मलीं कोविदारं च वर्ज
 यित्वा विभीतकम् ॥ दमनं दैवदारुं च पलाशं पुष्करंतथा ॥ न विवर्ज्य
 स्तथा कश्चिद्देवोद्याने विजानता ॥ तत्रापि बहुलाकार्या मांगल्यानां
 विशेषतः ॥ सायंप्रातश्च घर्मातिशयकाले दिनांतरे ॥ वर्षाकालेषु
 वःशेषे सैक्यारोपिताद्गमाः ॥ उत्तमं विंशतिर्हस्ता मध्यमं षोडशांत

रम् ॥ स्थानात्स्थानान्तरं काय्यवृक्षाणां द्वादशांतरम् ॥ अभ्यास
जातास्तरवः संस्पृशन्तः परस्परम् । अव्यक्तमित्रसूक्ष्मत्वाद्भवंतिसफ
लाः सदा ॥ तेषां व्याधिसमुत्पत्तौ कथयिष्ये चिकित्सितम् ॥ आदौ
संशोधनं तेषां किंचिच्छेनकारयेत् ॥ विडंगघृतपंकाक्ताः सेचये
च्छीतवारिणा ॥ फलनाशे कुलत्थैश्च माषैर्दुग्धैस्तिलैर्यवैः ॥ शृतशित
तपयस्सेकः फलपुष्पाय सर्वदा । आविकाजसंक्षुचूर्णतिलानि च गोमांस
मुदकं चेति सप्तरात्रान्निधापयेत् ॥ उत्सेकं सर्ववृक्षाणां फलपुष्पादिवृद्धि
दम् ॥ रंगतोयोषितं बीजं रंगतोयाच्च सेवितम् ॥ तदंगपुष्पं भवति
यौवनेनात्र संशयः ॥ तदंभसा तु सेकेन वृद्धिर्भवति शाखिनाम् ॥ अतः
प्राधान्यतो वक्ष्ये द्रुमाणां दोहदान्यहम् ॥ मत्स्योदकेन शीतिन आम्ना
णां सेक इष्यते ॥ मृद्वीकानां तथा काय्यस्त्वनेनैव विधानतः ॥ पक्वं फलं
तुरुचिरं दाडिमानां प्रशस्यते ॥ तुषोदेयश्च भव्यानां मधंच वकुलद्रु
मे ॥ विशेषात् कामिनीवक्रसंसर्गात्तु गुणंचयेत् ॥ प्रशस्तं चा
प्यशोकानां कामिनीपदताडनम् ॥ सृगालमांसतोयेन नारंगोत्थो
दकैर्हितम् ॥ मधुयष्ट्युदकं चैव वदराणां प्रशस्यते ॥ गुडोदकं सगो
मांसं करकाणां प्रशस्यते ॥ क्षीरासवेन भवति सप्तपर्णो मनोहरः ॥
मांसप्लुतो वसामज्जासेकः कुरवकेहितः ॥ पूतिमत्स्याहितं पूतिकार्पा
सफलमेव च ॥ अहिमेदस्य सेको यं पाटलेषु च शस्यते ॥ सृगालम
त्स्यमांसाभ्यांचंपकेषु च दापयेत् ॥ फलेलतानां क्षीरेण रुधिरेण च
शस्यते ॥ कपित्थविल्वयोः सेकं गुडतोयेन कारयेत् ॥ जातीनां म
ल्लिकायाश्च गन्धतोयं परं हितम् ॥ तथा कुप्यत जातीनां कूर्ममांसं प्रश
स्यते ॥ खर्जूरनारिकेलानां वंशस्य कदलस्य च ॥ लवणेन सतोये

नसेकोवृद्धिकरःस्मृतः ॥ विडंगंतंडुलोपेतंमत्स्यंमांसंतथाजिकम् ॥
 श्वानकंचैवमांजरिमार्गचास्थियुतंतथा ॥ सर्वेषामविशेषेणदोहदंपरि
 कल्पयेत् ॥ एवंकृतेचारुफलाःसुपुष्पाःसुगंधिनोव्याधिविवूर्जिताश्च ।
 भवंतिनित्यंतरवःसुरस्यांश्चिरायुषःस्वादुफलान्विताश्च ॥ अथ वृक्ष
 प्रतिष्ठा ॥ पादपानांविधिवक्ष्येतथैवोद्यानभूमिषु ॥ तडागविधि
 वत्सर्वमासाद्यदानमाचरेत् ॥ ऋत्विङ्मंडपसंभारमाचार्य्यश्चा
 पितादृशः ॥ पूजयेद्ब्राह्मणांस्तद्वद्धेमवस्त्रानुलेपनैः ॥ सर्वौ
 पध्युदकैःसिक्तान्पिष्टालक्तविभूषितान् ॥ वृक्षान्माल्यैरलं
 कृत्यवासोभिरभिवेष्टयेत् ॥ सूच्यासौवर्णयाकाव्य्यसर्वेषांक
 णवेधनम् ॥ अंजनंचापिदातव्यंतद्वद्धेमशलाकया ॥ फला
 निसप्तचाष्टौवाकालधौतानिकारयेत् ॥ कालधौतानिरूप्यमयानि ॥
 प्रत्येकंसर्ववृक्षाणांविद्यांतानधिवासयेत् ॥ धूपोत्रगुग्गुलुःश्रेष्ठस्ताम्र
 पात्रैरधिष्टितान् ॥ सर्वधान्ययुतान्कृत्वावस्त्रगंधानुलेपनैः ॥
 कुंभान्सर्वेषुवृक्षेषुस्थापयित्वाविधानतः ॥ सहिरण्यानशेषांस्तान्कृ
 त्वाबलिनिवेदनम् ॥ यथावल्लोकपालानामिंद्रादीनांविधानतः ॥ वन
 स्पतेश्चविद्वभिर्होमःकाव्य्योद्विजातिभिः ॥ ततःशुक्लांबरधरांसौवर्णकृत
 भूषणाम् ॥ सकांस्यदोहांसौवर्णशृंगाभ्यामतिशालिनीम् ॥ पय
 स्विनींवृक्षमध्यादुत्सृजेद्रामुदङ्मुखीम् ॥ ततोभिषेकमंत्रेणवायमंग
 लगीतकैः ॥ ऋग्यजुस्साममंत्रैश्चव्दारुणैरभितस्तदा ॥ तैरेवकुं
 भैःस्नपनंकुप्युर्ब्राह्मणपुंगवाः ॥ स्नातः शुक्लांबरधरोयजमानः
 प्रपूजयेत् ॥ गोभिर्विभवतःसर्वानृत्विजःसुसमाहितान् ॥ हेमसू
 त्रैःसकटकैरंगुलीयैःपवित्रकैः ॥ वासोभिःशबलैश्चैवश्रेष्ठोपस्करपा

दुकैः ॥ क्षीराभिषेचनंद्युर्ग्याविद्दिनचतुष्टयम् ॥ होमश्चसर्पिषाकाय्यो
यवकृष्णतिलैस्तथा ॥ पलाशसमिधः शस्ताश्चतुर्थे हितथोत्सवः ॥
दक्षिणाचपुनस्तद्वद्देयात्त्रापिशक्तितः ॥ यद्यदिष्टतमं किंचित्तत्तद्
द्यादमत्सरः ॥ आचार्ये द्विगुणं दद्यात् प्रणिपत्य विसर्जयेत् ॥
वृक्षादीनां ततः कुर्ग्यादुत्सर्गपुण्यवृद्धये ॥ दानवाक्यंतु ॥ ये मयारोपि
तावृक्षायत्नेन परिरक्षिताः ॥ सर्वेषामेव जंतूनां तु त्रये उत्सृजाम्यहम् ॥
दानेनानेन सर्वात्मा जगद्रूपी जगन्मयः ॥ प्रीतो रक्षतु मां पापात् तथा स
सारकूपत इति ॥ अनेन विधिना यस्तु कुर्ग्याद्वृक्षोत्सवं नरः ॥ सर्वा
न्कामानवाप्नोति पदं चानंत्यमश्नुते ॥ यश्चैकमपियत्नेन वृक्षसंस्थापयेन्न
रः ॥ सोऽपि स्वर्गे वसेत्सम्यग्यावदिद्राश्चतुर्दश ॥ भूतान्भव्यांश्चमनु
जान् तारयेद्रागसंमितः ॥ परमां सिद्धिमाप्नोति पुनरावृत्तिदुर्लभाम् ॥
अथ तरुपुत्रदानम् ॥ दशकूपसमावापी दशवापी समो ह्रदः ॥ दश
ह्रदसमः पुत्रो दशपुत्रसमो द्रुमः ॥ तरुपुत्रंतु यः कुर्ग्याद्विधिवद्वाह्नि
स्त्रिधौ ॥ समहापातकैर्मुक्तः समुद्धृत्य कुलत्रयम् ॥ नरकेभ्यो नरो
याति प्रजापतिपुरं शुभम् ॥ स्वपुत्रार्थं भूमिरुहं ग्रहिष्यामीति यासती ॥
सोऽपवासाभवेन्नारी शुचिवस्त्राशुचिव्रता ॥ ततश्चैव सहस्रांशावस्त
शृंगगते रवौ ॥ उदिते विमले चापितथे दौ विंदुसन्निभे ॥ विप्रानामंत्र
येद्रात्रौ पावनान् वेदवादिनः ॥ विप्रान्निमंत्रयित्वा तु शुचिवस्त्राशुचि
व्रता ॥ शयीत स नमस्कारासदर्भाभूमिमाश्रिता ॥ गमयित्वा
तथारात्रिसवितर्युदितेऽपि च ॥ भक्ष्यभोज्यं समादाय व्रजे च त्रभवेत्त
रुः ॥ ततस्तं स्नपयित्वा तु सातपत्रं सभूषणम् ॥ तंतं रुतरुणीकृत्य
ततश्छायां नुगामिनः ॥ यज्ञोपपन्नमन्त्रान् भोजयित्वा द्विजास्त

तः ॥ पुण्याहंकारयित्वातुक्कृतिविग्निश्चाथवात्मना ॥ तृप्तानांब्राह्म
णानां वै चैतत्सकृत्यमात्मनः ॥ निवेद्यकृतमुद्दिश्यसद्भावेनापरेणतु ॥
अपुत्रो भगवंतो हंपुत्रप्रतिकृतिं तरुम् ॥ ग्रहीष्यामिममानुज्ञां कर्तुमर्हथ
सत्तमाः ॥ ततस्तैरभ्यनुज्ञातं तं तरुं तरुणाकृतिम् ॥ भूमिदेवसम
क्षंवै गृह्णीयात्तनयं शुभम् ॥ अनेन विधिनायस्तु गृहीततरुपुत्रकः ॥
पितृणां निरयस्थानां मधुधारां सवर्षति ॥ गृहीतो विधिनानेन शुभभू
मिरुहात्मजः ॥ स वै सुखाय भवति विपरीतेन दुःखदः ॥ नपुत्राणां
शतं वापि यदि स्यद्भक्तिवर्जितम् ॥ एको भूमिरुहः श्रेष्ठः पुत्रत्वेक
ल्पितः सुत इति ॥

इति महीधरकृते दानसंग्रहे सर्वसंपत्करदानक
थनं नाम द्वात्रिंशः कोशः ॥ ३२ ॥

अथ सौभाग्यसंक्रांतिदानम् ॥ संक्रांतिवासे रतैलस्नानं कृत्वा विच
क्षणः ॥ हैमपात्रे घृतं कृत्वा हिरण्येन समन्वितम् ॥ स्वरूपं वीक्ष्य तत्पा
त्रं ब्राह्मणाय निवेदयेत् ॥ एवं संक्रमणे कृत्वा भक्त्या चैव समन्वितः ॥
अश्वमेधसहस्राणां फलमाप्नोति मानवः ॥ रूपयौवनसंपन्न आयुरारो
ग्यसंपदः ॥ लक्ष्मीं च विपुलान्भोगान्भुनक्तीह न संशयः ॥ अथ ध
नसंक्रांतिदानम् ॥ संक्रांतिवासे रंप्राप्य शुचिर्भूत्वा समाहितः ॥
कलशं निर्व्रणं शुद्धं वारिपूर्णं निधापयेत् ॥ सुवर्णयुक्तं तं कृत्वा प्रति
मां संप्रदापयेत् ॥ द्विभुजं पूजयेद्भानुरक्तवस्त्रयुगान्वितम् ॥ उद्या
पनेतु ॥ सौवर्णकमलं कृत्वा सूर्य्यं चोपरिविन्ध्यसेत् ॥ हस्ते सुवर्णघटि
तं पंकजं च निवेदयेत् ॥ गोदानं तत्र कर्त्तव्यमेवं संपूर्णता भवेत् ॥ एवं
कृत्ते मनुष्यस्तु धनी स्याज्जन्मजन्मनि ॥ आयुरारोग्यसंपन्नः सूर्य्यलोके

महीयते ॥ अथाज्ञासंक्रांतिदानम् ॥ संक्रांतिदिवसंप्राप्यदानं
 सौम्यंसमारभेत् ॥ पद्ममष्टदलंकृत्वाकुंकुमेनतुभास्करम् ॥ पूजये
 न्मंत्रमुच्चार्यविधिवद्गुरुसन्निधौ ॥ आज्ञातेजस्करीं पृष्ठेप्रभादीप्तिं य
 शस्करीम् ॥ आज्ञांसर्वत्रगादेवममदेहिनमोस्तुते ॥ इति संप्राथ्य
 ब्राह्मणाय दद्यात् ॥ उद्यापनेतु ॥ सुवर्णरथंदद्यात् ॥ यः कुर्प्याद्विधिनानि
 न आज्ञासंक्रांतिदानकम् ॥ आज्ञानस्स्वलितालोके सूर्यभाक्तिः प्र
 जायते ॥ अथपापसंक्रांतिदानम् ॥ संक्रांत्यांनियतोभू
 त्वातिलैः श्वेतैः समन्वितैः ॥ पापकंवर्द्धमानंच प्रतिमासं निवेदयेत् ॥
 मंत्रस्तु ॥ तिलोमांपातुपापेभ्यस्तव देव प्रसादतः ॥ त्वंच मां रक्ष देवे
 शवाङ्मनःकायसंभवात् ॥ उद्यापनंतु धनसंक्रांतिदानोक्तिवत्का
 र्यम् ॥ तिलधेनुंच दद्यात् ॥ पूर्वपापप्रणाशाय आयुरारोग्यहेतवे ॥
 एतत्सर्वपुराप्रोक्तं ब्राह्मणापन्नयोनिना ॥ अथ तांबूलसंक्रांतिदा
 नम् ॥ तांबूलंचंदनायंच प्रति संक्रांतिवासरे ॥ दद्याद्ब्राह्मणमु
 रूपाय भानुंसंपूज्य यत्नतः ॥ वर्षांतिकमलंकृत्वा सौवर्णपत्रकान्वि
 तम् ॥ द्विजदांपत्यमाहूय वस्त्रालंकरणादिभिः ॥ संपूज्य दद्या
 त्त्पद्मं भास्करप्रीतये मुदा ॥ एवं करोति यानारी तांबूलंदानमुत्तमम् ॥
 सर्वान्कामान्वाप्नोति ब्राह्मणो वचनं यथा ॥ भर्त्रा पुत्रैश्च पौत्रैश्च मो
 दते स्वं गृहे सुखम् ॥ मृताकालांतरे पश्चात्सूर्यलोके महीयते ॥ पत्या च दे
 ववत्कल्पशतं तांबूलदानतः ॥ अथ विशोकसंक्रांतिदानम् ॥
 तिलैस्नातो नरः सम्यक्कांचनं सूर्यमर्चयेत् ॥ स्नाप्यपंचामृतेनैव वस्त्र
 युग्मं निवेदयेत् ॥ पूजार्थं ताम्रपात्रे तं निधाय विधिपूर्वकम् ॥ पूजयेद्दि
 ति ॥ भास्कराय नमः पादौ पूजयामि ० रवये ० जंघे ० आदित्याय ०

जानू० दिवाकराय ऊरू० यमाय कटिं० भानवे० उदरं० पूष्णे०
 बाहू० अर्यम्णे० स्तनौ० विवस्वते० कण्ठं० सहस्रांशवे० मुखं०
 प्रभाकराय० नेत्रं० तेजोराशये० शिरः० वरुणाय० केशान् ।
 एवं संपूज्य ब्राह्मणाय संकल्पं कृत्वा दद्यात् ॥ तदंते कपिलां दद्यात्
 दानसांगतासिद्धये ॥ एवं कृते कोटिगुणं स्वर्णदानात्फलं लभेत् ॥
 आयुरारोग्यमैश्वर्यं भाग्यां पुत्रांश्च विंदति ॥ अथ तेजसंक्रांतिदा-
 नम् ॥ संक्रांतिवासरं प्राप्य स्नानं कृत्वा विचक्षणः ॥ शालितंडुलसंयुक्तं
 करकंकारयेच्छुभम् ॥ तन्मध्ये दीपमास्थाप्य प्रज्वलंतं स्वतेजसा ॥
 तन्मुखे मोदकं क्षिप्वा ब्राह्मणाय निवेदयेत् ॥ द्वादशसंक्रातिष्वेवं कृत्वा
 स्वर्णदीपदानं कुर्व्यात् ॥ सांगतासिद्धये गोदानं कर्तव्यम् ॥ सुवर्णं
 कोटिदानस्य फलमामोति निश्चितम् ॥ तेजसादित्यसंकाशो जायते
 दीपदानतः ॥ अथायुःसंक्रांतिदानम् ॥ संक्रांतिदिवसे ध-
 नसंक्रांत्युक्तिवत् सर्वपूजादिकं भास्करस्य विधाय—कांस्यं क्षीरं घृतं दद्यात्
 तस्य सुवर्णं स्वशक्तिः ॥ मंत्रस्तु ॥ सक्षीरं भुंजते चैव पीयूषसदृशं
 घृतम् ॥ आयुरारोग्यमैश्वर्यं मम देहि द्विजार्पितम् ॥ अनेन विधि-
 नादानं प्रति संक्रमणे चरेत् ॥ पश्चादुद्यापनादिकं धनसंक्रांतिवत् कर्त्त-
 व्यम् ॥ एवं कृते रोगमुक्तो दीर्घायुस्तेजसा युतः ॥ अपमृत्युभयं
 नास्ति जीवेच्च शरदांशतम् ॥ अथ कीर्तिसंक्रांतिदानम् ॥ सं-
 क्रांतिवासरं प्राप्य रविबिंबं लिखेद्भुवि ॥ तस्य मध्ये स्थितं देवं
 पूजयेत्सूर्यमंत्रतः ॥ यथा विभवसारेण दद्याद्विप्राय दक्षिणाम् ॥ प्र-
 तिमासंतु वर्षांतं वस्त्रयुग्मं प्रदापयेत् ॥ उद्यापनेतुरौप्यं च सूर्यमंत्रं प्रदा-
 पयेत् ॥ एवं कृते पराकीर्तिर्जायते चापि बलिवत् ॥ विमला कीर्तिरा

ज्यं च जायते नात्र संशयः ॥ अथ मनोरथसंक्रांतिदानम् ॥ गुडे
नपुर्णकुंभं च सवस्त्रं च स्वशक्तितः ॥ संक्रांतिवासरे दद्यादेवं द्वादशधा
मुदा ॥ सांगतायां गुडमयं पर्वतं दानमिष्यते ॥ यं यं प्रार्थयते लोकं
ततं प्राप्नोति पुष्कलम् ॥ सर्वपापविनिर्मुक्तः सूर्यलोके महीयते ॥
अथ शीलसंक्रांतिदानम् ॥ अयं नादयनं यावत्प्रदद्यात्पुष्पसर्पि
षी ॥ तदंते कांचनं पुष्पं घृतधेनुसमन्वितम् ॥ दद्याच्छिवपदं याति
विधानेन यदाचरेत् ॥ एतच्छीलप्रदं नाम दानं शीलसुखप्रदम् ॥
अथ राजं संक्रांतिदानम् ॥ उत्तरे ह्ययने प्राप्ते घृतप्रस्थेन यो हरि
म् ॥ स्नापयित्वा ब्राह्मणाय बडवांसं प्रयच्छति ॥ सर्वपापविनि
र्मुक्तः सूर्यलोके चिरं वसेत् ॥ ततो भवति भूपालः प्रजानं ददिवर्द्धनः ॥

इति महीधरकृते दानसंग्रहे काम्यसंक्रांतिदानकथनं नाम

त्रयस्त्रिंशः कोशः ॥ ३३ ॥

अथ लक्षवर्तिकादानम् ॥ गोघृतेनाथ तैलेन लक्षसंख्याः सुवर्ति
काः ॥ वह्निज्वालाप्रज्वलिता दद्याद्देवाय भक्तितः ॥ समाप्तिपौर्णिमा
यां तु विधानेन विधीयते ॥ त्रयोदशर्त्विजो भद्रान्साग्निकान् वृणुयात्त
तः ॥ सतिलैश्च यवैः कुर्ग्यादग्नेन यक्रगादिभिः ॥ तर्पणोक्तेन मं
त्रेण पायसं च घृतान्वितम् ॥ पलाशसमिधश्चैव मंत्रेणानेन वैष्णवैः ॥
घृतं च विष्णुगायत्र्या होमशेषविधिः स्मृतः ॥ कलशेषु यथास्था
प्यं पिधानं च सवस्त्रकम् ॥ सुवर्णप्रतिमां कृत्वा अग्न्युत्तारणपूर्वक
म् ॥ आवाहनादिपुष्पांतं पूजां कुर्ग्या यथाविधि ॥ तत
स्तिस्रो रुक्ममय्यः प्रतिमाः कारयेत्ततः ॥ श्रिया च सहितं देवं मध्य
गं पूजयेद्धरिम् ॥ तदक्षिणे चतुर्वक्त्रं सावित्र्या सहितं तथा ॥ उत्त

चोमयाशंभुपुरतोगरुडंतथा ॥ कालोविष्णुस्तथावह्नीरविर्दीप्तो
 निशाकरः ॥ रुद्रशेषोजगद्व्यापीतेजोरूपीमहेश्वरः ॥ नि
 रंजनःकलाध्यक्षोविश्वरूपीजगत्प्रभुः ॥ स्वप्रकाशः स्वयंज्यो
 तिश्वतुर्व्यूहोजलाशयः ॥ परब्रह्मेतिद्विदश नामभिःपूजयेद्धरिम् ॥
 शिरोललाटकेनेत्रेकर्णेनसिमुखोष्ठके ॥ कंठस्कंधेतथावाहोःस्त
 नेवक्षसिचोदरे ॥ नाभौकट्यांचजघनेऊरौजानौचगुल्फके ॥ पा
 देतदग्रेक्रमशोह्यंगान्येवंतुपूजयेत् ॥ धूपंदीपंततोदद्यान्नैवेयंचनि
 वेदयेत् ॥ शक्त्याचजगदात्मानंस्तुत्वादेवंक्षमापयेत् ॥ देवदेवज
 गन्नाथभक्तानांकार्यसाधक ॥ त्वत्प्रसादादहंयाचेशीघ्रंकार्यप्रदो
 भव ॥ अनेनैवविधानेनलक्षपूजांकरोतियः ॥ पुत्रैःपौत्रैःप्रपौत्रैश्च
 सुखंप्राप्नोतिनिश्चितम् ॥ आचार्यपूजयेत्पश्चाद्ब्राह्मणानृत्विजस्त
 थागौर्देयाचसवत्सावैसालंकारागुणान्वित ॥ त्रिंशत्पलंकांस्यपात्रंघृ
 तेनपरिपूरितम् ॥ सुवर्णवर्तिसंयुक्तमाचार्यायनिवेदयेत् ॥ अथो
 दशपलं रूप्यंघृतेनचसमन्वितम् ॥ सांगतायैप्रदातव्यंकांस्यं
 वैधृतपूरितम् ॥ यावज्जीवंजविपतिर्भवत्येवनसंशयः ॥ रजोदो
 षविमुक्तिःस्यादेवंदानंकरोतिया ॥ ब्राह्मणान्भोजयेत्पश्चाद्वित्तशास्त्रं
 नकारयेत् ॥ अथसर्वाणिपापानिरहस्यानिकृतानि वै ॥ नश्यंतिता
 निसर्वमिदानस्यास्यप्रज्ञावतः ॥ चांडालगामिनीवापितथाशूद्राभिगा
 मिनी ॥ कारुकरजकादीनांगामिनीदुष्टचारिणी ॥ ब्रह्मक्षत्रियविट्
 शूद्रप्रतिलोमाभिगामिनी ॥ मातुलेयपितृव्यादिभ्रातृपुत्राभिगामिनी ॥
 बालघ्नीवापितृघ्नीवामातापित्रोर्वधेरता ॥ गोघ्नीवातस्करीवापिर
 जस्संकरकारिणी ॥ एवमादिमहापापैरावृतापिकुलांगना ॥ क

त्वाचैतद्विधिसम्यङ्मुच्यतेनात्रसंशयः ॥ एवंवर्त्तिप्रदानेनविष्णोरमि
ततेजसः ॥ कोटयोब्रह्महत्यानामगम्यागमकोटयः ॥ तथैवान्युग्र
पापानि कोटयोत्सहस्रशः ॥ नश्यंतिनात्रसंदेहोनारीणांवानरस्य
च ॥ पुरुषोपिव्रतंकृत्वापूर्वोक्तैः पापसंचयैः ॥ मुच्यतेनात्रसंदेहो
मधुशासनशासनात् ॥ अथगोपद्मदानम् ॥ गोष्ठेथवापिगोस्था
नेगोमयेनोपलिप्यच ॥ त्रयत्रिंशत्तुपद्मानिर्गंधपुष्पैःप्रपूजयेत् ॥
तत्संख्याकाश्विकाय्यास्स्युःर्नमस्काराःप्रदक्षिणाः ॥ तत्संख्याकान्य
पूपानिब्राह्मणायनिवेदयेत् ॥ कर्षमात्रमुवर्णस्यप्रतिमांचैवकारये
त् ॥ संपूज्यवस्त्राभरणैरधिवासंचकारयेत् ॥ जुहुयात्पुरुषसूक्ते
नधृतमिश्रंतिलादिकम् ॥ ब्राह्मणान्पंचयोषिद्भिःषड्रसान्तुभोजये
त् ॥ इदंदानंमहापुण्यंकरोतिश्रद्धयान्वितः ॥ इहभुक्तातुविमला
न्सर्वान्कामान्मनोरथान् ॥ अंत्येगच्छतिवैकुण्ठकुलकोटिशतैरपि ॥
अथ प्रसंगाच्चातुर्मास्यनियमाः ॥ नियमग्रहणमंत्रः ॥ चतु
रोवार्षिकान्मासान्देवस्याबोधनात्परम् ॥ गृह्णामिनियमंदेवनिर्विघ्नः
सचयातुमेइति ॥ स्त्रीवानरोवागृहीयान्नियमंतुयदृच्छया ॥ देवंसं
पूज्यविधिवत्तदग्रेनियमीस्थितः ॥ संकल्पयेत्पुनस्तस्यतत्पूतौदान
माचरेत् ॥ नियमास्तु ॥ मधुस्वरोभवेन्मर्त्योनारीवागुडवर्जना
त् ॥ लभेच्चसंततिदीर्घांपुत्रपौत्रानुवर्तिनीम् ॥ तैलस्यवर्जनात्स
म्यक्कुसुंदरांगःप्रजायते ॥ कटुतैलपरित्यागाच्छत्रुनाशमवाप्नुयात्
मधुतैलपरित्यागात्सौभाग्यमतुलंलभेत् ॥ पुष्पादिभोगत्यागेनस्वर्गे
विद्याधरोभवेत् ॥ योगाभ्यासीभवेद्यस्तुसब्रह्मपदमामुवात् ॥
कटुकंतिक्तमधुरंरूपायंक्षारजान्त्यजेत् ॥ वर्जयेत्सर्ववैरूप्यदौर्ग

ध्येनामुयात्सदा ॥ तांबूलवर्जनाद्गोरीरक्तकंठश्चजायते ॥ शाक
 पत्राशनाद्गोरी ह्यपाकृतमलोभवेत् ॥ पादाभ्यंगपरित्यागाच्छि
 रोभ्यंगविवर्जनात् ॥ दीप्तिमान्दीप्तिकरणोयक्षोद्रव्यपतिर्भवेत् ॥
 दधिदुग्धपरित्यागीगोलोकंलभतेनरः ॥ इंद्रातिथ्यत्वमाप्नोतिस्था
 लीपाकविवर्जनात् ॥ लभतेसंततिर्दीर्घातैलपक्वविवर्जनात् ॥
 भूमौसंस्तरशायीचहरेरनुचरोभवेत् ॥ सदामुनिःसदायोगीएकस
 स्यस्यभोजनात् ॥ निर्व्याधिर्निरुगोजस्वीमद्यमांसविवर्जनात् ॥
 एवमादिपरित्यागाद्धर्मःस्याद्धर्मकारिणे ॥ एकांतरोपवासीचब्रह्मलो
 केमहीयते ॥ धारणात्रखलोमानांगंगास्नानंदिनेदिने ॥ मौनव्रती
 भवेद्यस्तुतस्याज्ञास्खलिताभवेत् ॥ भूमौभुंक्तेनरोयस्तुपृथिव्यधि
 पतिर्भवेत् ॥ ॐ नमो नारायणायेतिजप्त्वा नंतफलंलभेत् ॥ पा
 दाभिवंदनाद्विष्णोर्लभेद्गोदानजफलम् ॥ देवालयेतथाकुर्घ्यादुप
 लेपनमार्जनम् ॥ कल्पस्थायीभवेद्राजासनरोनात्रसंशयः ॥ प्रद
 क्षिणशतीयस्तुनरोतिस्तुतिपाठकः ॥ हंसयुक्तविमानेनसतुविष्णु
 पुरं व्रजेत् ॥ त्रिरात्रभोजनाच्चैवमोदतेदिविदेववत् ॥ षडहर्भोजना
 न्मर्त्योदेवताभवतिस्वयम् ॥ प्राजापत्यं चरंश्चैवचातुर्मास्यव्रतीनरः ॥
 मुच्यतेपातकैःसर्वैस्त्रिविधैर्नात्रसंशयः ॥ तप्तकृच्छ्रातिकृच्छ्रा
 न्यायः क्षिपेच्छयनहरेः ॥ सयातिपरमंस्थानं पुनरावृत्तिवर्जि
 तम् ॥ चांद्रायणंनरोयस्तुचरेन्मासचतुष्टयम् ॥ दिव्यदे
 होभवेत्सोमलोकां च गच्छति ॥ शुक्लपक्षेनरोयैवैत्यजेदन्ना
 दिभक्षणम् ॥ तेनपक्षोपवासेनप्रतिपक्षंहरिप्रियः ॥ सगच्छेद्ब्रह्मसा
 युज्यंनभूयस्तुप्रजायते ॥ भिक्षाभोजीनरोयोहिसभवेद्देवपारगः ॥

नलिप्यते स पापैस्तु पद्मपत्रमिवांभसा ॥ कृष्णे विष्णौ हृषीकेशे
सुषुप्ते मधुसूदने ॥ परान्नं वर्जयेद्यस्तु कृतकृत्यो भवेद्धिसः ॥ परान्नं वर्ज
नाच्चैव चांद्रायणफलं लभेत् ॥ सर्वपापविनिर्मुक्तः सोमलोके महीयते ॥
शाकाहारं तु यः कुर्व्यात्सम्यङ्मासचतुष्टये ॥ तस्य वंशसमुच्छेदः
कदाचिन्नोपपद्यते ॥ लवणं वर्जयेद्यस्तु नरो मासचतुष्टयम् ॥ त्रिजन्मो
प्रार्जितं पापं सर्वनाशयति क्षणात् ॥ पंचगव्याशनाच्चैव चांद्रायणफलं
लभेत् ॥ निर्मलं देहमाप्नोति गंगास्नानं दिने दिने ॥ मांसं द्यूता नृते चैव
व्यायामं क्रोधमैश्वर्यम् ॥ हिंसां तैलं विवादं च निद्रां निर्मात्य लंघनम् ॥
द्वादश्यां द्वादशैतानि विष्णुभक्ता विवर्जयेत् ॥ उपवासं तथानक्तमे
कभक्तमयाचितम् ॥ अशक्तस्तु यमान् कुर्व्यात्सायं प्रातरखंडितम् ॥
स्नानं पूजादिसंयुक्तं स नरो हरिलोकभाक् ॥ गीतवाद्यकरो विष्णोर्गांधर्व
लोकमाप्नुयात् ॥ लोकान् प्रबोधयेद्यस्तु सोते विष्णुपुरं व्रजेत् ॥ कृत्वा
प्रेक्षणकंदिव्यं लोकमप्सरसां व्रजेत् ॥ दत्त्वा प्रेक्षणकंदिव्यं
निर्मलं देहमाप्नुयात् ॥ नित्यस्नायी नरः शुद्धो नरकं न स्पश्यति ॥
भोजनं वर्जयेद्यस्तु स्नानं पौष्करं लभेत् ॥ तीर्थं जांबुहरिस्नाना
न्नग्निहोत्रफलं लभेत् ॥ अयाचितेन चामोति वापीकूपप्रपाफल
म् ॥ षष्ठाहकालभोगेन स्थायी स्वर्गे नरो भवेत् ॥ पत्रेषु यो नरो
भुंक्ते कुरुक्षेत्रफलं लभेत् ॥ शिलायां भोजनं नित्यं प्रयागस्नानजं फल
म् ॥ यामद्वयं जागरणाच्चरोगैरभिभूयते ॥ एवमन्यैश्च नियमैः
तुष्टिमायति केशवः ॥ असंक्रांतं च मासं च देवे पित्र्ये च वर्जयेत् ॥ म
लिम्लुचमशौचं च सूर्यसंक्रांतिवर्जितम् ॥ प्राप्ते भाद्रपदे मासि एका
दश्यां सिते हनि ॥ कटिदानं भवेद्विष्णोर्महापूजा प्रवर्तते ॥ कृष्ण

कृष्णजगन्नाथयोगगम्यनिरंजन ॥ कटिदानंकुरुष्वायप्राप्तेभाद्रप
 देशुभे ॥ श्रावणेशाकपत्रादिभाद्रेदुग्धस्यवर्जनात् ॥ इषेदध्नीद्विद
 लस्यऊर्जेस्वर्गापवर्गभाक् ॥ एवमादीनिचान्यानियेषुश्रद्धाभिजा
 यते ॥ यस्मिंश्चातितरांप्रीतिस्तंत्यजेत्प्रावृषिक्षितौ ॥ नियमांतपूजनं
 चकुर्यात्स्वेष्टस्ययत्नतः ॥ गोभूतिलहिरण्यादिवस्त्रभूषादिका
 न्यपि ॥ यथाविभवसारेणदातव्यंविधिपूर्वकम् ॥ आचार्य्यं
 तोषयेत्सम्यक्ज्ञानदातारमादरात् ॥ होमंचाभीष्टदेवस्यप्रीतयेजु
 हुयान्मुदा ॥ पुण्याहवाचनादीनिमंगलानिततश्चरेत् ॥ वृंताकत्यागे
 तुविशेषः ॥ वृंताकस्यविधिवक्ष्येपुण्यदंब्रह्मणोदितम् ॥ संव
 त्सरेवाषण्मासान्त्रीन्मासान्वानभक्षयेत् ॥ अथैकरात्रोपवासंकृ
 त्वा भरण्यामवायांवास्थंडिलेदेवानाहूयगंधादिभिः संपूजयेत् ॥
 आवाहनप्रकारस्तुदर्भपाणिर्गंधोदकेन ॥ यमराजमावाहयामि ॥
 कालमावाहयामि ॥ नील० ॥ चित्रगुप्त० ॥ वैवस्वत० ॥
 मृत्यु० ॥ परमेष्ठिनम् ॥ ततोऽग्निमुपसमाधायतिलाज्यंजुहुयात्
 यमराजादिनाममंत्रैरेवाग्निमूर्द्धेत्याहुतीरष्टोत्तरशतंजुहुयात् ॥ प्रायश्चि
 त्तंचजुहुयात् ॥ ब्राह्मणाःस्वयमेवेतरेषामाचार्याः ॥ अथस्व
 शक्त्यासौवर्णवृंताकंब्राह्मणायनिवेदयेत् ॥ कृष्णांगांतथावृषभं तथै
 वकर्णालंकारांगुलीयकेछत्रोपानहौकृष्णवस्त्रयुगंकृष्णकंबलंचदया
 त् ॥ ब्राह्मणान्संभोज्याशिषोवाचयेत् ॥ अनेनविधिनायस्तुवृंताकंसं
 प्रयच्छति । त्रीन्मासानथषण्मासान्वर्षमेकंनभक्षयेत् ॥ अथचैवं
 विधिं कृत्वा जन्मावधित्यागंकरोतिविष्णुलोकंप्रयाति ॥ पौ
 ढरीकाश्वमेधफलंप्राप्नोति ॥ सप्तजन्मसहस्राणिनाकपृष्ठमहीयते ॥

सप्तजन्मांतरंयावद्यमलोकंनपश्यति ॥ जन्मविधित्यागपक्षेपिहोमा
 दिक्पूर्ववदेव ॥ वृताकमप्रतिहतंवरहेमसिद्धंदद्याद्विजायधृतवस्त्रसम
 न्वितंयत् ॥ कृष्णतुर्वर्षमपिमासमथैकमेवयाम्यनपश्यतिपुरंपुरुषः
 कदाचित् । अथाश्वत्थसेचनम् ॥ उदकुंभप्रदानेतुअशक्तोयःपुमान्भ
 वेत् ॥ तेनाश्वत्थतरोर्मूलंसेव्यंनित्यंजितात्मना ॥ सर्वपापप्रशमनं
 सर्वदुःखविनाशनम् ॥ सर्वरोगापहंनित्यंध्रुवंसंततिवृद्धनम् ॥ सेच
 नमंत्रः ॥ सिंचामितेश्वत्थमूलंममसंततिवृद्धये ॥ अश्वत्थरूपीभग
 वान्प्रीयतांभोजनार्दनः ॥ अनेनमंत्रवर्येणसिंचेदश्वत्थमूलकम् ॥ नम
 स्कुर्व्यात्ततःसम्यक्प्रार्थयेच्चपुनःपुनः ॥ यःकरोतिनरोमूलेसेकं ॥ न
 तुष्टये ॥ मनोरथास्तुसिद्धयंतिश्रुतिरेषासनातनी ॥ मासचतुष्टयेचै
 व्रादौ । तथाच ॥ अश्वत्थमूलमासिंचेत्तोयेनबहुनासदा ॥ कुलानामयु
 तंतेनतारितंस्यान्नसंशयः ॥ अथाश्वत्थाभिमंत्रणम् ॥ आरात्तेह
 त्यस्याग्रिकांडांत्योनित्वेनाग्रिक्रविःवनस्पतिर्देवताअनुष्टुप्छंदःअश्व
 त्थाभिमंत्रणेविनियोगः ॥ ॐ आरात्तेअग्निरस्त्वारात्परशुरस्तु
 ते ॥ निर्वृतेत्वाभिवर्षतुस्वस्तितेस्तुवनस्पते ॥ इति ॥ तकारस्था
 नेमेकारस्स्वयंवक्तव्यः ॥ पौसाणमंत्रस्तु ॥ अक्षिस्पंदंभुजुस्पंदंदुः
 स्वमंदुर्विचिंतितम् ॥ शत्रुतश्चसमुत्पन्नमश्वत्थशमयस्वमे ॥ तथा ॥
 मूलतोब्रह्मरूपायमध्यतोविष्णुरूपिणे ॥ अग्रतःशिवरूपायअश्व
 त्थायनमोनम इति ॥ अश्वत्थस्पर्शतुमंदवासरेएवकुर्यात् ॥ अन्य
 वासरेष्वर्चनसेचनंसेवनंचदूस्तएवकुर्व्यात् ॥ अथ सहस्रभोज
 नविधिः ॥ सहस्रभोजनस्येहविधिनारायणोमुनिः ॥ सर्वेषामेवपु

ण्यानामब्रवीत्पुण्यमुत्तमम् ॥ यदाचित्तंचवित्तंचभक्तिरात्मनि जा-
 यते ॥ तदानीमेवकर्त्तव्यंप्रीतयेपरमात्मनः ॥ आषाढं चैव भावं
 चमलमासंतथैव च ॥ गुरुभार्गवयोरस्तंहित्वान्येस्मिञ्छुभेदिने ॥
 कृत्वा दौमंगलस्नानं शुद्धः सन्भार्यया सह ॥ कृत्वा दौर्घ्यशुद्धच-
 र्थप्रायश्चित्तं यथाविधि ॥ दशांशद्रव्यमादाय विप्रेभ्यो विनिवेदयेत् ॥
 द्रव्यं संप्रोक्षयेत्पश्चात्संपादितं तदाज्ञया ॥ गणेशं पूजयेत्पूर्वमातृणां
 पूजनंततः ॥ कृत्वाभ्युदयिकं श्राद्धं स्वस्तिवाचनपूर्वकम् ॥ आचा-
 र्य्यं पूजयेत्पश्चाद्ब्रह्मालंकारभूषणैः ॥ ऋत्विजो वस्येदष्टौ वस्त्रगंधै-
 श्वपूजयेत् ॥ पुष्पमंडपिकां कृत्वा चतुरस्रां मुशोभनाम् ॥ कृत्वे-
 शस्य सुवर्णेन प्रतिमां कर्षसंमिताम् ॥ सशक्तिकस्य देवस्य भवानी-
 शंकरस्य च ॥ तस्याधिदेवताविष्णुर्ब्रह्मा प्रत्यधिदेवता ॥ कृत्वा तु प्र-
 तिमा शुद्धिमभ्युत्तारणपूर्वकम् ॥ षोडशैरुपचारैश्च तत्तन्मंत्रैः प्रपू-
 जयेत् ॥ ऋग्भिश्च पावमानीतिरभिषिच्य यथाविधि ॥ पुष्पमंडपि-
 कामध्ये स्थापनं तदुल्लोपरि ॥ प्रतिमां तत्र संस्थाप्य कलशे चांबरा-
 वृते ॥ समंताद्देवदेवस्य क्रमेणैव तु पूर्वतः ॥ तत्तन्मंत्रेण नाम्ना वा पूज-
 येदंगदेवताः ॥ कर्णिकायां भवानी शोह्यधिप्रत्यधिसंयुतः ॥ तद्ब-
 हिश्चैव चत्वारस्तद्बहिः षोडशक्रमात् ॥ एकत्रिंशद्बहिश्चाष्टचत्वारिं-
 शं च तथा क्रमात् ॥ पद्मस्य दलवच्छस्ताः कर्णिकांशतसंग्रहाः ॥ दिशां
 देवताः १० ऋषयः सप्त ७ सागराः ४ भुवनत्रयम् ३ नद्यः सप्त ७
 गुणा ३ श्वेदवेदा ४ आत्मेत्यनुक्रमात् ॥ अत्र पीठयंत्रस्थापनदेव-
 ताप्रयोगिंचाह ॥ आदौ पद्मकर्णिकायां मध्ये अधिदेवताविष्णु-

ब्रह्मप्रत्यधिदेवतासहितं भवानीशंकरं स्थापयेत् ॥ तद्वहिश्चतुर्दलं
 त्रैलोक्येक्षयेत् ॥ गणेश १ दुर्गा २ क्षेत्रपाला ३ भयंकराः ४
 स्थाप्याः । तद्वहिस्तृतीयेषोऽष्टमातरः— गौरी १ पद्मा २ शची
 ३ मेधा ४ सावित्री ५ विजया ६ जया ७ ॥ देवसेना ८ स्वधा ९
 स्वाहा १० मातरो ११ लोकमातरः १२ ॥ धृतिः १३ पुष्टि १४
 स्तथातुष्टि १५ सत्मानः कुलदेवता १६ ॥ तद्वहिरैकत्रिंशद्देवसु
 द्वादित्याः ॥ अष्टौ वसवस्तु— ध्रुवो १ ध्रुव २ श्वसोमश्च ३ आप
 ४ श्वैवानिलो ५ नलः ६ ॥ प्रत्यूषश्च ७ प्रभासश्च ८ वसवोऽष्टौ प्रकी
 र्त्तिताः ॥ इति ॥ एकादशरुद्रास्तु ॥ वीरभद्रश्च १ शंभुश्च २
 योगीशो ३ जैकपात्तथा ४ ॥ अहिर्बुध्न्यः ५ पिनाकीच ६ भुवना
 धीश्वरस्तथा ७ ॥ कपाली ८ विट्पतिः ९ स्थाणु १० भर्गारूढो
 ११ रुद्रसंज्ञकाः ॥ इति ॥ द्वादशादित्यास्तु ॥ धाता १ र्य
 माच २ मित्रश्च ३ वरुणश्च ४ शौ ५ भगस्तथा ६ ॥ इंद्रो ७ विवस्वान्
 ८ पूषाच ९ पर्जन्यो दशम १० स्तथा ॥ त्वष्टा ११ विष्णु १२ रिति
 प्रोक्ता आदित्या द्वादशक्रमात् ॥ पंचमेष्टचत्वारिंशद्देवतादौ क्रमेण
 वग्रहाः— सूर्यः १ सोमो २ महीपुत्रः ३ सोमपुत्रो ४ बृहस्पतिः ५ ॥
 शुक्रः ६ शनैश्चरो ७ राहुः ८ केतवश्च ९ नवग्रहा इति ॥ दशलोकपा
 लास्तु— इंद्रो १ मि २ र्यमो ३ निर्ऋति ४ वरुणो ५ वायु ६ रेवच ॥ कु
 बेरो ७ शौ ८ तथा ब्रह्मा ९ अनंतो १० दशदिक्पतिरिति ॥ सप्त
 र्षयस्तु— कश्यपो १ त्रि २ भरद्वाजो ३ विश्वामित्रो ४ थगौतमः ।
 ५ जमदग्नि ६ वशिष्ठश्च ७ सप्तैते ऋषयः क्रमात् ॥ समुद्रास्तु—

पूर्वदक्षिणपश्चिमोत्तरा ४ श्रवणःसमुद्रादिति ॥ भुवनत्रयम्—
 भूलोक १ भुवर्लोक २ स्वर्लोक ३ इति ॥ समसरितश्च—गंगा
 १ चयमुनाचैव २ गोदावरी ३ सरस्वती ४ ॥ तापी ५ पयोष्णी
 ६ रेवाच ७ सप्तनद्योयथाक्रममिति ॥ त्रिगुणास्तु— सत्त्व १
 रज २ स्तमो ३ गुणादिति ॥ वेदास्तु— ऋग्वेदो १ थयजुर्वेदः
 २ सामवेदो ३ ह्यथर्वणः ४ इति ॥ आत्माच इत्येतास्तत्रा-
 वाह्यपूजयेदिति ॥ इतिपीठत्रयेदेवतास्थापनक्रमः ॥ गंधपुष्पा-
 दिभिश्चैवसमभ्यर्च्ययथाविधि ॥ यथाशक्तिकृतंसर्वमर्चनंविनिवेद-
 येत् ॥ देवदेवजगन्नाथविश्वसाक्षिन्नमोस्तुते ॥ गृहाणमांकतां
 पूजांप्रसीदभगवान्गुरो ॥ ग्रहयज्ञविधानेनग्रहपूजांसमाप्यच ॥ ऋ-
 त्विग्भिःसहवैहोमततःकुप्याद्यथाविधि ॥ कुंडेवास्थंडिलेवापिस्व-
 गृह्याविधिनाचरेत् ॥ कृत्वाज्यभागपर्यंतमुपलेपादिकंततः ॥
 समिदाज्येनचरुणायवैस्तिलसमन्वितैः ॥ सहस्रंचाहुतीस्तत्र
 व्याहृतीभिस्ततःक्रमात् ॥ जुहुयादृत्विगैकैकश्वतुर्विंशोत्तरंशुभम् ॥
 प्रणवेनाहुतिंचैकामंत्रेणैवपृथक्पृथक् ॥ देवतानांचसर्वेषांनामभिर्जुहु-
 यादृतम् ॥ देवतानामंगदेवतानाम् ॥ ततःस्विष्टकृतंहुत्वाहोमशेषं
 समापयेत् ॥ आचार्यादीन् समभ्यर्च्यगंधपुष्पाक्षतादिभिः ॥
 दद्याद्वित्तानुसारेणदक्षिणांचयथोचिताम् ॥ लेह्यंपेयंतथाचोप्यंखा-
 यंचैवचषड्रसान् ॥ देवायादौनिवेद्याथ द्विजवर्यान्सप्तर्चयेत् ॥
 भक्ष्यभोज्यादिकंदद्यात्तुभिर्यस्ययथाभवेत् ॥ दक्षिणांचयथाशक्त्या
 सर्वेषांचसमासतः ॥ ततश्चभोजयेद्विप्रान्सहस्रंसम्यगेवहि ॥ एक

स्मिन्नेवकालेवाभवेद्वापिदिनेदिने ॥ भवेद्यावत्सहस्रंतुतावदेवहि
 भोजयेत् ॥ तेभ्योपिदक्षिणांदद्याद्भुजानेभ्यःस्वशक्तितः ॥
 दीनांधकृपणादींश्चभोजयित्वास्वयंततः ॥ समाहितमनाः कर्त्ता
 भुंजीयात्सहबंधुभिः ॥ एवंयःकुरुतेसम्यक्सहस्रद्विजभोजनम् ॥
 समाप्तेतुपुनर्होमःकर्त्तव्यःपूर्ववत्क्रमात् ॥ ब्रह्महाचसुरापीचपरद्रव्या
 पहारकः ॥ मातृगामीचगोघ्नश्चपरदाररतःसदा ॥ ज्ञानतोज्ञानतो
 वापिपापकारीयथेच्छया ॥ सदाचारविहीनस्तुदमदानविवर्जितः ॥
 ईदृशोपिनरोयःस्यात्सहस्रद्विजभोजनम् ॥ कुरुतेसद्यएवेहसपु
 नातिनसंशयः ॥ ब्रह्मानंदमदंगच्छेत्तेनपुण्येनचैवहि ॥ सहस्रभो
 जनाच्चैवनानाविधमनोरथान् ॥ भुंक्तेसकामान्सकलान्भोगानपि
 चपुष्कलान् ॥ अपुत्रोलभतेपुत्रंकन्यार्थीचापिकन्यकाम् ॥ यं
 धंकामयतेकामंतंतंप्राप्नोत्यसंशयम् ॥ तत्र संकल्पमाह ॥ ममपं
 चमहापातकनिवृत्तिगोवधपरदारपरद्रव्यापहारजन्यकायिकवाचिक
 मानसिकैतच्छरीरावच्छिन्नसमस्तपापक्षयपूर्वकनानाविधमनोरथ
 सिद्ध्यतेषष्टिसहस्रवर्षविष्णुलोकनिवासातिब्रह्मानंदावाप्तिद्वाराश्रीपर
 मेश्वरप्रीत्यर्थंसहस्रब्राह्मणान् यथाशक्त्यायथोपपन्नेनान्नेनयथाका
 लंयथादेशंयथादक्षिणंभोजयिष्ये इति संकल्पः ॥ तथादौ
 गणेशपूजनं स्वस्तिवाचनंमातृकापूजनंनंदादींश्चाद्यंआचार्यकृत्वि
 ग्वरणहोमादिचकरिष्य इति संकल्प्य ॥ गणेशपूजादियथो
 क्तक्रमेणकुर्व्यादिति ॥ अथ सर्वस्वंदानसंकल्पवाक्यम् ॥ अ
 येत्यादि०ममैतच्छरीरावच्छिन्नसमस्तपापक्षयपूर्वकसकलमनोरथ

सिद्धियज्ञयाजित्वसर्वद्रव्यदानजन्यसर्वतीर्थस्नानजन्यसर्वदेवपूजा
 जन्यसमफल्यमलोकादर्शनद्रारिद्यानुत्पत्तिसर्वकालस्त्रीपुत्रपौत्रधन
 धान्यसौभाग्योदर्यावज्जीवमवियोगेनैहिकामुष्मिकाष्टैश्वर्य्यवद्बहुगंध
 वोंपगीयमानदिव्याप्सरोगणसेवितदिव्यांगनासमाक्रीर्णहंससारसवि
 हंगादिपरिवृतहेमकिंकिणीजालमालिकामंडिततरुणादित्यसंकाशवि
 मानारोहणशक्रादिसुरगणैर्ब्रह्मविष्णुरुद्रलोकेंद्रलोकादिषुस्वेच्छया
 विचरणपूर्वकयावदाभूतसंप्लवाक्षय्यस्वर्गलोकावाप्त्यंतेविष्णुसायु
 ज्यकामइदं सकलं मदाश्रमीयं सकलवस्तु सर्वस्वं विष्णुदैवतं तत्रैव क
 ल्पितसुवर्णबहुदक्षिणम् ॐ सर्वस्वायन्मम इति नाममंत्रेण सुपूजिताय
 नुभ्यमहं संप्रददे नममेत्येकस्मै दद्यात् ॥ यद्वा ॥ नानानामगोत्रेभ्यो ब्रा
 ह्मणेभ्यः सुपूजितेभ्यः सदक्षिणं दातुमहमुत्सृजे नमम तेन श्रीपरमेश्वरः
 प्रीयताम् । तत्सद्ब्रह्मार्पणमस्तु इति द० ॥ प्रार्थनामंत्रस्तु ॥ हरिश्चंद्रो
 यथाराजा सर्वदत्त्वा दिवंगतः ॥ तथाहमाश्रमं दत्त्वा यास्यामि त्रिदशा
 लयम् ॥ दिविभुव्यंतरिक्षे च हस्त्यश्वरथसंकुला ॥ हरिश्चंद्रस्य नृ
 पतेः शोभते नगरी यथा ॥ तथाममाश्रमं सर्वदिवि सर्वत्र गच्छतु ॥
 सर्वस्वं मुनये दत्त्वा यांगतिं नृपतिर्गतः ॥ सर्वस्वदानेनानेन तांगतिं प्राप्नुया
 म्यहम् ॥ सर्वस्वं तवदानेन हरिश्चंद्रो यथाभवत् ॥ दुःखहीनः
 सुखमयस्तथामांकुरु सर्वदा ॥ सर्वस्वदानात् सकलाममसंतु मनो
 रथाः ॥ इति सर्वस्वदानप्रयोगः ॥

इति महीधरकृते दानसंग्रहेनानाविधनियम
 कथनं नाम चतुस्त्रिंशः कोशः ॥ ३४ ॥

अथयुगप्राधान्येनव्यासाद्युक्तधर्माउच्यन्ते ॥ तपःपरं कृत्युगेत्रेतांयांज्ञानमुत्तमम् ॥ द्वापरेयज्ञमित्याहुर्दानमेवकलौस्मृतम् ॥ श्रांतस्ययानंतृषितस्यपानमन्नंक्षुधार्तस्यनरस्यशुद्धम् ॥ दद्याद्विमानेनसुरांगनाभिः संस्तूयमानस्त्रिदिवंप्रयाति ॥ यतीनामाह ॥ यतीनांपरमोधर्मस्त्वनाहारोवनौकसाम् ॥ दानमेवगृहस्थानांशुश्रूषात्र ह्यचारिणामिति ॥ दानमावश्यंकंकेषामित्याह ॥ मातापित्रोश्चयदत्तंभ्रातृस्वसृमुतासुच ॥ सौदर्येपिचयदत्तंसोतिथिःस्वर्गसंक्रमः ॥ पितुःशतगुणंदानंसहस्रमातुरुच्यते ॥ अनंतदुहितुर्दानंसौदर्ये दत्तमक्षयम् ॥ नकेवलंब्राह्मणानांदानंसर्वत्रशस्यते ॥ भगिनी भगिनेयानांमातुलानांपितृष्वसुः ॥ दरिद्राणांच्रवंधूनांदानंकोटिगुणं भवेत् ॥ मातुर्गोत्रेशतगुणंस्वगोत्रेदत्तमक्षयम् ॥ दातुर्लक्षणंतु— अपाप्यरोगीधर्मात्मादित्सुरव्यसनःशुचिः ॥ अनिद्योजीवकर्मा चषडभिर्दाताप्रशस्यते ॥ प्रतिग्रहीतृलक्षणमपि—त्रिशुक्लःक्षीणवृ त्तिश्चवृणालुःसकलेंद्रियः ॥ विमुक्तोयोनिदोषेभ्योब्राह्मणःपात्रमुच्यते ॥ तथा ॥ सौमुख्यमभिसंप्रीतिरार्थिनांदर्शनेसदा ॥ सत्कृतिश्चानं सूयाचनदाश्रद्धेतिकीर्त्यते ॥ तथा ॥ यद्ददातियंदश्नातितदेवध निनांधनम् ॥ अन्येमृतवत्क्रीडंतिदारैरपिधनैरपि ॥ आयासशतलब्ध स्यप्राणेभ्योपिगरीयसः ॥ गतिरैकैववित्तस्यदानमन्येविपत्तयः ॥ ग्रासादधूर्वापिचग्रासश्चार्थिभ्यःकिन्नदीयते ॥ इच्छानुरूपोविभवः कदाकस्यभविष्यति ॥ तथा ॥ न्यायेनार्जनमर्थस्यवर्धनंचापि रक्षणम् ॥ सत्पात्रेप्रतिपत्तिश्चसर्वशास्त्रेषुगीयते ॥ अदातायत्रय

त्रेतितत्रतत्रसुदुःखितः ॥ दानात्सुखमवाप्नोतिपरत्रापिचनिर्वृतः ॥
 तथा ॥ अक्षरद्वयमभ्यस्तं नास्ति नास्तीति यत्पुरा ॥ तदिदं देहिदे
 हीति विपरीतमुपस्थितम् ॥ तथा ॥ द्वारंद्वारमटंतीह भिक्षुकाः
 पात्रपाणयः ॥ दर्शयन्ति च लोकानामदातुः फलमीदृशम् ॥ द्वावेवा
 प्सुप्रवेष्टव्यौ गले बद्ध्वा दृढांशिलाम् ॥ धनवंतमदातारं दरिद्रं चातप
 स्विनम् ॥ अन्यच्च ॥ वृष्टिर्यथा समुद्राणां तृप्तानां मशनं यथा ॥
 तथा दानं समृद्धानां दत्तं भवति निष्फलम् ॥ अथ प्रतिग्रहप्रायश्चि
 त्तानि ॥ दानानि सर्वाण्यभिधाय तेषां प्रतिग्रहे शुद्धिमतोभिधास्ये ॥
 यथा धिया भावितया प्रवृत्तिः ॥ प्रतिग्रहे साधुजनस्य न स्यात् ॥
 तत्र मेघादानप्रकरणे ॥ दुष्प्रतिग्रहतो विप्रो जायते पातकी महान् ॥
 नाभिभाषेत्ततो दत्त्वा तन्मुखं नावलोकयेत् ॥ तथा ॥ दुष्प्रति
 ग्रहदग्धस्य विप्रस्य च यथा तथम् ॥ न पश्येद्ददनं पश्चात्तत्रैव न भि
 भाषयेत् ॥ तथा ॥ पूजको गणको व्यासो घोरग्राही तथैव च ॥
 परास्थिवाहको वैद्यो ग्रामयाजी तथैव च ॥ एतैस्त्यजसमालो
 कान् स्पृष्टव्याः कदाचन ॥ कदाचिन्मोहतः स्पृष्टाः सवासा आशु
 तः शुचिः ॥ तथा ॥ मंत्रेणानेन दत्त्वा तं प्रणिपत्य क्षमाप्य च ॥
 आसीमां तमनुव्रज्य तन्मुखं नावलोकयेत् ॥ प्रतिग्रहदुष्टत्वं चतुर्धा
 दातृकालदेशप्रतिग्राह्यदोषभेदात् ॥ चांडालत्वपतितत्वादयो दा
 तृदोषाः चंद्रसूर्योपरागादयः कालदोषाः उभयतो मुखीत्वमेषीत्वादयो
 देयदोषाः ॥ तिलधेनुर्गजो वार्जामहिषाजिनमूर्तयः ॥ सुरभिः
 सूयमाना च घोराः सप्तप्रतिग्रहाः इति निषेधात् ॥ प्रेतान्नमजिनं

मणिरिति पाठे प्रेतान्नमेकादशाहिकश्राद्धान्नभोजनम् ॥ मणिश्चा-
लग्रामइति ॥ अन्यच्च ॥ परमापद्रुतेनापि अंत्यजातिप्रतिग्रहः ॥
नकार्यो ब्राह्मणेनेह चात्मनः श्रेयश्छूता ॥ प्रतिग्रहाच्चांत्यजातेः प-
तितत्त्वं प्रज्ञायते इति ॥ अंत्यजास्तु ॥ रजुकश्चर्मकंश्चैव न दो-
बुरुडएवच ॥ कैवर्त्तमेदमिल्लाश्च सत्तैतैः अंत्यजाः स्मृताः ॥ चांडा-
लास्तु ॥ ब्राह्मण्यांशूद्रजाताश्च चांडालास्त्रिविधास्मृताः ॥ तथा ॥
कुरुक्षेत्रे प्रतिग्राहीनभूयः पुरुषो भवेत् ॥ गायत्रीमनुजाप्येतां सत्तलक्षं
भवेच्छुचिः ॥ कालदोषभिन्नो सत्प्रतिग्रहनिषेधः तत्प्रतिग्रहप्रायश्चित्त-
कथनेन स्पष्टः । सर्वसत्प्रतिग्रहे प्रायश्चित्तम् ॥ देव्यालक्षजपेनै-
व शुद्धयते सत्प्रतिग्रहात् ॥ जपसंख्यातु-जपित्वा त्रीणि सावित्र्याः
सहस्राणि समाहितइति ॥ इदं तु पतितादिभ्यो दुष्टदेशकालयो-
रदुष्टद्रव्यप्रतिग्रहे ॥ अन्येषु दशप्राजापत्यरूपं पतितादिभ्यो म-
हिष्यादिप्रतिग्रहेषु सर्वत्रानुक्तदानदेशकालद्रव्येष्वदुष्टेष्वपि द्वादश-
निष्कप्रमाणद्रव्यप्रतिग्रहे कार्यम् ॥ एवं सर्वत्र द्रव्यानुसारे-
ण प्रायश्चित्तवृद्धिहासौ कल्प्यौ ॥ दातृदेशकालद्रव्येष्वन्यतरदोषे-
एकैकगुणवृद्धिः ॥ मणिवासोगवादीनामन्यतरप्रतिग्रहे गायत्र्यष्ट-
सहस्रजपः ॥ भिक्षादिप्रतिग्रहेषु मंत्रोच्चारणम् ॥ न च प्रतिग्रहस्या-
निषिद्धत्वात् कथं प्रायश्चित्तविधिरिति वाच्यम् ॥ प्रतिग्रहेण वि-
प्राणां ब्राह्मणैः तेजः प्रणश्यतीति कथनात् प्रतिग्रहसमर्थोऽपि प्रसंगतत्र वर्जये-
दिति स्पष्टमेव निषेधसत्त्वाच्च ॥ प्रायश्चित्तं च प्रतिगृहीत सर्वद्रव्यं त्यक्तै-
व कार्यं सति द्रव्ये प्रायश्चित्ताधिकाराभावादिति ॥ केचित्तु षष्ठांश

द्वादशांशौपरित्याज्यौवैकल्पिकावुक्तौ ॥ तथा ॥ प्रतिग्रहाच्चषष्ठांशं
 वाणिज्याच्चतृतीयकम् ॥ कृषेर्विंशतितमं भागं त्यज्यवानां स्तिपात
 कम् ॥ प्रतिग्रहः कुत्सितानां त्रिभिः कृच्छैर्विशुद्ध्यति ॥ रथोवाजी
 चमहिषीतिलधेनुर्गजोऽजिनम् ॥ सूयमानाचसुरभिर्घोराः सप्तप्रति
 ग्रहाः ॥ एतेषां प्रतिग्रहे आहिताग्नेः प्राजापत्येष्टिः स्मार्त्ताग्निमतश्चरुस्त
 द्वेवताकः । अन्येऽन्येषां च कृच्छ्रत्रयम् ॥ अन्यच्च ॥ गुडधेन्वादिधे
 नूनां प्रायश्चित्तं तथोच्यते ॥ प्रतिग्रहे चरोद्विप्रः प्राजापत्यमतं द्रितः ॥
 जपेच्च पौरुषं सूक्तम् सुचैवाधमर्षणम् ॥ अहोरात्रस्थितश्चैव मुच्यते
 तेन किल्बिषात् ॥ अयुतं जपसंख्या ॥ गृहदानं महादानं नास्ति दा
 नं गृहात्परम् ॥ येन दत्तं हि वै तेन सर्वं दत्तं भवेन्नृणाम् ॥ गृहोपकरणं
 सर्वं गोमहिष्यादिभूषणम् ॥ कण्डर्पापेषणी चुल्ली ह्युदकुंभस्तुमार्जनी ॥
 शय्याविभाजितं छत्रं वितानं रथमोवृषम् ॥ तत्र कृच्छ्रं चरोद्विप्रो महासां
 तपनं तथा ॥ शतं वा भोजयेद्विप्रान् गायत्रीलक्षमेव च ॥ प्रायश्चित्ते कृते वि
 प्रो मुच्यते तत्प्रतिग्रहात् ॥ गोशतं गोसहस्रं च कृष्णावैतरणी तथा ॥
 चतस्रश्चैव गावश्च वर्जनीयाः प्रयत्नतः ॥ चतस्र उत्क्रांतिः कृष्णपापमो
 क्षधेनवः । गृहीत्वा वैतरणीं लोहं यमदंडो भयावहः ॥ प्राजापत्यत्रयं कु
 र्याद्भोजयेच्च शतं द्विजान् ॥ जपेद्वा वामदेव्यं च शिवसंकल्पमेव च ॥
 रथं तरं वामदेव्यं जपेन्मुच्येत किल्बिषात् ॥ यज्ञकर्मणियाधेनुं ब्र
 ह्मधेनुस्तथैव च ॥ मधुपर्के च याधेनुर्याधेनुः कर्मसिद्धये ॥ एतत्प्रति
 ग्रहे किञ्चित् प्रायश्चित्तं न विद्यते ॥ पर्वताय दश प्रोक्तास्तथैव द्विमुखी
 चर्गाः ॥ उष्ट्रप्रतिग्रहे चैव क्षपेन्मासचतुष्टयम् ॥ प्राजापत्येन कृच्छ्रे

णषष्ठांशंतुपरित्यजेत् ॥ जपेद्वादशलक्षं वा गायत्र्या निश्य भोजनं
 म् ॥ शतेन मुच्यते पापा द्विप्राणां भोजनेन च ॥ प्राणां यामंशतं कु-
 र्याद्ब्रह्म कूर्चसमन्वितम् ॥ रथप्रतिग्रहे लक्ष गायत्री जपमाचरे-
 त् ॥ अयुतं वाथ गायत्र्याः संगमे स्नानमाचरेत् ॥ षष्ठांशंतुपरित्यज्य
 ब्राह्मणान् भोजयेच्छुचिः ॥ प्रतिगृह्यान्नदानानि ग्राम्यश्चित्तं यथोदि-
 तम् ॥ जपेन्निरंतं देवीं वैष्णवं व्रतमाचरेत् ॥ जपसंख्या अ-
 युतादिः ॥ विद्यादानं गृहीत्वा पियत्किंचित्पुस्तकादिकम् ॥ ब्राह्मणा-
 न्भोजयेद्रक्त्या कृच्छ्रमेकं समाचरेत् ॥ पृथिवीं प्रतिगृह्याथ सशैलव-
 नकाननाम् ॥ अपि धातुमथा गृह्यत संकृच्छ्रत्रयं तथा ॥ भूत्वा
 त्रिषवणस्नार्याक्षिपेन्मासचतुष्टयम् ॥ एवं शुद्धिमवाप्नोति द्विजः
 षष्ठांशं मुत्सृजेत् ॥ इदं च सदक्षिणा प्रतिग्रहे ॥ तद्रहिते तु न दोषः
 भूमिभ्यः प्रतिगृह्णाति यस्तु भूमिप्रयच्छति ॥ तावुभौ पुण्यकर्मा-
 गौ नित्यं तं स्वर्गगामिनौ ॥ अथ षोडशमहादानेषु—
 तुलापुरुषभागंतु गृहीत्वा चांद्रकं चरेत् ॥ हिरण्यगर्भं च तथा ब्रह्मांडे
 कल्पपादपे ॥ जले त्रिषवणस्नार्याचरेत्सांतपनं द्वयम् ॥ गोसंहस्रप्र-
 तिग्राही यदा विप्रो ह्यकामतः ॥ गोमूत्रयावकां हारो मासे नैकेन शुद्ध्यति ।
 हिरण्यकामधेन्वादिद्वानमत्र यथोदितम् ॥ महाभूतघटातिषु प्रायश्चि-
 त्तमथोच्यते ॥ गायत्र्या दशलक्षैश्च प्राणायामसहस्रकैः ॥ नश्यंति पा-
 पसंघाश्च काकथा दुष्प्रतिग्रहे ॥ पावमानं च सूक्तं वै सर्वपातकनाशनं
 म् ॥ अत्रायमभिसंधिः ॥ आयुष्यमिति सूक्तेन मार्षिकं ठेप्रमुच्य-
 ते इत्यादि सूत्रेषु अखिलानामपि विनियोगदर्शनात् तेषामपि

प्रामाण्यबलात् । पावमानीजपस्याखिलेषुविधानात्ते ॥ तद्वलापे
 क्षायां--गोघ्नान्मातृपितृवधादित्यादिमंत्रवर्णेनतत्तत्पातकनाशस्यफ
 लत्वावगत्या । तत्तत्पापेषुपावमानीजपस्यप्रायश्चित्तत्वम् ॥ पापानु
 रोधेनचजपसंख्याकल्पनीयेतिदिक् ॥ अथ राजप्रतिग्रहप्राय
 श्चित्तम् ॥ अनापदिराजप्रतिग्रहंनिंदति ॥ यथा ॥
 नराज्ञःप्रतिमृत्नीयात्लुब्धस्योच्छास्त्रवर्तिनः ॥ प्रतिग्रहेशुनी
 चक्रीध्वजी वैश्यानराधिपाः ॥ अष्टादशगुणंपूर्वपूर्वादेते
 यथोत्तरम् ॥ तथाच ॥ राजप्रतिग्रहोघोरोमध्वास्वादो
 विषोपमः ॥ पुत्रमांसंवरंभोक्तुंनतुराजप्रतिग्रहः ॥ मरुदेशेनिरु
 दकेब्रह्मरक्षस्त्वमागतः ॥ राजप्रतिग्रहात्पुष्टःपुनर्जन्मनविंदति ॥
 ब्राह्मणयःपरित्यज्यद्रव्यलोभेनमोहितः ॥ विषयामिषलुब्धस्तु
 कुर्याद्राजप्रतिग्रहम् ॥ नरकेरौरवेघोरे तस्यैवपतनंभ्रुवम् ॥
 वृक्षादवाग्निनादग्धाः प्ररोहंतिघ्नागमे ॥ राजप्रतिग्रहादग्धान
 प्ररोहंतिकेचन ॥ अन्यच्च ॥ दशसूनासमश्चक्रीदशचकिसमो
 ध्वजी ॥ दशध्वजिसमावेश्यादशवेश्यासमोनृपः ॥ दशसूनास
 हस्त्राणियोवाहयतिसैनिकः ॥ तेनंतुल्यःस्मृतोराजातस्माद्धोरः
 प्रतिग्रहः--इत्यधार्मिकराजविषयेनिंदा ॥ यतः--येषांनविषयेप्री
 तिर्यज्ञेयज्ञपतौहरो ॥ यत्रैयेभूभुजस्तेषामेतत्सूनोदितफलम् ॥
 येषांपापंडिसंकीर्णराष्ट्रंनब्राह्मणोत्कटम् ॥ एतेसूनासहस्त्राणांद
 शानांभोगिनोनृपाः ॥ येषांनयज्ञपुरुषःकारणंपुरुषोत्तमः ॥
 तेतुपापसमाचारासूनापांमौघभागिनः ॥ अदुष्टात्तुराज्ञः प्रति

ग्रहोन्नयः ॥ यथा ॥ छंदोगशाखायाम् ॥ आचीन
 शालादीन्महामुनीन् राजगृहेप्रवर्तते इति ॥ अन्यच्च ॥
 ममेस्तैन्यंजनपदेनकुप्यान्नचमयपः ॥ नानाहिताग्निर्नाविद्वान्न
 स्वैरस्वैरणिंकुतइति ॥ श्रेयान्प्रतिग्रहोराज्ञां नान्ये
 पांब्राह्मणादृते ॥ ब्राह्मणश्चैवराजाचद्वावप्येतौधृतव्रतौ ॥
 नैतयोरंतरंकिंचित्प्रज्ञाधर्माभिरक्षणे ॥ शुचीनामशुचीनांचसन्नि
 देशोयथाभसाम् ॥ समुद्रेसमतांयातितद्वद्राज्ञांधनागमे ॥ यथा
 ग्रौसंस्थितंचैवशुद्धिमाप्नोतिकांचनम् ॥ एवंधनाममःसर्वःशुद्धिमाप्नो
 तिराजनि ॥ राजप्रतिग्रहेप्रायश्चित्तम् ॥ यथा ॥ राज्ञःप्रतिग्रहंकृत्वा मास
 मप्सुसदावसेत् ॥ षष्ठेकालेयथाभक्षःपूर्णेमासेप्रमुच्यते ॥ तर्पयित्वा
 द्विजान्कामैःसततंनियतव्रतः इति-तदसत्प्रतिग्रहविषयम् ॥ अथ
 रहस्यप्रायश्चित्तानि ॥ अनभिरुयातदोषस्तुरहस्यव्रतमाचरेत् ॥
 इति कर्तव्यतिरिक्तैर्यदीयोदोषोनज्ञायतइत्यर्थः ॥ अतश्चपारंदा
 र्प्यदिरपिस्त्रीपुंसाभ्यामितरेणाज्ञातस्यरहस्यत्वमेव । तस्यप्रायश्चि
 त्तमपिरहस्यमेवकर्तव्यम् ॥ तथाचरहस्येरहस्यंप्रकाशेप्रकाशमि
 ति सूत्रकारः ॥ तत्ररहस्यानांसाधारणप्रायश्चित्तंयथा ॥ वेदा
 भ्यासोन्वहंशक्त्यामहायज्ञक्रियाक्षमा ॥ नाशयंत्याशुपापानिमहा
 पातकजान्यपि ॥ यथैधस्तेजसाबह्निःप्राप्तंनिर्दहतिक्षणात् ॥ तथा
 ज्ञानकृत्पापंकृत्स्नंदहतिवेदवित् ॥ सव्याहृत्यस्सःप्रणवाःप्राणा
 यामास्तुषोडश ॥ अपिभूणहणंमासात्पुनात्यहरहःकृताः ॥
 इति ॥ तथाच ॥ यच्चाकार्यंकृतंसाग्रंशंतैवेदश्चाप्यते ॥ त

त्सर्वतस्यवेदाग्निर्दहत्यग्निरिवेधनम् ॥ तथाच ॥ सहस्रपरमादिर्वांशतम
 ध्यांश्चावराम् ॥ गायत्रीसंजपेन्नित्यं महापातकनाशिनीम् ॥
 ऋग्वेदमभ्यसेद्यस्तु यजुस्सामानिचापि वा ॥ सूक्तानिसहस्रानिअ
 थर्वागिरसस्तथा ॥ ब्राह्मणानिचकल्पांश्चषडंगानितथैवच ॥ इति
 हासपुराणानिदेवतास्तवनानिच ॥ जप्त्वापापैः प्रमुच्येतधर्मस्थाने
 तथापरान् ॥ अन्यच्च ॥ तपोव्रतंतीर्थसेवादेवब्राह्मणपूजनम् ॥ ग्र
 हणादिषुकालेषुमहापातकशोधनम् ॥ पुण्यक्षेत्राभिगमनंसर्वपाप
 प्रणाशनम् ॥ देवताभ्यर्चनंनृणांसर्वपापप्रणाशनम् ॥ अमावास्याति
 थिभक्त्यायःसमाराधयेद्भुवम् ॥ ब्राह्मणान्भोजयित्वातु सर्वपापैः
 प्रमुच्यते ॥ कृष्णाष्टम्यामहादेवंतथाकृष्णचतुर्दशीम् ॥ संपूज्य
 ब्राह्मणमुखेसर्वपापैः प्रमुच्यते ॥ त्रयोदश्यांतथारात्रौसोपहारंत्रि
 लोचनम् ॥ दृष्ट्वेशंप्रथमेयामेमुच्यतेसर्वपातकैः ॥ एकादश्यां
 निराहारःसमभ्यर्च्यजनार्दनम् ॥ द्वादश्यांशुक्लपक्षस्यसर्वपापैः
 प्रमुच्यते ॥ उपोषितश्चतुर्दश्यांकृष्णपक्षेसमाहितः ॥ यमा
 यधर्मराजायमृत्यवेचांतकायच ॥ वैवस्वतायकालायसर्व
 भूतक्षमायच ॥ औदुंबरायदध्नायनीलायपरमेष्ठिने ॥ वृ
 क्रोदरायचित्रायचित्रगुप्तायवैकंमात् ॥ चतुर्दशैतेमंत्राःस्युश्चतु
 र्यैतान्मोन्विताः ॥ तैःपृथक्कृतिलसंमिश्रान्दद्यात्सप्तोदकांजली
 न् ॥ स्नात्वानद्यांतुपूर्वाह्नेमुच्यतेसर्वपातकैः ॥ तथाच ॥ अ
 स्मिन्कलियुगेधोरेलोकाःपांपानुवर्तिनः ॥ भविष्यंतिदुराचा
 रावर्णाश्रमविवर्जिताः ॥ तेषामुद्धरणार्थायश्रेष्ठावाराणसीपुरी ॥

सर्वपापप्रशमिनीप्रायश्चित्तविधायिनीति ॥ इतिरहस्येषुसाधारणं
प्रायश्चित्तानि ॥ अथप्रतिपदोक्तप्रायश्चित्तानि ॥ त्रिसंज्ञोपो
षितोज्ज्वलब्रह्महात्वघमर्षणम् ॥ अंतर्जलेविशुद्धेच्चगांचदद्यात्प
यस्विनीम् ॥ जम्बाचपौरुषंमूकंमुच्यतेगुरुतल्पगः ॥ हविष्पां
तमजरंस्वर्विदात्येकोनविंशचंबतमंहोनदुरितंसप्तर्चं इतिवाइतिभेदन
स्त्रयोदशचंबाजम्बा प्रत्यहंषोडशकृत्वौमासम् अकामतोऽगु
रुतल्पगःशुद्ध्यति ॥ अन्यच्च अतोदेवाजपेत्सूक्तमग्रआर्यांषि
वेत्युक्ता ॥ अघमर्षणंवाजम्बामुच्यतेब्रह्महत्याया ॥ इतिस्मृत्य
र्थसारमतेनरहस्यप्रायश्चित्तानि ॥ अथस्मृत्यर्थसारमतेनरहस्य
प्रायश्चित्तानि॥कर्त्तव्यातिरिक्तेतराज्ञातदोषेरहस्यप्रायश्चित्तंचरेत्
अविद्वां तुमुखांतरेणरहस्यप्रायश्चित्तंज्ञात्वारहस्यंचरेत् ॥ त्रिमधु
त्रिसुपर्णंत्रिचाचिकेतत्रयंतथम् ॥ नारायणंजपेत्सर्वमुच्यतेब्रह्महत्याये
त्युक्तंत्रिमध्वादिपठनंनिश्चितःकार्यम् ॥ इति ब्रह्महत्याप्रायश्चि
त्तम् ॥ अथसुरापानादिप्रायश्चित्तम् ॥ अपनंशोशुचदधमि
तिसूक्तपाठेनगुरुतल्पगमनपापनाशः ॥ कौत्संजपित्वापेत्येतद्वासिष्ठं
चप्रतीत्युच्यम् ॥ माहित्रंशुद्धवत्यश्चसुरापोऽपिविशुद्ध्यतीत्युक्तेः ॥
इतिसुरापानप्रायश्चित्तम् ॥ एवं रुद्राऽध्यायस्यैकादशकृत्वोजपात्सुरा
पानादि जन्यपापनिवृत्तिः ॥ मद्यपीत्वागुरुदारांश्चगत्वास्तेयंकृ
त्वाब्रह्महत्यांचकृत्वा ॥ भस्मच्छन्नोभस्मंशय्याशयानोरुद्राऽध्यायी
मुच्यतेसर्वपापैरितिशातातपोक्तेः ॥ इतिसुरापानादिप्रायश्चित्तम् ॥
अन्यपापेषुतुकुन्तापंवालखिल्यंचजम्बापापैःप्रमुच्यते ॥ ब्रह्महत्या

(२५६)

दानसंग्रहः ।

दिपापेभ्यः पावमानात्प्रमुच्यते इत्याश्वलायनोक्तेः ॥ कुन्तापादिपा-
ठैः तन्नाश इति । उपपातकेषु तेषु पूर्वोक्तमेवेति च सिद्धमिति दिक् ॥ क-
च्छादिलक्षणानि तदुपयोगक्रमस्तत्प्रत्याग्रायाश्च तत्तन्महानिबन्धे
भ्यो ज्ञेया इत्यलम् ॥

इति महीधरकृते दानसंग्रहे रघुस्यप्रायश्चित्तानि ॥

इति महीधरकृतो दानसंग्रहः ।

संवत् १९५४ मिते मुद्रितः ।

पुस्तकमिलनेका ठिकाना-

खेमराज श्रीकृष्णदास,

“श्रीवेङ्कटेश्वर” छापाखाना, खेतवाड़ी-बंबई.

पु
स्त
क
म
िल
ने
का
ठ
ि
का
ना

विक्रय्यपुस्तकोंकी-संक्षिप्त-सूची ।

कर्मकांडग्रंथाः ।

नाम.	की. रु. आ.
संस्कारभास्कर(यजुर्वेदी सब संस्कारोंकी विधि • प्रयोग और मंत्र सहित)	२-१२
जन्मदिनपूजापद्धति.	०-२
गोदानपद्धति ...	०-१॥
पूजापंकजभास्कर	२-०
सकामशिवपूजनविधान भाषाटीका ...	०-४
स्वस्तिवाचन (पुण्याहवाचन) ...	०-१॥
दशकर्मपद्धति.	०-७.
वासिष्ठीहवनपद्धति ...	०-४
लंबोदरीहवनपद्धति ...	०-४
एकोद्दिष्टश्राद्धप्रयोग ...	०-२
पार्वणश्राद्धप्रयोग ...	०-२
उपाकर्मपद्धति(श्रावणीयजुर्वेदकी) ...	०-१२
कर्मविपाकचरणगत रफू १० आना ग्लेज ...	०-१२
कर्मविपाक भाषाटीका ...	१-४
वेदोक्तवास्तुपद्धति. ...	०-६
व्रतोद्यापनकौमुदी. ...	०-१२

व्याकरण ग्रन्थाः ।

सिद्धांतकौमुदी अष्टाध्यायी, गणपा०, धातुपा० लिंगानुशासनपा०

जाहिरात ।

नाम.	की. रु. अ.
इसमें १८४ विषय हैं शाक्त लोगोंको अवश्य लेना चाहिये ६-०
नित्यतंत्रभाषाटीका (नैमित्तिक कर्मोंमें उपयोगी) ०-१२
मंत्रमहोदधि सटीक सटिप्पण मातृकाकोष तथा अनुष्ठानिकयंत्रों समेत ३-४
महानिर्वाणतंत्रम् भाषाटीका समेतम् चौंसठ तंत्रोंमें सर्वतंत्रोत्तमोत्तम है २-०
माहेश्वरीतंत्र भाषाटीका (मारण मोहन वशीकरण उच्चाटनादि विधि) वर्णित है ०-४
कामशास्त्र भाषाटीका छपता है ०-०
इन्द्रजाल (संस्कृत और भाषा मंत्र तंत्र मारण मोहन उच्चाटन वशीकरण प्रयोग और वैद्यक तथा समस्त कार्योंके सिद्ध करनेवाले १३८ यंत्रों समेत ०-१२
दुर्गासप्तशती शान्तवीटीकासहित १-४
दुर्गासप्तशती भट्टनागोजीकृतटीकासहित १-०
दुर्गासप्तशती भाषाटीका शान्तनवी टीकाकेअनुकूल १-०	१-०

पुस्तक मिलनेका ठिकाना—

खेमराज श्रीकृष्णदास,
“ श्रीवैकटेश्वर ” छापाखाना-मुंबई.